

प्रबन्ध—सार

**कानपुर जिले (जनपद) की बोली का
रूपात्मक अध्ययन**



अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ की

पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

निर्देशक—

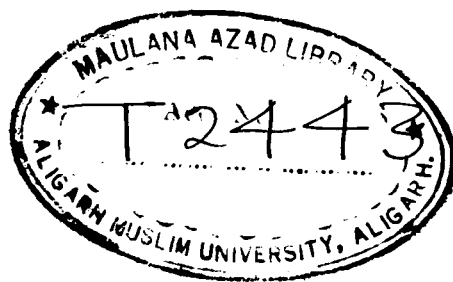
डा० गेंदालाल शर्मा

डी० लिट्०

अनुसंधिन्सु—

अमरसिंह सचान

एम० फिल्०



शोध प्रबन्ध-सार

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में कानपुर कनपद की बोली की अध्ययन का विषय माना गया है। भाषायी अध्ययन की दो दृष्टियाँ होती हैं—स्वात्मक और बाह्य। इस शोध-प्रबन्ध में स्वात्मक अध्ययन की विधि की माध्यम मानकर प्रस्तुत किया गया है। प्रबन्ध के अध्ययन का मुख्य प्रेरणास्रोत एफ० मैक्समूलर का कथन—“ मैं इसके मूल एवं में विश्वास करता हूँ, बोलियों का समारम्भ, परिवारों, नीधों, भावों तथा कभी-कभी जातियों, यहाँ एवं राज्यों में सामान्य सम्मानना के रूप में वर्तमान रहता है— किन्तु हम प्राचीन भाषा का अबहीना रूप कह सकते हैं ” क्योंकि मेरा जो उपर्युक्त कथन पर शत-प्रतिशत विश्वास है और इसी विश्वास के आधार पर कानपुर कनपद के ग्राह्यता वर्गों की बोली की शोध-प्रबन्ध का मूल आधार बनाया गया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की विषय-प्रीति, वनि-विचार, रूप-विचार, क्रिया-विचार तथा वाक्य विचार आदि अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत किया गया है तथा अन्त में परिशिष्ट दिया गया है जिसका नाम संक्षिप्त परिकल्प प्रस्तुत है ।

विषय-प्रीति-

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में विषय-प्रीति के अन्तर्गत कानपुर कनपद का सामान्य परिकल्प प्रस्तुत किया गया है। प्रबन्ध के प्रारम्भ में कानपुर

जनपद का मानचित्र प्रस्तुत करते हुए उसका भौगोलिक परिचय दिया गया है।

भौगोलिक परिचय

कानपुर जनपद के भौगोलिक परिचय के अन्तर्गत जनपद की सीमाएँ तथा प्रदेश की राजधानी लखनऊ से दूरी एवं स्थिति दी गई है तथा जनपद की इलाहाबाद मंडल से दिशा, दूरी एवं स्थिति का विवरण प्रस्तुत है। वर्तमान समय तथा कानपुर नवीटियर के अनुसार जनपद के विस्तार एवं सीमाएँ का परिचय देते हुए उसकी भूमि उसकी एवं जलवायु का भी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है। जनपद की जनसंख्या के वर्तमान १९८१ के आँकड़े देकर शहर और देश की जन-जन जनसंख्या में प्रस्तुत की गई है। यहाँ के प्राकृतिक बाधाएँ के विवेक में यहाँ की प्रमुख नदियाँ, सहायक नदियाँ तथा भीतरी बाढ़ का नाम सहित संक्षिप्त परिचय भी प्रस्तुत है।

२- जनपद का नामकरण -

साय-ब्रह्म में "विजय-प्रदेश" शीर्षक के अन्तर्गत ही जनपद के नामकरण के सम्बन्ध में बने प्रचलित किंवदन्तियाँ सम्प्रमाण प्रस्तुत की गई हैं तथा बने विद्वानों ने अपने जन-जन विचार प्रस्तुत करते हुए अपना मत दिया है जिनमें से कुछ विचारणीय भी हैं की मवान् राम के पुत्र लक्ष्मी के कर्णहिन संस्कार पर इसका नाम कर्णपुर पड़ा। कुछ लोग कृष्ण के कहानियाँ या कान्हा नाम से कान्हापुर (कानपुर) मानते हैं। कुछ लोगों का मत है कि सेवैली के राजा हिन्दुसिंह का बेटा से राजा कल्याणसिंह ने पुरी-हित के लिए नरु नाम "कान्हापुर" से आया। कुछ लोग कहते हैं कि इसे

दानवीर कर्ण के द्वारा बसाये जाने के कारण "कर्णपुर" या "कानपुर" नाम लगा। आधुनिक इतिहासकार राहुल सांकृत्यायन इसे कर्णो "कम्प" या "कम्पू" से जोड़ते हैं। उक्त विद्वान्त्रियों एवं विद्वानों से यह निर्विवाद प्रमाणित हो जाता है कि आधुनिक कानपुर किसी प्राचीन नाम "कर्णपुर" या "काण्वपुर" का परिवर्तित रूप है।

कानपद के नामकरण के साथ ही यहाँ के शासन प्रणाली की सुविधाओं के साथ यहाँ की सभी तहसीलों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है जिससे कि कानपद की ग्राम्यीय वस्तु-स्थिति का अच्छा ज्ञान हो सके। इन्हीं के साथ इस कानपद की समस्त जातियों के प्रतिष्ठित सहित विवरण भी प्रस्तुत किए गए हैं।

३- कानपुर कानपद का ऐतिहासिक परिचय-

विजय-प्रेषित के अन्तर्गत कानपुर का ऐतिहासिक परिचय भी प्रस्तुत किया गया है। यहाँ पितामह ब्रह्मा की तीनों ने ब्रह्मावर्त (बिंदू) में सृष्टि रक्ता हुआ की थी। यहाँ पर मगवान् राम के लक्ष्मण की पुत्र उत्पन्न हुए थे। यहाँ के लक्ष्मण परीक्षात्मक उत्तमनों में सिन्धु सम्यता ने पूर्व के भी प्रमाण प्राप्त हुए हैं। महर्षि वाल्मीकि की तपोभूमि "ब्रह्मावर्त" (बिंदू) की है। बिंदू का ब्रह्मावर्त नाम कम बरि की पड़ा। अनेकों प्रकार के विचार हैं किन्तु लक्ष्मणों के बाद यह सिद्ध हो जाता है कि मनु द्वारा उल्लिखित ब्रह्मावर्त यही है इसके सम्बन्ध में महाकवि कालिदास ने भी मेघदूतम् नीत काव्य में कहा है।

महर्षि वाल्मीकि की तपोभूमि बिंदू ही थी। यह इतिहासकारों एवं विद्वानों ने मान लिया है। उनकी शरण में मगवान् राम की

पत्नी छोटा भी यहाँ रह चुके थे जिसका रामायण में विस्तृत उल्लेख है। इस कनकद में जूँगे कृष्ण तथा कुशाग्र कृष्ण भी बना बाब्रम बनाये हुए थे। यहाँ जय भी नहीं, देवराज बाणासुर आदि भी शासन कर चुके हैं। यहाँ राजा कनकद की शासकों ने तथा हर्षवर्धन एवं कनकद की सम्राटों ने भी शासन किया है। यहाँ को बौद्धगुप्तों ने ऐतिहासिकता को राजा साङ्ग्यायन जैसे विद्वान् भी स्वीकारते हैं। इस कनकद में अन्य कई प्राचीन तीर्थस्थल एवं गुप्तकालीन स्थापत्यकला के मंदिर भी हैं। यहाँ कई मुस्लिम शासकों ने शासन किया तथा सन् १८०१ ई० में यहाँ के शासक जीव ही गए। कई बार यहाँ क्रांति की लहरें उठीं और दलों, जंतु में विकास के साथ-साथ भारत माता की स्वतंत्रता के साथ यहाँ स्वदेशी शासन है। इस तरह हम देखते हैं कि यहाँ का इतिहास भारतीय इतिहास की अतिलोच्य शृंखला है। इन सब का अधिक विश्लेषण प्रस्तुत है।

४- कानपुर कनकद की साहित्यिक प्रतिमाएँ-

किसी कनकद के पत्रिकाओं पाने हेतु यहाँ को साहित्यिक प्रतिमाओं को जानना अति आवश्यक है। कानपुर कनकद अतात ही हो समस्त भारत के लिए पैना स्थल के समान रहा है। महर्षि वात्स्यिक को अमृत वाणी यहाँ मुखरित हुई थी। इस कनकद में राजा वारध के हास्य व्यंग्यकार तथा वाचार्थ चिंतामणि के महान् वाचार्थ रवि उत्पन्न हुए हैं। उनके अलावा रीति-नृत्य के "सिंह" मुखण तथा रीति-काल के उत्तम पत्रिका एवं दूसरे जैसे रसज्ञ भी पैदा हुए जिन्होंने कृष्ण माणा में अपनी अक्षमायुगी लुटाई।

इस जनपद में कवि हो नहीं बच-विद्या के पोषक मांस के फकार पं० प्रतापनारायण मिश्र तथा अन्य रायदेवी प्रसाद पूर्ण, नया प्रसाद सुकल होनेही के साथ सेकड़ों कवियों ने कम्म लिया । सुप्रसिद्ध फकार सहोदर स्व० गणेशशंकर तथा अन्य कई नेताओं एवं फकार लेखकों ने यहाँ कम्म लिया किन सबका क्रमः विवरण प्रस्तुत किया गया है । बाब भी इस जनपद के कई लेखक, नाटककार, फकार एवं कवि अपनी सेवा से हिन्दी भाषा के साहित्य की वृद्धि कर रहे हैं ।

५- कानपुर जनपद की लोक-संस्कृति और लोक-साहित्य

किसी प्रदेश का लोक-साहित्य वहाँ के वास्तविक बीलों का स्वल्प होता है तथा इसके ही अन्तर्गत लोक-संस्कृति द्विपो होती है। बीलों के अध्ययन में लोक-साहित्य की समझना आवश्यक हो नहीं बल्कि अनिवार्य है क्योंकि लोक-साहित्य हमारी संस्कृति एवं प्राचीनता के प्रति-रूप होते हुए बीलों से नृपूरित होने वाला साहित्य है । कानपुर जनपद में लगभग सभी प्रकार का लोक-साहित्य प्राप्त है जिसमें लोककथा एवं लोक-गीतों की तो सर्वाधिक प्रचलित पावतियाँ हैं । इसके अतिरिक्त पारंगत , पहेलियाँ, लोकनाट्य एवं कहावतों के रूप भी काफी प्रचलित हैं ।

६- मौखिक एवं भाषागत विशेषताएँ

विषय-प्रदेश के अन्तर्गत वर्त में कानपुर जनपद की भाषा मुख्यतः मूली प्रस्तुत किया गया है, जिसमें यह बतलाया गया है कि जनपद के पूर्वी-अंश में अवधी का तथा पश्चिमी अंश में कन्नौजी का तथा दक्षिणी अंश में बुंदेली का प्रभाव है । इसके अन्तर्गत प्रत्येक बीली से

प्रभावित क्षेत्र का विचारों के विचारानुसार विवरण प्रस्तुत किया गया है तथा वर्तमान समय में सर्वज्ञाण के दौरान शोधार्थी कि निष्कर्ष पर पहुँचा है। नीली सर्वथा नए रूप में उभर कर सामने आती है। इन सब बातों का विवेक प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय- ध्वनि विचार -

नीली के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से शोध-प्रबन्ध का द्वितीय अध्याय ध्वनि-विचार है जिसमें इस कण्ठ की ध्वनित विशेषताओं का परिचय दिया गया है। यहाँ के निरासियों की प्रमुख विशेषता यह भी है कि वे विदेशी ध्वनियों को अपने लहरे में ही बीतते हैं। इस जनपद में लगभग ४८ ध्वनि-विचारों का प्रयोग मिलता है जिनमें स्वर एवं व्यंजन समा हैं।

२.१ मूल स्वर

यहाँ पर प्रमुख रूप से नौ स्वरों का प्रयोग होता है। सभी शुद्ध उच्चारण स्थिति के लिए ऐं, औं, आँ, की स्वरों की भी निर्मित करना पड़ता है जो दोष की स्थिति को प्रकट करते हैं। यहाँ 'क' के मूलस्वर का प्रयोग स्व उच्चारण प्रायः 'रि' के रूप में किया जाता है। 'कि' के बिन्दुओं के उच्चारण में भी प्रायः 'जा' की मात्रा का उच्चारण होता है। शोध-प्रबन्ध में स्वरों का वर्गीकरण जिह्वा की उच्चारण स्थिति के वर्ग के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। सभी स्वरों का विस्तृत विवेक करते हुए प्रयोग के बादि मध्य तथा अन्त के सभी उदाहरण भी दिए गए हैं। स्वरों में अनुनासिकता भी प्राप्त होती है।

२.२ व्यंजन-

शोध-प्रबन्ध के अन्तर्गत कानपुर कण्ठ में प्रयुक्त होने वाले ३६ प्रकार की व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरण किया गया है। यह वर्गीकरण उच्चारण दृढ़ता स्फोटिता, उच्चारण स्थान, वृक्षमूलता तथा अनुनासिकता की दृष्टि से किया गया है। इन सभी व्यंजनों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है तथा विज्ञानों का भौतिकीयता का भी उल्लेख किया गया है। शोध-प्रबन्ध में संयुक्त व्यंजनों का भी उल्लेख किया गया है। यहाँ पर सघोष + सघोष तथा अवोण + अवोण स्पष्ट व्यंजनों के फार्मेट उदाहरण हैं जैसे कका, कू टट्टा, पुस्ता (बघी रस्सी) तथा मगा, कबो, कडो (सघोषस्पर्श) आदि संयुक्त व्यंजनों से बने पद हैं। उसी वर्ग के प्रथम अनुनासिक वर्ग के संयुक्त व्यंजन भी फार्मेट हैं जैसे रंका, रंका, रंघा, रंसी, रंटा, रंय आदि। प्रबन्ध के अन्तर्गत व्यंजनों के अन्तर्गत के उदाहरण भी बहुत हैं जिनके दोष उच्चारण में अर्थ परिवर्तित हो जाते हैं जैसे - बका (बकना), बका (बकला), बका (बकल) - बच्चा (बिच्चा), रसा (रस), रसा (रसी रसी) आदि।

२.३ लण्ठेतर ध्वनियाँ -

ध्वनि विचार के अन्तर्गत ही लण्ठेतर ध्वनियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है जिनमें कलाघात, सुर, सामयिक वारीह या विरति प्रमुख हैं। ध्वनि कलाघात में किसी एक ध्वनि पर जैसे- शरी, पत्थी आदि, बहार कलाघात में किसी एक बहार पर, जैसे- शाहरा, ननिहरा आदि पर अक्षर दिया जाता है जैसे- कम से कम, लाना लाले या कम से कम लाना लाले। इस तरह कलाघात से अर्थ पर प्रभाव पड़ता है। वाक्य कलाघात भी

दिया गया है जिसमें किसी संयुक्त वाक्य के एक भाग पर क्ल दिया जाता है। गुरों के उतार-चढ़ाव से एक ही वाक्य की कई तरह से प्रकट करते हैं।
 जैसे- मैं उबते पुरीं। (साधारणवाक्य) मैं उबते पुरीं ? (प्रश्न-वाक्य)। सामयिक ज़ारीह-जवारीह से भी वाक्य का अर्थ प्रभावित होता है वहाँ जोर देना होता है, वहाँ ज़ारीह, जहाँ जोर दोहते हैं, वहाँ जवारीह होता है। विरति या ठहराव से भी अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। जैसे- पतरी (पत्ता) पत-री (पत्तरी), पीछा (पीछने का कच्चा) पीता (नातो)।

२.४ लोप और वागम -

ध्वनि विचार के अन्तर्गत स्वर एवं व्यंजनों के लोप पर भी विचार किया गया है। स्वरों के जादि लोप जैसे- नाज(बनाज), कल (अकल) जादि, मध्य लोप तुलु (पतौड़) कलकी (कलाली) जादि तथा स्वरों की लोप-हिल (शिला), नाभिज (नभिणी) जादि भी काफी हैं। इसी तरह व्यंजनों के जादि मध्य एवं अंत दोनों प्रकार के लोप हैं जैसे हँच (लोच) घान(स्थान), ठाइन (ठाकिन), उपास (उपास), माईरे(मायी), मसा (मसूर), जादि व्यंजन लोप हैं। लोप की भाँति स्वर एवं व्यंजन वागम भी हैं। जैसे- हस्थान (स्थान), बस्थान (स्नान), काल(कल), क्वाइरे(क्वा) जादि स्वर वागम तथा हँठ (हाँठ), सिराय(त्राय), लहास (लास), चिलिहा (चाल) जादि व्यंजनावगम के उदाहरण हैं। ध्वनियों के विपर्यय के भी कुछ उदाहरण हैं जैसे ब्याल (बलाय), बरपुद (बयपुद) जादि। इस तरह शोध-प्रबन्ध में सभी प्रकार की ध्वन्यात्मक विरहणताओं का प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय - रूप विचार -

शोध-प्रबन्ध में रूप-विचार के अन्तर्गत संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण पर विस्तृत विवेक किया गया है ।

३.१ संज्ञा -

कानपुर जनपद की बोलों में संज्ञा का मूल पद स्वरान्त एवं व्यंजनान्त दोनों हो है । जैसे- लटिया, साढ़ो, फिउ, नाउ बादि स्वरान्त तथा नाक् राबु, बरात् गात्, घास् बादि व्यंजनान्त संज्ञाएं हैं। जनपद में संज्ञा के लघु एवं गुरु दोनों रूप पर्याप्त प्रचलित हैं जैसे लो, गाल, सुनार बादि लघु रूप तथा नदिया, गलवा, सुनरवा बादि गुरु रूप हैं । यहाँ संज्ञाओं के तीसरे रूप की भी देखा जा सकता है-- सुनरटा, बमरटा बादि । यहाँ व्यंजित्वाच्च, वात्स्वाच्च एवं माववाच्च संज्ञाओं के भी प्राणि मिलते हैं ।

संज्ञा शब्दों में लिंग, वचन एवं कारक प्रणाली का पर्याप्त प्रभाव है । इस जनपद की बोलों का प्रत्येक संज्ञा पद पुल्लिङ्ग है या स्त्रीलिंग । यहाँ मर्कसक लिंग नहीं है । यह अधिकतर पुल्लिङ्ग के रूप में ही जाते हैं । प्राणिवाचक संज्ञा पदों का लिंग प्राकृतिक लिंग समान है । जैसे- कुत्ता-कुत्तिया, पौड़ा-पौड़ी बादि । किन्तु छोटे जानवरों में यह अपवाद स्फुटतया है। कोयल, पहेरी, झिझुलो बादि (स्त्रीलिंग) तथा कुत्ता, सरहा, म्या बादि (पुल्लिङ्ग) है। प्रायः वंकारान्त तथा वकारान्त स्त्रीलिंग तथा उकारान्त एवं एकारान्त पुल्लिङ्ग होते हैं, किन्तु इनमें भी अपवाद हैं । यहाँ संज्ञा पद

का लिंग निधारेण लौक प्रयोग पर आधारित है इसीलिए दश, कृष स्व
रत आदि का लिंग निधये संशयात्मा है ।

संज्ञा पद के साथ वचन का प्रयोग अनिवार्य है। इस जनद को
बोलो में एक वचन तथा बहुवचन का प्रयोग होता है। अपने लिए तथा अपने से
छोटों एवं पिछों के लिए एकवचन का प्रयोग होता है तथा अपने से बड़ों के
लिए तथा अधिक व्यक्तियों के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। एक वचन
से बहुवचन बनाने के लिए वन्, वन् तथा हैं सर्व जी प्रत्यय जोड़ते हैं ।

संज्ञा पदों के साथ बाकी प्रकार के शब्दों का प्रयोग होता है।
शेष-प्रकम्प के अन्तर्गत कानपुर जनद की बोलो में पाए जाने वाले सभी
शब्दों की प्रस्तुत कर उनके सिसा के विषय में भी उल्लेख किया गया है
तथा प्रयोग के साथ उदाहरण भी दिए गए हैं । इन बाकी शब्दों के अलावा
अन्य परसमोये शब्दों की उदाहरण सहित व्याख्या की गई है जैसे ली, ली,
कारन, लीर, पाछे, दिन आदि । इन सब का संस्कृत रूप भी दिया गया है।

३.२ सर्वनाम -

सर्वनाम की इस प्रकार के व्याकरणिक आधारों पर बाटकर उन्की
विस्तृत व्याख्या की गई है। यहाँ पुरुष वाचक सर्वनाम का सर्वाधिक प्रयोग
होता है। उन्म पुरुष वाचक सर्वनाम हैं की प्रायः बहुवचन के रूप में ही
प्रयोग करते हैं जैसे हम हमार आदि । मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम में भी
एकवचन का प्रयोग अपने से निम्न तथा हेय के लिए होता है तथा बहुवचन का
प्रयोग बराबर वालों एवं बड़ों के लिए होता है । अन्य पुरुष सर्वनाम का

प्रयोग किसी तीसरे तथा दूसरे को वस्तुओं के लिए होता है। इन सभी सर्वनामों की उत्पत्ति भी प्रस्तुत की गई है। कानपुर कण्ठ में निष्ठावाक सर्वनामों का प्रयोग भी मिलता है। जैसे- अपना, खुद, सीएम आदि। निष्ठावाक सर्वनाम में निष्ठा के लिए 'यह' तथा 'तु' के लिए 'वह' का प्रयोग करते हैं। अनिश्चय वाक्य सर्वनाम में प्रायः निर्वाच के लिए 'कुछ' तथा सजीव या व्यक्ति के लिए 'की' का प्रयोग मिलता है। सम्बन्धवाक्य सर्वनाम दो जोड़ वाक्यों के सम्बन्ध के प्रकट करते हैं। जैसे- जो-सी, जहाँ-कहाँ आदि। प्रश्नवाक्य सर्वनाम का प्रयोग किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रश्न आदि के लिए किया जाता है। जैसे क्या, कौन, कहाँ आदि। इस तीसरे-प्रश्नवाक्य में इनकी व्युत्पत्ति सहित विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

३.३ विशेषण

प्रस्तुत तीसरे-प्रश्नवाक्य में कानपुर कण्ठ में प्रयुक्त होने वाले सभी प्रकार के विशेषणों का विस्तार से विवेक किया गया है। यहाँ विशेषण के प्रायः साधारण और गुरु रूप प्राप्त होते हैं। यथा- गीर, बड़ा, छोटा (साधारण रूप) तथा गीरवा, बड़का, छोटा (गुरु रूप) आदि। यहाँ विशेषणों के कई प्रकार के प्रत्यय बाँटकर प्रयोग करते हैं जिनकी स्पष्ट व्याख्या की गई है।

इस कण्ठ के विशेषणों की संबंधित सर्वमान्य चार पैरों में प्रस्तुत किया गया है। रंग, रूप, दशा, काल आदि के लिए गुणवाक्य विशेषण का प्रयोग होता है। यथा- लालपूत, टेढ़ासी, पातर गाय, पुरातन बार्तें आदि। संख्यावाक्य विशेषण के मुख्य तीन उपपैरों - गणन वाक्य, क्रमांक तथा समूह वाक्य — में बाँटकर विस्तृत व्याख्या की ग

है। गणनावाक्य के अन्तर्गत पूर्ण तथा अपूर्ण के भेद की उदाहरण सहित प्रस्तुत किए गए हैं। जैसे- एक, दो, तीन, चार, पाठ (पूर्ण संख्या वाक्य) तथा पाव, बाधा, फना, (अपूर्ण संख्या वाक्य) आदि। क्रमांक के अन्तर्गत लिपियाँ, पखारों आदि के नाम आते हैं जैसे- पहिल, दूसर, तीसर तथा चौथा, दुबे, ताब आदि। समुच्चयवाक्य के अन्तर्गत समूह की प्रकट करनेवाली संख्या- जैसे गँडा, बीड़ो, दर्जन आदि आते हैं।

कानपुर कागद की बोलो में परिमाणवाक्य विशेषण का प्रयोग भी पर्याप्त है जिसका विस्तृत उत्प्रेक्षणीय शोध प्रबन्ध में लिया गया है। किसी वस्तु की मात्रा का बोध कराने के लिए- जैसे बाधा, पूरा, हठा, जिता आदि -- यह विशेषण आते हैं। भाप-तेल की हकाहर्गी एवं पैमाने हसी के अन्तर्गत आते हैं। साधनात्मिक विशेषण के अन्तर्गत वे सर्वनाम आते हैं जिनका प्रयोग विशेषण के रूप में होता है। इनके अन्तर्गत प्रायः अन्य पूरक वाक्य तथा प्रश्नवाक्य सर्वनाम भी विशेषण बनकर प्रयुक्त होते हैं। इन सबका व्युत्पत्ति सहित विशेषण प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के अन्तर्गत किया गया है। जैसे तो विशेषण प्रायः संज्ञा शब्दों से परते प्रयुक्त होते हैं ; किन्तु जब विशेषण पर विशेषण जोर देना होता है तब इन संज्ञा के धातु भी प्रयुक्त करते पाया जाता है। इन सभी भाषावैज्ञानिक सूक्ष्मताओं की शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय- क्रिया -विचार

४.१ क्रिया

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का ~~चतुर्थ~~ अध्याय क्रिया विचार का है जिसमें क्रिया की धातुओं, क्रिया के काल तथा सहायक क्रिया एवं संयुक्त

क्रिया की व्याख्या की गई है।

धातु-

क्रिया की धातुओं की अध्ययन को दृष्टि से दो वर्गों में विभाजित किया गया है- १ - मूलधातु तथा २- व्युत्पन्न धातु। सर्वप्रथम संस्कृत से बाहर हिन्दी की मूल धातुओं का व्युत्पत्ति सहित विरचोत्पाद किया गया है। यह लगभग ३०० धातुएं हैं- जैसे- बर्क (सं० बर्क), रूढ़ (सं० रूढ़), गठ् (सं० गृध), धे (सं० ग्रह), होत् (सं० हृद्), फूल् (सं० दीप्त), लस् (सं० लक्षणा), नहा (सं० स्ना), पीस् (सं० पिण्) पास् (सं० पाण्), लस (सं० लप्), सोस् (सं० सिद्) आदि समस्त धातुओं के वाक्य प्रयोग सहित व्याख्या की गई है। इनके अतिरिक्त संस्कृत से निक्ली उपसर्ग युक्त धातुओं का विवेक भी किया गया है। जैसे- बर्क (सं० बर्क- कर्), बर (सं० बर्क- धर्णा) उक्क (सं० उक्क-कृ) उम् (सं० उक्क-प्रिष्ट) पक्क (सं० प्र- जाप), कठ (सं० उप-विष्ट), पकड़ (सं० प्र- गृह्यत), लुक् (सं० लुक्-लुक्) आदि लगभग १०० धातुओं का व्युत्पत्ति उदाहरण सहित प्रस्तुत की गई हैं।

द्वितीय वर्ग में आने वाली हिन्दी की व्युत्पन्न धातुएं हैं जिनमें णिजंत या प्रेरणार्थक धातु के नाम से जाना जाता है। जैसे- सं-संवाच-संवाच आदि। बर-बरवाच-बरवाच आदि। इसी वर्ग के अन्तर्गत नाम धातुएं भी आती हैं जब इन नाम पदों के पीछे कुछ प्रत्यय जोड़ दिये जायें तो यह क्रिया रूप में आ जाते हैं। खा-खात-खातियाना, कुत-कुतियाना आदि हम्हों के अन्तर्गत अनुकरणात्मक धातुएं भी आती हैं। जैसे- कटकटा, गटागट, लट लट, लड़ लड़ आदि।

शोध-प्रबन्ध में उन धातुओं का भी परिचय दिया गया है जो फल धातु या नामधातु में किसी प्रत्यय के जोड़ने से बनता है जिन्हें प्रत्यय युक्त धातुएँ कहते हैं। वे- गट्, फट्, पट्, पिसत्, मिसत्, हुपट्, उम्ह, पुम्ह, बह्, लह्, पारस्, कर्त्तृ आदि। इन सभी फल धातुओं, व्युत्पन्न धातुओं तथा देशी धातुओं (जिनकी व्युत्पत्ति सीधे नहीं है) को शोध-प्रबन्ध में विस्तार से बतसाया गया है।

२- काल रचना-

क्रिया-विवार के अन्तर्गत क्रिया की काल रचना पर विशेष ध्यान दिया गया है। रूप-रचना को दृष्टि से फलाल एवं संयुक्त काल दो रूपों में बाँटकर व्याख्या की गई है। फलाल को इ: भागों में तथा संयुक्त काल को दस भागों में विभाजित कर प्राकरण सहित व्याख्या की गई है। इसी प्रकार सहायक क्रिया का भी उदाहरण सहित काल रचना प्रस्तुत किया गया है। पूर्व सहायक क्रिया की धातु 'हो' तथा अनियमित 'हूँ' एवं 'रह' रूप हैं जिनके काल के अनुसार रूप प्रस्तुत किए गए हैं। इन पूर्ण सहायक क्रियाओं के लगभग नौ रूप उदाहरण दिए गए हैं।

इसी अध्याय के अन्तर्गत रकाधिक क्रियाओं के अंग से की संयुक्त क्रियाओं की व्याख्या की गई है। इनके विकास के सम्बन्ध में विधानों के अन्त-अन्त रूपों में विभाजित किया है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में उन्हें चार वर्गों में विभाजित किया गया है। प्रथम वर्ग समावनार्थ कृदन्तों से बने रूपों का है जैसे रोपरी (विशदताबोधक), रखा सकी (शक्यताबोधक), पी चुकी (पूर्णताबोधक) आदि। द्वितीय वर्ग क्रिया की धातु + वी प्रत्यय का है जैसे उठाकर, बढाकर (बहुधा बोधक), पूरी वाहत, सुनीवाहत

(हल्काबोधक) बादि है। तीसरे कर्म में क्रियात्मक संज्ञा + लग, देन प्रत्यय की संयुक्त क्रियाएं हैं जैसे- बायि लाग (प्रारंभिकता बोधक), कुन देन (अनुमतिबोधक) बादि। चौथे कर्म में पूर्णता एवं अपूर्णताबोधक कृदंतों से कभी कुछ संयुक्त क्रियाएं जाती हैं जैसे- सोवत रहत (निर्ंतरताबोधक), ताबै रहै (प्रतिबोधक) बीत उठै (स्थिरताबोधक) बादि। प्रस्तुत शीघ्र प्रबन्ध में इन सभी क्रिया के व्याकरणिक बाधार्थों का विवेक दिया गया है।

४. २ अर्थव्यय

प्रस्तुत शीघ्र प्रबन्ध में चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत ही अर्थव्यय की परिभाषा देकर क्रमशः चार भागों में बाँट कर अध्ययन किया गया है-

१- क्रिया - विशेषण

इसके अन्तर्गत उन अर्थव्ययों की व्याख्या है जो क्रिया या घटना की विशेषता का बोध कराते हैं इन्हें भी कालवाचक, स्थानवाचक, प्रकारवाचक, परिमाणवाचक एवं दिशावाचक में विभाजित किया गया है जो क्रिया के पहले प्रयुक्त होकर अपना कार्य करते हैं। जैसे- मेरे, होर (स्थानवाचक), एकाएक, उधै (प्रकारवाचक), लन, पाहर (कालवाचक), किनु, बैसी (परिमाणवाचक) इहाँब, उहाँय (दिशावाचक)। यहाँ पर कुछ क्रिया-विशेषण सामान्यिक रूप में भी भिन्नते हैं। जैसे - दिने-दिन, झूठपूठ बादि इस तरह समस्त क्रिया-विशेषणों का विस्तार से विवेक है।

२- सम्बन्ध बोधक अर्थव्यय -

शीघ्र प्रबन्ध के अन्तर्गत सम्बन्धबोधक अर्थव्यय का परिचय दिया

नया है जोकि वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम के सम्बन्ध दूसरे पदों के साथ दर्शाते हैं। वहाँ इस बात का भी स्पष्ट विवेकन किया गया है कि सम्बन्ध बोधक अव्यय तथा स्वान्वयिक क्रियाविशेषण तनका एक हैं ; किन्तु प्रयोग में बँटकर रहता है सम्बन्ध बोधक अव्यय संज्ञा, सर्वनाम के सम्बन्ध को बतलाता है जबकि क्रियाविशेषण क्रिया की विशेषता को, जैसे-

पठो के मोतर फुलारी होई । (सम्बन्धबोधक अव्यय)

जसी पठो के मोतर बलित । (स्वान्वयिक क्रिया-विशेषण)

होव प्रबन्ध में इन सभी अव्ययों के प्रचलित रूपों का वर्णन किया गया है ।

३- समुच्चयबोधक अव्यय-

होव- प्रबन्ध के अन्तर्गत समुच्चयबोधक अव्ययों को दो भागों में बाँटकर अध्ययन किया गया है प्रथम समानाधिकारी समुच्चयबोधक अव्यय हैं जिसमें अन्तर्गत संयोजक, विभाजक एवं विकल्पसूचक अव्यय आते हैं जैसे और, वी, व (संयोजक) आदि । परन्तु (परन्तु), चाहे, नहीं तो, आदि (विभाजक) वा, नाकि, जववा आदि (विकल्पसूचक) हैं । दूसरा वर्ग बाणित या असमानाधिकारी समुच्चय बोधक का है जिसके द्वारा जसा कारण, परिणाम एवं उद्देश्य का पता चलता है जैसे - एही तात्तिर (परिणामसूचक), कहेकि (कारणसूचक), ताकि, बेहता आदि (उद्देश्यसूचक) हैं । इन समस्त शब्दों, वा यों जववा वाक्यसङ्घों का सम्बन्ध दर्शाने वाले अव्ययों को विस्तृत व्याख्या की गई है ।

४- विस्मयादि बोधक वा मनीमाव सूचक अव्यय -

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में इन अव्ययों के वन्तर्गत उन शब्दों का परिचय दिया गया है जिनके द्वारा किसी बोध के मन या हृदय के बाह्यक, शोक, लज्जा, भय या लुब्धे एवं घृणा आदि के भाव प्रकट होते हैं। जैसे बहा ! वाह ! श्याबाह (हर्षासूचक), हिः हिः , मु-मु (घृणासूचक), वायें, जी मय्या (बाह्यकसूचक) हाय राम, वाह! बाप रे ! (शोक या कष्टसूचक) आदि हैं। इसी के वन्तर्गत फल-पदियों के मनीमाव सूचक अव्ययों का भी परिचय दिया गया है जैसे मुन्-मुन् (बकरी को बुलाने हेतु), तु-तु (कुत्ते के लिए) बायें-बायें (मैस के हेतु) डी-डी- (सीटी बजाकर जानवर को पानी पिलाना) आदि। क्मा-क्मा कुछ संशर्त भी इन अव्ययों के वन्तर्गत आती है। यथा- राम-राम, शिव-शिव (घृणासूचक) आदि। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में इन सभी अव्यय शब्दों का विस्तार के साथ व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

पंचम अध्याय - वाक्यविचार

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में वक्ता एवं वक्ता के अध्याय वाक्य विचार का है। प्रस्तुत अध्याय में वाक्य को 6 परिभाषा की समझाते हुए इस जनपद में व्यवहृत वाक्यों की विशेषता को बतलाया गया है। जो कि इस जनपद में वाक्य प्रायः छोटे होते हैं किन्तु वाक्ताकार किसी तक्षिया क्लाम शब्द से पूरे क्लाम की रचना में जोड़े रहता है। वाक्यरक्ता पढ़ने पर यहाँ बड़े वाक्य भी मिलें जाते हैं। यहाँ वाक्यों का गठन प्रायः छोटी होती हिन्दी



की भाँति ही है। अर्थात् पहले स्तर्त फिर क्रिया अपना करता, स्व तथा क्रिया बाँदि। किन्तु जिस बात पर जोर देना होता है उसे ही उल्लेख प्रयुक्त करके भी बोलने की प्रवृत्ति है। यहाँ के वाक्यों में अज्ञात स्व सूत्र का भी पर्याप्त प्रभाव है वही कि कर्म पर जोर देना चाहता है उसी के जोर से जोर देकर बोलता है जैसे- राँकी न, जाय देव। राँकी, न जाय देव।

इस तरह अज्ञात से अर्थ परिवर्तन हो जाता है।

इस जनपद को बोलो में पाये जाने वाले वाक्यों के गठन में लक्ष्मी समस्त कारक तथा अन्य परसमाय शब्दों का प्रयोग भी होता है। इसी अध्याय के अन्तर्गत तत्कियाकस्तम् या पादपूर्व शब्दों की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गई है जो यहाँ के तीन प्रायः प्रयुक्त करते हैं। इसी के अन्तर्गत इस जनपद की वाम प्रचलित कहावतों एवं मुहावरों का वर्णन किया गया है जिसे यहाँ के तीन 'मूल' के नाम से जानते हैं।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत अन्त में वाक्यों की व्याख्यात्मक दृष्टि दृष्टि से तीन भागों में विभक्त कर अध्ययन का विषय बनाया गया है- (१) साधारण वाक्य (२) मिल वाक्य (३) संयुक्त वाक्य ।

जानपुर जनपद को बोलो में साधारण वाक्य भी दो तरह के होते हैं। एक उद्देश्य फलहीन जैसे बड़ही ? इसी प्रकार दूसरे विषय फलहीन वाक्य होते हैं जिनका उत्तर भी एक संबन्धीय होता है जैसे की माँझ बाँदि ।

विशेष वाक्यों को भी संज्ञा उपवाक्य, विशेष उपवाक्य तथा क्रियाविशेषण उपवाक्यों के भाँटकर विवक्षित किया गया है। इसी प्रकार संयुक्त वाक्य को विस्तार से विवक्षित किया गया है तथा उनके उदाहरण भी दिए गए हैं।

वाक्य-विचार के अन्तर्गत व्याकरणिय सिद्धान्तों के अतिरिक्त वक्ता जीता का प्रथम प्रक्रिया के आधार पर बाँटा गया है। प्राणा वक्ता-निष्क दृष्टि से इसे दो ज्यादा उपयुक्त माना गया है। प्रस्तुत शीघ्र-प्रबन्ध में यहाँ के कुछ अति प्रचलित पद - अर्थात् - (१) विश्वासूचक (२) निर्विषयसूचक (३) जाज्ञासूचक (४) प्रश्नसूचक (५) विस्मयसूचक (६) समाप्तासूचक (७) इच्छासूचक आदि दिए गये हैं तथा इन सबकी उदाहरण सहित व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

परिशिष्ट

शीघ्र-प्रबन्ध का अंतिम भाग परिशिष्ट के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसके अन्तर्गत सामग्री संस्करण के समय प्राप्त नमूनों को प्रस्तुत किया गया है। इन नमूनों की ध्वन्यात्मक एवं उच्चारणात्मक दृष्टि से पूर्णतया वैसे ही प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक नमूने के साथ वक्ता का नाम, उम्र तथा ग्राम (तहसील) जिला आदि का परिचय दिया गया है। इनमें सुनाई देने वाले लोक कथाओं के शीर्षक स्वयं शोधार्थी ने अपने अनुमान से रखे हैं।

यह नमूने लोक कथा एवं लोकगीत की रूपों में हैं। लोक कथाओं के शीर्षक तो हैं किन्तु लोकगीतों के शीर्षक प्रायः नहीं दिए गए क्योंकि

इसका बजटा की स्वयं इनका शीर्षक अज्ञात है । फिर भी विश्वास है कि बोली के नमूने अध्ययन में पूर्ण सहायक हैं।

ग्रन्थ के बिलुप्त अंश में सहायक-गुणों की सूची दी गई है ।
स्वर्णक लेख या संवादक का नाम, फिर पुस्तक का नाम इसके बाद प्रका-
शन संस्था एवं प्रकाशन काल का उल्लेख किया गया है ।

कानपुर जिले (जनपद) की बोली का रूपात्मक अध्ययन



अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ की

पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

—७७७७७७—

निर्देशक—

डा० गेंदालाल शर्मा

डी० लिट्०

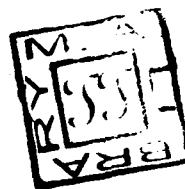
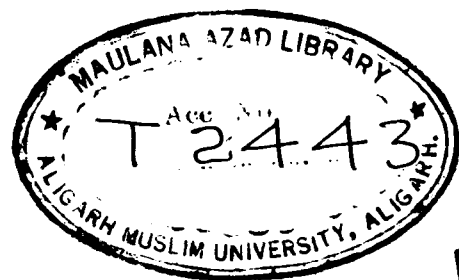
अनुसंधित्सु—

अमरसिंह सचान

एम० फिल्०



T2443



आत्म-निवेदन

वागार्थीक संप्रति वागर्थीक ।^१

कतः पितरौ वन्दे वागर्थी परमेश्वरी ॥१॥१॥१५०५०५०॥

महाकवि कालिदास के यहाँ से स्पष्ट है कि भारतीय विद्वानों ने बौद्ध (वागर्थी) के महत्त्व की प्रशंसा कात से ही करना किया है तथा वागर्थी की मानव समाज का प्राणतत्त्व स्वीकार किया है। उन्होंने वागर्थी के सौन्दर्य पदा की स्पष्ट रूप से उभारा है फिर भी कात प्रसार में वह मानवता में पड़ गई और हमें यह निःसंशय मानना पड़ेगा कि वागर्थी कात में बौद्ध या वागर्थी के वैज्ञानिक विवेचन की वर्तमान पद्धति पारंपार्य देशों को देना है ।

भारतीय भाषाओं को और अधिक सार्वजनिक शिक्षा, ज्ञान, व्यापक तथा टनी की परिकल्पना विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ । हिन्दी तथा उसके बोलियों के भाषावैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से सर शिक्षा का "सिद्धान्तिक सर्वोत्तम" महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें उन्होंने हिन्दी की लक्षण समस्त बोलियों का सम्यक् विवेक सौदाहरण प्रस्तुत किया है । इसके बाद अन्य भारतीय विद्वानों में डा० बीरेंद्र वर्मा, डा० बाबुराम बसन्त, डा० उदयनारायण तिवारी, डा० हरदेव बाहरी, डा० बन्नाप्रसाद "सुख", डा० गंगादास शर्मा, डा० कन्दमान रायत, डा० रंजित शर्मा, डा० रामस्वरूप बतुर्वीदी आदि ने कुछ हिन्दी बोलियों का अध्ययन

१- ब्रह्मचरि मित्र, कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य, प्रकरण, श्लोक १

किया है ।

हिन्दी भाषा को जैक बोल्गा वाच में जागामी अध्ययन एवं विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण बना हुआ है । इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए पूर्वी एवं पश्चिमी हिन्दी को प्रभावपूर्ण रूप से कानपुर जनपद (जिले) की बोली को प्रस्तुत अध्ययन का विषय बना गया है । अध्ययन की दृष्टि से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बोली सीमावर्ती बोलियों में प्रभावित है । इस जनपद की बोली अपने अक्षुण्ण सम्मिश्रण के बाद सर्वथा एक नई बोली के रूप में उभर कर सामने आती है । दूसरे वैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से अभी तक उपेक्षित रही है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध विषय की दृष्टि से प्रमुख ६ शीर्षकों में विभक्त किया गया है । सर्वप्रथम विषय-प्रवेश के अन्तर्गत कानपुर जनपद (जिले) का सामान्य परिचय दिया गया है । इसमें जनपद के नामकरण के साथ इसकी ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं भाषा मौखिक परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय में विषय-विवेक वैज्ञानिक दृष्टि से ध्वनि विचार शीर्षक के अन्तर्गत जिले की बोली में प्रयुक्त ध्वनियाँ (स्वर, व्यंजन) वा सव्यक् एवं सौदाहरण किरतैणण है तथा इसी अध्याय के अन्तर्गत प्रायः प्रमुख ध्वन्यात्मक स्वप्नस्थितियाँ (ध्वनिग्रन्थ, ध्वनि-परिवर्तन, लोप, वागम एवं विपर्यय आदि) का किरतैणण किया गया है ।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत व्याकरणिक रूपों में संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण का विवेक प्रस्तुत है। संज्ञा के अन्तर्गत लिंग, वचन, आरक तथा सर्वनाम में सर्वनाम के भेद एवं विशेषण के अन्तर्गत विशेषण के भेद आदि का विवेक प्रस्तुत है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत पातु एवं क्रिया पदों का परिचय एवं प्रयोग प्रस्तुत है तथा क्रिया के विविध रूपों (काल, सहायक-क्रिया एवं संयुक्त (क्रिया) पर व्यापक प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय "वाक्य -विचार" सम्बन्धी है, जिसमें कानपुर बनपद के प्रचलित लक्ष्यास्तरापी, मुहावरों एवं कहावतों पर तर्दीप में प्रकाश डालते हुए वाक्य के व्याकरणार्थक एवं भाषावैज्ञानिक पैद प्रस्तुत किए गये हैं।

शोध-प्रबन्ध के अंतिम अध्याय को परिशिष्ट के रूप में रखा गया है जिसमें संकलित सामग्री के कुछ नमूनों को रखा गया है जिसके आधार पर इस जिले की बोली का विरलेणण किया गया है।

उपयुक्त सामग्री के साथ इस बात का परसक प्रयत्न किया गया है कि बोलो के नमूने एवं उनका विरलेणण अधिकाधिक मौलिक एवं प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

इस बोली के महत्त्वपूर्ण, नवीन एवं मौलिक विषय के प्रति नद्वेय डा० नैदालात बी शर्मा, डी०एल्टू० ने सर्वप्रथम अध्ययन की सीमा निर्धारित कर, विषय की अनुमणिका तैयार करार, अध्ययन के मौलिक एवं वैज्ञानिक विवेक की पद्धति को स्पष्ट करते हुए बोली को संरचना में व्यावहारिक एवं प्रायोगिक रूप के अध्ययन को प्रवृत्ति जागृत की। तदर्थ मुझे प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को पुष्टमूमि के लिए अपने ही निर्देशन में "तिरहाड बोली का वर्णमा-त्मक अध्ययन" विषय पर एक०फिल० उपाधि हेतु शोधकार्य सम्पन्न कराया।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का भी संपूर्ण ^{मेरा} डा० शर्मा को है जिनके सफल निर्देशन, विषय - विवेक, विरलेणण, सदुपयोग एवं जातमीयता का

हा सुपरिणाम है जिसके लिए मैं हृदय से सदैव उनका आभारी रहूँगा। साथ ही साथ विमानाध्यक्ष डा० प्रेम स्वर्ण गुप्त का भी आभारी हूँ जिसका स्नेह, आशीर्वाद एवं सहयोग सर्वत्र प्राप्त रहा है। इनके अतिरिक्त प्रातः स्मरणीय श्रेष्ठ डा० हरकृष्णलाल जो शर्मा (कुलपति, मुन्देसलण्ड विश्वविद्यालय, फार्मा) तथा पण्डित माताजी का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने बार-बार प्रेरित करके इस शोध-प्रबन्ध को यथाशक्ति पूरित कराया। शोधार्थ लेसन में शोधार्थी ने जिन विद्वानों की कृतियों से लाभ उठाया है उनका भी नतमस्तक हो आभार प्रकट करता है।

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध को मौलिक साधनों संकलन हेतु पूर्णतः संपूर्ण जनपद के गाँव-गाँवों को पदपात्रा भी करना पड़ा है। फलस्वरूप बीला के लोक जीवन के वास्तविक प्रयोगी एवं व्यवहारों स्वयं की निज से सुनने, समझने, परखने एवं विश्लेषण करने का प्रायोगिक आधार प्राप्त हुआ है। इस साधनों संकलन में अनंतर जिन बहुत से लोगों ने सहयोग दिया बिना नाम गिना जाना असंभव है, शोधार्थी उनका हृदय से आभार मानता है। शोधार्थी को इसी जनपद के सुजौर (सुजौरिया) ग्राम का वासी होने का सौभाग्य प्राप्त है, अतः वह निरभिमान कह सकता है कि बीला के बन्तसू एवं बाह्य स्वयं की समझने में उसकी अभिव्यक्ति प्रायोगिक एवं तथ्यपूर्ण है।

-किरीत

बमर सिंह सचान

एम० ए०, एम० फिल०

विषय-सूची

प्रथम अध्याय

पृष्ठानि

विषय-प्रवेश

11—51

कानपुर काव्य का परिचय

१.१	भांगीतिक परिचय	12
१.२	कवपद का नामकरण	17
१.३	कवपद का ऐतिहासिक परिचय	27
१.४	कवपद की साहित्यिक प्रतिमार्ग	38
१.५	कवपद की लोक-संस्कृति एवं लोक-साहित्य	43
१.६	भांगीतिक एवं भांगानत विशेषताएं	48

द्वितीय अध्याय

ध्वनि विचार

53—96

२.१	मूल स्वर	54
२.२	अध्वनि	62
२.३	संयुक्त अध्वनि	78
२.४	कण्ठोत्तर ध्वनि ग्राम	84
२.५	तौष	90
२.६	वागम	93
२.७	विपर्यय	96

तृतीय अध्याय

इयं विचार

98—142

३.१	<u>संज्ञा</u>	
	३.१.१ लिंग	102
	३.१.२ वचन	106
	३.१.३ कारक	109
३.२	<u>सर्वनाम</u>	115
	३.२.१ पुरुषवाचक सर्वनाम	116
	३.२.२ निस्ववाचक सर्वनाम	121
	३.२.३ निश्चयवाचक सर्वनाम	122
	३.२.४ अनिश्चयवाचक सर्वनाम	122
	३.२.५ सम्बन्धवाचक सर्वनाम	123
	३.२.६ प्रत्ययवाचक सर्वनाम	125
३.३	<u>विशेषण</u>	126
	३.३.१ गुणवाचक विशेषण	130
	३.३.२ संख्यावाचक विशेषण	130
	३.३.३ परिमाणवाचक विशेषण	138
	३.३.४ सावर्ण्यवाचक विशेषण	140

चतुर्थ अध्याय

क्रियापद-विचार

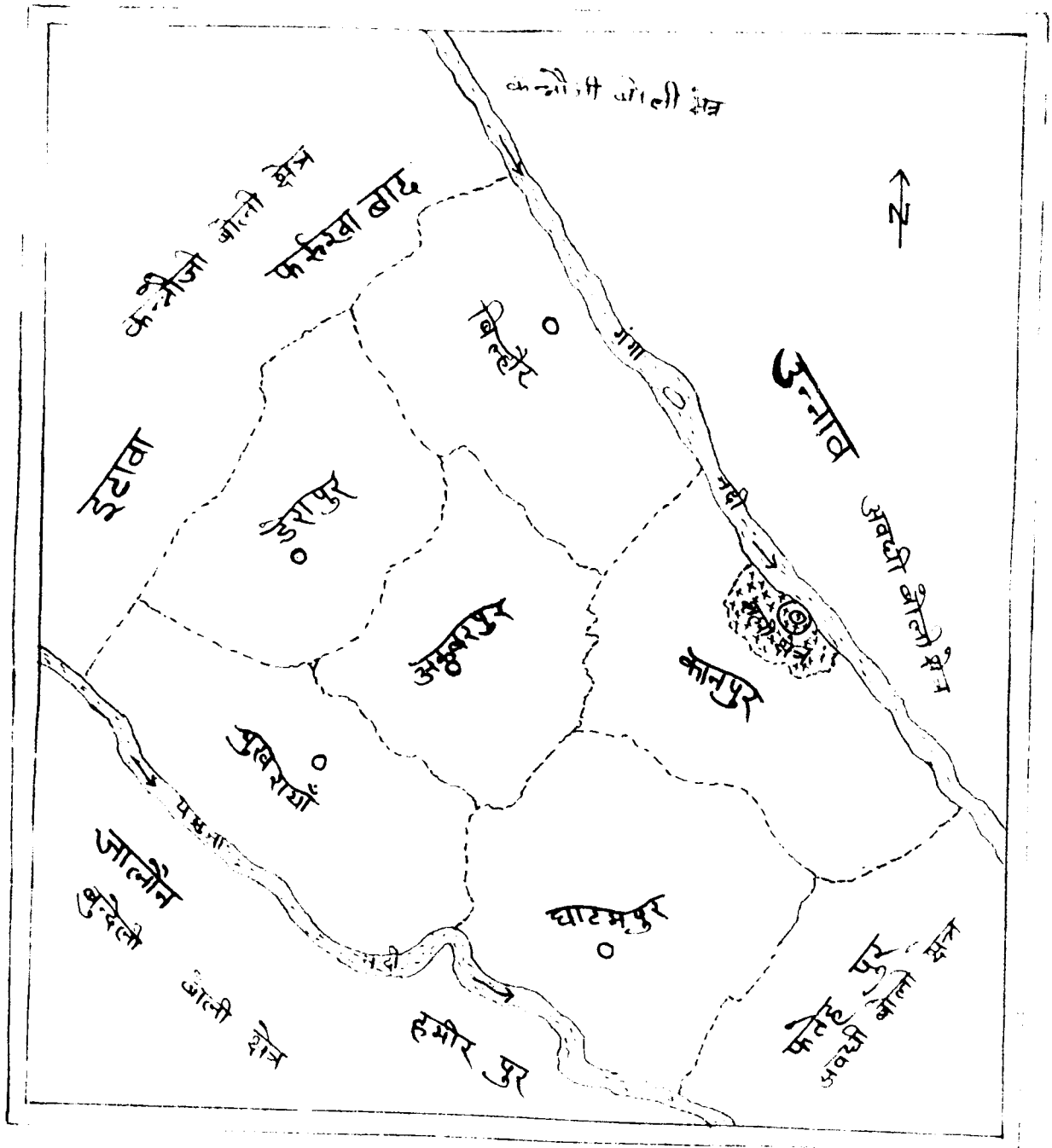
144 - 200

४.१ क्रिया

४.१.१ धातु

144

४.१.१.१	मूल्यातु	144
४.१.१.२	व्युत्पन्न वातु	172
४.१.१.३	संदिग्ध व्युत्पत्ति वाते वपवा वैरो वातु पद	175
४.१.२	<u>काल रचना</u>	177
४.१.२.१	मूलकाल या साधारण काल	179
४.१.२.२	संयुक्त काल	182
४.१.३	<u>सहायक क्रिया</u>	185
४.१.४	<u>संयुक्त क्रियार्थ</u>	188
४.२	<u>वच्यय</u>	193
४.२.१	क्रिया विशेषण	195
४.२.२	सम्बन्ध बोधक	197
४.२.३	समुच्चय बोधक	198
४.२.४	विस्मयादि बोधक	199
परिम वध्याव *****		
<u>वाक्य-विचार</u>		202 — 222
५.१	साधारण वाक्य	215
५.२	मित्र वाक्य	217
५.३	संयुक्त वाक्य	218
<u>परिशिष्ट</u> *****		
१- बीला के नामे	: (१) लोक क्यार्थ	224
	(२) लोकगोत	251
२- सहायक-गर्भ-सूची		265



कानपुर ज़िले (जनपद) का मानचित्र

विशेष संकेत चिह्नों की सूची

ॐ	उदासीन स्वर
—	इस्वर इस्वर स्वर
.	वर्णों के नाबे स्वरहीन उच्चारण
७	विनास चिह्न
√	वातु
+	संयुक्त व्यंजन
प्रा०मा०वा०	प्राचीन भारतीय ब्राह्मण भाषा
म०मा०वा०	मध्यकालीन भारतीय ब्राह्मण भाषा
सं०	संस्कृत
.	उच्चारण चिह्न

नोट- टंकण यंत्र की कमी के कारण अनुस्वार बिन्दु (') मूल वर्णों से दाहिने टीकित हुआ है ।

प्रथम अध्याय

कानपुर कानपद का परिचय

विषय-प्रवेश

कानपुर कानपद का परिचय

- १.१ भाषाशास्त्रिक परिचय
- १.२ कानपद का नामकरण
- १.३ कानपद का ऐतिहासिक परिचय
- १.४ कानपद का साहित्यिक प्रतिपादन
- १.५ कानपद का लोक-संस्कृति एवं लोक-साहित्य
- १.६ भाषाशास्त्रिक एवं भाषाशास्त्रिक विवेचनातः

प्रथम अध्याय

विषय-प्रवेश

कानपुर जनपद का सामान्य परिचय

जम्बूद्वीपान्तर्गत भारत खण्ड के बायाँवर्ती प्रदेश में गंगा-जमुना जैसी महान् पवित्र नदियों से अभिर्भूक्ति, अन्तर्वेद में स्थित, यह भूभाग भारतीय एवं मानवीय संस्कृति और इतिहास के स्वर्णिम युगों का निपाता रहा है। बहुत सी इतिहास की गहरों, धूलों और जालीकषण रैलाहें यह अपने वंश में छिपाए हैं जो बाज इतिहास के लिए रहस्य और प्रश्नचिह्न बनकर रह गई हैं।

प्राचीन युग से लेकर आधुनिक युग तक कानपुर जनपद का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है। यहाँ की पावन-भूमि में गंगा के किनारे प्रथम कवि के उद्गार व्यक्त हुए थे। बादि कवि महर्षि वाल्मीकि ने यहाँ पर पहला बायाँहिन्द प्रकट कर अपनी कलुषा की काव्य रूप प्रदान किया था -

“मा निनाद ! प्रतिष्ठां त्वक्वामः शारवतीः समाः
यत्क्रीँच मिष्टादेक्य वयोः काम मोहिताम् ।”

महर्षि ने यहाँ पर रामायण नामक महाकाव्य की रचना की थी। मावान् राम के लव और कुश नामक दो पुत्रों का जन्म भी इसी जनपद में हुआ था। यह जनपद अपने धार्मिक स्थलों के लिए सारे भारत में बाज भी प्रसिद्ध है।

कानपुर जनपद हलाहाबाद प्रेक्ष के उत्तरी-पश्चिमी कोने में स्थित अपने औद्योगिक विस्तार के कारण औद्योगिक महानगर के रूप में भारत ही नहीं, विश्व में प्रसिद्ध है।

१- भौगोलिक परिचय

२- जनपद का नामकरण

१- भौगोलिक परिचय(१) सीमारे -

गंगा-यमुना नदियों के दोबारे में बना हुआ यह इलाहाबाद मण्डल का एक मुख्य जिला है। कानपुर जनपद के उत्तर की सीमा गंगा नदी द्वारा बनाई जाती है जिसके उत्तर में उन्नाव एवं हरदोई जनपद आते हैं। दक्षिण की सीमा यमुना नदी द्वारा निर्धारित होती है जिसके दक्षिण में हमीरपुर एवं बालीन जनपद आते हैं। इसके पूर्व की सीमा पर फतेहपुर जनपद तथा पश्चिम में हटावा एवं कलखोबाद जनपद इसकी सीमा से मिलते हैं।

कानपुर शहर इलाहाबाद शहर से लगभग १८० किमी० दूर उत्तर-पश्चिम तथा प्रदेश की राजधानी लखनऊ से ७० किमी० दूर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह जनपद अपना स्थापित के अनुसार मध्य-उत्तर प्रदेश में आता है।^१

(२) विस्तार एवं क्षेत्रफल -

कानपुर मेट्रोपिटन के अनुसार यह जनपद उत्तर से दक्षिण ७० मील लम्बा तथा पूर्व से पश्चिम की ओर ६५ मील चौड़ा है तथा इसका कुल क्षेत्रफल २३६१.६६ वर्गमास है।^२

१- कानपुर मेट्रोपिटन, पृ० २०

२- वही- पृ० ०१

नई भौगोलिक स्थिति के अनुसार कानपुर जनपद की सीमाएं लगभग वही हैं बताते ऊपर से दक्षिण ११२ किलोमीटर लम्बाई तथा पूर्व से पश्चिम १०४ किलोमीटर चौड़ाई है। पश्चिम की ओर इसकी चौड़ाई अधिक तथा पूर्व की ओर इसकी चौड़ाई कम है। इस प्रकार इसका कुल क्षेत्रफल लगभग ६,२१०.०३ किलोमीटर है।^१

कानपुर जनपद २५ अंश २६' उत्तरी अक्षांश से लेकर २६ अंश ५८' उत्तरी अक्षांश तक तथा ७९ अंश ३१' पूर्वी देशान्तर से लेकर ८० अंश ३४' पूर्वी देशान्तर तक लगभग बायताकार स्थिति में फैला हुआ है।^२

कानपुर जनपद में प्रतिवर्ष गंगा-यमुना एवं उनकी सहायक नदियाँ बने साथ बहुत सा उपजाऊ मिट्टी लाकर यहाँ की भूमि को उर्वर बनाती रहती हैं। इसकी वीरस भूमि में लेतो अधिक होते हैं। इस जनपद की प्राकृतिक ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की है। कानपुर जनपद की समस्त भूमि १५,११,४६१ वर्ग एकड़ है। यहाँ नदियों के किारों को भूमि असमस्त एवं कृषि के अयोग्य है ; किन्तु फिर भी एक फसली उपयोग में लाई जाती है। अब सरकारी प्रयत्नों एवं विभिन्न योजनाओं के द्वारा दिन-पर-दिन भूमि समस्त होती जा रही है।

कानपुर नवेलियर के अनुसार सन् १९०६-०७ में कुल भूमि का १५.४९ प्रतिशत भाग कृषि योग्य था बताते ८,१२,५७० एकड़ भूमि में कृषि होती थी। परन्तु जब ऊपर एवं बोझ के सादरों का सुधार होने के बाद लगभग ८० प्रतिशत भूमि पर कृषि हो रही है।

१- सरत प्रौल कानपुर, पृ० ७

२- कानपुर नवेलियर, पृ० १

३- नवी- पृ० २६

३- जनसंख्या-

सन् १९०१ ई० में सम्पूर्ण कानपुर जनपद की जनसंख्या का बीसत, कानपुर नवैटियर के अनुसार, ५२८ व्यक्ति प्रतिवर्ग मील था। उस समय सम्स्त जनपद की जनसंख्या १२,५८,८६८ व्यक्ति थी।^१

कानपुर जनपद की उपजाऊ भूमि तथा शहर के औद्योगिक विकास के कारण जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई, अतः सन् १९८१ की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या लगभग ४७ लाख थी। कानपुर मुख्य शहर की जनसंख्या २२ लाख था, शेष जनसंख्या कस्बों एवं गाँवों की थी।

४- प्राकृतिक बाजार -

कानपुर जनपद की हम प्राकृतिक बाजार पर तीन मार्गों में विभक्त कर सकते हैं। यहाँ का मौसम उषर भारत की तरह गर्मी, वर्षा तथा जाड़े के रूप में एक वर्ष की अवधि की पूरा करता है। इस जनपद की भूमि नदियों द्वारा लार्ह मिट्टी से ढकी है, अतः स्थूल बाजार पर तीन प्रकार से जान सकते हैं-

- १- नदियों द्वारा लार्ह गर्ह मिट्टी।
- २- खण्डाली मिट्टी।
- ३- रेंखाली मिट्टी।

नदियों द्वारा लार्ह गर्ह मिट्टी काँप मिट्टी कहलाता है जो अत्यन्त उपजाऊ एवं छेती के योग्य होता है जिसमें गेहूँ, सब्जो बादि

पेदा किया जाता है। कंकड़ वाली मिट्टी के अन्तर्गत जनपद के पहाड़ एवं टोले होते हैं। जिन पर ऊँचा उग बाया है, बाज भूमि सुधार के द्वारा कृषि योग्य बनाये जा रहे हैं। यह पुत्रायाँ, डेरापुर तथा अम्बरपुर तहसीलों में अधिक है। रेंहवाली मिट्टी इस जनपद में काफी विस्तृत है जो सूने के कारण खंजर बनकर वनस्पतिविहीन मैदान के रूप में पड़ी हुई है। घाटमपुर, अम्बरपुर, बिल्हौर तहसीलें प्रमुख हैं। बाज इनमें भी सुधार हो रहा है।

(५) नदियाँ और झीलें -

क- गंगा और उसकी सहायक नदियाँ-

कानपुर जनपद के उत्तर से होकर गुजरने वाली गंगा नदी भारतवर्ष की प्रसिद्ध एवं पवित्र नदी है। यह फर्रुखाबाद जनपद की ओर से प्रवेश कर जनपद की उत्तरी सीमा बनाती हुई फतेहपुर जनपद में प्रवेश कर "प्रयाग" की ओर बह जाती है। कानपुर शहर के पैयजल एवं सिंचाई के लिए इसके जल का उपयोग किया जाता है। यह बाघायात का साधन तथा वर्षा भर बहनेवाली नदी है। इसके किनारे कई घाट एवं पवित्र मंदिर भी हैं।

गंगा की सहायक नदियों में हसन नदी प्रमुख है जो कलीगढ़ से निकलकर फर्रुखाबाद जनपद की ओर से प्रविष्ट होकर बिल्हौर तहसील की सीमाओं को छुई गंगा नदी में मिल जाती है। कानपुर से ही निकली उत्तरी सीमा नदी बिंदू के पास गंगा में मिल जाती है जिसका उद्गम स्थल नदीहा का फावड़ा है।

ख- यमुना और उसकी सहायक नदियाँ -

कानपुर जनपद के दक्षिण से गुजरने वाली प्रमुख दूसरी नदी यमुना है जो इटावा जनपद से कानपुर जनपद में प्रवेश करती है तथा जनपद की

दक्षिणी सीमा बनाती छुं फतेहपुर जलपद में प्रवेश कर जाती है।

यमुना की प्रमुख सहायक नदी रिन्द है जो इटावा में होती छुं कानपुर में प्रवेश कर जलपद के मध्यभाग में गुजरती छुं फतेहपुर जलपद में प्रवेश कर यमुना से मिल जाती है। इसके किनारे राजा बरगल के बन्दार कई पीढ़ों में है। यमुना की प्रमुख दूसरी सहायक नदी सेंगुर है जो इटावा जिले में कानपुर जलपद में प्रवेश करता है तथा डेरपुर एवं पुष्कराया तहसीलों से गुजर कर यमुना में मिल जाती है। इसके किनारे सधन मेल तथा कुर्वाणा कृषि का तपोभूमि है। इसके अलावा नोन नदी है जो बक्सरपुर तथा घाटमपुर से होकर यमुना में मिल जाती है। यह वणविहीन नदी नहीं है।

कानपुर जलपद में कुछ फीलों तथा फावड़ों में हैं जिनमें बरसात का पानी भर जाता है तथा धान एवं सिंघाड़ों को खेती की जाती है। इनमें मत्स्य पालन भी होता है। कानपुर जलपद की प्रमुख फीलों निम्नलिखित हैं-

<u>तहसील</u>	<u>फील का नाम</u>
कानपुर	महरिहा तथा रत्नस
बिल्हौर	बारामऊ तथा नदाहा
बक्सरपुर	गौमऊ (गौमोऊ) जलथर
घाटमपुर	बलहापारा, बरहनेड़, जलीरा- बाद
पुष्कराया	सिन्दुरा, सोनी सगर

इन प्रमुख फीलों के अलावा कानपुर जलपद में अन्य कई फीलों हैं- जैसे- लाल खोह, इटावी बादि जिनमें मत्स्यपालन एवं सिंघाड़ों को

सेता होती है ।^१

२- जनपद का नामकरण -

कानपुर शहर गंगा नदी के दाहिने किनारे पर बसा हुआ है । कानपुर के नामकरण के सम्बन्ध में लोगों के अलग-अलग विचार हैं । इसके नामकरण के इतिहास के विषय में कन्धुतियाँ हो अधिक हैं, ठीस प्रमाण बतल जल्प हैं । अतः इनके बाधारे पर यहाँ के निवासियों के मो नामकरण के सम्बन्ध में अलग-अलग मत हैं । इसके नामोत्पत्ति के सम्बन्ध में लोगों की अल्प विस्तृत जानकारी है जिसे अत्रायाणिक हो माना जा रहा । कुछ लोगों का कहना है कि कानपुर का नाम मगवान् प्रोक्षणा के दूसरे नाम 'कान्हा' या 'कन्हा' के बाधारे पर 'कान्हापुर' या 'कान्हापुर' से 'कानपुर' बन गया है ।^२ लेकिन इसके कोई प्रमाण नहीं है कि प्रोक्षणा जो यहाँ कहीं बाएँ स्थानों पर उनका कर्मक्षेत्र पुरातन प्रदेश (मथुरा) और गुरुक्षेत्र हो था ।

दूसरे लोगों का विचार है कि मगवान् राम के पुत्र 'त्व' और 'कु', जो यहाँ बिठूर में बाल्मीकि वात्रम में पैदा हुए थे, के काहेदन संस्कार पर यहाँ का नाम 'कर्णपुर' या 'कर्णपुरम्' पड़ गया जो कालान्तर में धीरे-धीरे लिखकर 'कानपुर' बन गया । ऐतिहासिकता कुछ मो ही किन्तु यह किंवदन्ती काफी सत्यापानित है क्योंकि विद्वानों ने त्वकु के जन्य स्थान बिठूर (बाल्मीकि वात्रम) को स्वीकार कर लिया है । अतएव कर्णहेदन संस्कार सभ्य है तथा 'कर्णपुर' या 'कर्णपुरम्' का कानपुर हो जाना भी स्वाभाविक है ।^३

१- कानपुर नवौटिया, पृ० १२

२- जिले का सरत मूल, पृ० ३५

३- नही- पृ० ३५

सुपरिचित प्रकार एवं लेखकों रामायणतार वगैरहोत्री जो नै
 "देविक जागरण-रजत कर्णों" बंके में गानपुर के नामकरण के सम्बन्ध में उप-
 युक्त मतों की जानने के साथ निम्न विचार प्रस्तुत किए हैं- "व्यास जी
 शैरवामी द्वारा लिखित एक फारसी ग्रंथ में "कान्हेपुर" शब्द का प्रयोग
 किया गया है। संभवतः उसका फिड़ा हुआ रूप कानपुर है। इतिहास से
 ज्ञात होता है कि सन् १४४० ई० में बहलोल लोदी ने जौनपुर के बादशाह को
 परास्त किया था उसने जाते हुए तख्तगढ़ व कालपी के बीच अपने दोस्तों को
 जामौर के रूप में सौंपा।

नगर के नामकरण के सम्बन्ध में दो जनश्रुतियाँ बड़ी प्रसिद्ध हैं।
 कुछ लोगों का विश्वास है कि गृष्ण मवान् का कर्ण मदन संस्कार यहाँ
 हुआ था और तभी से इसका नाम कानपुर है। किन्तु इतिहासकार इसे और
 कल्पनामात्र मानते हैं। "जारी से कानपुर" के लेखकों की दृष्टि से लाल मानते
 हैं कि गानपुर को बसाने का त्रैलोक्यो के राजा हिन्दू सिंह की है। उन्होंने
 लिखा है कि जन्माष्टमी के दिन राजा हिन्दू सिंह गंगा स्नान करते जाएं
 तथा पवित्र एवं रम्यस्थलों देकर बहुत प्रभावित हुए। पूर्णरित ने बताया
 कि बाब को शुभ मुहूर्त में बसाया गया गाँव एक दिन विश्व में प्रसिद्ध
 होगा। फलतः हिन्दू सिंह ने रम्हेंपुर के राजा फर्रयाससिंह को गाँव बसाने
 की आज्ञा दी जिसके फलस्वरूप "कान्हेपुर" की स्थापना हुई।^१

जो कुछ भी हो, किन्तु यह सत्य है कि बाब का कान्हेपुर पुराना
 "कान्हेपुर" है।

"कान्हेपुर" मौजा आजमगढ़ परगने के अन्तर्गत एक गाँव था। इस
 गाँव का एकदारी के सम्बन्ध में दुबे वंश ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में सन्

१९१७ ई० में एक अपोल पैर को जिसके बकोल स्व० नं० मोतीलाल नेहरू तथा स्व० डा० काटजू थे। उक्त मुद्रमा के कामजाती में लिखा है कि सन् १९१७ ई० से ७०० वर्ष पूर्व राजा 'कान्देव' कन्नौज से प्रयाग जाते समय यहाँ ठहरें थे। इस पड़ाव को 'कान्देवपुर' की संज्ञा मिली जो बाद में एक सुन्दर गाँव बन गया। ** १

उक्त तथ्यों पर निर्विवाद रूप से प्रमाणित हो जाता है कि कानपुर का पुराना नाम 'कान्देवपुर' या 'कन्नौपुर' है। कुछ लोगों के अनुसार दुर्योधन ने यहाँ कर्ण को बसाया था, अतः इसका नाम कन्नौपुर पड़ गया। इस किंवदन्ती से एक तथ्य सामने आता है कि दुर्योधन ने कर्ण को कौंदेश (बाज मानसपुर) का राजा बनाया, जैसा कि महाभारत में उल्लेख है^१ -

यथर्व फाल्गुनी युद्धे नाराज्ञायोऽभिच्यति

तस्मादेकां ह्येव विजयेन्मया राज्येऽभिचिच्यते ॥३६॥

यदि कर्ण को कौं देश का राजा बनाया गया होगा तो बहुत संभव है कौंदेश जाते-जाते कर्ण ने इसे बसाया हो, जो 'कन्नौपुर' से कानपुर बन गया।

कानपुर के नामोल्लेख के सम्बन्ध में एक और किंवदन्ती बाज भी प्रचलित है जो इस नाम की सत्यता प्रमाणित करती है। सन् १७१८ ई० में लोहों ने अपनी फौजी हावनी बिल्हाम के पास फौजपुर से हटा कर कानपुर में स्थापित की। पहले तो वह बुरी दीवार में थी, बाद में हावनी दीवार में लार्ड मर^२। कैम्पों में फौज रहती है, अतः कैम्पों की कैम्प = कम्प कैम्पू या कम्प रहने लगे बाज भी देशाती में कानपुर की 'कम्पू'

१- रामायणतार अग्निहोत्रो, रक्त जयन्ती, वैश्व जगदण, पृ० १३३

२- महाभारत (हिन्दी अनुवाद) वादि पर्व १३५, अय्य० ३६ श्लोक, पृ० ४१२

रहते हैं।^१ सन् १८०१ ई० में कानपुर की नगर व जिला घोषित किया गया।

शासन-प्रबन्ध -

समस्त जनपद का शासन जिलाधीन द्वारा संचालित होता है।
यही गहरा का सबसे बड़ा अधिकारी होता है।

जनपद को न्याय-व्यवस्था न्यायपालिका करती है तथा
शांति व्यवस्था के लिए पुलिस का प्रबन्ध रहता है। पुलिस अधीक्षक इसका
सबसे बड़ा अधिकारी होता है।

शासन की सुविधा को ध्यान में रखकर कानपुर जनपद को
इ: तहसीलों में बांटा गया है। गजेटियर (१९०७) के अनुसार भी जनपद को
इ: तहसीलों की किन्तु उस समय कानपुर तहसील के स्थान पर नरवल तहसील
थी।^२ कानपुर जनपद में निम्न इ: तहसीलें हैं--

- १- कानपुर तहसील
- २- पिलहौर तहसील
- ३- ठेरापुर तहसील
- ४- बकवरपुर तहसील
- ५- पुतरायी तहसील
- ६- घाटमपुर तहसील

समस्त जनपद की "स्थानीय भाषा" के अध्ययन के लिए
उसकी तहसीलों एवं उनके अन्तर्गत जाने वाले कस्बों आदि के विषय में अल्प-

१- राजलु सक्तिवाहन, बुधबल्लु स्वामी, पृ० १

२- कानपुर गजेटियर पृ० ३९५

विस्तृत परिचय कर लेना बहि आवश्यक है, अतः बाने सभी तहसीलों का
क्रमिक विवेक प्रस्तुत है-

(१) कानपुर तहसील -

कानपुर तहसील के अन्तर्गत कानपुर शहर का विवरण नहीं
प्रस्तुत किया जा रहा है क्योंकि यह औद्योगिक नगर स्वयं विश्व प्रसिद्ध की
प्राप्त है तथा यहाँ सड़ा बोली का बोझो मिश्रित रूप बोला जाता है। इस
तहसील के अन्तर्गत बाहर से बाने वाले क्षेत्र जिसमें उधर में गंगा नदी, बदायुण
में घाटमपुर तहसील, पूर्व में फातेहपुर जमिंदार तथा पश्चिम में बकवरपुर एवं
बिल्हौर तहसीलों की सीमाओं तक कानपुर तहसील स्थित है। यहाँ की प्राकृ-
तिक विशेषताएँ समस्त जिले की होती हैं। इस तहसील के अन्तर्गत बाने वाले
कई महत्त्वपूर्ण कस्बे हैं। कल्यानपुर जो ०८०० रौंड पर स्थित प्रमुख कस्बा है,
वहाँ रेल्वे स्टेशन, जहाँ ०८०००० कालेज, शकरी संस्थान, विश्वविद्यालय आदि
हैं। इसके अतिरिक्त कई भिन्न तथा पारलाने भी हैं।

इस तहसील के पूर्व में स्थित दूसरा कस्बा नरस है जो अजीजी
शासन में कानपुर की तहसील रहा चुका है। धाना, कालेज, डाकघर तथा
स्व० गणेश शंकर जो द्वारा संचालित सादी वागम भी है। कानपुर तहसील के
पश्चिम में सुप्रसिद्ध तीर्थ बिन्दू स्थित है जो "बाल्मीकि वागम" तथा "सप्त
कुल" के जन्म स्थान के नाम से प्रसिद्ध है। नानाराम काकिला तथा तात्याटोंवे
का मन्दिर यहाँ पर है।

कानपुर तहसील के पूर्व में सुप्रसिद्ध तीर्थ बापलान है। यहाँ
सिद्धादेवी तथा कम्हें की फाँटारियाँ हैं। इसके अलावा फकी में
हनुमान का मंदिर, सरसौल, महाराजपुर, सचेंडी, विधनु, विनौर, मौंती,

ठेरासा, कनपुर आदि जहाँ छोटे-छोटे स्तम्भ हैं।

(२) बिल्हौर तहसील -

कानपुर जनपद के उत्तर-पश्चिम में बिल्हौर तहसील स्थित है। इसके उत्तर में उन्नाव जिल्ला व हरदोई जनपद, दक्षिण में बकुवरपुर एवं ठेरा-पुर तहसीलें, पूर्व में कानपुर तहसील तथा पश्चिम में फारुखाबाद जनपद की कन्नौज तहसील आती है। यह जालंधार रोड पर स्थित पूर्णचंद्र रेलवे का स्टेशन एवं जनपद की प्रसिद्ध व्यापारिक मंडी है। यह कानपुर शहर से ४५ किलोमीटर दूर २६ डिग्री ४० उबरी अक्षांश तथा ८० डिग्री ४५ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यहाँ की प्राकृतिक दशांश क्षेत्र जनपद के समान है।

इस तहसील का प्रमुख कस्बा शिवराजपुर है, जहाँ रेलवे स्टेशन एवं बाजार भी हैं। हंसानगरी के किनारे स्थित इस तहसील का दूसरा कस्बा मकनपुर है जहाँ जानवरों की प्रसिद्ध मेला भी लगता है तथा जीर्णोद्धार निमित्त एक मस्जिद भी है। इस तहसील का तीसरा कस्बा बीबौर है जहाँ रेलवे स्टेशन है तथा जनपद की प्रमुख गल्ला मंडी भी है। इसके अलावा ब्राह्म, कन्नन, शिवली, बीरसलार, उबरी पुरा आदि हैं।

(३) ठेरापुर तहसील -

ठेरापुर तहसील कानपुर जनपद के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इसके उत्तर में बिल्हौर, दक्षिण में फुलारा, पूर्व में बकुवरपुर तहसील तथा पश्चिम में बटावा एवं फारुखाबाद जनपदों की सीमाएँ हैं। यह कैंग्रू नदी के तट पर है, जनश्रुति है अनुसार फाँवी ठेरी के कारण यहाँ का नाम ठेरापुर पड़ गया।

यह तहसील कानपुर शहर से लगभग ४५ किलोमीटर दूर २६ डिग्री ३५ उत्तरी अक्षांश तथा ७९. ४० पूर्वी देशान्तर पर स्थित है ।^१ यहाँ की ज्यादातर जमीन जलपट्ट की ज्यादातर की भाँति है ।

यह तहसील का प्रमुख कस्बा मीलपुर है जहाँ के बाढ़ बरती काफ़ी प्रसिद्ध हैं । उधर रेलवे का स्टेशन तथा नहर गंगा हाहा बटावा पर स्थित दूसरा कस्बा मौजिक है। यह धौ, अनाम, तिलहन आदि की प्रसिद्ध मंडी है । रसूलगढ़ भी यहाँ प्रसिद्ध कस्बा है जहाँ पाना एवं प्राचीन किला भी है। इसके अतिरिक्त कल्लिहारी, छिड़वा, मोनारी, खानपुर तथा सैदपुर आदि कई छोटे-छोटे कस्बे हैं। यहाँ अनाज की मंडियाँ भी हैं ।

(४) अम्बरपुर तहसील -

अम्बरपुर तहसील कानपुर जलपट्ट के बीचों-बीच स्थित है । इसके चारों तरफ की सीमा जलपट्ट की तहसीलों द्वारा ही बनाई जाती है। यह कानपुर शहर से दक्षिण-पश्चिम में पड़ती है। इसके उत्तर में बिल्हौर, दक्षिण में घाटमपुर तथा फुलरावा, पश्चिम में डेरापुर तथा पूर्व में कानपुर एवं घाटमपुर तहसीलें आती हैं। यह कानपुर शहर से लगभग ३५ किलोमीटर दूर २६. २३ डिग्री उत्तरी अक्षांश तथा ७९. ४० डिग्री पूर्वी देशान्तर पर स्थित है ।^२ यह प्राचीन फुलरावा डेरा ग्राम है किन्तु अम्बर के समय से इसका नाम अम्बरपुर है । यह जलपट्ट की सबसे बड़ी व्यापारिक मंडी है।

अम्बरपुर तहसील का प्रमुख कस्बा गजौर है जहाँ नाजीपीर का मैला अब भी उभरता है। बाण्डव नदी के किनारे दूसरा कस्बा सिबली है जहाँ एक बाँजर द्वारा

१- कानपुर न्यूजियर , १० २/५

२- एडो पृ० २३०

स्थापित शिवमूर्ति है जिसके कारण इसका नाम शिवली है। उपर रेलवे स्टेशन एवं प्रमुख सड़कों का केन्द्र करा मो है। इसके अतिरिक्त स्वामी भास्करानन्द का जन्म स्थान मेधा, जनिहा, गहती, रनिया, वारा बादि कई कस्बे हैं।

(३) पुष्करावा तखोल-

पुष्करावा तखोल कानपुर जनपद के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। इसके उपर में जम्बरपुर तथा ठेरापुर, दक्षिण में यमुना से लगा जालीन जनपद, पूर्व में घाटमपुर तखोल तथा पश्चिम में इटावा जनपद की सीमा जाती है। इसे मौननीपुर तखोल भी कहते हैं।

यह जालीन-कानपुर रोड पर बसा मध्य रेलों का प्रमुख स्टेशन है। यह कानपुर से ६० किलोमीटर दूर २५. १२ उपरी जंक्शन तथा ७९. ४९ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह जिले की प्रमुख व्यापारिक मंडी है। इसके अन्तर्गत कई कस्बे हैं — तखोल से पश्चिम स्थित प्रमुख शिकन्दरा है जहाँ की मिठाई प्रसिद्ध है। तखोल से पूर्वी यमुना के किनारे भूतानगर नामक कस्बा स्थित है जहाँ भुक्ता देवी का मंदिर तथा देवताओं का शरीर 'देवतानो है।' इसका सहायी कस्बा मौननीपुर रावा मौजकंद द्वारा बसा हुआ है। इनके अतिरिक्त रावा टोहरास का काया राजपुर, रसवान, जकरीया, मौनपुर बादि हैं। जहाँ साप्ताहिक बाजारें बादि लगती हैं।

(४) घाटमपुर तखोल -

यह तखोल कानपुर शहर के दक्षिण पूर्व स्थित है। इसके उपर में कानपुर तखोल तथा दक्षिण में हमीरपुर जनपद, पूर्व में फतेहपुर जनपद तथा

पश्चिम में पुष्कराखा एक जम्बरपुर तख्तील मिलकर सामा निवारित करती हैं।

यह तख्तील कानपुर-जम्बरपुर रौड पर स्थित मध्य रेलवे की प्रमुख स्टेशन है। यह कानपुर से लगभग ४० किलोमीटर दूर २६.०९ डिग्री उत्तरी अक्षांश तथा ८०.१० डिग्री पूर्वी देशान्तर पर स्थित है।^१ यहाँ कृषाहायी प्रमुख बाकणिया के केन्द्र हैं।

इस तख्तील का सबसे प्राचीन कस्बा मोहर गाँव है। जहाँ १६०० वर्ष पुराना राजा अरक्त या कन्हाया मोहर है जो बली प्राचीन स्थापत्य स्तर का बहुमूल्य मयूना है। मध्य रेलवे का दूसरा प्रमुख स्टेशन बरीपाल है जोकि क्वाथ सर्व गूड की प्रसिद्ध मंडी है। इसी तख्तील में जम्बरपुर-कानपुर रौड पर स्थित पतारा नामक कस्बा है जो मध्य रेलवे का स्टेशन भी है। इसके अलावा राजा सर्व शास्य-व्यंग्यकार बीरकत का गाँव जम्बरपुर, मद्रकाली देवी के मोहर वाला मंदिर सहित नौरंगा, पारस, रैना, नौहो, पारसा आदि कई छोटे-छोटे कस्बे हैं।

जनपद के निवासी-

कानपुर जनपद के अन्तर्गत आने वाली निवासियों में प्रमुख रूप से हिन्दू अधिक हैं। इसके अलावा मुसलमान-ब्राह्मण भी हैं। स्वतंत्रता का में हुए देश के बंटवारे के समय यहाँ अत्यधिक संख्या में सिख और पंजाबी लोग आकर बस गए हैं तथा विकास में सुन्नति ला दी है। यह अधिकतर कानपुर शहर एवं प्रमुख कस्बों में पाए जाते हैं। जनपद के गाँवों में अब भी हिन्दू और मुसलमान पाए जाते हैं। इस तरह समस्त जनपद में ८० प्रतिशत हिन्दू, १५ प्रतिशत मुसलमान तथा शेष पाँच प्रतिशत सिख-पंजाबी एवं ब्राह्मण हैं। वर्तमान समय पर जातीय आधार पर कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है किन्तु नवोदय

के अनुसार ८० प्रतिशत हिन्दू धर्मानुयायी तथा २० प्रतिशत मुसलमान एवं अन्य धर्मानुयायी थे।^१ जनसंख्या का जातीय प्रतिशत निम्न था: ब्राह्मण १५.४ प्रतिशत, क्षत्र १३.५ प्रतिशत, वहीर १०.७३ प्रतिशत, राजपूत ठाकुर ८.३१ प्रतिशत, कुर्मी दानव्य ४.७६ प्रतिशत, कोरी ४.४० प्रतिशत, काही ४.२ प्रतिशत, लोधी ४.१६ प्रतिशत, महरिया ४.१३ प्रतिशत, बनिया ३.३९ प्रतिशत, तेली ३ प्रतिशत, मैस, क्वार तथा कायस्थ ३ प्रतिशत पार जाते हैं। इसके अलावा घौघो, धानुस, लोहार, कुम्हार, बड़ह, मल्लाह, लटोकर, बोरिया, क्लहार, सोनार, पाट, केवट, फी जादि जातियाँ १-२ प्रतिशत पाई जाती हैं तथा इनसे भी नीचे मुन्धियाँ, दबो, माह, बारी, क्वार, क्वारिया एवं नट जातियाँ जापा-जापा प्रतिशत से भी कम पाई जाती हैं।^२

नवौटियर के अनुसार जनपद की समस्त जातियाँ हिन्दी बोलती हैं। उनके शब्दों में ६ से ७ प्रतिशत तक शब्द अन्य भाषाओं के प्रयुक्त होते हैं।^३

जनपद की बोली के सर्वेक्षण में देखा गया कि मुसलमान फारसी बोली के शब्दों का ज्यादा प्रयोग करते हैं तथा सिद्धांत लोगों की बोली में अन्य भाषाओं के शब्द ज्यादा प्रयोग किए जाते हैं। यहाँ पर बसने वाली सिख और पंजाबी जातियाँ ने सरल बोलचाल में भाषा अपना रखी है किन्तु अपने बहोलाते में अधिक उर्दू का ही प्रयोग करते हैं।

१- कानपुर नवौटियर, पृ० १०३

२- वही- पृ० १०३ से १२२ तक

३- वही- पृ० १२०

३- कानपुर जनपद का ऐतिहासिक परिचय -

कानपुर जनपद का परिचय पाने से पहले उसके इतिहास की जानकारी बताना आवश्यक है क्योंकि किसी देश, समाज, स्थान आदि की संस्कृति-सम्यता इतिहास के पृष्ठों को गहराई में लिया होता है। इतिहास ही वह सच्चा दर्पण है जिसमें मार्क के पहाड़ों की प्राचीनता एवं उस युग की सबसे सामाजिक स्थिति एवं उसके विकास की गति का अवलोकन लिया जा सकता है।

इस जनपद के इतिहास की महत्वपूर्ण विशेषता रही है। इसीलिए शायद पितामह ब्रह्मा ने इसी अपनी गहनतर कार्य, सृष्टि रचना के समावर्तन के लिए इसी जनपद की भूमि में स्थित बिठूर नामक स्थान को चुना और यहीं पर अश्वमेध यज्ञ करके इस कार्य से समाप्ति लिया। इस तरह कानपुर जनपद स्थित ब्रह्मावर्त (बिठूर) मानव सम्यता एवं संस्कृति का आदि केन्द्र है।

इस जनपद की विशेषता यह भी है कि इसने केवल कार्य जीवन दर्शन और पद्धति को ही नहीं देखा बल्कि आधुनिक संस्कृति एवं सम्यता के सुन्दर-रंगीले जीवन को सजाया एवं सँवारा है।

जहाँ इस जनपद की भूमि की मावान् राम एवं उनके पुत्र, मावान् श्रीकृष्ण एवं मावान् बुद्ध आदि ने पवित्र किया वहाँ असुर राजा राजा बलि एवं बाणासुर आदि ने इस जनपद की दूसरे जीवन में डाला है।

कैसे इस जनपद में प्रस्तर युगीन मानव सम्यता के चिह्न नहीं प्राप्त हुए, संभवतः वे इससे गर्भ में विद्यमान होंगे क्योंकि यह संभव नहीं कि प्रस्तरयुगीन सम्यता से यह जनपद अज्ञात रहा हो किन्तु यह निश्चित है कि

तत्र यत्नो न सम्पत्ता इमं जनपदं मे पत्नी वीरं ब्रूते । इसका प्रमाण बिदूर में प्राप्त तबि के बाण वीर फालक (भालों) के हैं जो बाण भी कत्तका संग्रहालय में सुरक्षित हैं ।^१

हाल ही में जाजमल के टीले के परीक्षात्मक उत्खनन से प्राप्त मुद्रिका पात्रों से यह स्पष्ट हो गया है कि २५० वर्षों पहले पूर्व अति समृद्ध तथा कथित सिन्धु घाटी नगरिक सम्पत्ता भी यहाँ विद्यमान थी । उस समय की वास्तुशिल्प शैलियों का समाधान अभी प्रस्तुत किया जा सकता है जब इसका विषय उद्घाटन हो ।

बिदूर का नाम ब्रह्मावर्त का वीर भी पड़ा, इस सम्बन्ध में विद्वानों के विचारों में वैभिन्नता है । बाण भी इसके नामकरण का रहस्य एक गूढ़ रहस्य का विषय बनकर रह गया है क्योंकि मनु के अनुसार सरस्वती तथा अणवतोः पश्चर के बीच का भूभाग ब्रह्मावर्त होना चाहिए -

सरस्वती दृणादप्योर्वदेव नवीयमान्तरम् ।
तं देव निर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रकृते ॥^२
(मनु स्मृतिः २।१७)

ये दोनों नदियाँ राजस्थान के पूर्व में हैं किन्तु मनु ने बताते हैं कि इस स्थान को स्पष्ट किया है-

हिमदिन्ध्ययोर्विर्ध्वा यत्प्राग्विन शनादपि ।
प्रत्यगैव प्यागज्ज मध्यं देहं प्रकीर्तितः ॥^३
(मनुस्मृति २।२१)

१- दैनिक जागरण, राजत ज्योति जंक, पृ० ६१

२- मनुस्मृति, अध्या० २, श्लोक १७, पृ० ४०

३- यही- २१, पृ० ४१

हिमालय तथा विंध्याकूट के बीच तथा अग्नि (कुन्दीय) से पूर्व पूर्व प्रवाल के पश्चिम वाले देश को मध्य देश बतलाया है, वहाँ जन-पद है, राजस्थान नहीं। इसके अतिरिक्त मनुस्मृति में ही बतलाया गया है कि वहाँ के ब्राह्मण वेष्ट होते हैं किसी स्मर सिद्धांत से। अतः यह क्षेत्र कन्नौज के बासपास बंधा बिंदू ही है क्योंकि कन्नौज के ब्राह्मण वेष्ट ब्राह्मण माने गये हैं। इस तरह बिंदू ही प्राचीन ब्रह्मावर्त सिद्ध होता है।

वाचस्पति पंडित लक्ष्मीवर्मा त्रिपाठी ने बिंदू के पहाड़ों की बस्तियों के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि "यम ते कम अक्षर के मध्य में बिंदू ब्रह्मावर्त के नाम से प्रसिद्ध था।" इससे अधिक प्राचीन कोई प्रमाण नहीं है। हाँ, बाल्मीकि के नायक अपनी अन्वीक्षा में इसी प्रदेश का बिंदू ही मानते हैं।

कामधु जनपद के विख्यात तोपस्कर बिंदू बंधाते "ब्रह्मावर्त" जनपद का उत्तम कविकुल गुरु कालिदास ने अपने मेघदूतम् गोतकाव्य में किया है। उन्का यदा कहता है-

ब्रह्मावर्त जनपदमथच्छायाः नाहमानः ।

दीर्घं पात्र प्रसन्नं पिबुर्न कीरवं तदुन्मीषाः ॥^१

यह है मेघ जब चम्पयवती (चम्पल) नदी से होकर लगे हुए जनपद की ओर जाना तो अपनी छाया ब्रह्मावर्त जनपद पर डाल देना। स्पष्ट है सूर्य की निर्णय बलिष्ठा-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की पड़ोनी तो वह

१- दीर्घतो उन्मीषा पिब , केवा०, राजत जयन्ता अंक, पृ० ६१

२- कालिदास कृत मेघदूतम्, श्लोक ४८, पृ० १४६

हाया निश्चित हो ब्रह्मावर्त में पहुँचो। क्योंकि बन्धन हटावा जिस की सीमा पर वसुना में भित्तो है, जहाँ से उपर-सूँ में यही स्पष्ट जाता है। वतः स्पष्ट ही जाता है कि कात्तिदास ने समा में बिछू ब्रह्मावर्त के नाम से दूर-दूर तक प्रसिद्ध है।

इस स्पष्ट है अनेक प्राचीन कथियाँ एवं पवित्र व्यक्तियों का सम्बन्ध रहा है। कथितियों के अनुसार ब्रह्म के पिता ब्रह्मन्नाद को राज-पानी होने का ये बिछू को ही है। आज ब्रह्म का टीका इस बात का प्रमाण है कि ब्रह्म तपस्या के बाद यही रहते थे।

बादिकव्य को प्रथम ब्रह्मन्नाद बिछू के प्राणिन में प्रवा-हित हुए जहाँ आज भी बाल्मीकि मुनि का वात्रम है। यहाँ ही उन्होंने संस्कृत वाङ्मय का प्रथम ग्रंथ "रामायण" रखा जो भारतीय संस्कृति का स्मारक है।

जब लोकोत्पाद के मय से राम ने सीता की निष्कासित किया और लक्ष्मण उन्हें बाल्मीकि वात्रम में छोड़ गए थे जहाँ उन्होंने तब-कृष्ण नामक पुत्रों की जन्म दिया था। बिछू में बाल्मीकि वात्रम होने के सम्बन्ध में विद्वानों के मत अलग-अलग हैं। रामायण को इन पवित्रियों की विद्वान् ध्यान दें किसे बिछू को स्थिति स्पष्ट होता है-

नमो यास्तु परं पारं बाल्मीकेषु महारमः ।

वात्रमो दिव्यं तद्वत्तस्मै सातो रमायितः ॥

तं नां विष्णो देवी विष्णुय रघुनन्दन ।

शो प्रमाणम् मद्रं ते शुभं चकारं यम् ॥ ११ ॥

१- बाल्मीकि रामायण, उपर टण्ड, अं ४५, श्लोक सं० १०, १८, ३० ११३०

रामायण में वर्णित क्यौध्या से वाल्मीकि बात्रम के लिए जो मार्ग है वह वाल्मीकि बात्रम की पुष्टि बिदूर में ही करता है। लक्ष्मण सीता को गंगा तट पर ही नहीं बल्कि बात्रम में डूँड़ गए थे, ऐसा रामायण के श्लोक प्रमाणित करते हैं।^१ इस बात की पुष्टि तब और अधिक बढ़ जाती है जब लक्ष्मण राम से स्पष्ट कहते हैं कि मैं सीता का वाल्मीकि बात्रम में ही डूँड़कर लाया हूँ जो गंगा के किनारे पर है—

वार्यस्याज्ञां पुरस्मृत्य त्रिमुण्य वनकात्मवाम् ।
गङ्गातोरे यथोपिदृष्टे वाल्मीकेरात्रमे शुची ॥^२

क्यौध्या से बिदूर एक रा मार्ग ही डेढ़ व दिन का ही सकता है, किन्तुतक का नहीं। इस कथि का रामायण में स्पष्ट उल्लेख है।^३ केयकि यमुना जादि पार करते तो रामायण में उसका उल्लेख अवश्य होता। यदि पाठकों को शंका हो कि उस समय गोमती और नदी भी पार की तो विस्तोर्ण नाव का भी उल्लेख रामायण में किया गया है जिसमें १५, पौड़े जादि सभी जा जाते थे।^४

वाल्मीकि बात्रम बिदूर में ही था। इस मत का पौषण बागे रामायण में ही मिलता है। जब शत्रुघ्न लवणासुर का बंध काके मयुरा से लाँटते हैं तो वे बात्रम में लपकते हैं तथा सीताजी से मिलते भी हैं।^५ यदि बाज भी मयुरा और क्यौध्या की मिलाकर एक सोबी रस्ता खोजा जाय तो वह बिदूर से होकर ही गुजरेंगी। अतः निश्चित है कि वाल्मीकि का बात्रम बिदूर

१- वाल्मीकि रामायण, सर्ग ४७, श्लोक सं० १५, १६, १७, पृ० ११३६

२- वही- सर्ग ५२, श्लोक सं० १८, पृ० ११४७

३- वही- सर्ग ४५, श्लोक सं० १६, पृ० ११३० एवं सर्ग ५२, श्लोक सं० १ व २, पृ० ११४६

४- वही- सर्ग ४७, श्लोक सं० १ व २, पृ० ११३४

के बलिर्निस्त बन्धन नहीं हो सकता ।

कानपुर जनपद के पूर्व में गंगा तट पर स्थित बाणभञ्ज की अपनी कर्म बल से इन्द्र पर प्राप्त करने वाले राजा व्यासि के पुत्र, नहुष की राज्यानी होने का श्रेय प्राप्त है। बाण भी उनके किले की ध्वस्त प्राचीरों के अवशेष उस युद्ध की याद दिलाते हैं ।^१

इस जनपद को पुराणार्थ तल्लोस के अन्तर्गत जाने वाले मुक्ता-
नगर की प्रह्लाद जी के पौत्र तथा बाणासुर के पिता राजा बलि ने बनाया
था, जहाँ उनके सवि यज्ञ को विष्णु ने भी रिया था, बाण भी ब्रह्मेया (तीर्थ)
के रूप में प्रसिद्ध है । यहाँ पर प्रसिद्ध देवयानी 'सरौवर' है जो कभी नहीं सूखता
जो सुभाष्य की पुत्री देवयानी के नाम से प्रसिद्ध है। इससे यह निश्चित है
कि उस युद्ध में यह नगर बलि की राज्यानी बना। गुरु सुभाष्य का बाणम रहा
होगा । यहाँ की मुक्तादेवी का पौंदर अपनी प्राचीनता के साथ ऐतिहासिकता
की भी संक्षेप रूप है ।

कणि कश्यप के पौत्र कृषी कणि का बाणम गंगा के पश्चिम
तट पर बाणभञ्ज सरौवेरा ग्राम के निकट था । इसी जनपद में सैतु नदी के तट
पर वर्तमान गिरीही ग्राम के निकट (तल्लोस - पुराणार्थ)सापात कृषीमूर्ति
सुभाषी कणि का बाणम का बाण भी यह पवित्र स्थल 'सुभाषी' के नाम से
प्रसिद्ध है ।

देवराज बाणासुर की राज्यानी कनीपारा में थी ।
यहाँ बाण भी 'बाणेश्वर महादेव' का देहा लगता है । किंबदन्ती है कि
वनरज्य की राज्यानी के विवाह पर श्रीकृष्ण से युद्ध हुआ जिसमें शिवजी ने मृत
की सहायता के लिए कृष्ण से युद्ध किया । तभी बाणासुर ने यहाँ पर शिव-

मूर्ति स्थापित की थी। भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के जनक तथा महाभारत एवं पुराणों के प्रणीता ईश्वर श्रीकृष्ण व्यास का जन्म जनपद की दक्षिणा सोमा पर कालपी के समीप यमुना के एक द्वीप पर हुआ था। १२वें शताब्दी तक कालपी ही वार्धे कानपुर जनपद का शासक थी।

प्राचीनकाल में कानपुर जनपद के शासक दक्षिणा सोमा के राजा दुष्यंत थे तथा १२वें शताब्दी तक महाराज हर्षवर्धन के शासक रहे। हर्षवर्धन की विदेशी हथी युद्ध में बाध तथा यश का प्रमाण भी किया था।

वाक्यार्थ चिंतामणि त्रिपाठी का मत है कि वर्तमान फोफोर निसी यहाँ के निवासी निश्चय कहते हैं। प्राचीनकाल के निम्न-वर्ग का प्रमाण है। यह प्राचीन काल में धर्म का गढ़ रहा होगा तथा यहाँ निम्न एवं यशों की पूजा होती होगी। यहाँ के निम्नवर्गीय ग्राम साता में दुर्ग की प्राचीन प्रस्तर प्रतिमा प्राप्त हुई। अतः सिद्ध है कि यह प्राचीन काल में धर्म-स्थल था।

राहुल सांकृत्यायन के अनुसार वर्तमान जरील ग्राम प्राचीन कालिकापुरी का ही नाम है। जहाँ एक बार भवान् बुद्ध ने चार भास व्यक्त की थी। जरील के पास हरपुरा नामक ग्राम में बनेक बौद्ध स्तूप सम्बन्धी प्राचीन प्रस्तर प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं जो इस बात का प्रमाण है कि निश्चय ही यह बौद्ध विहार कक्षा बौद्ध मठ रहा होगा।

ग्राम काठपुर के बाह्य-भाग बनेक प्राचीन मंदिरों के मन्नाकरीषा तथा मूर्तियों के भी वास्तव्य से प्राप्त हुए हैं। इसमें बनेक बौद्धकालीन तथा कुछ मुस्तकालीन भी हैं जो प्राचीनता का प्रमाणित करते हैं।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार कनिंघम यहाँ के प्रमाण के परभाव इस क्षेत्र से इतना अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने चीनी यात्री ह्वेन्सांग द्वारा वर्णित

“बन्धुलौ” को उन्होंने काकपुर ही मान लिया। अर्निथम के अनुसार लिखत के ग्रंथों में वर्णित बागूड स्थान ही यहाँ है, किन्तु कुछ शीलालेखकार इस मत में सहमत नहीं हैं। बाचार्य त्रिपाठी का मत है कि प्राचीनकाल में किसी प्रतिमाशाली राजा की राजधानी कन्नपुर-काकपुर अवस्थ रही होगी तथा यह क्षेत्र तत्कालीन गूढ का सांस्कृतिक केन्द्र भी रहा होगा।

बमरोधा के समीप शाहपुर ग्राम में एक शिवमूर्ति “फाड़लेश्वर” के नाम से प्रसिद्ध है। यह शिवमूर्ति बौद्धकालीन तथा गुप्तकालीन शैली की मूर्तियों से मिलती है। अतः विद्वानों का विचार है कि यहाँ प्राचीन महायान बौद्ध धर्म का गढ़ रहा होगा जिसे कालांतर में हिन्दू धर्म ने पकड़ लिया और शिवमूर्ति के नाम से पूजा जाने लगी।

बमरोधा के दक्षिण में यमुना के किनारे एक प्रसिद्ध तीर्थ है जहाँ “कालेश्वर” नाम प्रसिद्ध शिवमंदिर है। किंवदन्ती के अनुसार राशो से रक्षा करते समय शिवजी ने एक रात यमुना के तट पर विश्राम किया था, जहाँ उनके बहुरूपी अनुयायियों ने शिवलिंग स्थापित किया जिसे “कालेश्वर” नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। भगवान् शिव के स्नान हेतु बना कुछ जाज भी यहाँ का वाक्यर्णन बना हुआ है।

कानपुर शहर से पूर्व बाबमण्डल के सिद्धनाथ महादेव एवं सिद्धादेवी की बौद्धकालीन मूर्तियाँ हैं। भगवान् बुद्ध के सात-आठ शताब्दी बाद बौद्ध धर्म पर बनेर प्रभाव पड़े जिससे यह विकृत हो गया। जो म्हा धर्म बना उसमें भिन्न एवं भिन्नान्ना सिद्ध और सिद्धा कहलाने लगे। सिद्धनाथ और सिद्धादेवी उसी धर्म का अवशेष हैं।

गुप्त, कील काल के समय कानपुर जलपद व्यापारिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थल बन गया था क्योंकि बुन्देलखण्ड, मीरत, जयप, प्रयाग

स्व कर्माच बादि के जाने-जाने का केन्द्र स्व मार्ग यहा था ।

गुप्त कलाकृतियों से जांच में यह जनपद सज्जित है, पत्थर के जमाब में यहाँ की स्थापत्य कला पकी छुईटों की है तथापि वह स्वयं एक जाफ़ा स्व कला का बनावट ठीक है मात्र गाँव के मंदिर की गुप्तकालीन शैली स्व स्थापत्य कला दर्शनीय है ।^१ इसके पक्ष तो किम्वद्वत ही गए हैं किन्तु इसका इतिहास विन्यास सम्पूर्ण भारत में अद्वितीय है । अन्यत्र भी इस जनपद में विद्यमान गुप्त-कालीन मंदिर साधारण हिन्दू शैली के हैं वे अब अपनी एक जीजाविस्था में है इसमें बैसटा ग्राम का मंदिर प्रमुख है। प्राचीन काल में यहाँ नाथि के पुत्र विश्वामित्र का राज्य था ।^२ युधिष्ठिर ने सुयोधन से जो पाँच दौत्र मांगे थे उनमें एक कुत्स (कर्माच) माँ था ।

हिन्दुओं के अंतिम शासक जयचंद स्व शासन , जो कर्माच के सम्राट थे, के समय तक जानपूर जनपद का मुख्य भाग उनके पास था । बिहू के लाने वाले बाणिक जैसे का प्रबन्ध उन्होंने के हाथ था । बालहा तथा जयल बादि वीरों की मित्रता यहाँ पर छुई थी ।

मुस्लिम शासनकाल में किसी सोमा तक इस दौत्र की गरिमा बनी रही । मुहम्मद बिन तुग़लक ने कुछ दिनों के लिए पास ही गंगा के तट पर "समगदारी" नाम से अस्थायी राजधानी बनायी । तुग़लक और सरदार सुल्तमुल्क मुल्तानी के बीच यहाँ के नानाकान घाट पर शीघ्र युद्ध हुआ था । जानपूर और दिल्ली शासकों के बीच हुए युद्धों में यह जनपद रणस्थल बना । बल्लाल सोदी ने अपने दाहिने बखीम हुमायूँ की सत्तमज और कालपी के साथ इसे भी दे दिया । इसी युग में जानपूर शैखानी मुसलमानों का केन्द्र बना, जहाँ

१- डा० राजकिशोर सिंह स्व उष्मा यादव, प्रा०मा०कला स्व ईई ०, ५० १४२

२- डा० गिरीश चन्द्र शर्मा यथाति आख्यान ५०२२

शेरशाह सूरी वल्लिधि के रूप में कुछ दिन ठहरा। शेरशाह ने अपने काल में इस जनपद का विकास कराया तथा घाटमपुर, झुलानगर, मोगनीपुर, सिक्न्दरा तथा कानपुर आदि की मिलाती वाले रूढ़ मार्ग बनवाए। इस जनपद में झुलानगर के पास चारघटा नामक स्थान पर सुल्तान मुहम्मद शाह वाफिज तथा बीजापुर के मुहम्मदशाह के बीच मोघणा युद्ध हुआ।

अकबर के समय से इस जनपद का इतिहास और भी अधिक स्पष्ट है। बख्तुल्लाखान के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'जाहंगीर' में अकबरी से ज्ञात होता है कि कानपुर का अधिकारी मान बानरा के अन्तर्गत तथा शेर मान इलाहाबाद के अन्तर्गत था। सम्पूर्ण जनपद की मालगुजारी बाँट लास सतह रुपये के करीब थी तथा इण्डिया यौग्य भूमि साठे बार लास एकड़ थी। शाहजहाँ के समय इस जनपद का काफी मान अब्दुर्रहीम खानखाना (कवि) के पास था। सन् १६५८ ई० में औरंगजेब के कदम भी इस जनपद पर पड़े। अवध के नवाब सुजाउद्दौला और अंग्रेजों के बीच अंतिम युद्ध यहाँ के 'जाजमग' नामक ऐतिहासिक स्थल पर हुआ था तथा यह पर सीधे हुए और इस जनपद के अंग्रेजों की मूलभूत स्वीकार की थी। मई १८०१ ई० तक यह जनपद अवध के अन्तर्गत था तथा हमके अंतिम मुल्तान शासक बरमास को लां थे तथा इसी वर्ण ईस्ट इंडिया कंपनी के शासकों के साथ नवाब बजीर ने इसकी सहा सौंप दी।

सन् १८०२ ई० में यहाँ की सहा अंग्रेज क्लर्कटर ब्रह्म केलाह ने सीमाती। सन् १८०३ को कानपुर जिला घोषित किया गया जिसमें पन्द्रह परगने थे - जाजमग, बिठूर, खिराजपुर, बिल्हीर, रसूलाबाद, डेरापुर, सिक्न्दरा, मोगनीपुर, अकबरपुर, घाटमपुर, साठसलेमपुर, बीरिया, कन्नीच, कोहाबखानाबाद एवं अमीता।^१

सन् १८१८ ई० में बाजीराव पेशवा बिदुरव जा गए जिनके साथ बहुत से महाराष्ट्र भी गए । बिदुर विकसित हुआ तब जूजों ने ७५ लाख रुपये साहाना पैशन देना मंजूर हो पाया । यहाँ के मौरांपत नरमक ब्राह्मण के यहाँ महारानी दसोबाई का काम हुआ था जो सन् १८५० ई० में स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान हुई थी ।

सन् १८२० ई० को कानपुर में पहला हिन्दू-मुस्लिम कोरा हुआ था। सन् १८३३ ई० को जो०टो० रोड बना तथा सन् १८५५ ई० में तार को लाइन ठाली गयी । २० जनवरी, १८५१ ई० को पेशवा को मृत्यु हुई । इसके बाद मौरांपत ने मा १८५० ई० की जाति में अपने को मर्क दिया ।

२२ नवम्बर सन् १८६१ को कानपुर में पुनः जूजों ने नारमहापात्रिका बनाई । इसी वर्ष रेलवे स्टेशन बना तथा दिल्ली-वाराणसी में रेलगाड़ियाँ चलने लगी । सन् १८९० ई० में फूलबाग की नाई रही गई तथा सन् १९०६ ई० में कानपुर में विद्युत बाइर सन् १९२५ ई० में कानपुर में मर्गिस-अस्पिटल हुआ ।

इस जनपद के प्रसिद्ध तीर्थ बिदुर से दो मोल परिक्रम में सही लोह धीरा नामक ग्राम है। साहान्तर में जहाँ लोहार जीर ब्राह्मण जाति की दो स्थियाँ सती हुई थीं । जहाँ अब भी पक्का तथा कच्चा चबूतरा बना है । सन् १८५० ई० में यहाँ पर जूजों का करते काम हुआ था जहाँ उनका पक्का कर्तें बना है तथा उसका नाम बदलकर "मैकेर घाट" कर दिया गया है ।

इस तरह कहा जा सकता है कि कानपुर जनपद का इतिहास, भारत का इतिहास को एक जिताय मुक्ता है जो समय और उदधान-यत्न की

लहरों में डूबता-उठता रहा। इन ऐतिहासिक लहरों को झपाटें इतनी प्रकृत रहीं कि अपने कटावों से स्पष्ट स्मृति किन्तु बँका कर गईं जो अपने साथ भारतीय इतिहास की एक गति, एक जीवन, एक विकास को कहाना जीड़ने में सहायक बन गईं।

४- कानपुर जनपद की साहित्यिक प्रतिमाएँ-

कानपुर जनपद की अनेक साहित्यिक प्रतिमाओं के जन्मस्थल होने का तथा साधना-स्थल होने का गौरव प्राप्त है। इसी देश के दूसरे दोहरों के हेतु वेत्ता स्थल के रूप में जाना जाता रहा है। यह एक साहित्यिक तीर्थ है जहाँ समस्त प्रकार की विभूतियों ने जन्म लिया है। यहाँ महान् कवि, ब्रह्मकार, नाट्यकार, पत्रकार, समीक्षक, वाताकार, चिकित्सक एवं संगीतकार हुए हैं।

रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि का वाच्य इसी जनपद में है जहाँ वाल्मीकि ऋषि ने पूरुषार्थम् रामचन्द्र जी के चरितकाव्य 'रामायण' की लिखा, जो विश्व प्रसिद्धि की प्राप्ति है यदि दूसरा कोई कवि न भी होता तो भी जनपद का गौरव कम न होता।

कानपुर जनपद की घाटमपुर तहसील में यमुना के किनारे अकबरपुर (बोबीपुर) नामक ग्राम में, अकबर के नवरत्नों में श्रेष्ठ, हास्य-व्यंग्य सम्राट तथा राजा, मंत्री एवं दाहिनी हाथ, बोरवत ने जन्म लिया था उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता को सिद्धांत था। उनके लक्ष्मी बाबू भी जन-जन में प्रचलित हैं। इन्होंने ही इस ग्राम का नाम अकबर के नाम से रखा था। बाबू भी इनके गढ़ी के अवलोकन तथा इनके द्वारा कहाया गया रामाकृष्ण का मंदिर विद्यमान है।^१

सन् १६६६ ई० में कानपुर जनपद की घाटमपुर तहसील के टिकियापुर (त्रिविक्रमपुर) नामक ग्राम में 'कविकुल कल्पतरु' की लिखकर वैष्णव की परम्परा

नी बिन्दा रत्ने वाले बाबायं कितामणि ने कम लिया और 'बाबायं' को त्यागि प्राप्त का । बाबायं रामकन्द कृत ने रातिनाल को परम्परा बाबायं कितामणि से हो माना है । टिक्कापुर में बाबायं बनेले हा नहा बलि कलम और प्रतिमा के घना तीन माह और है । बाबायं से छोटे मात-राम थे जिनका कृष्णिक कविताएं कृष्णमाणा में एक नगरी प्रकाशित कृतो हैं। डा० उपेन्द्र ने उनको प्रशंसा में लिखा है- "मुझसे ऊपर कोई पूरे कि कृष्णमाणा का सबसे मोठा कवि कान है तो मैं कभी मरिगाय--- ।"

बाबायं कितामणि के लोहरी माधे मूलाण थे उठ जिन्होंने उस पौर हो ल-कृष्णार काल में बार मध्य को रचना कर हिन्दुओं को उनके पुनर्जात को याद दिलाते रहे । यह कृष्णार स्व पिताजी के दरबार कवि थे । बाबायं कितामणि के बड़े माधे नालठि या नारमड का मा उल्लेख मिलता है किन्तु अभी तक उनका कोई साक्ष्य ही प्राप्त ।

घाटमपुर तहसील के बनपुरा नामक ग्राम में कवि "बृहत्" को जन्म लेने का गौरव प्राप्त है जिनके लिए प्रसिद्ध था - "बाँर करता सक्त कवि बृहत् बृहत्पराज ।" यह कृष्णार रस के जितोय कवि थे । उन्हें बाबायं स्व कवि होने का श्रेय प्राप्त था । इनके पिता उष्यनाथ कविन्द तथा बाला कालिदास बिन्दा दो दोनो ही कवि थे । "कवि कुल कंठा मरणा कलमारी" का श्रेष्ठ विवेक कवि बाबायं ही है ।

१- डा० उपेन्द्र, कानकवि, दैनिक जागरकाल अंग, पृ० १००

२- डा० राजकपल नीरा, मूला जी-ठोसा, पृ० ३२

३- डा० नरेन्द्रकुमार, मति कवि और बाबायं, पृ० ४०

‘निरक्ष’, ‘राजानन्द’, पाण्डेय कन्पू, त्रिपाठी नारायण, चंद, अन्तर
साहस्य आदि प्रमुख थे। ‘निरक्ष’ जो फाही तथा पाण्डेय कन्पू उन्नाव
से बाहर थे। राष्ट्रीय आत्मा यहाँ के ६००००वी० पाठक में प्राध्यापक थे।
यहाँ से राष्ट्रीय कवितारं दितनी शुरू की थीं। सैहो जी की शिष्य-
परम्परा में कानपुर के जयदत्त प्रसाद ‘हस्तो’ का नाम उल्लेखनीय है।
वे लड़ो बीलो में सर्वप्रथम कन्द के सफल प्रयोगता थे।

हिन्दो के महान् सम्पादक, जालीबक, टोकाबार वि. र्व सफल
लेखक आचार्य महावीर प्रसाद हिन्दो का निवास जुहो-कानपुर में था। यहाँ से
उन्होंने सरस्वती पत्रिका का सम्पादन भी किया था। आचार्य जी के अनुभव
मक्त श्री गणेशजीर विद्यापीठ की सारा केत जानता है। विद्यापीठ जी ने हिन्दो
का ग्रेष्ठ पत्र ‘प्रताप’ निकाला था। यह एक महान् नेता एवं पत्रकार थे।
पं० विरवम्पनाथ शर्मा ‘नीलिक’ का जन्म तो सहरनपुर में हुआ था किन्तु
वे कानपुर की गौद में पले-पड़े। यहाँ से उन्होंने सीकड़ों कटानियाँ एवं उप-
न्यास लिखे जो ‘सरस्वती’ एवं ‘प्रताप’ में छपी थीं। नीलिक जी को कार्य
प्रतिभा बाबू भी कानपुर जयदत्त की कबहरी के सामने नीलिक उषान में स्थापित
है।

साप्ताहिक पत्र ‘प्रताप’ तथा राजनीतिक पत्रिका ‘प्रताप’ के संत-
दक वात्सकुष्ण शर्मा न्यान, जो विद्यापीठ जी एवं नीलिक जी के मित्र थे, ने
देश-प्रेम सम्बन्धी हजारों कवितारं दितनी थीं। मध्यप्रदेश के महाशय जयदत्त
मालविकास कर्तुर्दो प्रायः कानपुर बाहर विद्यापीठ जी या नीलिक जी का
वात्सल्य ग्रहण कर साहित्य-सेवा एवं देश-सेवा करते थे।

नीलिक कबहल के दूसरे सफल प्रतिभावान् कवि थे। श्री रमार्थी
कवस्थी। य. एक प्रसिद्ध एवं निर्माक पत्रकार थे। उन्होंने ‘मनसुता’ नामक

पत्र निहालकर अपने बिंदा दिलो का प्रमाण दिया था। बाहर से बाहर
यह साहित्य सेवा करनेवाले दूसरे साहित्यकार और लेखक थे १-५० विष्णुदास
शुक्ल। बाप प्रथम श्रेणी के कविष्ठ, कई सौ सैनावी साहित्यकार तपस्वी थे।

कानपुर जनपद के प्रतिभाशाली कवियों में अनूप शर्मा, हुदयेर,
प्रणयेश, कमिराम, बरगणेश, देवेन्द्रास्त्री तथा 'तरल' के नाम उल्लेखनीय
हैं। अनूप जी के अतिरिक्त अन्य सभी कवियों का जन्म कानपुर जनपद ही है।
इन सबने बचपन के 'हालाबाद' से 'विजयाबाद' (विजया-मार्ग) बताया था
जिससे तब उन्हें मूलना मरल नहीं है।

कवियों और लेखकों के रूप में भावताचरण कर्माई एवं भावतो प्रसाद
बाबूजी की पूर पाना मुश्किल है जिन्होंने अपनी साहित्य-सेवा से कड़ा बोली
को कहानी एवं उपन्यास यात्रा से आगे बढ़ाया।

कानपुर जनपद के बहुचर्चित एवं नवी कवियों में जगदीश गुप्त विश्व
(डा० जगदीश) का नाम प्रमुख रूप से रहा है। विश्व जी के पास ज्योम
वाक्येदिग्यता थी। इन्होंने दिनों रयामहिलारी नामक कवि हुए जिन्होंने
'संढ मंडल' नामक एक कवि गोष्ठी बनायी थी जिसकी जल कर 'सनेही
मंडल' को 'संढ मंडल' कर दिया था। इनके एक साथी थे कन्हैयालाल 'कान्ह'।
कान्ह जी कनीसी प्रतिभा रखते थे।

कुछ स्वतंत्र रूप से काव्य-रचना करने वाले कवि थे। इन कवियों
में सर्व को हैलमहिलारी दीक्षित 'कटक', सुशोराम शर्मा 'सोम', रामनाथ
गुप्त, सुकलाल शर्मा 'शील' आदि थे। इनके साथ मरिक्कट बर्तुदी एवं
डा० हरिवरदत्त 'शील' का नाम उल्लेखनीय है।

कानपुर जनपद के दो कवि सर्व लेखक, रामेश्वर संगीत तथा
विनोद रस्तोगी उल्लेखनीय हैं। संगीत बाबूजी मोपाल तथा रस्तोगी जी
दिल्ली में श्रेष्ठ रेडियो नाट्यकार हैं। इन्होंने के सिद्धेवर अवस्था

ये जिसके दुकान पर बख्तर लिंगीष्टो होता था ।

हायवादा रैला के गोत्कारों में प्रो० शालिग्राम मिश्र एवं
 वे दृष्टा टंडन का नाम उल्लेखनीय है । यहाँ के डा० ए० बी० आलेख में प्रसिद्ध
 कवि पं० गोपालदास 'नोरज' भी पढ़ते हैं । इन्हीं दिनों नोरज जो बच्चा
 त्यागि बर्जित कर चुके थे । इनके साथ ब्रह्माहावाद के रमानाथ अवस्थी भी रहकर
 काव्य-रक्षा करते थे । इन्हीं दिनों शिवबहादुर सिंह मदीरिया, लेख ,
 राम फौज त्रिपाठी, बड़े प्रताप नागर, सिन्दूर, राहा, सुरेन्द्र तिवारा एवं
 उपेन्द्र हुए । इन नये कवियों के साथ पुराना परम्परा में बड़े कलने वाले ज्योम
 दासिना प्रो० सिद्धनाथ मिश्र, कलाम , प्रभात, हरिन्दन बाजपेयी, निगुण
 अवस्था, बानीश शास्त्री, रामेश्वर त्रिपेदी, सर्वेश, मान अवस्था, रत्नावर्त
 श्रीवास्तव एवं जीवन झुलना का नाम उल्लेखनीय है । इसके अतिरिक्त नई
 पीढ़ी के उमरते कवि हैं- श्यामनारायण वर्मा । कन्दे, उपप्राति , धर्मपाल
 अवस्थी , सतपल , बानन्द शर्मा प्रलोक, हरिश फौज जैसे कवि जाते हैं ।

पत्र प्रकाशक एवं संपादक के रूप में पूर्णचन्द्र गुप्त, बनारसी दास ,
 डा० मधुवरसिंह जौड़ा भी तथा लक्ष्मीधर बाजपेयी का नाम उल्लेखनीय है ।
 बाज उमरते स्रजकारों में नरेन्द्रमोहन, सुरेन्द्रमोहन का नाम उल्लेखनीय है। कुशल
 विश्वैला तथा समाजशास्त्री, पं० पृथ्वीनाथ तथा श्री वारेन्द्र सहाय गुप्ता इस
 जनपद की महान उपलब्धि थी ।

५- बानपुर जनपद की लोक-संस्कृति एवं लोक-साहित्य-

जिस प्रदेश की लोक-संस्कृति का सीधा आगता कि उसने
 लोक साहित्य में प्रतिबिम्बित होता है। समाज के विकास का सुझावित्मूलक
 रैला, सामाजिक बोध को एक-एक अवस्था, जन-जन को जाता-निराशा, धर्म-

विनाद , वाक्य-वाक्य, लय-पद्य, रस-रस, मन-मन आदि सभी को सटीक एवं सजीव अभिव्यक्ति लोकसाहित्य के माध्यम से होती है अपने इसी बहुमूल्य गुण के कारण लोक साहित्य वस्तुतः लोक संस्कृति का फायदा बन गया है । यह अपनी जो साहित्य की गिनती, समाजसाहित्यी एवं नृत्य वेदाङ्गों का ध्यान बरकत साथ लेता है ।

लोक-साहित्य के माध्यम से समाज के विकास का माध्यम, रहन-सहन एवं सांसाध्य रीति-रिवाजों का ज्ञान होता रहता है। हमें इसके द्वारा यह भी पता चलता है कि हमारे माणा या थी तथा उसके शब्दों का ध्वनिम् एवं कथन-विकास कैसे हुआ तथा प्राचीन साहित्य के प्रति लोक-रसि कैसे था। माणा या बीली के वैज्ञानिक अध्ययन में लोकसाहित्य का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि लोकसाहित्य 'स्थानीय गीत' (लोक डाकान) का सच्चा स्वरूप होता है ।

डा० संतराम बन्सि लोक-साहित्य को 'डाकानामाहट' (गणितीय) विज्ञान बताते हुए कहते हैं कि लोक-साहित्य की अवत परम्पराएँ अभी भी काल-प्रवाह में बहती नहीं हैं । वह सामाजिक , सांस्कृतिक एवं सांस्कृतिक होता है । लोकसाहित्य को हम उस वस्तुता की भाँति मान सकते हैं जिसको जहाँ बहुत गहरा भी है, पर वह निरन्तर रूप से नई लहरें, नई परियाँ और नये फल प्राप्त किया करता है। विश्व, मानव एवं समाज की रहस्यमयी पहलुओं को सुलझाने के लिए लोक-साहित्य को एक धूमिल दर्पण मान सकते हैं ।

लोक-साहित्य हमारा प्राचीनता एवं संस्कृति का प्रतिरूप तो है ही ; किन्तु यह पुस्तकों से उद्धृत न होकर जनता के बीच जन-जन में व्याप्त अमरवाणी है। इसमें कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जिसका सम्बन्ध वहाँ का स्थानीय बोली से बढ़ा हो घनिष्ठ होता है। यथा-

(क) लोकसाहित्य कृति परम्परा पर आधारित होता है। इसे जनता अपने पूर्वजों से सुनकर अपनी संतान की सुनाती रहती है तथा संतान अपनी संतति को जिसमें वहाँ की प्राचीन एवं नवीन स्थानीय बोली के ध्वन्यात्मक एवं फल-त्पक रूप सम्मिलित होते हैं।

(ख) इसके प्रामाणिक स्वरूप ठोस नहीं होते, अतः एक मुँह से दूसरे मुँह में गुंजरित होने वाली वाणी है अतिशय जनता की साहित्यिक पूर्वो लोक-साहित्य ही है।

(ग) इसके रचयिता का नाम भी नहीं मालूम होता। यह अपनी स्थानीय (ग्रामीण) बोली के लक्ष्य के अनुसार लोगों के पास सुप्रसिद्ध होता है।

(घ) इसकी भाषा अर्थात् एवं वाङ्मयशून्य सरल एवं ग्राम्य होती है।

(च) यह साहित्य उद्देश्यपूर्ण एवं वास्तविकता पर आधारित होता है तथा ग्राम्यबोली के साथ प्रभावित होने वाला यह सदाबाहो प्रौढ है।

आज कानपुर जनपद में लोकसाहित्य के लगभग समस्त रूप यहाँ के गाँवों में देखे जा सकते हैं। अध्ययन की दृष्टि से लोक साहित्य के स्थूल रूपों को जान लेना आवश्यक है जिसके द्वारा हमें स्थानीय बोली और लोकसाहित्य के स्थूल रूपों को जान लेना आवश्यक है जिसके द्वारा हमें स्थानीय बोली और साहित्य की घनिष्ठता का पता चल जाएगा क्योंकि स्थानीय बोली के अध्ययन हेतु यहाँ के लोक साहित्य और उसके पैरों की जानना आवश्यक है।

इस काव्य में प्राप्त लोक-साहित्य निम्न प्रकार का है-

(१) लोकगीत -

लोकगीत इस काव्य के लोकसाहित्य का प्रमुख एवं महत्वपूर्ण अंग है। इनके द्वारा जीवन की अधिकाधिक प्रेरणा प्राप्त होती है। यह सभी अवस्था एवं सभी राज्यों में गाये जाते हैं, यहाँ के लोकगीतों में प्रचलित निम्न पद्धतियाँ हैं—

(क) संस्कार विषयक गीत— जन्म सोहर, जन्मप्राशन, भुङ्गन, अर्ध-मैद, टीका आदि ।

(ख) देवी गीत— रत्नमा, नांदुगा, महालक्ष्मी, कर्वा, बंचरी आदि ।

(ग) ऋतु गीत— बारहमासा, वैत्र, जादिवन, दशहरा, फाँफो, गजली, भुजूरिया आदि ।

(घ) मजितीत - मजन, कोर्तन, जस (यस), निगुन, सनेये आदि ।

(च) कार्य सम्बन्धी गीत— निकाए, बस्ती, लावना, बारा पूजन, मोहनी-भेले के गीत आदि ।

(छ) छैल सम्बन्धी गीत— छैल के गीत, दिवारा, कुलेरा, विवाह के दिन के गीत आदि ।

(ज) जाति गीत - धोबियों के गीत, बहोरों के गीत, बपारों, कटारों आदि के गीत ।

(२) प्यारा -

इन्हें अन्तर्गत प्रकल्प-गीत आते हैं । इनमें बड़े-बड़े वारों एवं भुजणों के चरित्रों की बड़े रोचक छे एवं विस्तार से गाकर सुनाया जाता है ।

कासपी, महीबा, कासिा जादि पास क्षेत्र के कारण बालहा-ऊपल, अंला-मारु एवं कासिा सेरानो जादि को कहानियाँ गा-गाकर सुनाई जाती हैं।
 पंजारा लोक साहित्य को निम्न प्रकार से बाँट सकते हैं— बालहा-ऊपल, डोला, चम्पक्या, गीपीकन्द मरफो, ऊमकेव का गीता तथा नल-दम्पत्यो जादि ।

(3) लोककथा-

कानपुर जनपद में लोक कथाओं के अन्तर्गत जानेवाली कई परम्पराएँ हैं जिनमें मनोरंजन कृतियों के अनुष्ठान (झिाली, तीजा, शरद्वड, कूवा, जंत जादि), जातियों के स्वभाव सम्बन्धी मूल-प्रेत सम्बन्धी, परिवर्ष तथा साधु-संतों की, राजविभ्रमादित्य तथा पंच तंत्रों की अनेक कल्पित राजाओं सम्बन्धी जादि अनेक प्रकार की गणकथी अभिव्यक्ति लोककथा के अन्तर्गत जाती हैं । इनके अन्तर्गत अन्य मो ग्रामोण किसी, ज्ञानवर्धन के कल्पित किसी तथा मूर्खों, ठाँ, परिवर्षों, दान्यों जादि को जादुई कथार मो जाती हैं ।

(4) लोकनाट्य -

लोकसाहित्य में लोक-नाट्य का इस जनपद में प्रमुख महत्त्व है। लोक मनोरंजन के लिए जनपद में जो नाट्य रूप मिलते हैं। उन सबको लोकनाट्य (फोक थिएटर) माना जा सकता है। स्वतन्त्र-मेद के कुज्जार नाच, तमाशा, नोटकी, राप्तीला, रासलोला जादि के रूप में लोकनाट्य प्राप्त हैं जो मध्यों के बंश में लोकनाट्य प्राप्त हैं जो गणों के बंश में चौपालों एवं मैदानों के लुई रंगमंच पर अभिनीत किये जाते हैं। इनके अतिरिक्त पूजणों के बारात जाने के बाद महिलाओं द्वारा अभिनीत 'नटखोरा' या 'नकटोरा' तथा स्वारि-गणिके को बाँधनो रातों में खेल जाने वाले 'स्वर्ण' जादि भी जाते हैं। इन सभी लोक-नाट्यों

यें शुद्ध ग्राम्य बोली के द्वाते किए जा सकते हैं वही बोली के अध्ययन का दृष्टि
अत्यन्त उपादेय है।

(५) कहावतें -

कहावतें ग्राम्य-जीवन का दर्पण होती हैं जिनके द्वारा सामाजिक
व्यवहार-पटुता, जाति-स्वभाव, देशकाल, याम्य-भावना, ऐतिहासिकता,
कृषि एवं मौसम सम्बन्धी तथा सामान्य बुद्धि जैसा निर्देशन कहावतों में मिलता
है वैसे अन्य दुर्लभ है। एक-एक कहावत गूढ़ ज्ञान का सागर होती है तथा
उनमें हिो छुं कोई सीकिया मो। इन्हें सुनि मो कहा जाता है यहाँ धाय,
मछली भी कवियों के अतिरिक्त अन्य न जान किन्नी कहावतें प्रचलित हैं जिन्हें
व्यक्त करनेवाला भाषा ठेठ नवाक होती है।

(६) परैलियाँ-

सांख्यिक को अनुभूति और कालक्रम की सुझाविसूझम अभिव्यक्ति
परैली में देखो जा सकते हैं। इनके द्वारा कहाँ एक और बुद्धि वि अस होता है
तो दूसरी और फोरेंज मो। इस जनपद की अभिव्यक्ति परैलियाँ सेता, मौजन,
धौत वस्तुएं, प्राणिज्म, जी-प्रत्यय तथा प्रकृति सम्बन्धी होती हैं। इन परै-
लियों में स्थानीय बोली के मूल सारके शब्दों का प्रयोग होता है जिनमें सभी
प्रकार की बोलीगत विशेषताएं तथा अर्थ तत्त्व का विशेष महत्त्व होता है।

६- मौगील्लि एवं भाषागत विशेषताएं-

कानपुर जनपद अपनी मौगील्लि स्थिति के अनुसार लम्बाई-बोड़ाई
में लाम करार होने पर मो कहें कियों का स्पर्श करता है। इन मौगील्लि
सीमाओं के साथ इस जनपद से कहें बोलियों की सामार मो प्रारम्भ होती हैं। इस

जनपद के पूर्व में फातेहपुर जनपद जाता है जहाँ की बोली जयपी है। इसके दक्षिण-पूर्व को सोमा नदी बिले द्वारा बहाई जाती है जहाँ बघेली का भित्रित होना है। कुछ विद्वान् (डा० चोरेन्द्र वर्मा आदि) जयपी और बघेली की एक ही बोली स्वीकारते हैं। विद्वानों की मान्यता कुछ भी नहीं, किन्तु यह निश्चित है कि कानपुर जनपद में जयपी और बघेली का कानपुर घाटम पुर तहसीलों में पर्याप्त प्रभाव है। वहाँ की बोली में जयपी की विशेषता के अनुसार व्यंजनार्थ शब्दों में "ह" तथा "उ" वन्त्य करने की प्रवृत्ति है। इसके अतिरिक्त कर्माकारक को "के" स्थान पर "का" का प्रयोग प्राप्त होता है। यथा- जाव, साव, मारि, ठारि आदि। इसी तरह बघेली के प्रभाव के कारण व का व तथा "हे" के स्थान पर "है" का प्रयोग मिलता है। यथा- जावाव-जावाव, जवाव, सबाव आदि तथा उन्ही-उन्ही, हत्ती-हत्ती, घासे-घासे आदि प्रयोग प्राप्त होते हैं।

कानपुर जनपद के दक्षिण से लाया हुआ बोली "बुन्देलखण्ड" या "बुंदेली" है। इस बोली का इस जनपद की बोली पर गहरा प्रभाव है। इसी प्रभाव के कारण यमुना के दोनों किनारों की बोली की विद्वानों ने एक नई बोली त्रिशरी या त्रिशर मान ली है।^१ इस बोली का प्रभाव पूरवाया एवं घाटमपुर तहसीलों में ध्वन्यात्मक एवं इपात्मक है। "बुन्देली" के प्रभाव के कारण यहाँ की बोली में "का" सम्बन्धकारक "केर" (जयपी में क्यार), क्या के लिए "का", "कोह", "के लिए", "को" तथा "जीन के लिए" भी "को" का प्रयोग होता है। इसके अतिरिक्त "में" के लिए "हाँ", तुम्ह के लिए "हाँ" तथा "ह" के लिए "हाँ" का प्रयोग जाता है।

१- डा० चोरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा का इतिहास, पृष्ठ ६६

२- ब्रह्म गिराँत, हिन्दी भा० सर्वेक्षण (अनुराठ-अग्रवास), पृष्ठ ७९

इस जनपद की बोली में कुन्देली के प्रभाव के कारण अनुनामिकता भी पर्याप्त मात्रा में व्याप्त है यथा- हाथ-हाथि, बागी-बागी, हाथी-हाथी, कान-कान, राठ-राठ आदि। कानपुर जनपद की बोली में डा० ग्रिक्सने महोदय ने भी कन्नीजो, जवघो के साथ कुन्देली का प्रभाव भी स्वीकार किया है।

इन जनपद के दक्षिण एवं पूर्व की कुछ अन्य उपभाषाओं जैसे मौजपुरी एवं हसीस गढ़ी में कुछ शब्दों का प्रयोग भी यत्र-तत्र प्राप्त होता है। जैसे "के लिए" कारक के हेतु "के पारे", "पत्ता" के लिए "लें", "तरफ" के लिए "लें" "साथ" के लिए "समेत" आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

कानपुर जनपद के परिसर में कन्नीजो बोली का क्षेत्र है। डा० अब्राहम ग्रिक्सने^१ एवं डा० थोरेन्ड^२ वर्मा जैसे विद्वानों ने भी कानपुर जनपद की कन्नीजो बोली का क्षेत्र परिभाषित कर दिया; किन्तु कानपुर जनपद का बिल्हौर एवं डेरापुर तहसीलों के अधिकारी भाग में कन्नीजो बोली जाती है। वैसे कानपुर जनपद की शेष तहसीलों में पड़ जाने वाली बोली की कन्नीजो या किसी अन्य बोली के साथ जोड़ना निरा प्रयत्न है तथा जनपद की स्थानाय बोली के प्रति अन्यथा है। हाँ, यदि जवघो, कन्नीजो और कुन्देली के तुलनात्मक प्रभाव की देखा जाए तो कन्नीजो का प्रभाव कुछ ज्यादा है। यह बोली बिल्हौर की बाथी तहसील तथा डेरापुर एवं बक्करपुर तहसील के कुछ भागों में व्याप्त है।

इसके अतिरिक्त पुष्पारयाँ, घाटमपुर तहसील में कुन्देली का प्रभाव है तथा घाटमपुर, बक्करपुर एवं कानपुर तहसीलों के पूर्व भाग में जवघो एवं बपेलो का प्रभाव है। कानपुर जिले के उत्तर में गंगा होने के कारण (उन्नाव में जवघो ही है) किसी बाथी बोली का प्रभाव नहीं है। इस तरह यह स्पष्ट है कि जनपद की बिल्हौर तहसील का परिसर नाम छोड़कर ऐसी भीड़ तहसील नहीं है जिसका स्पष्ट सम्बन्ध किसी बोली से स्थापित किया जा सके।

यदि अध्ययन के कारण इस जनपद की बिटहौर तहसील की कम्नीजों का हीन माना जाए तो इसी जनपद की घाटमपुर एवं कानपुर तहसीलों के पूर्वी भाग की बापी एवं बपेली के करीब स्थापित करना पड़ेगा। अतः इस जनपद की बोलो की अलग-अलग बोलियों का हिसाब न मानकर समस्त जनपद की बोलो की एक मानकर अध्ययन का विषय माना गया है ; क्योंकि कानपुर जनपद में समस्त बोलियों के प्रभाव की देखते हुए यदि समस्त जनपद की बोलो की एक नवीन दृष्टि से देखा जाए तो वह सम्मिश्रित बोलो बनकर एक नये रूप में सामने आता है जिसे न तो कम्नीजों से जोड़ सकते हैं और न ही जवबी से । जनपद की बोलो का यही निरालाकन व्यक्त के लिए एक लाभ उत्पन्न करता है । यहाँ की बोलो ध्वनि, रूप, वाक्य आदि की दृष्टि से दोनों बोलियों के निरुद्ध होकर भी पर्याप्त प्रयुक्त है ।

-
- × १- डा० गिक्सने, हिन्दी भाषा का सर्वेक्ष (सं० बन्धु सतीश वन्हा), पृ० २२१
 - × २- बोरेंड्र वर्मा, हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० ६५

द्वितीय अध्याय ~~संस्कृत व्याकरण~~

ध्वनि-विचार -----

- २.१ मूल स्वर
- २.२ व्यंजन
- २.३ संयुक्त व्यंजन
- २.४ सन्देश ध्वनि ग्राम
- २.५ लोप
- २.६ वागम
- २.७ विकल्प

तृतीय अध्याय

ध्वनि विचार

“कानपूर” जनपद की बोलों की अधिकांश ध्वनियाँ संस्कृत से आती हैं। कासान्तर के अधिक विकास-संस्कृत १ प्राकृत १ अपभ्रंश १ से हिन्दी भाषा निःसृत हुई है। इस जनपद की बोलों की यह कह पाना कठिन है कि यह शौरसेनी अपभ्रंश का विकसित रूप है या अर्धमागधी अपभ्रंश का विकसित रूप। यहाँ की बोलों में दोनों, पूर्ण स्वर परिचय, हिन्दी का सम्मिलित रूप है ; जो एम ब्रज-कनौजी तथा अवधी-बस्ती से न जोड़कर केवल इतना जानते हैं कि यह संस्कृत निःसृत आर्य भाषा है। हिन्दी का मार्गित देवनागरीलिपि के समस्त वर्ण इसमें प्रयुक्त होते हैं, किन्तु कुछ विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं। जिन ध्वनियों के लिपि चिह्न नहीं हैं उन्हीं लिख जगह से सर्वत निवारित करके बोलों का अध्ययन किया गया है। जैसे- लघु “अ” तथा दीर्घ “आ” के बीच की ध्वनि “ऑ” तथा “ए” और “ऐ” के बीच की ध्वनि “ऐँ” एवं “औँ” और “ओ” के बीच की उच्चारित ध्वनि को “ओँ” चिह्न दिए गए हैं।

१- अरबो ध्वनियों को क, ख, ग, ज, फ़ आदि न उच्चारित करते केवल क, ख, ग, ज, फ़ आदि उच्चारित करते हैं। इतना स्पष्ट उच्चारण केवल अरबो-फारसी जानने वाले लोग ही करते हैं।

२- इस जनपद की बोलों में ध्वन्य “ण” का प्रयोग लिखने में ही है ; किन्तु बोलने में इसे “ण” न कहकर “स” या “स” कहते हैं। यथा- षटराज-

स्ट्राव, गच्छा - कस्टो, रहते हैं। किन्तु लेखन शुद्ध होता है। इसी प्रकार 'ज' की दन्त्य 'स' पड़ते हैं-- उष्णाद- असा, विषय-विसय, विशेष-विशेष आदि। यहाँ की बोली में 'ठ' को जाह 'ड' प्रयोग भी मिलता है। स्पर्श तथा कर्ण की दीर्घ ध्वनियाँ 'डो' तथा 'म' का प्रयोग लेखन में नहीं है तथा यह अनुस्वार (ं) के रूप में बोली एवं लिखा जाती है।

३- ३.१ मूल स्वर-

इस - अ, इ, उ
 दीर्घ - आ, ई, ऊ, ए, औ
 संयुक्त - ऐ (अई) औ (औ)

स्वरों का उच्चारण जिसका के उठने के आधार पर किया गया है। किसी स्वर के उच्चारण में जीभ का अग्र, मध्य, कौन सा भाग उठता है। स्वरों के उच्चारण में मुँह के खुलने एवं सँस के आवागमन के आधार पर भी स्वरों को संयुक्त एवं विभुत के आधार पर भी वर्गीकृत करते हैं जिसमें संयुक्त, असंयुक्त, विभुत एवं अविभुत रूप होते हैं।

४- उच्चारण के आधार पर स्वर ध्वनियों को वर्गीकृत करने निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है-

	अग्र	मध्य	पश्च
संयुक्त	इ ई		उ ऊ
अर्ध संयुक्त	ए, ऐ		औ औ
अक्षर अविभुत	ऐ	(बै) व	वी
विभुत			(वौ) वा

४- व-

यह बर्ध विवृत मध्य वृत्त पुल्लिङ्ग स्वर है। इसमें उच्चारण के समय जोर का मध्य भाग कुछ ऊपर उठ जाता है तथा अग्रभाग निम्न दन्तमूल या स्पर्श करने लगता है। होंठ कुछ झुककर फाँल जाते हैं; किन्तु प्रायः उदात्तान् सर्व शिथिल से रहते हैं। शब्द के प्रारम्भ में इसका स्वतंत्र प्रयोग होता है तथा शब्द के मध्य तथा अन्त में मिश्रित होकर प्रयुक्त होता है। यथा-

शब्द के आदि में-	वपना, वार, वच्चा
शब्द के मध्य में -	मसल, जसल, बजन
शब्द के अन्त में -	बल्लू बटार, लटार, मसल आदि।

५- वं-

यह बर्ध विवृत मध्य वृत्त स्वर है। इसकी उच्चारणावस्था बही है जो 'व' का था; किन्तु इसके उच्चारण में लिह्वा का अग्रभाग अपेक्षाकृत थोड़ा ऊपर उठ जाता है। अन्तिमांत रहित अवसर में यह मध्य सर्व अन्त में जाता है। यथा-- सपना, राप्, राज्, मगन् आदि।

'वं' वर्ण अन्त्य उच्चारण इतना स्पष्ट नहीं है जितना कि यह दो ध्वनियों के संयोग में स्पष्ट उच्चारित होता है किन्तु यह निर्दिष्टता लेखन में नहीं है बल्कि उच्चारण में है। यथा- रामत्व (राम + व + त्व)।

इसी प्रकार इस वर्ण का 'ह' के साथ मध्य में जाने पर 'व' तथा 'ए' के बीच का उच्चारण 'हं' तथा 'हँ' तथा 'हँ' के बीच का उच्चारण 'हँ' तथा 'हँ' तथा 'हँ' के बीच का उच्चारण 'हँ' ही जाता है। यथा- बल्ल (बल्लें), लहर (लहरें), जहर (जहरें), नहर (नहरें), गहर (गहरें), गहरदार (गहरेंदार) आदि।

७- वा-

यह विवृत अनुसृष्टी परच दीर्घ स्वर है। यह मात्रा की दृष्टि से सभी वर्णों में दीर्घ स्वर है। 'व' के उच्चारण की अवस्था 'वा' के उच्चारण में जिह्वा फसरकर नीचे दबोड़ रहती है। स्वरों में इसी अधिक विवृत स्वर दूसरा नहीं है। इसके उच्चारण में जोड़ों का फौलाव चतुर्दिक् होता है। इसका प्रयोग शब्द के आदि, मध्य, अन्त दोनों स्थानों पर होता है। यथा-

आदि - वाम, वॉह, वॉल
मध्य - वसाह, व्रात, वुराँ
अन्त - मूला, म्ला, मल्ला आदि।

'वा' स्वर के विषय में डा० भीलानाथ तिवारी कहते हैं- "ये विचार है यह परच स्वर न होकर मध्य स्वर है। मात्रा की दृष्टि से दीर्घ है।" १

८- वा- इसे इत्थ 'वा' कह सकते हैं इसका उच्चारण स्थान वही है जो 'वा' का है। इसका फेद केवल उच्चारण में होता है। लिखने में वा (व) को मात्रा का ही उपयोग किया जाता है। यथा-

विवाँरा, तिवाँरी, कुवाँल, बहाँल आदि।

९- व-

यह संवृत इत्थ का स्वर है। संवृत्ता की दृष्टि से इसका उच्चारण स्थान 'ह' से कुछ नीचे है। इसके उच्चारण में जिह्वा का अग्रभाग उठकर ऊपर उठता है तथा नीचे का बाँठ उच्चारण के समय कुछ नीचे की ओर झुक जाता है। यह स्वरों में सबसे अधिक इत्थ स्वर है। इसका प्रयोग शब्द के आदि, मध्य तथा अन्त में सब जगह मिलता है।

१- डा० भीलानाथ तिवारी, हिन्दा ध्व० और उनका उच्चारण, पृ० ४०

- बादि - इत्तार, इनकेर, इसुरा, इनते ।
 मध्य - ललिया, ललिया, ललती, ललिर ।
 वन्त - लल, ललित, ललित, ललारि जादि ।

१०- इ-

यह संवृत दीर्घ का स्वर है। इससे उच्चारण में जिह्वा का अग्र-भाग बहुत अधिक ऊपर उठ जाता है और यह कौमल तात् के समीप पहुँच जाता है। इसके उच्चारण में जीठ बाँड़ाई में जुते हैं तथा पार्श्व का और कुछ-कुछ सिँव जाते हैं। इसके बादि, मध्य, और वन्त तीनों प्रकार के प्रयोग मिलते हैं। यथा-

- बादि- इदे, इसेर, इँट, इँस
 मध्य- लोई, रसाद, बास, लसेर
 वन्त - मुकड़ी, करी, कसाड़ी, उपाई बादि ।

११- उ-

यह संवृत परच प्रत्य स्वर है। संवृता को दृष्टि से इसका स्थान 'ऊ' से कुछ निम्न है। इससे उच्चारण में जिह्वा का परच भाग फर्माप्त मात्रा में ऊपर की ओर सिँवा रहता है तथा जीठ मोड़ ही जाते हैं। इसका तीनों स्थितियों में प्रयोग होता है। यथा-

- बादि- उमर, उमर, उटक, उठान ।
 मध्य- लुला, लुसी, ललवा, लटक ।
 वन्त - लल सरल, ललपल, ललाय, ललरन बादि ।

१२- ऊ उ-

यह संवृत परच प्रत्य स्वर है तथा उ को अपेक्षा यह प्रत्य स्वर है। इसका उच्चारण स्थान 'उ' के समान ही है। अथो-अथो प्रभावित स्वरों में

शब्दों के अन्त में इसका प्रयोग मिलता है। यथा-
बावूँ, भुलूँ, मारीँ, क्हावूँ, जालूँ, बादि ।

१३- ऊ-

यह वृत्त मुक्तो संवृत दोष परस्व स्वर है। इसके उच्चारण में 'उ' की ओर जाकर जोर बढ़ाते हुए अधिक गोल होकर बागे की ओर खिंच जाते हैं। इसके उच्चारण में जिह्वा का पिछला भाग उठकर कौमल आनु के समीप पहुँच जाता है। मात्रा को दृष्टि से यह दीर्घ है। इसका प्रयोग समो स्थितियों में होता है। यथा-

बादि -	ऊसर, ऊस, ऊँच, ऊँघाई ।
मध्य-	पूँ, मूँ, समूँ, जूँ ।
अंत -	बिच्छूँ, बालूँ, बागूँ, बलूँ बादि ।

१४- ए-

यह अवृतमुखा अर्द्ध संवृत अर्ध स्वर है। इसके उच्चारण में जोर 'इ' की ओर जाकर दोनों पाश्वर्कों को अधिक कुलते हैं। जिह्वा का अग्रभाग ऊपर उठता है ; किन्तु 'इ' के जितना नहीं। इसके प्रयोग बादि, मध्य, अन्त दोनों स्थितियों में मिलते हैं। यथा-

बादि -	एवज, एग, एजंट, एसैर ।
मध्य-	सैल, कौला, कौटर, पटेल ।
अंत-	कहे, राहै, कहै, दहिने-गौँ बादि ।

१५- ऐ-

यह 'ऐ' का प्रत्यक्ष रूप है। इसका उच्चारण मूल स्वर 'ऐ' से कुछ नीचे गड़ता है। इसका उच्चारण ढोला तथा रेन्ड्र का जोर होता है।

यह विदेशी ज्ञात ध्वनियाँ हैं तथा 'ह' के (मध्य में ग्रासित होने से) पूर्व उच्चारित होता है। यथा- पैर, पै, रेंदाय, रेंदो (देख) रेंदो (रेंदो) दतेक, रेंका, रेंक्यावन (रेंक्यावन) आदि।

१६- ऐ-

यह बद्धविद्युत इस्व अग्र स्वर है। इससे उच्चारण में लिट्टा का अग्रभाग ऊपर उठ जाता है किन्तु 'ऐ' जितना नहीं। इससे उच्चारण के समय बोंठ के दोनों पार्व प्लवते फल जाते हैं। माता की दृष्टि से यह दीर्घ है। डा० कादरी इसे संयुक्त स्वर नहीं मानते हैं^१ किन्तु डा० मोलानाथ तिवारी^२ एवं डा० बटजा^३ इसे मूल स्वर कहते हैं। इन सबसे उत्तम विचार डा० धीरेन्द्र वर्मा^४ का है- कि 'ऐ' साधारणतया संयुक्त स्वर है किन्तु जल्दी बोने में क्यो-क्यो इसका उच्चारण मूल इस्व स्वर 'ऐ' के समान ही जाता है।^४

इसका प्रयोग आदि, मध्य, वन्त तानों स्थितियों में होता है। यथा-

आदि- ऐव, ऐनव, ऐव, ऐठ ।

मध्य- बैल, बै, टैम, टैट ।

वन्त- ठाले, हाले, गार्वे, डार्वे आदि ।

१- डा० कादरी, हिन्दी फो०, पृ० ५१ (डा० म० प्र० शर्मा में उ० वि०)

२- डा० मोलानाथ तिवारी, हिन्दी ध्व० और उ० उच्चा०, पृ० ४४

३- डा० बटजा, ओरि० सोडेव० वें० ले०, पृ० १४०

४- डा० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी मा० आ० क०, पृ० १४०

१७-वी-

यह बड़े संवृत वृक्षुली दोष परच स्वर है। इसके उच्चारण में दोनों बाँठ थिक्कू कर गीत ही होते हैं। बिहवा का परच माग ऊपर उठ जाता है। किन्तु 'उ' या 'ऊ' से नाचे रहता है, अतः मुँह में 'उ' के आवाज़ नहाँ होता है। मात्रा की दृष्टि से यह दीर्घ कि 'ऊ' से द्वय है। इसका प्रयोग सभी स्थितियों में प्राप्त है। यथा-

वादि -	वीस, बीसा, बीषा, बीसर ।
मध्य -	डोम, झोर, ज़ोर, डोर ।
वन्त -	कुत्ताबी, गिरा, परा, परी वादि ।

१८-वी-

वी का उच्चारण 'वी' से थोड़ा नाचे है। इसके उच्चारण में बिहवा 'वी' को तुलना में कुछ नाचे तथा मध्य को जोर होता है। यह 'वी' का द्वय रूप है। इसका पैदा उच्चारण 'वी' से होता है जो ही मात्रा का प्रयोग होता है। भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसे 'वी' लिखते हैं। इसका व्यो स्थानों पर प्रयोग प्राप्त है। यथा-

वादि -	बीसारे, बीड़रा, बीर ।
मध्य -	बीर, बीरी, बार'ना ।
वन्त -	सावी, पार'ी, बीड़ी वादि ।

१९-वी-

यह बड़े विवृत वृक्षुली दोष परच स्वर है। इसके उच्चारण में जोम का परच माग ऊपर उठता है किन्तु 'र' जितना नहाँ। बाँठ गीत ही बाते हैं किन्तु 'ऊ' जितना नहाँ। यह पूरा हिन्दी में संयुक्त रूप परिवर्तित

हिन्दी में संयुक्त मूल स्वर है ।^१ कानपुर जनपद में यह संयुक्त रं मूल दोनों रूपों में प्राप्त है। यथा-

बादि -	बीघर, बीसट, बीड़ा, बीसर ।
मध्य-	बीक, बीक, बीस, बीड़ा ।
बादि -	देवी, जावी, लिली, सुनी बादि ।

२०-

कानपुर जनपद का बीला के अस्त स्वरों में अनुनासिक रूप भी मिलते हैं । अनुनासिक रूप बादि मध्य तथा अन्त तीनों स्थितियों में प्राप्त है। किन्तु सुन्दरी प्रभावित क्षेत्र में अनुस्वार का प्रयोग अधिक है। इन अनुनासिक स्वरों का उच्चारण स्थान तो सर्वथा वही रहता है। परन्तु बीभल तालु बीर बीया नीचे मुक जाते हैं, जिससे हवा मुख के बहिर्गत नाक से भी निकल जाती है। फलतः स्वरों में अनुनासिकता आ जाती है । यथा-

बँ	बीसर, बीमार, बीर ।
बाँ	बीवर, गवाँर, गाँठ, कहाँ ।
हँ	हँधीरी, सिंधार, बिषना, रखँ ।
हँ	हँधन, बहँच, साँच, घाहँ ।
ठँ	ठँट्या, धुँधवी, पहुँचत ।
ऊँ	ऊँह, ऊँच, छूँट, पहाऊँ ।
हँ	हँडा, बठँन, पेड़, सुनारँ ।
हँ	हँठ, हँ, बाहँ, सोवन ।
बाँ	बाँक, राँक, बीसर, सातों ।
बाँ	बाँसा, बाँका, बीघाँ, दउराँ बादि ।

१- भीलानाथ त्रिवारी, हिन्दी ध्व० और उ० उच्चार०, पृ० ४६

२१-

अनुनासिकता के कारण अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। उच्चारण
को धीँहा को मूल से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। उदाहरणार्थ-

गर्जो (तापों का धान)	-	गर्जो (घिना बासों का सिर)
पाव (सेर की चौथाई माप)	-	पाव (बाण)
सिंगार (कीचो घूमना)	-	सिंगार (सजावट)
हो (है)	-	हो (यहो)
गुजर (क्रम होना)	-	गुजर (हल्की बाधा)
गूँ (कान का भ्रम)	-	गूँ (लम्बा ध्वनि व्यंजन)
खड़ा (खरा)	-	खड़ा (फिट्टी का मर्तल)
बेटा (लड़का)	-	बैट (पै)
करँ (स्वयं प्रीति)	-	करँ (बहुल प्रीति)
पैठ (बैठना)	-	पैठ (बाजार)
रगिन (बहुत से रग)	-	रगिन (विहीन पदार्थ)
चौकी (लम्बा या छोटा तख्त)	-	चौकी (मय से सिहरना)

२२- १. २ व्यंजन -

व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरण

यहाँ पर व्यंजनों का वर्गीकरण उनकी उच्चारण दृढ़ता, स्फूर्ति, उच्चारण स्थान, वृत्तमुक्तता, प्रतिरोधन, धीनत्व-अधीनत्व तथा अनुनासिकता की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है-

स्पर्श कठोर व्यंजन - क् ख् ग् घ्

२४-

क-

यह कौशल तात्त्व्य अल्प प्राण, अधीन, स्पर्श व्यंजन है। इसमें उच्चारण में लिङ्गा का पिङ्गा भाग • उठकर तालु के पिङ्गे भाग के कौशलतालु

को स्पर्श करता है तथा जीवा ऊपर उठकर नासिक विवर को बंद कर देता है। कुछ पल स्पर्श की स्थिति में रहने के बाद हवा मुख विवर से बाहर निकल जाती है। किन्तु वाजस्त इसका उच्चारण स्थान गुण बागै है फिर भी यह कंठ्य ध्वनि ही अधिक है। इसका वादि, मध्य तथा अंत तीनों स्थितियों में प्रयोग भिन्नता है। यथा- काज, कहुवा, कूट, ककोर, ककेल, रोक, महुक, खेस, बदरक, कसि, बाँके आदि।

२५-ख

उच्चारण स्थान की दृष्टि से 'क' और 'ख' लगभग एक हैं। हममें हवा (प्राण) अधिक निकलती है। फिर भी स्वर-तीव्रियाँ दूर रहती हैं, अतः वायु घर्षण नहीं करता है। इसीलिए 'ख' अधोष्ण महाप्राण कोमल तालव्य स्पर्श ध्वनि है। ज़रबो-कारसो के वर्ण 'ख' भी यहाँ का होता है 'ख' ही उच्चारित होते हैं। इसका सभी स्थानों पर प्रयोग होता है। यथा- सीरें, रासत, हरक, मारखी, लरहा, गुल्लन, फूल, कोसा, लसि, लेंच आदि।

२६-ग

इसका उच्चारण भी 'क', 'ख' के समान होता है किन्तु इसके उच्चारण में वायु कम निकलती है तथा क ख के विपरीत स्वर तीव्रियाँ एक-दूसरे के निकट आ जाती हैं। फलतः वायु घर्षण करता हुआ निकलता है जिससे ध्वनि में घीन (रुम्पन) आ जाता है इसीलिए 'ग' की अधोष्ण अल्प प्राण कोमल तालव्य स्पर्श ध्वनि कहते हैं, इसका सभी जाह प्रयोग भिन्नता है। यथा- गारो, गगरी, गुदरी, लादा, लार, रगरे, बागो, सान, जमन, नाँधि, गुँजा आदि।

२७-घ

इसका उच्चारण स्थान 'ग' के समान ही होता है किन्तु इसके उच्चारण में 'ग' से अधिक वायु (प्राण) निकलती है, अतः स्वर तीव्रियाँ में

घोषा(कम्पन) अधिक होता है, इसी कारण इसे सघोष महाप्राण कहते हैं। इसका सभी स्थानों में प्रयोग प्राप्ता है। यथा-
घर, बोड़ा, घुसवार, जोधर, देघर, उँघार, बाघ, पाघ, घंटा, घोंघा
आदि।

मूल्यां घनिष्ठा — दृढ ठू ठू ठू

4C- 2-

यह व्योमज्जल्य प्राण मूल्य स्पर्श ध्वनि है । इसमें उच्चारण में जिह्वा को नाँव उलटकर तालु को झूती है, किन्तु इसका उच्चारण संस्कृत को भाँति मूर्ख नहीं रहा । वाज्जल्य इसी कठोर तालु और धूर्ण को नाँव पर तथा कुछ लोम कठोर तालु और बत्स का संधि से उच्चारित करते हैं । जिह्वा के इस स्पर्श के जलावा भाँवा ऊपर उठकर नासिका विवर को बंद कर देता है तथा जिह्वा नाँवे जाती है और एक ही वायु बाहर निम्न पड़ता है। श्वा (प्राण) कम निम्नता है इसलिये बोध कम्यन नहीं होता है। इसका प्रयोग सभी स्थानों पर प्राप्त है । यथा- टाट, दुसनी, दुटका, फुटका, बँटका, बाट, ठाट, फोक्कट, टाँह, टँकी आदि ।

28- 5

इसका उच्चारण स्थान 'ट' के समान है किन्तु इसके उच्चारण में अधिक वायु (प्राण) बाहर निकलती है तथा स्वरतीक्ष्ण 'ट' की भाँति एक-दूसरे से दूर ही रहती है। अतः वषणं नहाँ होता है। इसे वषाणं महा-प्राणं सूक्ष्म स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। इसका वादि, मध्य, अंत सभी प्रकार प्राणों होता है। यथा- ठाकुर, ठाट, ठुमका, गँठिया, गँठि, कुठ्ठा, गाँठ, माठ, कठ, ठाँव, ठाँसि आदि ।

३०- डू-

इसका उच्चारण स्थान टुटू के बन्धुगार हो है किन्तु इसके उच्चारण में वायु^{कम्प}निक्रमिती है तथा स्वर तीक्ष्ण^र एक-दूसरे के निकट आ जाने से धीन (कम्पन) होता है इसीलिये इसे सधीन, बल्पप्राण मूल्य स्पर्श ध्वनि कहते हैं। इसकी प्रयोग सभी स्थितियों में होता है। यथा- डार, डार, डीम, वाडा, मड्डारो, सीडा, सडा, डाँक, डाँकाहीत बादि ।

३१- ढू-

ढ का उच्चारण भी 'ड' की भाँति होता है किन्तु इसके उच्चारण में वायु अधिक बल बाहर निकलती है तथा स्वर तीक्ष्ण^र के पास आ जाने से धीन (कम्पन) बढ़ जाता है जिसके कारण इसे सधीन, महाप्राण मूल्य स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। इसका प्रयोग स्थितियों में मिलता है। यथा- ढक्कन, ढाहं, ढाँक, ढेड़ा, ढूँ बादि ।

दन्त्य व्यञ्जन - तु, धु, दू, घू

३२- तू-

इसके उच्चारण में जिह्वा की बाँक ऊपर उठकर ऊपर के दाँतों के भीतरी भाग (जड़ और मध्य) का स्पर्श करती है तथा जीबा ऊपर उठकर नासिका पित्र रोक कर वायु नहीं निकलने देता है। इसके बलिकरका हवा कम निकलती है। तथा 'क' की भाँति स्वर तीक्ष्ण^रों में कम्पन नहीं होता। उच्चारण की दृष्टि से यह वधीन बल्प प्राण दन्त्य स्पर्श व्यञ्जन है। इसके बादि मध्य, बंते सभी प्रयोग प्राप्त है। यथा- तलत, तमाहा, तैसा, तहम्द, तराव, ततरा, पातर, हत, कीरत, परवत, तन्स्वाह, तंदूर बादि ।

३३- धू-

'ध' वधीन महाप्राण दन्त्य स्पर्श व्यञ्जन है। इसका उच्चारण

स्थान 'त' के समान है किन्तु इसके उच्चारण में वायु (प्राण) अधिक निकलती है। स्वरतीक्ष्ण 'त' के समान हो रहता है। यह भी वादि, मय्य, वीत सभी जाह प्रयुक्त होता है। यथा- थकान, थारा, पकी, करा, सपरी, मथू, साथा, हाँथ, रथ वादि।

३४-द-

द का उच्चारण स्थान 'त' के समान है किन्तु इसके उच्चारण में वायु (प्राण) कम निकलती है तथा स्वर तीक्ष्ण 'न' के समान पास जाकर कम्पन (पीछा) उत्पन्न कर देता है। इसीलिए इसे सघोष ब्रह्म प्राण दन्त्य स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इसका प्रयोग सभी स्थानों पर होता है। यथा- दराह, दार, दादा, दहगा, गदहा, दम्बर, गदरा, सादर, याद, छड़छड़, बस्ताद, सूद, हाँथ वादि।

३५-ध-

इसका उच्चारण 'द' के समान ही होता है। इसके अतिरिक्त वायु (प्राण) अधिक निकलती है तथा स्वरतीक्ष्णों के पास जा जाने से 'ध' की तरह कम्पन भी अधिक होता है। इन्हीं कारणों पर इसे सघोष महाप्राण दन्त्य स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इसका प्रयोग सभी जाह होता है। यथा- धान, धानुक, धोरन, उधार, बघाह, अधिक गाँधि, साध, सूधी, धाँधि, धै वादि।

व्योष्म - प् फ् ब् भ्

३६-प्-

इसका उच्चारण दोनों बाँठ फिसाकर किया जाता है। इसी लिए इसे व्योष्म कहते हैं। इसके उच्चारण में ज़रूर से बाती हुई वायु की

दोनों बैठ स्पर्श कर रोक लेते हैं तथा छू फल बाद स्फोट के साथ कुत्ते हैं जिससे वायु बाहर निकल जाती है और नासिका विवर को कींचा बंद रहता है। इसके उच्चारण में वायु कम निकलती है तथा 'क' की भाँति स्वर-तीव्रता में कम्पन नहीं होता। यह वृत्त प्राणकीर्ण द्रव्योष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है। यह जादि, कृष्ण, स्नेह अंत दोनों स्थितियों में प्रयुक्त होता है। यथा- परजा, फाहो, परकुन, परिवा, वषना, मुपत, कपरिया, वषिया, विरपा, सुपको, सापि, पैट, पासो जादि।

३०- फ-

इसका उच्चारण 'प' की भाँति होता है किन्तु इसके उच्चारण में वायु (प्राण) अधिक निकलती है तथा उच्च स्वरतीव्रता में कम्पन (घोष) नहीं होता है। इसीलिए इसे अर्धोप महाप्राण द्रव्योष्ठ्य स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इसका सभी स्थानों पर प्रयोग होता है। यथा- फटना, फसना, फीज, फाहुरा, सफरा, हाकिमा, सफाई, पूका, सराफा, लिहाफ जादि।

३१- व-

व का उच्चारण प, फ के अनुसार हो जाता है किन्तु 'व' के उच्चारण में वायु कम निकलती है। फार 'ग' के उच्चारण की भाँति स्वरतीव्रता पास जाकर कम्पन (घोष) उत्पन्न कर देता है। इसीलिए व वृत्त प्राण सघोष द्रव्योष्ठ्य स्पर्श व्यंजन कहा जाता है। इसके प्रयोग सभी स्थितियों में प्राप्त है। यथा- बउरा, बसवास, बहिया, बहिलो, बाँबा, निबटारा, सवर, कवर, गरब, शराब, राम जादि।

३९-पू -

यह महाप्राण सधीन व्योम्न्य स्पर्श व्यञ्जन है। इसका उच्चारण 'व' के अनुसार ही होता है किन्तु इसके उच्चारण में वायु अधिक निक्षिप्त होती है तथा स्वरतीव्रियाँ पास बाकर कम्पन (घोषा) उत्पन्न करती हैं। इसका वादि, मध्य तथा अंत सभी स्थितियों में प्रयोग प्राप्त है। यथा-
मोह, मया, मोह, मोहा, उमार, गामिन, अपिमान, बप्ति, जोम, सम्य, गरम वादि।

स्पर्श संघर्षी- च, छ, ज, झ

४०-पू -

इसके उच्चारण में जिह्वा का अग्रभाग दंत पीठ से पी है तात्तु को स्पर्श करता है तथा कुछ देर स्पर्श की स्थिति/स्थान से हटती है उसके पीछे-पीछे हटने से कुछ देर तक जोम के अग्रभाग और तालु के बीच स्थान कम होने से स्वा संघर्ष करते हुए बाहर निक्षिप्त होता है। 'च' के उच्चारण में अन्य वर्णों से वायु (प्राण) कम निक्षिप्त होता है तथा स्वरतीव्रियाँ में कोई कम्पन नहीं होता है इसीलिए इसे अधोऽन्तम प्राण तालव्य स्पर्श संघर्षी व्यञ्जन कहते हैं। इसका सभी स्थितियों में प्रयोग निश्चित है। यथा- चला, चहरा, चाफस, चौर, चरा, चौरा, चिजानी, सौच, मोचा, मिरच वादि।

४१-पू -

यह अधोऽन्तम महाप्राण तालव्य स्पर्श संघर्षी व्यञ्जन ध्वनि है। इसका उच्चारण 'च' के अनुसार ही होता है किन्तु इसके उच्चारण में वायु (प्राण) अधिक निक्षिप्त होता है तथा स्वर तीव्रियाँ में कोई कम्पन नहीं होता है। इसका प्रयोग वादि, मध्य तथा अंत सभी जगह प्राप्त है। यथा- छपरा, छत, छौंदर, मछंदर, मछरी, कछा, मूँ, रोह, बिच्छू वादि।

४२- वृ -

इसका उच्चारण वृ, वृ के उच्चारण स्थानों से ही होता है किन्तु इससे उच्चारण में वायु कम निकलती है तथा स्वर तीव्रता पास बाकर कम्पन (घोष) उत्पन्न कर देती है। इसीलिए इसे सघोष, अल्प प्राण, तालव्य स्पर्श संघर्षों व्यंजन कहते हैं। इसका प्रयोग सभी स्थितियों में प्राण है। यथा- वृहरी, जिहाज, जमुना, जंघा, जंग, जज्ज, उज्जियार, कलज, वायाज, निजाज, महाराज, बजाज आदि।

४३- ख - इसका उच्चारण ख को प्रोत्ति ही होता है किन्तु इससे उच्चारण में वायु (प्राण) अधिक निकलती है तथा स्वर तीव्रता पास बाकर कम्पन (घोष) उत्पन्न कर देती है इसीलिए इसे सघोष, महाप्राण, तालव्य स्पर्श संघर्षों व्यंजन ध्वनि कहते हैं। इसका आदि, मध्य, अंत सभी स्थानों पर प्रयोग होता है। यथा- फगड़ा, फँकरा, फाँफिर, फदरा, फफार, फुफाज, फफोर, फाँफ, फाँफ, फफ आदि।

नासिक्य - हृ, ज, ण, न्, ऋ, ए, अ

४४- हृ -

इससे उच्चारण में जिह्वा का निचला भाग ऊपर उठकर ताल के पिछले भाग को मसतालु को छूता है तथा जीवा नीचे लटका रहता है। अतः वायु नासिका विवर से निकलती रहती है। वायु (प्राण) कम निकलता है किन्तु स्वर तीव्रता से कम्पन होता रहता है इसीलिए इसे सघोष अल्प प्राण कोमल तालव्य नासिक्य व्यंजन कहते हैं। इसका प्रयोग क वर्ग के व्यंजनों के पहले उच्चारण में प्रयोग होता है। लिखने में इसका प्रयोग अनुस्वार - णिन्द् के रूप में होता है। इसका प्रयोग शब्द के मध्य में होता है। यथा- कौन, कौना शब्द, पौन, गौन, जी आदि।

४५-अ -

इसके उच्चारण में जिह्वा का अंता भाग 'कठोर तालु' का स्पर्श करता है तथा कीड़ा नीचे लटका रहता है। अतः वायु नासिका विवर से निस्कती रहती है। 'हूँ' की भाँति वायु कम तथा स्वर तीव्रियों से कम्पन (घोष) होता रहता है इसीलिए इसे सघोष अल्पप्राण तालव्य नासिक्य व्यंजन कहते हैं। इसका प्रयोग कर्नाट शब्दों के पूर्व अनुस्वार (ं) हिन्दु के रूप में होता है। यह शब्द के मध्य में ही प्रयुक्त होता है। यथा- कंवा, कँस, काँहा, कँवर, सँझा, कँवा, पँवा आदि।

४६-आ -

इसके उच्चारण में जिह्वा ठलटकर मूर्ध्ना का स्पर्श करता है। जोम कुछ फल रहता है तथा कीड़ा लटका रहता है। अतः वायु नासिका विवर से निस्क जाती है। 'ह' के उच्चारण में वायु कम तथा स्वर तीव्रियों से द्वारा कम्पन होता है इसीलिए इस अल्प प्राण सघोष मूर्धन्य नासिक्य व्यंजन कहते हैं। हिन्दु डा० मौलानाथ तिवारी इस फल से सहमत नहीं हैं। उनके अनुसार 'ण' के उच्चारण में जोम ठलटकर मूर्ध्ना तथा कठोर तालु से पास जाती है (स्पर्श नहीं करते) और फिर फटके से नीचे जाती है जो 'उत्प्रेरण' प्रिया कहते हैं (ओ ड में) स्वर तीव्रियाँ स्व-दूरी के पास जाकर कम्पन करती है, स्वा अधिक नहीं निस्कती, कीड़ा लटका रहता है, अतः वायु नासिका विवर से तथा कुछ मात्रा मुँह से निस्कता है, इसीलिए 'ण' सघोष अल्प प्राण पूर्व तालव्य नासिक्य उच्चिदाप्त व्यंजन है। इसका प्रयोग ट का तथा य आदि व्यंजनों के पहले तथा अन्य व्यंजनों के अन्त में होता है। इसका प्रयोग शब्द के मध्य एवं अंत में होता है। इसकी

१- डा० मौलानाथ तिवारी, हिन्दो ध्व० वी० उच्चार०, पृ० ६६

भी अनुस्वार (ँ) बिन्दु के रूप में लिखते हैं। यथा- मूँडा, छूँडा, ठूँडा, रूँडा, पुण्य, कण, कारण आदि ।

४०- नः

इसके उच्चारण में बिह्वलता का अनुमान (नौक) वत्स्य का स्पर्श होता है । जीवा नीचे लटका रहता है तथा वायुनासिका विवर से निकलता है किन्तु वायु की मात्रा कम होती है । इसके उच्चारण में स्वर तीक्ष्ण पास जाकर कम्पन (घोष) उत्पन्न करता है इसीलिए 'न' सघोष अल्प प्राण वत्स्य नासिक्य व्यंजन कहते हैं । डा० महावीर प्रसाद शर्मा ने सघोष अल्पप्राण वत्स्य-वत्स्य स्पर्श ध्वनि माना है । इसका प्रयोग सभी स्थितियों में प्राप्त है। यथा- नरक, नक्य, नास, नैर, कर, बन्दर, जन्दर, कितारा, पन्तारी, दुकान, कमान, घसान, मवान आदि ।

४८- न्हः

इसका उच्चारण स्थान न के अनुसार ही है । किन्तु इसके उच्चारण में वायु (प्राण) अधिक निचलता है। यह 'न' का महाप्राण रूप है । इसके उच्चारण में स्वर तीक्ष्ण पास जाकर कम्पन (घोष) उत्पन्न करता है। इस कारण इसे महाप्राण वत्स्य सघोष नासिक्य व्यंजन कहते हैं। इसका प्रयोग स्त्रीलिंगी एवं वृज्जाणा प्रभावित शब्दों में पाया जाता है। यथा- नहाना, हन्हाना, उन्हन (रूँडा) आदि ।

४९- म्हः

इसके उच्चारण में दोनों जीठ ख-झार का स्पर्श होता है। कौंकड़े से जाले खा स्वर तीक्ष्णों के निकट होने के कारण कण्ठ करके घोष (कम्पन) उत्पन्न करता है। जीवा लटका रहता है, वायु नासिका विवर से बाहर निकलता रहता है। निकलने वाला वायु (प्राण) की मात्रा कम होती है। यह योष्क्य सघोष, अल्प प्राण नासिक्य व्यंजन है। इसका सभी स्थितियों में प्रयोग होता है। यथा- महरा, म्हरा, म्हर, क्माह, हुनार, तमाम, गुलाम, हाकिम, हुकुम आदि ।

५०- म् -

विज्ञानों ने इसे 'म' का महाप्राण रूप माना है। इसके उच्चारण में वायु नासिका विवर से निकलती है और जॉठ बन्द रहती है किन्तु वायु (प्राण) 'म' से कुछ अधिक निकलती है तथा स्वरतीव्रियाँ एक-दूसरे के पास होने के कारण कम्पन (धौन) उत्पन्न करती है। इसे धौनोष्ण, महाप्राण, सधौन नासिक्य व्यञ्जन कहते हैं। इसका प्रयोग भी अल्प प्राप्य हो है। का-प्लारा, कुप्लरा, म्प्लराज, म्प्लनत, क्प्लर तुप्लरी आदि।

संघर्णा - स, ह, ह्

५१- स -

इसके उच्चारण में स्वरतीव्रियाँ एक-दूसरे से दूर रहती हैं। अतः वायु बिना किसी घर्षण के वागे बढ़ जाती है। कौआ नासिका विवर को बंद रक्ता है, अतः वायु मुख विवर से निकलती है। जब जीभ का अनुमान वतस्य को छूकर घर्षण करता है। दोनों दंत पीथियाँ एक-दूसरे के पास आ जाती है। यह सधौन वतस्य संघर्णा ध्वनि है। इसका आदि, मध्य, अंत सभी स्थितियों में प्रयोग प्राप्त है। यथा- ससरइता, ससरारि, ससरस, वासरा, विसर, मसत, पुतास, पियास, रुबास आदि।

५२- ह -

ह के उच्चारण में स्वरतीव्रियाँ एक-दूसरे के समीप आ जाती हैं, अतः मोटर से जाती हुई हवा कम्पन (धौन) उत्पन्न करती हुई वागे बढ़ जाती है। कौआ नासिका विवर को बंद रक्ता है, अतः वायु मुख विवर से बाहर निकलती है। हवा का फाँका जिह्वा के फूल से रगड़ (संघर्ष) कर निकलता है। डा० महावीर प्रसाद शर्मा इसे सधौन जिह्वामूलीय संघर्णा ध्वनि कहते हैं।

१- डा० महावीर प्रसाद शर्मा, मैत्रा का उद्गो और विकास, पृ० ८२

जबकि डा० मोलानाथ तिवारी तथा अन्य विद्वान् इसे सधीज स्वर्ग्य
मुखा संधीणां ध्वनि स्वीकारते हैं। इसका बादि, मध्य, अंत सभी स्थानों
पर प्रयोग प्राप्त है। यथा- हरकत, हलार, हमार, हराई, काहर, बहाल,
बहलील, हरहा, हरहा, मुहहा आदि।

५३- ह

यह ह का इत्थ रूप है। इस ध्वनि का स्वल्प मध्य और अन्त्य में
बढ़ा जाता है। यदि इसके पूर्व में कोई इत्थ स्वर आता है तो इसका धीन
समाप्त हो जाता है। यह अधीण रह जाता है तथा इसका उच्चारण
“ह” को प्रतीति हो जाता है। डा० मोलानाथ तिवारी ने इसके धीनत्व -
अधीनत्व के विषय में लिखा है- “हिन्दी ह के धीनत्व-अधीनत्व
के बारे में मतभेद रहा है। जयचन्द्र शर्मा (पृ० ८), चोरेन्द्र वर्मा (पृ० १२३-
२४), उष्वनारायण तिवारी (पृ० ३२६) सभी स्थितियों में धीन मानते
हैं। काबराय सहीना (पृ० ८५) अन्त्य “ह” को ही धीन मानते हैं तो
श्यामसुन्दरदास (पृ० १९) बादि अन्त्य को अधीन तथा मध्य को धीन
मानते हैं। मैं “ह” को अधीण तथा मध्य और अन्त्य को धीन मानता रहा
हूँ (पृ० ४०) रवीन्द्रनाथ त्रिपाठ्य द्वारा वासलोग्राफ और स्पेक्ट्रोग्राफ
यंत्रों पर किए गए प्रयोग से मेरी निष्कर्ष की पुष्टि हुई है (बन्धु पृ० २१-२२)
तथा (३०-३१)। इसके मध्य और अन्त्य प्रयोग अधिक प्राप्त हैं। यथा-
बहु, रहु, रछु, नरु, पछु आदि।

५४- पार्श्विक -

लु, ल्ह

लु -

इसके उच्चारण में फौफड़े से निकलता हवा का स्वर तीव्रियों से निकट

१- डा० मोलानाथ तिवारी, हिन्दी ध्वनीः उच्चारण, पृ० ८२

२-

वही-

पृ० ८२

होने के कारण कथन उत्पन्न होती हुई बागी बढ़ती है। जिह्वा का अनुमान दाहिने के ऊपर मढ़े या स्पर्श होता है। उस समय जोम के दाहिने पार्श्व खुले रहते हैं जहाँ से वायु बाहर निकलती है। इनके उच्चारण में वायु की मात्रा कम होती है, इसीलिए इन सपीण, उत्पप्राण, वत्स्य, गार्व ध्वनि कहते हैं। यह सभी स्थितियों में प्रयुक्त होती है। यथा- सतमनिया, सतारी, सरस्मि, लेलून, लीकू, क्लार, क्लाय, क्लग, क्लवाँ, फ्लाव, फ्ल, फ्लाल, मालामाल आदि।

५५- ल्हू -

इसका उच्चारण 'ल' जैसा ही होता है किन्तु इससे उच्चारण में वायु ज्यादा निकलती है। यह 'ल' का महाप्राण रूप है। इस में जलन व्यंजन नहीं है, अतः संयुक्त व्यंजन 'ल्हू' के रूप में लिखते हैं। इनका प्राण सौमित्र है। यथा- ल्हास, ल्हासुन, ल्हावा, ल्हाहा, सेल्हा, बाल्हावा आदि।

तुठित -२ ल्हू

५६- ल्हू -

यह तुठित सपीण, उत्पप्राण, वत्स्य ध्वनि है। इनके उच्चारण में जिह्वा का अनुमान वत्स्य के पास पहुँकर वायु के प्रवाह में कथन उत्पन्न करता है तथा स्वर लीजियाँ पास पहुँकर घोष उत्पन्न कर देता है। जीवा नासिक विवर भी बंद रहता है, अतः वायु मुखविवर से बाहर निकलती है। डा० मीसानाय त्वारो ने कहा है- "इसके उच्चारण के बारे में कहीं मत है। डा० कटजो ने 'ल्हू' की उत्पत्ति कहा है, डा० थोरेन्ड कर्मा ने इसे तुठित कहा है क्योंकि जोम की लीट वर वत्स्य के पास से जाती है। ये

विचार से हिन्दा का 'र' प्रकीर्ण है ।^१ डा० शर्मा ने इसे लुठित तथा वायु के दो बार कम्पन से प्रकम्पी माना है ।^२ डा० शंकर शैण तथा डा० स्त०डी०जी० ने 'र' का लुठित महाप्राण वत्स्य सघोष ध्वनि मानते हैं ।^३ ये विचार से यह लुठित स्व प्रकम्पी है क्योंकि इस जनपद की बोलो में कुछ लोगों के द्वारा लुठित स् उच्चारण प्राप्त है तथा कुछ सिद्धांत लोगों के उच्चारण में यह प्रकम्पित भी है । इसका बादि, मध्य, अन्त सभी स्थितियाँ में प्रयोग प्राप्त है। यथा- राई, राड़, रीरे, लराई, बरका, बरहा, बरकाहा, सरग, गिरा, पसर, सुरा बादि ।

५०-रू -

यह 'र' का महाप्राण रूप है । इसके उच्चारण में वायु अधिक मात्रा में मुख विवर से बाहर निकलती है तथा स्वर तीव्रता अल्प (घोष) उत्पन्न करती है। शैण प्रियाई 'र' के उच्चारण जैसा होती है। इसे लुठित सघोष महाप्राण वत्स्य प्रकम्पित व्यंजन कहते हैं। इसको हिन्दि में हीने के चारण इसे 'रू' के रूप में लिखते हैं । इसके प्रयोग अल्प हैं । यथा- रुमरहा, रुहास, बारह, रुहास बादि ।

हिन्दास्त- ड, ढ

५१-ड -

इसके उच्चारण में जीम की नाँव ऊपर उठकर (प्रतिबिम्बित रूप में) पूर्व कठोर तालु की स्पर्श कर फटके से नाँव को जोरव जाता है। स्वरतीव्रता

१- डा० भीलानाथ तिवारी, हि० ध्व० बी० उ० उच्चारण, पृ० ७५

२- डा० नरेश महावार प्रसाद शर्मा, मै० भा० उ०बी०वि०, पृ० ८१

३- डा० शंकर शैण, हत्ती० भा० अ०, पृ० ८५

४- डा० स्त०डी०जी०, वाम, बी० स्त० बी० अ०, पृ० ४१

एक-द्वार से निकटहोकर मोटर से बातें खा में कम्पन उत्पन्न करता है। वायु (प्राण) की मात्रा कम होती है। कौन-सा नासिका निचर की बंद रहता है, वतः वायु मुँह पार से बाहर निकलता है। इसे सघीष वत्स प्राण पूर्व तात्त्व्य उत्पिदाप्त व्यंजन कहते हैं। इसका अन्त्य बीर मध्य प्रयोग होता है। यथा- कड़ा, गाढ़ी, साढ़ी, कड़ा, कड़ाह, लीहियाँ, गड़गड़, कड़ाह, लड़ाह आदि।

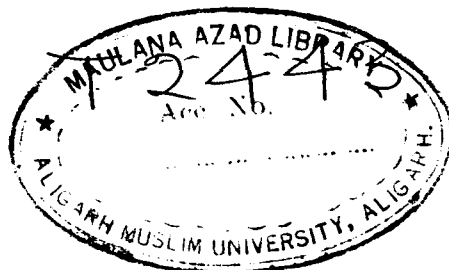
५१- ड

इसका उच्चारण 'ड' जैसा ही होता है परन्तु इसके उच्चारण में वायु की मात्रा ज्यादा निकलती है। स्वरलक्षियों से वायु में वीसा हो कम्पन होता है इसीलिए इसे सघीषा महाप्राण पूर्व तात्त्व्य उत्पिदाप्त व्यंजन कहते हैं। इसका अन्त्य प्रयोग नहीं होता यह केवल मध्य एवं अन्त में प्रयुक्त होता है। यथा- बड़िया, कड़ाह, लड़िया, गड़गा, गाढ़, डेढ़, मढ़, पेड़ा, टेड़ा आदि।

वर्ष स्वर - य, व

५२- य

इसके उच्चारण में जिह्वा के अग्रभाग की गठौर तालु का नीचे ले जाते हैं किन्तु जिह्वा तालु का स्पर्श न कर 'ह' की अवस्था में रहता है। कुछ देर बाद अन्त हा जीव की स्थिति जलै स्वर (वन्धा) का भाग ही जाती है इस प्रकार 'य' का उच्चारण गत्यावस्था में होता है। इसके उच्चारण में वायु कम निकलता है किन्तु स्वर लक्ष्यों के पास-पास होने से वायु में कम्पन उत्पन्न हो जाता है। यह सघीषा तात्त्व्य संघर्षहीन प्रवाह व्यंजन है। ०००००



अर्थात् इसमें लगातार वायु प्रवाहित रहती है। जीम और वातु की दूरी के कारण संघर्ष नहीं होता, अतः इसे अपस्वर भी कहते हैं। यह अपनी प्रकृति से स्वर तथा प्रयोग से व्यंजन है, इसीलिए इसे अर्धव्यंजन ध्वनि कहते हैं। इसका प्रयोग सभी स्थितियों में प्राप्य है। यथा- यार, यकीन, याद, यासा, येहमा, क्यस, क्योम, हुसियार, घसियार, होसिया, रसिया, कया, मया आदि।

६१- व-

इसके उच्चारण दोनों ओर एक-दूसरे से मिलते ली है किन्तु वायु बिना किसी संघर्ष या अवरोध के बाहर निकलती रहती है तथा जीम की स्थिति 'ठ' की उच्चारण स्थिति से थोड़ा ऊपर रहती है। इसके उच्चारण में अन्दर से आती हुई वायु स्वरतीव्रियों के पास-पास होने के कारण कम्यन उत्पन्न करती हुई, कौवा के द्वारा नासिका के विवर अंदर होने के कारण मूल विवर से बाहर निकल जाती है। यह वायु की मात्रा कम होती है। इसे सघोष, अल्प प्राण संघर्षहीन अवसर कहते हैं। इसकी प्रकृति स्वर की है किन्तु काम व्यंजन का करता है अर्थात् यह स्वर और व्यंजन के बीच की ध्वनि है। इसका उच्चारण प्रायः अशुद्ध होता है किन्तु तेज़न शुद्ध होता है। यह आदि, मध्य, अंत सभी जाह प्रयुक्त होता है। यथा, वुह, वकोस, विदाप, यहाँ, वन, जन, खेल, पैर, नैला, कया, पावा, पाव, बहाव, फुलाव आदि।

६२- १. ३ संयुक्त व्यंजन -

संयुक्त व्यंजन से तात्पर्य है जब दो या दो से अधिक व्यंजन किसी किसी के बीच में जाये एक-दूसरे के पास-पास आ जाते हैं तो उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं। संस्कृत में संयुक्त व्यंजनों का वाचिक्य है। हिन्दी में भी काफी संयुक्त

व्यंजन है। "वानपुर जनपद की सीलो" में संयुक्त व्यंजन बहुलायत में पाए जाते हैं। यथा-

सघोषा स्पर्श + सघोष स्पर्श - क, ख, ट, ठ, त, थ, प, फ

क् + क	क्क्का , क्क्कटा, क्क्कका, क्क्कका
त् + त	त्तौ , त्तौ, त्तौ, त्तौ
ट् + ट्	ट्टटा, ट्टटा , ट्टटा, ट्टटा
प् + प	प्प्या, प्प्या, प्प्या, प्प्या
ठ् + ठ	ठ्ठठा , ठ्ठठा , ठ्ठठा , ठ्ठठा
क् + त्	क्कतो, क्कतो, क्कतो, क्कतो
त् + प्	त्तपा , त्तपा , त्तपा, त्तपा
ट् + ट्	ट्टठा , ट्टठा , ट्टठी, ट्टठी
प् + त्	प्प्या, प्प्या, प्प्या
फ् + त्	फफ्तार, फफ्तार , फफ्तार
प् + ट्	प्प्टी, प्प्टा, प्प्टा
त् + त्	त्तुत्तार, त्तुत्ता, त्तुत्ता

६३- सघोषा स्पर्श + सघोषा स्पर्श - ग, घ, ङ, ङ, द, ध , न, म

ग् + ग्	गुग्गी, गुग्गा, गुग्गा
घ् + घ्	घुग्घो, घुग्घो, घुग्घु
ङ् + ङ्	ङुङ्गा, ङुङ्गा , ङुङ्गा
ङ् + ङ्	ङुङ्गा , ङुङ्गा
द् + ध्	दुद्धा , दुद्धा
ङ् + ङ्	ङुङ्गा , ङुङ्गा
प् + प्	प्पुप्प , प्पुप्प
न् + न्	नन्नी, नन्नी

व् + म्

सम्भार , विद्वम्भ

६४- अघोष् स्योः संधर्षा + अघोष् स्योः संधर्षा - व् ह्

व् + व्

वच्चा, कच्चा, घच्चा

व् + ह्

वच्छर, घच्छर, कच्छा

६५- सघोष् स्योः संधर्षा + सघोष् स्योः संधर्षा - क्, फ

व् + व्

सज्जो, वज्जो, रज्जल

फ + फ्

फक्फाह (बैकार), फक्फा(मध्य)

६६- अनुनासिक + उसो वर्ग की स्पर्श तथा स्पर्श संधर्षा ध्वनि

ह् + क्

हहका, हहका (हंका, हंका)

ह् + त्

हंत, पंत

ह् + न्

हं, मं

ह् + ष्

हंषा, तंष

म् + प्

तप्प, वप्प

म् + ब्

बप्पी, तप्पा

म् + म्

हप्पा, रप्पा

म् + य्

वप्प, वप्पा

न् + त्

फन्ती, सन्ती

न् + द्

कन्दर, कन्दा

न् + ष्

कन्धरा, कन्धी

न् + घ्	बन्धा, वन्धा
न् + न्	कन्ना, कन्नी
ण् + ट्	कण्टाढार, सण्ट
ण् + ठ्	कण्ठी, गण्ठ
ञ् + च्	तमचा, रंच (तमज्जा, रज्ज)
ञ् + झ्	बंजर, बिज्जा
ञ् + ज्	गंज, बंजर
ञ् + फ्	संफा, फंफा

उपर्युक्त प्रयोगों में अनुनासिक बिन्दु (-) का तात्पर्य उसी वर्ग के अनुनासिक व्यंजन से है।

६०- संघर्णा + संघर्णा स् स्

स् + स्	गस्सा, रस्सी
स् + ह्	बस्सा, भूस्सा

६१- संघर्णा + व्यंजन

स् + क्	मुस्कट, मस्कत
स् + ट्	तस्टर-पस्टर, पुस्टर
स् + त्	मस्त, सुस्त
स् + प्	बस्पी, तस्पीहा

६२- पार्श्विके + एक व्यंजन

त् + त्	तत्सा, गत्सा
त् + त्	गत्ती, भित्ती

सू + ट	कुलटा, गिल्टा
सू + थ	पत्थी, उल्था
सू + क	हल्का, गल्का

७०-

लुठित + एक व्यंजन

र + व	वरणा, वरव
र + झ	वरही, वरहा
र + ष	वरज, वरक्त
र + न	वरन, वरम
र + त	वरता, वरता
र + प	वरद, वरदा
र + र	वररा, वररा

गानपूर जनपद की बोली में अन्य बहुत प्रकार के संयुक्त व्यंजन हैं। यह सभी संयुक्त व्यंजन शब्द के मध्य में आते हैं।

७१-

हिन्दी भाषा की अन्य बोलियों की भाँति इस जनपद की बोली में भी व्यंजन ध्वनियों का उच्चारण दीर्घ रूप में होता है। यह दीर्घ उच्चारण ब्रह्म प्राण ध्वनियों में अधिक प्राप्त होता है जो उच्चारणतया व्यंजन द्वित्व की संज्ञा दी जाती है। वैसे व्यंजन द्वित्व सभी प्रकार की ध्वनियों में भी मिलता है। इस द्वित्व में कितने ध्वनि का उच्चारण दी बार नहीं बल्कि एक बार में ही जोम काफी देर तक एक-एक कर उच्चारण में सहाय्य देती है। इसे व्यंजनों का दीर्घोच्चारण ही कहना अधिक उचित है। इस व्यंजन द्वित्व से शब्दों के अर्थ परिवर्तित हो जाते हैं। यथा-

क् - कक्	- कका (बकना)	कक्का (बगुना)
ग - ग्ग	- गगा (लगना)	ग्गगा (ग्राह्य)

व् - व्व्	- ववा (शैव)	वव्वा (शिल्प)
ज् - ज्ज्	- मजा (बानंद)	मज्जा (माजा)
ट् - ट्ट्	- चट (शोभ)	चट्टा (ढेर)
ठ् - ठ्ठ्	- मठ (मंदिर)	मठ्ठा (मट्ठा)
त् - त्त्	- पती (स्वामी)	पत्ती (छिस्सा)
व् - व्व्	- रवा (ढीला)	रव्वा (रण)
म् - म्म्	- गुम (लाना)	गुम्मा (इंट)
म् - म्म्	- बुना (बनाया)	बुन्ना (बीनगा)
स् - स्स्	- रसा (रस)	रस्सा (मोटी रस्सी)
ल् - ल्ल्	- कुल (काफा)	कुल्ला (मुँह में भरा जल)
र - र्र	- बर (दुल्हा)	बर्रा (बड़बड़ाना)
म् - म्म	- मय (ठर)	मम्मा (बड़ा पाद)

७२-

कानपुर जनपद की बोली में बहुत सी ध्वनियाँ ऐसी हैं जिनके स्वरों के दोषोत्कर्ष के कारण अर्थ में उत्पन्न हो जाता है। यथा-

रस (रस)	- रास (बला हुआ)
बिन (सिवा)	- बोन (एक काज)
हिन (हण)	- हीन (कमजोर या छुटाना)
बुन (बुनना)	- बुना (एक पदार्थ)
सुक (सुफना)	- सूक (गरम खा)
गोर (गोरा)	- गौर (विशेष ध्यान)
बज (बजना)	- बाज (एक विशेष पदार्थ)
तिन (तिनका)	- तीन (संख्यावाची विशेषण)
चिर (चीरना)	- चीर (वस्त्र)

बुल (बुलह) - बुल (बलही)
 कुव (कुमना) - कुव (कसना)
 मोर (एक पक्षी) - मोर (सैहरा)

७३- १.४ लण्हेतर ध्वनि ग्राम-

ऊपर लण्हीय ध्वनि ग्रामों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इनके अतिरिक्त कानपुर जनपद की बोली में कुछ अन्य ध्वनि ग्राम भी हैं जिन्हें लण्हेतर ध्वनि ग्राम के रूप में जाना जाता है। किता बोली बसा माणा में इन ध्वनि ग्रामों का महत्वपूर्ण स्थान होता है जिनके विवेक के बिना ध्वनि ग्राम पूर्ण न होगा। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है। सामान्यतया लण्हेतर ध्वनिग्राम निम्नलिखित प्रकार के होते हैं-

- १- क्ताघात
- २- सु
- ३- सामयिक आरोह-अवरोह
- ४- विरति या विवृति

७४- १.४.१ क्ताघात -

किता माणा या बोली के वाक्यों का उच्चारण करते समय उसके अन्तर्गत पद-समूहों में क किता पद या अक्षर पर विशेष बल पड़ता है। इसी को क्ताघात कहते हैं। विद्वानों ने इस बल की चार प्रकार से माना है। जिसमें बल की मात्रा अधिकतम होती है उसे प्राथमिक क्ताघात कहते हैं। प्राथमिक क्ताघात से कुछ कम बल के स्तर को गौण क्ताघात कहते हैं। इससे भी कम क्ताघात की अति गौण क्ताघात कहते हैं तथा सबसे कम बल

को शून्य क्ताघात कहते हैं।^१ इनके लिए क्रमशः ये चिह्न दिए गए हैं—

प्राथमिक क्ताघात । ८ ।

मीमांसा क्ताघात । ८ ।

वर्त्मनीया क्ताघात । ८ ।

शून्य क्ताघात । ८ ।

इस जनपद को बीली क्ताघात प्रधान है। यह क्ताघात निम्न वाक्यों में उच्चारण में देता जा सकता है। क्या—

हरी । ८ । बुनके । ८ । राजा । ८ । मैं । ८ । हाथी । ८ । मर करे । ८ ।
कब तब । ८ । जातलो । ८ । मैलिया । ८ । पानी । ८ । बरसत लगी । ८ ।

इन दोनों वाक्यों में लगभग सभी प्रकार के क्ताघात दृष्टिगत होते हैं। क्ताघात से व्यंज परिवर्तन के उदाहरण भी काफी मिलते हैं। यथा—

ती ली (तब तक) - तीली (नाप-तील)
महि बा (वधिकरण कारक - महिबा (मट्टा)
लटि का (लिप्ता) - लटिका (वाति-होम पाव से)
कू - धीर (बारक्य) - कीर (कीरा)

७५-

कानपुर जनपद को बीली में निम्न प्रकार का क्ताघात पाया जाता है —

(१) ध्वनि क्ताघात - जब किसी शब्द में एक से अधिक ध्वनियाँ हों तो उन ध्वनियों में एक ध्वनि पर विशेषण क्त का प्रयोग होता है। शब्द में किसी एक ध्वनि पर पड़ने वाले विशेषण क्त की ध्वनि क्ताघात कहते हैं। यथा—

१- डा० फेरेन्द्र नाथ दुबे, बाबू जि० बी० , पृ० ४९

लकीर , लोरी , जाति, फरिया, बाजे , पटुका बादि ।

शब्दों में ऐहानिक खनियाँ स्तापात युक्त हैं ।

७६- (२) बदल स्तापात - जब किसी शब्द में एक से अधिक बदल आते हैं तो उनमें कोई एक बदल स्तापात युक्त होता है । (सूक्ष्म अध्ययन के अनुसार तो सभी बदल में गीण स्तापात होता है) यथा- बाबा, लारा, कुल्हरी, पखिया, ससुरा, पैजारी, मलिनिया, शाहरदा, मनहरवा बादि।

७७- (३) शब्द स्तापात - एक से अधिक शब्दों के वाक्यों में अर्थ सम्बन्धी विशेषता लाने के लिए या प्रभावित करने के लिए क्मा-क्मा एक शब्द पर बल दिया जाता है । जिसे शब्द स्तापात कहते हैं। यथा --

(१) कम से कम खाना खालेव ।

(२) कम से कम खाना खा लेव ।

(३) तुम बाबी नहीं जात हो ।

(४) तुम बाबी नहीं जात हो ।

उपर्युक्त वाक्यों में जब 'खाना' तथा 'बाबी' पर बल दिया जाता है तो दूसरा अर्थ निकलता है किन्तु जब 'कम से कम' तथा 'नहीं' पर बल दिया जाता है तो दूसरा अर्थ प्रकट होता है ।

७८- (४) वाक्य तथा वाक्यांश स्तापात - क्मा-क्मा वाक्य के किसी एक अंश पर बल दिया जाता है, तब वाक्यांश स्तापात होता है । क्मा-क्मा एक से अधिक वाक्यों में पूरे वाक्य पर बल दिया जाता है। यथा-

(१) साँप मरे न, लाठी टूटे ।

(२) साँप मरे, न लाठी टूटे ।

(२) तुम्हें मोरवा रहि सातिर बुलावौ लीं कि मोरवा मारी
तुम्हें मोरवा रहि सातिर बुलावौ लीं कि मोरवा मारी

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में वक्ता जिस वंश पर क्ल देना चाहेंगा उसी को उच्च स्वर में बोलेंगा । अलग-अलग रेखांकित वंशों पर क्लाप्रात प्रकट किया गया है ।

(१) मोरें पर माँ उराहन दैत ही, जी मोरों तै लहत ही ।

सुप्ये लहत जाव ।

(२) हाँ-हाँ समू रो व्याता ! मोरही जाँझि निकारत हो,
शरम नहीं जावत ।

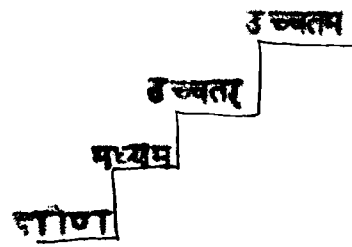
ऊपर का परिचित में अंतिम वाक्य पर तथा नावे को रेखांकित पर प्रथम वाक्य में क्लाप्रात है । वक्ता जिस बात पर विशेष प्रभाव डालना चाहता है, उसी में क्लाप्रात बा जाता है ।

७९-१. ४. २ सुर -

क्ल की शक्ति सुर का भी ध्वनि ग्रामीय महत्त्व होता है। इसकी उच्चता एवं अनुच्चता को लक्ष्य करके चार ध्वनि ग्रामीय स्तर माने गये हैं, उन्हें क्रमशः १, २, ३ एवं ४ वंशों से सूचित करते हैं । कुछ विद्वानों ने सुर को क्लाप्रात ही माना है । डा० संकर शैल्य इसे नोतात्मक क्लाप्रात की संज्ञा देते हैं ।^१ सुर को ध्वनि ग्रामीय गणना के अनुसार डा० महेंद्रनाथ दुबे ने चार परात्स स्पष्ट किए हैं ।

१- डा० संकर शैल्य , क्ली० भा०शा०अध्या०, पृ० ९४

२- डा० महेंद्रनाथ दुबे, वाज० जि० बी०, पृ० ५९



८०-

एक ही वाक्य में सुरु का प्रभाव जलन-रक्षण भाव का धीरे-धीरे करता है। यथा-

- | | |
|---------------------|--|
| (१) सामान्य कथन | मैं उनसे पूछों (मैं उनसे पूछूँ) |
| (२) प्रश्नात्मक कथन | मैं उनसे पूछों ? (मैं उनसे पूछूँ ?) |
| (३) स्पष्टीकरण | मैं उनसे पूछों । (मैं उनसे पूछूँ ।) |
| (४) आश्चर्य | मैं उनसे पूछों ! (मैं उनसे पूछूँ !) |
| (५) विवशता | मैं उनसे पूछों । (मैं (ही) उनसे पूछूँ ।) |

प्रथम वाक्य में क समान सुरु का प्रयोग, द्वितीय वाक्य में मध्यम सुरु का (द्वितीय शब्द में) प्रयोग, तृतीय वाक्य के प्रथम शब्द में उच्च सुरु का प्रयोग तथा चतुर्थ वाक्य में "पूछों" को उच्चतम सुरु में और पञ्चम वाक्य मध्यम सुरु में बोला जाता है ।

८१- १.४ (३) सामयिक आरोह - आरोह

माना जाता है कि के गठन में सामयिक आरोह तथा आरोह का महत्वपूर्ण स्थान होता है। बोलीते समय वाक्यों का घरायश तीन प्रकार से होता है - आरोहो ↑ आरोहो ↓ तथा सामान्य → । हर्ष, क्रोध, धृष्टा आदि के समय ही हम स्पष्ट देख सकते हैं-

- (क) आरोहो-- (१) बर ! तोला टिपत नहीं बाय का ↑
(२) बर कहात ही मानजा ↑

हाय ! दया ↑, मया ↑, दादा ↑, नानी ↑

(ह) अवरोही - (१) नारां कु हजार घरे ↓

(२) का बताफन दोस ↓

बच्चा आव ↓, आवत ली ↓, कहात हो ↓, गुनाफन ↓
बापि ।

(ग) सामान्य -

(१) हम कहा सारे पुलिस वाले के असारे कसो - >

(२) हम नाहों जानी मया हुन कसो मा एक
सिपाहिना हली —>

CC-2. ४. (४) विरति या ठहराव -

विरति या ठहराव ध्वनि ग्रामोच्च महत्त्व की बात है। इसे डा० महेन्द्रनाथ दुई विरति या ठहराव तथा डा० कैलाशचन्द्र अग्रवाल विरति^२ कहना अधिक उचित मानते हैं। इसे विरति या ध्वनि विरति ही कहना अधिक उपयुक्त होगा। यह वक्त में विरति या विराम के रूप में जाता है। विरति का अस्तित्व अक्षर, शब्द या पद और वाक्य के साथ जुड़ा होता है। इस के कारण पदों या शब्दों में अन्तर उपस्थित हो जाता है।

CC-1- इस अक्षर की कालों में कई प्रकार का ठहराव है जिसका अर्थ की दृष्टि से विशेष महत्त्व है।

१- डा० महेन्द्रनाथ दुई, भाषा ० ० ०, पृ० ६१

२- डा० कैलाशचन्द्र अग्रवाल, शैली ० ० ० ० ० ० ० ०, पृ० ६०

(०) अक्षर के अक्षरों प्रभावित दोनों में अधिकतर कारण 'मा' (०) की 'मा' ठहराव करते हैं।

(क) पूर्ण विरति -

बोली में पूर्ण विरति का महत्वपूर्ण स्थान है। वाक्य में किसी स्थल पर पूर्ण विरति होने पर अर्थ बदल जाता है। यथा-

रुकी, न जाय । (रुकी, नष्ट जायी)

रुकी न, जाय । (पर रुकी, जायी)

८४- (ख) गौण विरति -

किसी सामान्य वाक्य में यदि बोली पर विरति या ठहराव आ जाता है तो इसे गौण विरति कहते हैं-

(१) काल में ना लायो । (काल में नहीं लाया) ।

(२) कालक्ष में ना लायो । (काल में ना लाया) ।

८५- (ग) स्वल्प विरति -

दो शब्द या एक शब्द के बीच लघु सम्भावका को स्वल्प विरति कहते हैं। इससे भी अर्थ परिवर्तन आ जाता है--

पत्थरी (पत्थर), पत्थरी (पात्थी)

चुन्नी (चुनरी), चुन्नी (चुना)

पोतो (पोलिया), पोतो (पोता रंग)

पौता (पौतले का कपड़ा) पौता (नातो)

८६- २.५ लोप -

कभी-कभी बोलने में सु-सुल के कारण अक्षरा हो प्रता जादि के प्रभाव में कुछ ध्वनियों का लोप हो जाता है। जागे स्वर और अजिग लोपों पर अलग-अलग विचार किया जा रहा है ---

८७- (५) स्वर लोप -

स्वरों का लोप बादि मध्य तथा अन्त्य दोनों प्रकार का पाया जाता है।

१- बादि स्वर लोप -

बादित्तिय हिन्दो में जिन शब्दों में स्वरों का प्रयोग एवं उच्चारण होता है। उनमें शब्दों के स्वरों का लोप यहाँ को भी पाया जाता है। यथा-

नाब	-	बनाब
गर	-	जार
लाड़	-	बणाड़
हँका	-	आहँका
फनही	-	उपानह
खल	-	उखल
अयावन	-	हअयावन

८८- २- मध्य स्वर लोप-

कानपुर जन्मद को भीलो में बहुत से शब्दों में मध्य स्वर का लोप हो गया है। यथा-

बाफन	-	ग्राहमण
कु	-	दिलोय
पुलक	-	पनीह
बलक	-	बालक
ककी	-	कालिंकी

८९- ३- अन्त्य स्वर लोप-

अन्त्य स्वर का नाशित इस जनपद की बोली में अन्त्य स्वर का लोप हो गया है। यथा-

सिल	-	शिला
नोद	-	निद्रा
परस	-	परोक्षा
मार्भि	-	मर्मिणी
सर्पिण	-	सर्पिणी
कर्मट	-	कर्मड़ा

९०- (४) व्यंजन लोप-

कानपुर जनपद की बोली में स्वरों के लोप को नाशित व्यंजन लोप के भी उदाहरण मिलते हैं। यहाँ नर व्यंजन लोप तीनों प्रकार का है। यथा--

१- वादि व्यंजन लोप -

बोली के कुछ शब्दों में प्रथम व्यंजन ध्वनि का लोप हो गया।

यथा-

रुच	-	राध
भूत	-	स्थूत
टेशन	-	स्टेशन
पान	-	स्थान
काँध	-	सन्ध
मस्तान	-	श्मस्तान

११- २- मध्य व्यंजन लोप-

कुछ शब्दों में मध्य के व्यंजनों का लोप हो गया है। यथा-

डाहन	-	डाकिन
मुंघर	-	मुंभर
उपास	-	उपास
कउमास	-	कामास
किधाड़	-	किधाड़

१२- ३- अन्त्य व्यंजन लोप-

कानपुर जनपद की नीली में अन्त्य व्यंजन लोप के रूप हो उदाहरण है। कुछ शब्दों में अन्त्य व्यंजन लुप्त हो चुका है। यथा-

मार्हे	-	मामी
मसा	-	मचर
माटो	-	मिट्टी
माँदा	-	माविरा
मिसभिल्ला	-	मिसभिल्लाह
सूत	-	सूत

१३- १. ६ वागम -

लोप का उल्टा वागम है कि प्रकार लोप में नीचे स्वर या व्यंजन लुप्त हो जाता है, उन्ही तरह वागम होने पर शब्द में स्वर या व्यंजन को बढावरी हो जाती है जिसे वागम कहते हैं। यह स्वर वागम तथा व्यंजन वागम दोनों तरह का होता है।

९४- (क) स्वरानम -

जब किंवा शब्द के शुरुवात, मध्य और अन्त्य में कोई स्वर आ जाता है तो इसे स्वरानम कहते हैं। यह तीन प्रकार का होता है। यथा-

१- आदि स्वरानम -

इनमें शब्द के आरम्भ में कोई स्वर आ जाता है। यथा-

इस्थान	- स्थान
अस्नान	- स्नान
वस्तुती	- स्तुति
वधिरथा	- वृथा

९५- २- मध्य स्वरानम -

जब शब्द के मध्य में कोई अतिरिक्त स्वर आ जाता है तब मध्य स्वरानम कहलाता है। यथा-

जुगुति	-	युति
कास	-	कास
परम	-	प्रम
किरिम	-	क्रम
हसपिरिट	-	स्फिट

९६- ३- अन्त स्वरानम -

जब शब्द के अन्त में कोई स्वर आ जाता है, तब अन्त स्वरानम होता है। यथा-

पछवा	-	पवा
कुलवा	-	कुलावा
दवा	-	दावा
कसना	-	कासन
कियाँ	-	कियाँ

९७- व्यंजनागम -

कानपुर जनपद की बोली में कुछ ऐसे शब्द भी प्रयुक्त होते हैं जिनमें कान से व्यंजन आ गये हैं। जो व्यंजनागम कहते हैं। यह आदि, मध्य तथा अन्त्य तीन प्रकार का होता है --

(१) आदि व्यंजनागम -

जब शब्द के पहले ही व्यंजन आ जाय तो उसे आदि व्यंजनागम कहते हैं। यथा---

हौठ	-	हौठ
हुलास	-	उत्तास
हुमस	-	उमस
मुधिच्छर	-	मुधिच्छर

९८- (२) मध्य व्यंजनागम -

जब शब्दों के मध्य में व्यंजन आते हैं तब मध्य व्यंजनागम कहलाते हैं। यथा-

हरमेशा	-	हमेशा
समुन्दर	-	समुद्र
सिराप	-	नाप

परसद	-	फसद
सहास	-	सास

९९- वन्त व्यंजनागम -

जब शब्द के वन्त में कोई व्यंजित् तब ठीक वार व वन्त व्यंजनागम कहते हैं। यथा-

चिलिहा	-	चील
डाड़ियाँ	-	डाड़ी
काह	-	का
निकसत	-	निकस
करहा	-	कारा (काला)
कलाय	-	कला
लौहरटा	-	लौहार
सूजी	-	सूँ

१००-१.७ विपर्यय -

विपर्यय में किसी शब्द के स्वर, व्यंजन तथा वकार (प्रायः क्क) एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रयुक्त होते हैं तथा दूसरे स्थान के स्वर, व्यंजन एवं वकार आदि पहले स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। मानपुर उदाहरण को नीचे में विपर्यय के उदाहरण जल्प प्राप्ता हैं। इसी लिए स्वर तथा व्यंजन विपर्यय कल्प-कल्प न प्रस्तुत करके एक-स्थान पर ही दिए जा रहे हैं—

वमद	- व	वमद वमद
क्वि-क्वि	-	क्वि-क्वि
पिच-पिच	-	क्वि-क्वि
पामत	-	काला
मनुमान	-	उनमान
बलाय	-	बलाय

तृतीय अध्याय

रूप-विचार

३.१ संज्ञा

- ३.१.१ लिङ्ग
- ३.१.२ वक्ता
- ३.१.३ कारक

३.२ सर्वनाम

- ३.२.१ पुरुषवाचक सर्वनाम
- ३.२.२ निजवाचक सर्वनाम
- ३.२.३ निश्चयवाचक सर्वनाम
- ३.२.४ अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- ३.२.५ साधन्यवाचक सर्वनाम
- ३.२.६ प्रश्नवाचक सर्वनाम

३.३ विशेषण

- ३.३.१ गुणवाचक विशेषण
- ३.३.२ संख्यावाचक विशेषण
- ३.३.३ परिमाणवाचक विशेषण
- ३.३.४ साधनोपनिविष्ट विशेषण

द्वितीय अध्याय

रूप विचार

१०१- ३.१ संज्ञा

व्याकरणिक परिवर्तन से पहले का साधारण शब्द रूप "मूल रूप" कहलाता है तथा परसर्ग या प्रत्यय लगने से बना शब्द रूप त्रिके सा विकृत रूप कहलाता है। प्राचीन भारतीय धार्य भाषाओं का जो लिपि, वचन और कारक का रूप था, उसे नवीन भारतीय धार्य भाषाओं में नहीं ग्रहण किया है। इन भाषाओं में संज्ञा के लक्षण एवं तद्धृत रूपों की व्यवस्था की तो स्वीकार किया है ; किन्तु अन्य व्यवस्थाओं को विकसित कर दिया है। "कानपुर जनपद की बोली" जो हिन्दी की भाँति विकासशील बोली है। प्राचीनकाल में होने वाली कृषिक विकास का इस बोली को लिपि, वचन, कारक की प्रणाली पर प्रभाव पड़ा है।

१०२- कानपुर जनपद की बोली में संज्ञा का मूल पद स्वराति एवं व्यंजनान्त होता है यथा- रयाम्, दिया, छिउ, छिउ, नाथू आदि।

१०३- साधारणतया अधिकांश संज्ञाओं का अंत वा, इ, ई, उ तथा ऊ स्वरों से होता है। वहाँ एकाराति तथा ओकाराति वाली भी संज्ञाएँ हैं किन्तु "हे" तथा "जी" स्वरों के अंत वाली संज्ञाओं का बभाव है।

१०४- स्वराति संज्ञाएँ

वा- सटिया, दादा, कुँआ, लरका

इ - गाह, क्यारि, सेठि, जड़ि

हं-	पानी, पीनी, नानी, निवासी
उ-	पिउ, वडिउ, गार्ड, बासु
ऊ-	माऊ, बासु, नैन्, गीह
ए-	दुले, पाडि, चबे, कने
बो-	बीह तौ, बीरी, चारी

१०५- व्यभिनात संज्ञार्थ

क-	कारु, लुक्, मोक्
ख-	राख, भूख, साख
ग-	पाग, साग, धी
ङ-	बाधि, बाध, पाय्
च-	काधि, बाधि, नाधि
झ-	मैह, कौह, बाधि
ञ-	नाय, राय, सेन्
ट-	बाफि, सफि, बोफ
ड-	पेट, लाट, पाट
ढ-	काट, कैह, शौह
ण-	काह, डाह, पिह
त-	ठाह, रोह, कसाह
थ-	साह, मेह, पसाह
द-	लाह, बाह, कराह
ध-	नाध, माधि, राध
न-	गाह, ताधि, दमाह
प-	गोध, बाधि, दिन्ध, चिराय

क-	कान्, सान्, कम्
ख-	काप्, सराप्, साप्
ग-	गरफ्, कर्क, सीफि
घ-	राम्, दम्, सराब्
ङ-	बोम्, गरम्, नाम्
च-	मोम्, रोम्, धाम्
छ-	राय्, सराय्, नाय्
ज-	हाय्, जम्, माय्
झ-	लार, पार, सार
ञ-	नाल्, बाल्, तैल्
ट-	धास्, लास्, बोस्, पास्
ठ-	बावाह्, बाह्, राह्

१०६-संज्ञा के रूप -

कानपुर जफ्त की बोलो में संज्ञा के दो रूप हैं जिनमें लघु और गुरु या प्रत्यक्ष और बोध्य रूप कहना अधिक उपयुक्त माना है।^१ यहाँ लघु और गुरु रूप मानकर संज्ञा के रूप प्रस्तुत किए जा रहे हैं-

(क) लघु रूप - म्दो, भेटा, पौड़ा, क्हा, गाल, कुम्हार, कमार, सुनार आदि।

(ख) गुरु रूप - म्दिया, भेट्या, पौड़्या, क्हरवा, म्दवा, कुम्हारवा, कमारवा, सुनारवा आदि।

१- डा० बाबुराम सक्सेना : अवधो का विकास, पृ० १५

१०७- कुछ संज्ञा शब्दों का विशेष तोसरा रूप भी उपलब्ध है यथा- बैठना, कुहरा, सुनटा, कपटा, फुटना आदि । इसी तरह लघु रूप में भी निम्ने की संज्ञा रूप प्राप्त होता है। की जाड़- नाऊ, पीड़ा - पीड़ा ।

१०८- इस जनपद को बोली में सामान्य व्यवहार के समय लघु तथा दीर्घ रूप ही अधिक प्रयुक्त होते हैं । दीर्घ रूप बहुत ही परिचित तथा छोटों के लिए जाता है । इसमें पीड़ा होना ही छुणा का अर्थ मालकता है। इनका प्रयोग अपनी से बड़ों के लिए नहीं बल्कि छोटों एवं नीचों के लिए होता है यथा- कपार - कपमा, लुहार- लुहरवा रूप छोटी जाति एवं होम भावना के प्रतीक हैं । तोसरा रूप , कपटा, लुहरटा , तो ज़ीब की छुणा के समय प्रयोग में जाता है ।

१०९- लघु रूप से दीर्घ रूप बनाने के लिए पुली जखनात नामों में "वा" (अवा) स्वार्थिक प्रत्यय जोड़ देते हैं । इसके प्रयोग से पूर्व शब्द के सभी दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाते हैं । यथा- बैटा- बैटवा, बीला- बिळा, सुनार - सुनरवा आदि ।

बाधाराति, उकाराति कीर अकाराति संज्ञा के लघु रूपों में "वा" स्वार्थिक प्रत्यय जोड़ते हैं । इस योग के पूर्व शब्द के दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाते हैं । यथा- लरिका , दाड, बाल, लरिक्वा , पडवा, जल्वा आदि ।

११०- हकाराति पुली संज्ञा रूपों के लघु रूप में, इस जनपद को बोली , "स्वा" रूप जोड़ते हैं तथा एकाराति लघु रूप के जाने "अवा" रूप जोड़ कर गुरु रूप बनाते हैं । इस योग से पूर्व शब्द के सभी स्वर ह्रस्व हो जाते हैं । यथा-

लघु रूप- मासी, तैसी, पीसी, पाई, बीबे, दुबे ।

गुरु रूप- मलैसा, तिलैसा, मुलैसा, फड़ा, बीबसा, दुबसा ।

कृद् पुली बाकाराति तथा उकाराति शब्दों में " ना " प्रत्यय जोड़कर लघु से गुरु रूप बना लेते हैं । यथा-

लघु रूप- रुँदा, सुँदा, झुँड , फड़ बादि ।

गुरु रूप- रुँदना, सुँदना, झुँडना, फड़ना बादि ।

१११- स्त्रीलिङ्ग व्यञ्जानाति लघु रूप में " हवा " प्रत्यय जोड़ते हैं तथा हंकाराति एवं उकाराति लघु रूपों में " जा " प्रत्यय जोड़ते हैं । इनके यौग से पूर्व दोषे स्वर ह्रस्व ही जाते हैं । यथा-

लघु रूप- नाक, सस, बहिन, न्दी, नाब, चिरह, उँस ।

गुरु रूप- नाकिया, ससिया, बहिनिया, नदिया, नाबया, चिरहिया, उँसिया बादि ।

स्त्रीलिङ्ग लघु रूप में " स्वा " प्रत्यय जोड़कर गुरुतर (विशेषण) रूप बनाया जा सकता है यथा - न्खेवा, ससैवा, बहिनैवा, उँसिया बादि ।

११२- ३.१.१ लिं-

कानपुर जनपद की मौली में प्रत्येक संज्ञा फद पुली होती है वा स्त्रीलिङ्ग । प्राचीन भारतीय कार्य भाषाओं की भाँति नपुंसक लिं नहीं पाया जाता है। भाषा विकास के साथ इस लिं का ह्रास हो गया तथा इसके बहिर्गति रूप पुली में समाहित हो गए, अतः सभी प्रकार के प्राणिवाक्य

एवं अप्राणिवाचक संज्ञा पद इनहीं दो लिंगों के अन्तर्गत आते हैं। प्रकृति में पाये जाने वाले प्रायिक चेतन एवं अचेतन पदार्थ में लिंग भेद होता है।
जैसे- "सन" पुल्लिंग है किन्तु इसका का पीया सर्वस्व स्त्रीलिंग है, आम पुल्लिंग है किन्तु इसका "गुठलो" स्त्रीलिंग है।

इन जनपद का लिंग निम्नलिखित साहित्यिक हिन्दो की भाँति लोक प्रयोग पर आधारित है।

११३- प्राणिवाचक संज्ञा पदों का व्याकरण सम्बन्धी लिंग प्रायः प्रकृति लिंग के समान हो होता है। यथा-

<u>पुल्लिंग</u>	<u>स्त्रीलिंग</u>
कुआ	कुठिया
मन्हा	मेहरिया
घोड़ा	घोड़ी
बैसा	बैसी आदि।

क्यों-क्यों इसके अतिरिक्त उल्टे अपवाद दृष्टिगत होते हैं।
जैसे यहाँ "मीर" (नर) को स्त्रीलिंग तथा भूला (मादा) को पुल्लिंग के रूप में कहा जाता है।

११४- कुछ प्राणिवाचक जीवों के नाम उनके प्राकृतिक लिंग के अनुसार अलग-अलग लिंगों में नहीं बोलते आते हैं बल्कि किसी एक ही व्याकरण संबंधी लिंग से पुकारते हैं। छोटे-छोटे जीवों में यह नियम अधिक लागू होता है। यथा-
स्त्रीलिंग - कोकिल, मझरी, चिरई, तिलुली, लीखड़ी, मिर संगा (सारस),
क्षिपकुली, पिण लोपर, बिच्छू आदि।
पुल्लिंग- कुआ, गिरदास, भिड़हा, बकस, सरहा, भसा, डास,
बधरा, भिड़हा आदि।

११५- उकाराति या इकाराति मूल रूप प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा-
 दाई, काकी, बाई, बाबू, बुहारी, बुँजरि, बुलाकि जादि ।
 (किन्तु इसमें भी अपवाद हैं। यथा- हाथी, माली, सैठि जादि)

११६- उकाराति, एकाराति तथा आकाराति मूल संज्ञा पद प्रायः पुलिङ्ग होते हैं यथा - दादू, सादू, लालू, माऊ, पाडि, दुलै, बाँवै, ननसै, दादा, लोट्टा, सोट्टा जादि । (किन्तु इसमें भी अपवाद हैं- यथा मामा, बूढ़ा, बाबू जादि।)

११७क संज्ञा पद का लिङ्ग स्पष्ट न होने से क्मो-क्मी उसके लिङ्ग का स्पष्टीकरण उनके लिए प्रयुक्त क्रियाओं से होता है क्योंकि पुलिङ्ग अपवा स्त्रीलिङ्ग संज्ञा पद के लिए उसी लिङ्ग की क्रिया प्रयुक्त होती है। यथा- केलु बरि-गाई, गाय बरि गेही । काका जात है - काकी जाति हो ।

११८- संज्ञा पदों में प्रयुक्त होने वाले विशेषणों से भी स्पष्ट हो जाता है यथा- लोहा केल- लोही मैया । काना मैसा - कानो मैस । क्मो-क्मी दोनों लिङ्गों के लिए एक ही विशेषण प्रयुक्त होता है, अतः विशेषणों के द्वारा लिङ्ग निर्धारण बिल्कुल स्पष्ट नहीं होते हैं। यथा- मोक तरिका, मोक तरिकिना । किन्न गाय - किन्न केल जादि ।

११९- प्राणियों के समूह की घोषित करने वाले संज्ञा पद स्त्रीलिङ्ग या पुलिङ्ग लिङ्ग में भी हो सकते हैं ---

मीर- मोड़ (स्त्रीलिङ्ग) , मुंड (पुलिङ्ग)
 नार (स्त्रीलिङ्ग) , नर (पुलिङ्ग)
 बमात (स्त्रीलिङ्ग) जादि ।

१२०- प्रत्ययों के योग से अधिकारित पुलिङ्ग संज्ञा पद प्र ययों के योग से स्त्रीलिङ्ग रूप में बदल लेते हैं ।

(क) व्यंजनान्त संज्ञा पदों को स्त्रीलिंग रूप बनाने के लिए निम्नलिखित प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है -

<u>प्रत्यय</u>	<u>उदाहरण</u>
(ब) वाहन	पीढ़त- पीढ़ताहन, ठाकुर, ठाकुराहन, मास्टर - मास्टराहन
(बा)बानी	देवर- देवरानी, बैठ -बैठानी
(ई) ई	झेंगर-झेंगरी, सुँवर- सुँवरी , कमार- कमारी
(ह) इन	सुनार-सुनारिन, सियार- सियारिन

१२१-(ख) स्वरान्त पुलिं संज्ञा पदों को स्त्रीलिंग रूप बनाने के लिए निम्न लिखित प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है । जैसे -

(ब) वा-ई	बुरा-बुरी, कलहा-कलही, मोसा-मोसी ।
(बा)वा-बनि	दुलहा-दुलहिन, झरिया- झरियिन
(इ)वा-बनी	गुप्ता-गुप्ती, लड़िका -लड़िकी
(ई)वा-बया	पाटा-पाटिया , बहवा -बहिया , लौटा, लौटिया
(उ) ईकारान्त पुलिं संज्ञा पदों में प्रायः "ई" के स्थान पर "इन" रखकर स्त्रीलिंग रूप बना लेते हैं । यथा- भाली-भालिन, पीवी-पीविन, तेली-तेलिन ।	

(ग) ङकारान्त पुलिं संज्ञा पदों तथा एकारान्त पुलिं संज्ञा पदों के अंत में प्रायः "वाहन" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बना लेते हैं । यथा- बाबू- बबूवाहन, बाबू- बबूवाहन, पंडि- पंडिताहन , खड़े - खड़ाहन, दुबे-दुबाहन आदि ।

१२२- अप्राणिवाचक संज्ञा पदों में प्रायः गुरुत्वा स्वं लघुत्वा के बाधपर पर पुलिं लिंग में पाया जाता है । गुरु वस्तुओं के लिए पुलिं तथा लघु

वस्तुओं के लिए स्त्रीलिङ्ग जाता है। यथा-

गुरू (पुंलिङ्ग)

तपु (स्त्रीलिङ्ग)

तलवा

तलहवा

रसरा

रसरी

छदा

छदी

गगरा

गगरी

नाला

नाली

पुल

पुलिया

कुँवा

कुँवा बादि ।

१२३-

कानपुर जनपद की बोली में लिङ्ग रूप लौक प्रयोग पर भी बाधारित है। इसीलिए किसी संज्ञा पद का लिङ्ग न स्पष्ट होने पर उसे वाक्य में प्रयुक्त कर मासूम कर लेते हैं। लौक प्रयोग की ही बात हो जलन है क्योंकि 'स्तन' की मादा जाति का किहू न है 'धन' के रूप में पुंलिङ्ग है तथा 'धूल' की पुरुष जाति का जोषक है स्त्रीलिङ्ग के रूप में प्रयुक्त होती है। इसी प्रकार नर्म का सम्बन्ध मादा से है किन्तु पुंलिङ्ग है तथा 'मीर' (बाघा) नर के रूप में पुंलिङ्ग तथा मीर (नर) स्त्री के रूप में स्त्रीलिङ्ग माना जाता है। दहो, रेत, फूस बादि का लिङ्ग लौक प्रयोग पर बाधारित है।

१२४- ३.१.२ वक्क -

कानपुर जनपद की बोली में वक्क दो हैं - (१) एकवक्क

(२) बहुवक्क ।

एकवक्क एक वस्तु या एक व्यक्ति का जोष करता है तथा एक से अधिक वस्तुओं के लिए प्रायः बहुवक्क का प्रयोग होता है। अपनी से बड़ों तथा बादर सूचित करने के लिए बहुवक्क का प्रयोग होता है। यथा-

बादा बावत हैं ।

मैकपाल (लैकपाल) कुलावत हैं ।

जहाँ बादर नहीं सूक्ति करना होता वहाँ भ्रिगा एकवचन की बातों है। की-

मंगूर जावी है ।

तउंठा रोवत है ।

१२५-

एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए व्यभिनाति शब्दों के वंत्त में (-वन्) प्रत्यय तथा स्वरान्ति शब्दों के वंत्त में (न्) प्रत्यय जोड़ा जाता है । जब स्वरान्ति शब्दों के वंत्त में (न्) प्रत्यय जुड़ता है तो दोषः स्वर ह्रस्व ही जाता है।

यथा-

व्यभिनाति -

एकवचन

पैड़

बाग्वन्

किसान्

बैल

शेर

बहुवचन

पैड़न्

बाग्वन्न्

किसानन्

बैलन्

शेरन्

स्वरान्ति-

एकवचन

दादा

महिना

बहुवचन

दादन्

महिन्न्

बालू	बालुम्
तरकौ	तरक्म्
कडवा	कडवम्

१२६- कुछ हंकाराति पुलिं रूपों में तथा कुछ स्त्रीलिङ्ग रूपों में
(-इन्) प्रत्यय जोड़कर बहुवचन बनाते हैं। यथा-

पुलिङ्ग -	एकवचन	बहुवचन
	पासी	पासिन्
	बीबी	बीबिन्
	तेसी	तेसिन्

स्त्रीलिङ्ग-

धनु धनकुल	धनकुलिन्
काहिनि	काहिनिन्
फँसि	फँसिन्
बहिनि	बहिनिन् आदि।

१२७- बहुवचन के उपर्युक्त इन रूपों में 'अन्' के स्थान पर 'अवन्'
तथा 'इम्' के स्थान पर 'इयम्' प्रत्यय लगाकर विशेषण (बहुवचन) रूप भी बनते
हैं। यथा-

(-अन् प्रत्यय) सामान्य बहुवचन- पैहन, वेतन्, सेरन्, दादन्, तरक्न् आदि।

विशेष बहुवचन- पैहवन्, वेतवन्, सेरवन्, दादवन्,
तरक्वन् आदि।

(-इन् प्रत्यय) सामान्य बहुवचन- पासिन्, बीबिन्, काहिनिन्, बहिनिन्
आदि।

बहुवचन - मात्स्यन्, घोष्यन्, कश्चिन्, कश्चिन् वादि

नाम पदों के बाद सम्प्रदाय बोधक (व्यय) शब्दों का प्रयोग करते हैं। यथा-

लोग- हम लोग, बहार लोग, ब्यार लोग आदि ।

पंच- सुम पंच, कौरा पंच, बाँसरा पंच आदि ।

हरन- बाबा हरन, माया हरन, कहला हरन आदि ।

कुल- पशु, कुल, कुल गार्ह, कुल जन आदि ।

सब- हम सब, सब बेलन, सब रंग बादि ।

१२१- इन समूखाधी शब्दों के प्रयोग होने पर भी क्यो-क्यो (न्) तथा (बन्) प्रत्यय जोड़ दिए जाते हैं। ये प्रत्यय मूल शब्दों बध्ना समूखाधी शब्दों में जोड़ जाते हैं। यथा- हम लोगन्, बमारन् लोग, तुम पञ्चन्, कोरिन् पञ्च, हम सबन्, फलान् कुल बादि।

१५०- ३.१.३ पारक -

कारक शब्द 'कृ' वातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है करने वाला । व्याकरण में क्रिया का निष्पादक कारक कहलाता है— हिन्दी में बाठ कारक हैं ।^१ कुछ विद्वानों ने सात कारक भी माने हैं । हिन्दी में कारक के दो रूप हैं—(१) श्रु (२) लिखक । प्रथम वे कारक जिनमें कारक पितृनों का प्राण होता है। प्राचीन मा०वा०मा० और मध्य मा०वा० मा० में किसी न किसी रूप में कारक विभक्तियाँ मौजूद थी, किन्तु हिन्दी एक बाते-बाते इनका

१- डा० कै० नाथ शर्मा : मा०वि० का प्रश्न, १० २६९

स्थान कुछ शब्दार्थों ने ले लिया किन्हीं भाषाविदों ने 'परसर्ग' को संज्ञा दी ।^१

- १३१- साहित्यिक हिन्दी को भाँति इस जनपद की बोली में पाँच ठाँठों प्रकार के कारक विद्यमान हैं। क्त्वं रूप कर्ता, कर्म तथा सम्बोधन में प्राप्त होते हैं। यथा- क्त्वं रूप -

दादा क्त्वं सात है, मँस जाति हो (कर्त्ता रूप)

कुल्हरो न मारी, जवा देली, जवाहरी टोरी (कर्मकारक)

बाका---(रै) क्त्वा---(है), लुँठा (रै) (सम्बोधन)

- १३२- बङ्गा विद्वान् सम्बोधन को विकारी मानते हैं किन्तु डा० बाबूराम सक्तीना इसे अविकारी (क्त्वं) रूप मानते हैं ।^२

- १३३- त्रिके रूप इन परसर्गों के साथ वाते हैं—

कर्त्ता-	मै
कर्म-	को, का
करण-	से, ते, सन
सम्प्रदान-	सामे, लॉ, के लिए, के सातिर, कीछों
वपादान -	से, ते, से
सम्बन्ध -	का, के, की, कै

१- डा० जगदीशप्रसाद कौशिक, मार०वा०मा० का इतिहास, पृ० ७२७

२- डा० बाबूराम सक्तीना, जवा का विवास, पृ० १०८

वधिकरण मा, पीछाँ, पर, पी, पीछाँ
सम्बोधन ए ! ओ ! रे ! हो ! आदि ।

१३४- कलिकारक - ने

“कानपुर जनपद की बीसो” में कर्ताकारक ने साहित्यिक सिद्धों को भाँति प्रयुक्त होता है (इसका प्रयोग कजु रूप में अधिक है) जो कर्ता बीर किया है सम्बन्ध को प्रकट करता है। विद्वानों ने इनको व्युत्पत्ति सं० एण ७ एन ७ ने, से माना है।

- (ब) बरम्हा जी मैं कहो ।
 (बा) बौहिने देलो हमारि घरि बरिना ।
 (ब) रावा मैं सबका कुताजी ।

१३५- व्यंकारक - का, की, ली

कानपुर जनपद की बाँलों में कर्माँजी प्रभावित पत्र में "को" तथा बुन्देली प्रभावित पत्र में "ली" कर्माँकारक प्राप्त होता है वैसे कर्माँकारक के तीनों रूप भी सब जगह प्राप्त होते हैं ।
विद्वानों ने इसकी व्युत्पत्ति सं० कही है माना है—

कदा , कथं , कसल , कहाँ , कई , की , की तथा का ।
इस जनपद को बीली में इनके विवाह का यही आधार प्रतीत होता है ।

- (ज) बच्चा ! तुम्हारा का बहिर ।
(का) यो दग्धा को लेत जाय ।
(ख) उन लो भासु है ।

१३६-कृष्ण कारक- से, ते, सन्

विद्वानों ने कृष्णकारक 'से' का विकास सं० 'सम्' से तथा 'ते' का विकास सं० 'त्सु' से और कुछ लोग 'ते' का विकास सं० 'तु' या 'तेन' से मानते हैं-

- (ब) मल्लया अपनी पैर से रगड़वा दीन्हुन ।
- (बा) पसरा ते सराय लोन्ही ।
- (इ) बरे कर्मो सिपहिना सन् कहि दीन्हुी ।

१३७-सम्प्रदान कारक - लाने, लौं, का, के लिए, के सातिर, कौहवाँ

विद्वान् सम्प्रदान कारक 'का' तथा 'के लिए' का विकास सं० कदा (कृष्ण कारक) से मानते हैं -

- (ब) सरिकन लाने बाहे जिआ परी ।
- (बा) उन लौं खाना देव ।
- (इ) इग्न किताब पढ़े का साथ हने ।
- (ई) सबके लिए परसी ।
- (उ) फँस सरिकन के सातिर साथ हने ।
- (ऊ) उन कौहवाँ लाली रौटी पहिर ।

१३८-व्यादान कारक - से, ते, ले

कृष्ण कारक की भाँति विद्वानों ने इसका विकास सं० 'सेम्' से माना है तथा 'ले' को 'सु' विभक्ति से विकसित माना है । उदाहरणार्थ-

- (ब) लिख' ले भाग सारें ।
- (बा) पैड़ से गिर परी ।
- (इ) घुवाँ बत ले दूँ स्ते ।

१३९-सम्बन्ध कारक - के, का, को, केर आदि

इसके विकास की विज्ञान सं० के 'वृत्तः' तथा 'काये' से मानते हैं -

- (क) ये रमेष्टु के पैड़ जाँय ।
- (ख) राजा साहेब का हाथी मरिगा ।
- (ग) छटोसा की पाटी टूट गइ ।
- (घ) यी कट्यार के तरिका बाय ।

१४०-अधिकरण कारक - माँ, पीछवाँ, पे, पर, पीछवाँ आदि ।

विद्वानों ने अधिकरणकारक माँ, पीछवाँ (हिन्दो में) की संस्कृत 'मह्ये' तथा पे, पर, पीछवाँ (हिन्दो पर) की सं० 'उपरि' से माना है ।

- (क) लड़े बो देखी जमुना माँ स्याम लड़े ।
- (ख) गाड़ी पीछवाँ बागिन नहाँ बाय ।
- (ग) बप्पा पे एक हिंदाम निहाय ।
- (घ) बर पर छद्म न मनाव ।
- (ङ) येन पीछवाँ किताब हो ।

१४१-प्रत्ययन कारक - ए, बी, रे, ली आदि

- (क) ए ! दहया काटत ली ।
- (ख) बी ! दादा ठार रहाव ।
- (ग) हाय रामरे ! मरि गिने ।
- (घ) हमई बसत ली हो !

१४२- बन्ध परसनीयं शब्द -

उपर्युक्त कारक चिह्नों के अतिरिक्त जानपू जनपद की बोली में ये परसनीयं शब्द भी प्रयुक्त होते हैं। डा० चोरेन्द्र वर्मा^१, डा० बाबूराम सक्सेना^२ तथा डा० उदयनारायण तिवारी^३ आदि ने इनकी विस्तृत व्याख्या की है-

- विकसित - सं० सह ७ संग - तुम संग लड़बे ।
 सं० समै ७ लै - उनके लै जावे ।
 सं० फुल ७ मारे - बाबा के मारे हम पिटेम् ।
 सं० कुत ७ कारन - बप्पा के कारन पर छुटी ।
 सं० तीर ७ तीर - उनके तीर की जाव् ।
 फा० से - वास्ते-सातिर- परामन के सातिर मरत ही ।
 सं० अग्र बागै - साहब के बागै न रोखी ।
 - बाँही - नदिया बाँही डूँही ।
 सं० ७ उपरि ७ ऊपर - हमरें ऊपर गुस्सा न दिहाव ।
 सं० परब ७ पाई ७ उनके पाई हम न मरव ।
 सं० विना ७ बिन् ७ कुछ बताव बिनु मान नै ।
 सं० सम् ७ सन् - दादा सन् सब कुछ उहाव ।
 सं० बम्पर ७ मोतर - कपड़ा के मोतर न छुकी ।
 छाले - खिलाव छाले परी हीछे ।
 सं० तल ७ तरै - बजावत देख के तरै गिर नै ।
 पारी - हमरें पारी न बिस्ताव ।

१- चोरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास , पृ० २६४

२- डा० बाबूराम सक्सेना : कवियों का विकास, पृ० १८६

३- डा० उदयनारायण तिवारी : मौखिक भाषा और साहित्य, पृ० १९३

सं० अति ७ असन हमका असने हातु है ।
 सं० हस्यति ७ हाड़ मोरे परान् हाड़ि पैव ।
 सं० संघ ७ समेत साकिस् समेत नवधया उरुटने ।
 सं० निरुट ७ नेरे इनके सेत नेरे हैं ।
 सं० तरह ७ तरा इन तरा हमार काम निहानि ।
 सं० तरह ७ तरह ७ तना ७ तन - बेलन् तन न देती ।
 सं० वृ ७ वरे हमका वरे कु नहि करि आवता ।
 सं० न्यायेन ७ नार्ह फाई को नार्ह मान जाव ।
 सं० सम्पुत ७ सई ७ सठो - या फेड़ बिलकुल सउन गेहे ।
 सं० मु ७ पर - पर पर देह जाये ह्य ।
 फा० नन्दो ७ नगोच - इनके नाचे हमार नाचि है ।
 सं० विष् ७ बो - इनके बोच माँ हम न परब ।
 सं० पल्लव ७ पल्ली - तुम्हारे पल्ली फलमा के का क्यो ।

१४३- २. २ सर्वनाम

कामपुर जनपद की बोलो में विभिन्न स्त्रीयों के सर्वनामों के प्रयोग में कुछ वैमिन्नता मिलती है। कुछ सर्वनाम अवधो बोलो प्रभावित स्त्रीयों में, कुछ सर्वनाम कन्नौजो बोलो प्रभावित स्त्रीयों में तथा कुछ सर्वनाम बुन्देली बोलो प्रभावित स्त्रीयों में अधिक प्रयुक्त होते हैं। सर्वनामों में अतः वैमिन्नता होने पर भी भाषा पूरे क्षेत्र में तुल्य और सुगम है।

सर्वनामों में प्रायः लिंग भेद नहीं होता बिम्बु सर्वनामों के साथ जो क्रिया पद प्रयुक्त होते हैं उनका लिंग निर्देश साहित्यिक हिन्दी की भाँति होता है। यथा- मैं कती, मैं कता, तू नह, तू गया आदि ।

४४४-

संज्ञा पदों की भाँति सर्वनामों में भी दो लिंग होते हैं - एकलवचन तथा बहुवचन । जिसका स्पष्टीकरण परसर्गों के योग वक्ष्यता समूह सब वाक्य वच्ययों के योग से होता है ।

४४५-

प्रयोग के अनुसार 'कामपूर जनपद की ढीली' में, साहित्यिक हिन्दी की भाँति इस प्रकार ६ सर्वनाम प्राप्त हैं-

- (१) पुरुषवाचक सर्वनाम
- (२) निजवाचक सर्वनाम
- (३) निरक्षवाचक सर्वनाम
- (४) अनिश्चित वाचक सर्वनाम
- (५) सामान्य वाचक सर्वनाम
- (६) पूरुषवाचक सर्वनाम

४४६-

३.२.१ पुरुष वाचक सर्वनाम

इस जनपद की ढीली में पुरुषवाचक सर्वनाम सामान्यतया तीनों स्पर्षों में प्रयुक्त होता है - उचम पुरुष, मध्यमपुरुष तथा अन्य पुरुष । उचम पुरुष वाचक सर्वनाम का प्रयोग अपने लिए मध्यमपुरुष वाचक सर्वनाम का प्रयोग दूसरे सामनेवाले व्यक्ति के लिए तथा अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग अनुपस्थित वक्ष्यता दूर के व्यक्ति के लिए होता है। ज्ञाने इन तीनों का व्याकरणिक विवेक प्रस्तुत है-

४४७-

३.२.१.१ उचम पुरुष वाचक सर्वनाम

एकलवचन	बहुवचन
अविकारी रूप -- मैं, मैं	हम, हमन
विकारी रूप -- मैं-मैं	हम-हमारे
सामान्य रूप -- मैं, मैं	हमारे, हमारे

(विकास)

(क) 'कान्पुर जनपद की बोली' में उच्च पुरुष सर्वनाम के साथ प्रयुक्त में या माँ की व्युत्पत्ति संस्कृत 'मया' से हुई है। इस शब्द का समर्थन जौन बोम्ब तथा कैलाश ने किया है-- सं० मया १ मर १ मर १ में।^१ इस पद में अनुनासिका का कारण बट्वा नहोदय साधारण कर्ण प्रत्यय 'ल' से जोड़ते हैं।^२ प्रयोग- मैं जात हूँ।

(ख) 'माँ' का विकास 'माँह' से माना गया है। यह सामान्य विकारी रूप में प्रयुक्त हुआ है। जहाँ में यह 'माँह' रूप है जिसमें 'ह' प्रत्यय लगाने से यह रूप बना है। यहाँ की बोली में इस 'ह' का लोप हो गया है तथा 'ह' या 'य' का उच्चारण होने लगा, ऐसा प्रतीत होता है। प्रयोग-- माँय कैसा मारु।

(ग) डा० बाबूराम सलीना ने 'मोर' का सम्बन्ध 'मी + कर (जान्छो + परसर्ग)' से माना है।^३ वे अनुमान से संस्कृत के 'मय' रूप में 'कर' प्रत्यय के योग से, मय + कर १ मय कर से विकसित है क्योंकि 'माँ' का विकास मय से माना गया है। प्रयोग- मोर त्याग बाय।

(घ) 'हम' का सम्बन्ध प्राकृत 'बम्ह' या 'बम्ह' ; 'म्ह' तथा संस्कृत के 'वस्म' से है। डा० सलीना तथा बाबू बाबू का यही मत है। हमन् - हम में 'न्' जोड़ने से बना रूप है। प्रयोग हम कहात् हने, हमन् ते न बोली।

(च) 'हमार' की उत्पत्ति डा० उदयनारायण तिवारी वस्म + कर

१- डा० महावीर प्रसाद शर्मा, मै०का०उ०वि०, ३० १५२

२- डा० बाबूराम सलीना, जवही का विकास, पृ० १३०

३- जवही-

पृ० १३०

से मानते हैं। जो प्राकृत के 'हम्हार' से हिन्दा 'हमार' बना। ऐसा अपना भाविचार। क्योंकि 'कानपुर जनपद की बोली' में 'कार' का 'वार' प्रयोग ही जाता है। यथा- बम्भार, चमार, कुम्भकार, कुम्हार। प्रयोग- हमार गार्, हमार घर आदि।

१४८- ३.२.१.२ मध्यम पूरुष वाचक सर्वनाम-

	एकवचन	बहुवचन
विवारी-	तु, तूँ, तूँ, तुम	तुम्ह, तुम लोग, तुम सब
विकारी-	तूँ, तूँ, तै, तै	तूँ, तुम, तौहने
सम्बन्ध रूप-	तवार, तौर, तुम्हार	तै, तौर, तुम्हरे, तौहार

(विकास)

(क) 'तू', 'तूँ' को उत्पत्ति संस्कृत 'त्वम्' से हुई है तथा 'तै', 'तै' को उत्पत्ति संस्कृत 'तव्या' से हुई है। डा० बाबुराम सत्सीना भी इसको उत्पत्ति ऐसी ही मानते हैं।

तू - तू ७ तुम् ७ (प्रा०पि० ४२०) ७ त्वम् ।
तूँ, तै ७ तूँ, तै (प्राकृत) ७ तव्या ।

(ख) तौर, तौहार (तौ) को उत्पत्ति डा० सत्सीना ने चटजा के मत का सम्बन्ध (चटजा ४५९) करते हुए संस्कृत के 'तव' से माना है।

तव ७ तौ ७ तौ

इन्में 'र' तथा 'वार' प्रत्यय ली विकारी रूप हैं।

१- डा० बाबुराम सत्सीना : अवधो भा विकास, पृ० १४२

(ग) तुम तुम्ह का प्राकृत रूप 'तुम्हें' मिलता है। इसी रूप 'तुम्हें' और तुम्ह + कार के रूप में तुम्हारे तथा 'क' का लीप तथा 'ह' का विकारों रूप आ गया और इस तरह तुम्हारे, तुम्हारे आदि रूप बनते हैं।

(घ) यहाँ की बातों में तुम, तुम्हारे आदि शब्द बादर सूक्त के लिए हैं। जब बादरार्थ 'जाप' का भी प्रयोग होने लगा है। तुं, तुँ, तीर, त्वारे आदि रूप निरादर सूक्त एवं छोटों के लिए प्रयुक्त होते हैं। 'तैं' तम् तथा 'त्वारे' का प्रयोग जनपद के पूरों में अधिक है, वैसे समस्त जनपद के सर्वनाम लगभग एक समान हैं।

१४९- २.२.१.३ (ब) (द्वुवतो) अन्य पूरणवाक्य सर्वनाम -

एकवचन	बहुवचन
विकारी रूप- उवी, कुवी, कुआ, वह	उव, उवे, उन्हन
विकारी रूप- उवे, वहि	उन्ह, उन
सम्बन्ध रूप- वीसरे, वाकर, वीकर,	उमलेर, उन केर, उन्हके, उनके
उवकेर, उवेर	

(विकास)

(क) अन्य पूरण वाक्य सर्वनामों का प्रयोग विशेषण (सार्व-नामिक) के रूप में भी होता है। विशेषण के रूप में बहुवचन रूपों का प्रयोग कम होता है।

(ख) द्वुवतो पूर्ण सर्वनामों के विकास की डा० बाबू राम सत्सैना^१ ने संस्कृत के दो सर्वनाम 'अती' और 'वम' माना है। जबकि डा० बटजी

१- डा० बाबू राम सत्सैना, अधीन विकास, पृ० १४९

नैःजैः रूप भी माना है ।

(ग) 'जी', 'उ' या 'व' में प्रारम्भ होने वाले सर्वनाम पदों को व्युत्पत्ति की दृष्टि से सर्वनाम नैःसिद्ध माना है। उनका विचार है कि प्राचीन मा०वा०मा० में हमें ऐसी कोई शब्द नहीं मिलते जिसे इनका सम्बन्ध जोड़ा जाय। वे अव्यय-शब्द ऋग्वेद में 'जो' की मानकर डा० चटर्जी (५०२) की देखने के लिए कहते हैं।^१ डा० महेन्द्रनाथ दुबे ने 'उ' के विकास की बत्ताते हुए लिखा है 'संस्कृत' 'जदस्' शब्द को दो रूप दृष्टिकार 'जो' 'जीर' 'वमू' हैं इसका जगहों में 'वमुष्य' रूप होता है। इस वमुष्य से वमुष्य ७ वस्स ७ उस्म ७ उग ७ उ के विकास-क्रम का अनुमान लिया जा सकता है।^२ यहाँ तक मेरा अनुमान है कि यान्त्रिक जनक की सीता में दूरवर्ती वस्स गुणन सर्वनाम संस्कृत 'यः' तथा पाणि-प्राकृत 'यो' 'जीर' हिन्दी प्राकृत 'जो' का विवक्षित रूप है। यहाँ 'यो' का हा 'जो' 'जीर' 'जुओ' 'या' 'उवो' रूप प्रचलित है इसे यूनान मान सकते हैं— यः ७ यो ७ जो ७ जो ७ वी ७ उवो ७ वुओ ।

१५०- २.२.१.३ (निकटवता) अन्य गुणवाचक सर्वनाम-

एकवचन	बहुवचन
विकारी रूप- ए, इयो, यो, यह, ये	हं, इतीग, जिन
विकारी रूप- हं, इहि, ज	हन्, इन्ह
सम्बन्ध रूप- एत, एकर, इतर, जिनकर	इन्हका, इनकर, जिन केट

(विकास)

(क) निकटवर्तीवचक सर्वनाम के 'ह' - 'ए' वाले रूपों का सम्बन्ध संस्कृत वस्य ७ वस्य से है। डा० चटर्जी ने इसका सम्बन्ध संस्कृत 'एतद्' -

१- डा० बाबू राम सतीना, अव्यय का विकास, पृ० १५१

२- डा० महेन्द्रनाथ दुबे, आज़ि० जि० बो० पृ० ११५

से माना है। 'यह' 'एतिका' सम्बन्ध संस्कृत 'एतद्' के अणः रूप से जान पड़ता है क्योंकि दुबे मो लिखते हैं^१— अणः ७ एयी ७ एी ७ एह्य यह तथा 'इयौ' या 'इहाँ' का सम्बन्ध सं० क्त से है।

(ख) 'जै' तथा 'जउ' का सम्बन्ध संस्कृत के यः तथा प्राकृत के 'य' या 'जौ' से है। डा० सरीना ने 'जा' का सम्बन्ध संस्कृत यस्य से माना है^२— यस्य ७ यस्सु ७ यस्सु ७ जाह ७ जाह ७ जा । यह मत भा उप-युक्त जान पड़ता है। बल्लुक 'इन' की उत्पत्ति सं० एतानाम से एतेणाम ७ एतानाम ७ एवाणं ७ एन्ह ७ इन्ह ७ इन , छुं है। डा० शंकर शेषा^३ मो 'इन' की व्युत्पत्ति यही मानते हैं।

(ग) उपर्युक्त इन्हों रूपों में कारक के अनुसार प्रत्यय लगाकर अन्य रूपों में प्रयुक्त करते हैं।

१५१- ३.२.२ निष्ठाचक सर्वनाम -

एकक - अपन, अपनी

बहुवक - आप, आपने

(क) इस सर्वनाम का प्रयोग अपने पन का बोध कराने के लिए सभी पुनर्जाचक सर्वनामों तथा संज्ञाओं के साथ होता है। इसका प्रयोग मध्यम-पुनर्जाचक सर्वनाम में बादरसूक्त के लिए होता है। इनके बीर उसके विकास में कोई अन्तर नहीं है केवल प्रयोग की विशेषता है। यदा-कदा यह ठगम

१- डा० महेन्द्रनाथ दुबे, वा०वि०बी०, पृ० १४६

२- डा० बाबुराम सरीना, कथी का विकास, पृ० १५०

३- डा० शंकर शेषा, इ०मा०शा०ब०, पृ० १५८

पुरुषवाक्य रूप में भी प्रयुक्त हो जाता है ।

(स) इन सर्वनाम रूपों का सम्बन्ध संस्कृत 'वात्मन्' से है जो वात्मन्, वाप्पण, वप्पण, वप्पन, वप्न होते हुए विरसित हुआ है ।

(ग) कानपुर जनपद की बोली में निश्चयाक सर्वनाम के लिए 'हुँ' शब्द का व्यवहार हुँ, हुँई, हुँी आदि रूपों में होता है जिसका अर्थ स्वयं या निज से है। यथा- हुँ करी ।

१०१०१०००

(घ) निश्चयाक सर्वनाम के रूप में 'सय्य' का झिड़ा हुआ रूप 'सौरम' या 'सौयम' तथा निज या 'निजे' या निज्हे रूप भी प्राच्य होता है। यथा- यौधर सौयम बनाव ली ।

११२- ३.२.३ निश्चयाक सर्वनाम-

निश्चयाक सर्वनाम का उत्प्रेषण अन्य पुरुषवाक्य सर्वनाम के रूप में (निकटवर्ती एवं दूरवर्ती) कर दिया गया है इसे विद्वानों ने सन्निधाक सर्वनाम भी कहा है । जिससे किसी वस्तु के दूर या पास होने का सूचित मिलता है । निकटवर्ती के लिए ए, ये, यह, इन, इन्ह आदि रूप तथा दूरवर्ती के लिए ओ, वी, वुँ, उन, उन्ह आदि रूपों का प्रयोग होता है जिनसे विकास का उत्प्रेषण अन्य पुरुषवाक्य सर्वनाम के रूप में कर दिया गया है ।

११३- ३.२.४ अनिश्चयाक सर्वनाम-

कानपुर जनपद की बोली में अनिश्चयाक सर्वनाम के लिए वीउ,

कीड़, कुहू, गोन, कउर, कउन, सबे जादि ह्योँ का प्रकलन है। यथा-
कीड़ का लेत । कउर ते बोलव न । कउर सब लेव , सबे कली, कुहू गिरगा है,
कउन जावो जादि ।

(क) "कुहू" की व्युत्पत्ति के लिये डा० उदयनारायण लिहारी ने
"किंकिंदू" रूप माना है। प्राकृतों में किहु या कच्छू (जहाँकई शिला लेखों में)
रूप जाया है। कीड़, कीहू तथा कीध का विकास संस्कृत के "कीडपि" शब्द से
हुआ है ।

(ख) कउर का विकास डा० बाबूराम सन्धीना^१ ने मा "अपर" से
माना है तथा सब का विकास संस्कृत के सर्व से हुआ है । इस मत का समर्थन
डा० सन्धीना एवं डा० दुबे^२ ने भी किया है ।

१५४- २.२.५ सम्बन्धवाक्य सन्निभ-

सम्बन्धवाक्य सन्निभ के मूल रूप के प्रयोग में वचन का कीध
प्रभाव नहीं पड़ता । विज्ञान् हरे दो ह्योँ में जानते हैं । कुहू विज्ञान् की
डा० बाबूराम सन्धीना तथा डा० शंकर शेण ने हरे सम्बन्धवाक्य के
अन्तर्गत दो ह्योँ (सम्बन्धवाक्य तथा निस्त्ववाक्य) में स्वाकार किया है
जबकि डा० दुबे^३, डा० रायत तथा डा० शर्मा^४ जादि ने अलग-अलग सन्निभ
मानकर विश्लेषित किया है। यहाँ पर दोनों की सम्बन्ध वाक्य ने साथ ही
विश्लेषित किया जा रहा है-

१- डा० बाबूराम सन्धीना, अवधो का विकास, पृ० १६८

२- डा० मोहननाथ, जा०बि०बो०, पृ० १२१

३- डा० बाबूराम सन्धीना, अवधो का विकास, पृ० १५६

४- डा० शंकर शेण , ह० बो०बो०, पृ० १५९

जहाँ पृष्ठ पर देखिए

एकवचनबहुवचनसम्बन्धवाक्य

विकारी- जो , जै , जउन

जवन, जौन, जिन्ह

विकारी- जो, जाहि, जस

जैहि, जिन्हें, जिन्हो

नित्यवाक्य

जकारि- तै, तै, तिनह गी

तिन, तवन, तिनह त्वे सोई

विकारी- तव, तैहि, तिन, तव

तिन, तिनकर, तिनहें ।

(क) इन सर्वनामों का प्रयोग विशेषणवत् भा होता है तथा लिंग निर्धारण क्रियापद के द्वारा होता है ।

(ख) सम्बन्ध वाक्य का प्रयोग नित्यवाक्य सर्वनामों के साथ होता है। इससे द्वारा दो वाक्यों को जोड़ा जाता है तथा दोनों के प्रयोग से ही बात पूर्ण होती है। गया- जो जस करी सौ तस परी । जउन जह तवने पारी जह । जस कहति रहाय तस भा है जादि ।

(ग) ऐसा कि पहले भी विवेक किया गया है कि सम्बन्ध वाक्य सर्वनाम के रूप से प्रयोग होने वाले रूप संस्कृत 'यत्' से है । जो संस्कृत 'यः' से 'जो' 'स्व' 'जोन' के रूप में विकसित हुए हैं । 'जै' संस्कृत 'ये' का रूप है। डा० बाबूराम सक्सेना ने 'जो' की संस्कृत 'यस्य' से विकसित माना है ।

(घ) नित्य सम्बन्ध वाक्य का प्रयोग सम्बन्ध वाक्य के साथ होता है।

५- डा० महेन्द्राथ दुबे , का०जि०वी०, पृ० ११७

६- डा० कद्वमान रावत , हि०मा०उ०वि०, पृ० २९०

७- डा० महावीरप्रसाद समी, मे०वा०उ०वि०, पृ० १६५

१- डा० बाबूराम सक्सेना, अवधी का विकास, पृ० १५७

इसमें प्रयुक्त 'कौ' संस्कृत 'क' का प्रतिनिधि रूप है। 'तै' तथा 'तै' रूपों से 'त' धिक्कर प्रयुक्त होने लगा है।

(ब) टनों महीदय ने 'तन' 'कौ' 'कन' के आधार पर ता- जोन से विकसित माना है। डा० बाबू राम सखीना का विचार ताम् + उन (त + पुनः) से है।^१ तीन और जौन रूप 'कौ' और 'तै' के विकाराएँ हैं। जो प्राकृत 'कण' 'और' 'तण' से विकसित है। डा० कन्दमान रावत ने 'ति' का विकास संस्कृत 'तस्य' से माना है- तैणां, ताना, ताणा, ताणा, तिन (टनों ६२२) तथा जिन्ह को संस्कृत यस्य द्वारा यैणा, यैसा, जस्य, जिस, जिन माना है।^२

१५५- ३.२.६ प्रश्न वाक्य सर्वनाम

(वैतन)

एकवचन	बहुवचन
विकारो - कौ, कन, उन	के, कने, कने
विकारो - कौ, कैह	किन, किन्ह, कनी

(ववैतन)

विकारो - का	का, काह
विकारो - काह- काहै	काय, कैह

(क) प्रश्नवाक्य सर्वनाम दो रूपों में प्रचलित है। एक प्राणिजगत् के लिए दूसरा अप्राणिजगत् के लिए। लेकिन कान्यकु जनपद को दोला में दोनों वर्गों के लिए यह रूप भिन्नता बिल्कुल स्पष्ट नहीं है। इसमें से कुछ रूप सामान्य हैं जो दोनों वर्गों में प्रयुक्त होते हैं।

१- डा० बाबू राम सखीना, अवधी का विकास, पृ० ११७

२- डा० कन्दमान रावत, हि०मा० वि०, पृ० २१०

(घ) 'कीन' या विकृत रूप 'कून' या 'क्वन' है जिसका उत्पत्ति संस्कृत के कः पुनः से हुई है जो कःपुनः १ कृष्ण १ कृष्ण १ कृष्ण १ कीण १ कीन १ कून १ क्वन रूप में जाया है। 'की' के वाचार्थ के लिए संस्कृत 'कः' है किन्तु डा० सक्सेना ने 'का' के लिए संस्कृत 'कस्य' माना है।

(ग) का (क्या) के विकारों रूप 'का-है' 'की' व्युत्पत्ति किम् से हुई है। किन्तु मेरा विचार है कि 'काहै' 'बादि' या व्युत्पत्ति संस्कृत 'काँ' शब्द से हुई है-- क्यौ १ क्यौ १ काबौ १ काहौ १ काहै बादि। 'कै' संभवतः संस्कृत के 'कह' या 'कासित' रूप है। इन विकारों रूपों को विलुप्त सभी व्युत्पत्ति सोजना पीड़ा जटिल है इसीलिए जल-जल विद्वानों ने जल-जल विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

१५६- ३.३ विशेषण

रूप या रचना से दृष्टि से बानपुर कण्ठ को बोलों में विशेषण शब्दों के दो प्रकार के रूप अधिक प्रचलित हैं-

१- साधारण रूप २- गुरु रूप

विशेषण के साधारण रूपों में हो (-का) या (का) या (-वा) स्वार्थिक प्रत्यय जोड़ कर गुरु रूप बना लिये जाते हैं। इन प्रत्ययों के रूप से विशेषण शब्दों में कुछ अर्थ सम्बन्धों परिवर्तन आ जाता है। यथा-

१- डा० शंकर शैल , क०मा० वध्य० , पृ० १६०

२- डा० बाबूराम सक्सेना, अवधी का विकास, पृ० १६०

गौर, बड़ा, हॉट, करिया आदि विशेषण शब्दों के गुरु रूप - गौरवा, बड़क्का, हॉटवा, करियावा । इन गुरु रूपों में अधिक वात्सल्य, स्नेह एवं सामोप्य का विशेषणत्व ध्वनित होता है ।

(क) कुछ विशेषण शब्दों के अन्य रूप भी देखने में आते हैं। जो अधिक प्यार में बड़कना, हॉट करना आदि विशेषणों में 'कना' प्रत्यय लगाकर बोलते हैं ।

(ख) कभी-कभी साधारण रूपों में 'हा' प्रत्यय लगाकर भी दोषर्त रूप बना लेते हैं। यथा- रोगिहा, कुतिहा, मटिहा, बेड़िहा आदि ।

(ग) 'कन', 'कुट' तथा 'हर' प्रत्यय भी लगाकर साधारण रूप से दोषर्त (गुरु) रूप बना लेते हैं। यथा- बड़कन, हॉटकन, मनकुट, सनकुट, बड़हर, बड़ेहर आदि ।

१५८-

विशेषण शब्दों में संज्ञा पदों के लिंग एवं वचन के अनुसार भी परिवर्तन होते हैं ; किन्तु लिंग या वचन के अनुसार भेद होना अनिवार्य है ।

(क) पुलिङ्ग एवं स्त्रीलिङ्ग संज्ञापदों के साथ एक समान विशेषण भी प्रयुक्त किए जाते हैं। यथा- नीक, मरु, नीकू, मेहरिया । जहाँ लिंग भेद किया जाता है वहाँ व्यंजनान्त पुलिङ्ग शब्दों के अन्त में 'ह' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बना लिया जाता है। जैसे- गौर-गौरि, सुष-सुषरि, नीक-नीकि, पातर-पातरि, मोर-मोरि आदि । प्रयोग-

गौर लड़का - गौरि लीछिया

पातर बैल - पातरि गाय

मोट सेंठ - मोटि सेंठानी

(ख) वाक्यार्थतः पुलिङ्ग विशेषणों के अन्त में 'वा' के स्थान पर 'ई' रखकर स्त्रीलिङ्ग बना लिया जाता है । यथा- बड़ा घर - बड़ी बसरी,

घोड़ा बड़ा - घोड़ो दार , बच्चा बर , बच्चा लड़को बादि ।

(ग) अन्य विशेषणों (इकारांत, उकारांत एवं अकारांत) बादि, नारी, कू बादि में लिंग भेद नहीं होता है ।

१४९- 'कानपुर काफ़द को बोलो ' में यहाँ की अतिशय कता विशेषणों का लिंग भेद के अनुसार स्पष्ट उच्चारण (प्रयोग) नहीं करती है । वह एक ही लिंग के विशेषण की दोनों लिंगों में प्रयुक्त होती पाई जाती है। लिंगों के अनुसार विशेषण का स्पष्ट उच्चारण प्रायः सिद्धित वर्ग के लोग ही करते हैं ।

१५०- विशेषण शब्दों की एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए विशेषण के एकवचन रूप में 'अन्' जोड़ 'ए' प्रत्यय जोड़ कर बहुवचन रूप बना लेते हैं। यथा-
गौर - गौरन् - गौरें
होट - होटन् - होटें
बड़ा - बड़न् - बड़ें
कूँआर - कूँआरन् - कूँआर बादि ।

१५१- दो वस्तुओं की तुलना के लिए कौड़े प्रथम् विशेषण रूप नहीं है । जब दो वस्तुओं की तुलना की जाती है तो उसके पश्चात् 'ते' या 'तै' (सै) परस्पर रत्नर तदनन्तर न्यूनाधिक भाव व्यक्त वाले अपेक्षित शब्दों की रत्नर (कम, ज्यादा, बेसी, बहुत, सग़र, बढ़ती बादि) तुलना की जाती है। यथा- 'हं बड़ ते उवा जादा गौरि से , कू बीतल से येहिना सग़रि शराब से, कू स्यात् ते बेसी है। कस न केत ते मँहँसा नीक् । दार से सग़न् कमती है ।

१५२- क्यो - क्यो दो वस्तुओं की तुलना हेतु संख्या वाक्य विशेषणों का भी प्रयोग होता है- उन्हसे- बीस, पटना-सवाया , इकहत्तै- उन्हसे बादि।

यह कम और अधिक का बोध कराते हैं । यथा-

(क) ईं और का बेल उन्कसे परी और बाधिया बैसे बैसे (बोसहा) परी ।

(ख) तुम्हार लैत हमरे तै पउने है हमार सवाव निसरी ।

(ग) इनके बैसे तुम्हरी तै हकसे निसरी ।

१६३-

कुछ वस्तुओं तुलना में, एक की उत्तमता को व्यक्त करने के लिए एक व्यक्ति (सबसे, सम्या) सामान्य विशेषण के पूर्व रखकर व्यक्त करते हैं । यथा- कुवा बिटिया सबसे नीकि हो । रावण सबसे दुरा हतो । यो लड़िका सम्या सुशिवार है । सबन माँ नीकु ब्याहै सेतु है ।

१६४-

कानपुर जनपद की बोली में भी साहित्यिक हिन्दो की भाँति संज्ञा शब्दों के अंत में -- बाऊ, ह्या, ह्सा, उवा, उस, ऊ, ए, ऐला, बीबा, उवा, घु, घु, ककड़ जादि प्रत्यय लगाकर भी विशेषण बना लिए जाते हैं। यथा-

बाऊ-	घर - घाऊ, घर-मराऊ
ह्या-	कानपुर - कनपुरिया, क्लोगड़- क्लोगड़िया
ह्सा-	हार- हरहता, माटो- मटहला
उवा -	बाड़ - बडुवा, काड़ - कडुवा
उस -	चयक - ककड़
ऊ -	गँवार - गँवारन
ए-	पियास - पियासे
ऐला -	बन - बनेला
बीबा-	बड़ - बड़ीबा
उवा-	पेट - पीटवा
घु -	घुँह - घुँहवा

खुर - कल - कलसुर
बालक - बल - धुमकल

१६५- विशेषण के मुख्यतः चार भेद होते हैं। वे तो विशेषण के विभाजन में विशेषणों के अलग-अलग भेद हैं, जिन्हें यहाँ सर्वमान्य भेद ही प्रस्तुत किए गए हैं-

- (१) गुणवाचक विशेषण
- (२) संख्यावाचक विशेषण
- (३) परिमाणवाचक विशेषण
- (४) सावनामिक विशेषण

१६६- ३.३.१ गुणवाचक विशेषण -

“कानपुर जनपद का बोता” में गुणवाचक विशेषणों की संख्या अधिक है। यह विशेषण वस्तुओं के रंग, रूप, दशा, गुण, काल आदि का बोध कराते हैं-

- रूप- गोल छंटा, बंदू ताठो, सिज्जित पाटो आदि ।
दशा- पातर नम, बौद (बाइ) सेत, गाढ़ रस आदि ।
गुण - नीक राख, अच्छी बातें, मुनसिर सान, लट्टोदार आदि ।
काल- कल फिराई, पुरान पैट, पीड़ित बात आदि ।

१६७- ३.३.२ संख्यावाचक विशेषण -

संख्यावाचक विशेषण मुख्य रूप से तीन प्रकार के मिलते हैं-

- (१) गणनावाचक
- (२) क्रम वाचक
- (३) समूह वाचक

३.३.२.१ गणनावाचक विरहण दो प्रकार के होते हैं-

(क) पूर्ण संख्या वाचक

(ख) अपूर्ण संख्या वाचक

१६-३.३.२.१ (क) पूर्ण संख्या वाचक -

इसमें अधिकतर एक से सौ तक या इससे ऊपर की संख्या बताती है। ग्रामोण दोत्रों के अतिरिक्त लोग क्रमशः केवल दश या बीस तक ही गिन सकते हैं। कुछ लोग बीस के ऊपर की दशार्ध संख्याओं से भी परिचित होते हैं। जाने गणनावाचक संख्याओं के उच्चारण स्पष्ट दिख जा रहे हैं-

१- याक। एक	२- छुं
३- तीनि	४- चारि
५- पाँच	६- छः। छे
७- सात	८- बाठ
९- नौ। नव	१०- दस
११-गैरा	१२- बारह
१३-तेरा	१४- पन्दा
१५-पन्दा। पन्दरा	१६- सोला
१७-बहरा	१८- बठारा
१९-उन्धे	२०- बीस
२१-दसहंसे	२२- बाइस
२३-तीस	२४- पचिस
२५-पचीस	२६- छत्तिस
२७-सत्ताइस	२८- अट्ठाइस

२९- उन्ति	३०- तीस
३१- इकति	३२- बप्ति
३३- तीति	३३- तीति बडति
३५- पैति	३६- इप्ति
३७- तीति	३८- वरति
३९- उन्ताति	४०- चाति
४१- इक्ताति	४२- क्याति
४३- तिताति	४४- क्वाति
४५- पैताति	४६- द्वियाति
४७- पैताति	४८- वरताति
४९- उन्वास	५०- पवास
५१- इत्यावन	५२- वामन। वावन
५३- तिरपन	५४- बर्विन
५५- पक्कन	५६- इप्पन
५७- सपावन। सपामन	५८- बट्टावन
५९- उन्सठ	६०- साठा। साठि
६१- इक्कठ	६२- वासठ
६३- तिरिठ	६४- बडिठ
६५- फर्मठ	६६- ताडठ
६७- सरसठ	६८- वरसठ
६९- उन्हण	७०- सण
७१- इक्कण	७२- वहाण
७३- तिहण	७४- क्कण
७५- पक्कण	७६- द्विहण

७७- सससर	७८- अठहर
७९- उन्वासी	८०- असी
८१- हक्यासी	८२- अयासी
८३- तिरासी	८४- अरसी
८५- पच्चासी	८६- द्वियासी
८७- सचासी	८८- अट्ठासी
८९- नवासी	९०- नव्वे
९१- हक्यान्वे	९२- दानवे
९३- तिरान्वे	९४- बोरानवे
९५- पंचान्वे	९६- द्विान्वे
९७- सतान्वे	९८- अट्ठान्वे
९९- ठ निम्न्यान्वे	१००- सी। सब

१०००- ह्वार

१,००,०००- लाख । लाखें

१,००,००,०००- करोड़। कड़ोर

बरब, सरब, नील, पदम, रंज, संज, महारंज जादि

१६९-

सी के ऊपर का संख्याओं को पुनः सी के बाद रखकर गिनते हैं। यथा- एक सी घुई (१०२), एक सी पैंति (१३५) यह क्रम नौ सी निम्न्यान्वे (९९९) तक चलता है। इसके बाद दस सी का हजार तथा सी हजार को एक लाख और सी लाख को करोड़ (कड़ोर) कहते हैं। इनके जाने की संख्याओं को क्रमशः बरब, सरब, नील जादि यही संख्याएं कहते हैं।

कानपुर जनपद की बोली में बार सभा संख्यावाचक विशेषण लड़ो (साहित्यिक) बोली हिन्दी से लगभग भिन्न-भ्रूलते हैं। इन सब की

व्युत्पत्ति लड़ा बोली के समान संस्कृत संख्यावाक्य विशेषणों से हुई है जिनके विकास के सम्बन्ध में बोझ, हार्नेला, डा० चटर्जी, डा० वर्मा तथा डा० उपमानारायण तिवारी आदि ने विस्तृत विवेक किया है, अतः यहाँ पुनः प्रमाण उचित नहीं समझा गया है।

१७०- गणना करते समय प्रायः संख्यावाक्य विशेषणों के साथ अवयव-बोझों की तरह "ठी" या "ठायें" "ठैं" तथा "तुल" लगाने की प्रवृत्ति है। यथा- एक ठी ऊँट, दूँ ठी ठेला, दस ठी बाग, चार ठैं फेंसी, पान ठायें बुकरी, छे ठायें बैल, तीन ठायें गधरा, दस ठैं नुगियाँ आदि।

डा० चटर्जी इसकी व्युत्पत्ति "स्थान" से मानते हैं। एक स्थान, एकट्ठर, एकट्ठे, ठे। इसा छैं से इस जनपद का बोली का ठी, ठायें तथा ठैं भी निम्नतः मालूम पड़ता है।

१७१- १, २, २, १ (स) अपूर्ण संख्यावाक्य विशेषण -

अपूर्ण संख्यावाक्य विशेषण पूर्ण संख्या के विना जी की सूचित करते हैं। अधिक प्रचलित संख्यावाक्य विशेषण निम्नलिखित हैं-

१।४	पठवा या पाव	७	सं० पाद
१।२	बढ़ा या बाधा	७	सं० जड़
१।३	तिहाई या तयाही	७	सं० त्रिमासिक
३।४	पड़न या पवना	-७	सं० पादार्ध
१-१।२	ढेड़ या डेउड़ा	७	सं० द्विबर्षिक
१-१।४	सवाव या सवहया	७	सं० सपाद
२-१ २	बढ़ाई या ढाई	७	सं० वदंततीय

ऊपर की चारों संख्याओं की पूर्ण संख्याओं के साथ जोड़कर अपूर्ण संख्याएँ बना लेते हैं। इन अपूर्ण संख्याओं का योग सौ, हजार एवं लाख आदि बड़ी संख्याओं के साथ भी होता है। श्री-

१२५- सवा सौ , १५०- डेढ़ सौ
 १७५- पउने कुंछी, १२५०- सवा हजार
 १५००- डेढ़ हजार २५००- डूढा हजार
 १२५००० - सवा लाख, १७५०००- पउने कुंछे लाख बादि ।

१७२- ३. ३. २. २ क्रम वाक्य विशेषण

क्रमवाक्य विशेषण के अद्वैतसम एवं तद्वत् रूप प्रचलित है ।
 अद्वैतसम रूपों का व्यवहार कदम्बा की स्तावों के अनुसार महीने के
 पक्षारों की गणना होती है। यह क्रम संस्कृत की प्रथमा, द्वितीया, तृतीया
 बादि के अनुसार पौवा । परिवा, द्वा, कुब, तीथि, चय, पंचमी, षष्ठ,
 सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, तैरस, सप्तस, पूरणाभासी
 तथा अमावस बादि हैं । तद्वत् रूपों का आधार पूर्णसंख्यावाक्य विशेषण
 ही हैं । एक से चार तक की संख्याओं के क्रमवाक्य रूप- पहिल, दूसर, तीसर,
 चत्वार बादि हैं । इनको व्युत्पत्ति निरिक्त नहीं है। बोम्ब के मतानुसार
 'पहिल' या 'पहिला' संस्कृत के 'प्रथ' से तथा फिरील के अनुसार सं० 'प्रथिल'
 से तथा डा० सक्सेना के अनुसार- सं० प्रथु-हस्त १ पहिल १ पहिल से निवृत्त
 है ।^१ दूसरा या तीसरा का सम्बन्ध बोम्ब द्वि-सुत, त्रि-सुत से जोड़ते हैं तथा
 डा० सक्सेना दू-सर, तीसर में 'सर' प्रत्यय मानते हैं ।^२ पाँच से लेकर बाद
 की सभी संख्याओं के जाने 'आ' या 'वा' प्रत्यय जोड़कर क्रमवाक्य विशेषण
 बना लेते हैं । यथा- पाँचवाँ, छठावाँ, सातवाँ, आठवाँ, नवाँ, दसवाँ, गैरखाँ,

१- डा० बाबू राम सक्सेना , अयो की विकास, पृ० १३२

२-

-वही-

पृ० १३२

बारहवाँ, तेरहवाँ आदि । इन रूपों की स्वीकृति बनाने के लिए "वा" या "इ" प्रत्यय जोड़ते हैं । यथा- पाँचवाँ । पाँच^{वाँ}, छठवाँ । छठ^{वाँ}, सातवाँ । सात^{वाँ}, गैरहवाँ । गैरह^{वाँ}, बारहवाँ । बारह^{वाँ} आदि । यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस सेह ऊपर उन्नीस तक की संख्याओं में (पाँच) प्रत्यय के साथ "ह" का वानम भी है । यथा- गैरा- गैरहवाँ, बारा- बारहवाँ आदि ।

१०३- क्रमांक विशेषणों में वागे-पौड़े के रूप के अनुसार बँगला, पहिला, बीच का रूप भी प्रचलित है । लड़कियाँ- लड़कियों के सम्मानानुसार- बड़ा । बड़ी, पीकलता । पीकली , सीकलता । सीकली तथा छोटा । छोटी या दनका । दनकी कहते हैं । बड़े के लिए "बैठ" या "जैठा" तथा ^{बड़े} के लिए "लहुरा" प्रचलित है जो क्रमशः संस्कृत के "ज्येष्ठ" तथा "लघुतर" से निकले हैं ।

१०४- १.१. २.३ सम्प्रसाक विशेषण -

सम्प्रसाक संख्याओं का प्रयोग प्रायः पूर्ण संख्यावाक्य या अपूर्ण संख्यावाक्य संख्याओं (विशेषणों) के साथ किया जाता है । अनष्ट जनपद की बातों में कुछ प्रचलित सम्प्रसाक विशेषणों का विवेक प्रस्तुत है -

(१) बौड़ा या जोड़ा की वस्तुओं का बोध करता है । यह सं० युक्त, युक्त १, युक्त १, युक्त १, युक्त १, बौड़ा से निकला है । डा० शंकर शर्मा ^१ "युक्त" तथा डा० दुबे ^२ सं० युक्त १, डा० (प्रत्यय) एवं डा० शर्मा ^३ सं० युक्तः से विकसित मानते हैं ।

१- डा० शंकर शर्मा, डा० का व्या०, पृ० १०८

२- डा० महेन्द्रनाथ दुबे, वा०जि० बोध, पृ० १०७

३- डा० महावीरप्रसाद शर्मा, मे०उ०वि०, पृ० १८०

- (२) गंठा - चार वस्तुओं का समूह बताता है, यह मुँठा से बाया है।
 (३) कीड़ी - दोस वस्तुओं का ढेर
 (४) दरजन - बारह वस्तुओं का बीघ कराने वाला बीजा 'हजन' से गठित।
 (५) सैकड़ा या सहस्र - सौ वस्तु का बीघ। सं० शत + कृत से।
 (६) बीसी - बीस या बीघ कराने वाला। सं० विंशति से।

तात्पर्य के पक्षों के लिए संख्याओं को विभक्तित्व के द्वारा ही स्पष्ट होयथा-
 हज्ज, दुक्की, लिमको, फडवा। फडवा, पंच, हज्ज, मला, बट्टा, नहिता,
 बहिला आदि।

१७५-

समूहवाची विशेषण के अन्तर्गत वाचस्पिवाची संख्याओं का बीघ कराने के लिए वाचस्पिवाची विशेषण शब्द भी प्रचलित हैं। इन्हें समानुपात संख्यावाचक विशेषण भी कहते हैं। यह किन्तु संख्या को तुल्य वाचस्पि का बीघ कराते हैं। सानपु जनपद को बीलो में वाचस्पिवाची विशेषण प्रमुख हैं-

दायि।दाई -	तीन दायि, चार दाई
दफा-	कु दफा, पा दफा
बैर।बैरि -	चार बैर, छः बैरि
बाजी -	कु बाजी, दस बाजी
गुना-	दसगुना, चाँगुना

१७६-

पहाड़ों की वाचस्पिवाचक शब्दों की संख्याओं से विशिष्ट बाँग होता है, अतः मूल शब्दों में कुछ विकार हो जाता है। यथा- हज्ज।हज्जे, दूना।
 दूनी, त्वार्हि।तिरके, चंके। चकरे, पवि।पना, हज्ज।हजे, सरे, बट्टे, त्वार्हि।

नवगर्वा, दहाय, दहामन । उदाहरणार्थ हः का पहाड़ा प्रस्तुत है-
है स्वप्न है, है दूनी चारा , है त्याहिं बठारा , है कठके नीपिका , है पवि
तोस आदि ।

सामान्यतः कानपुर जनपद की बोली में चार जाकुछिवाची विशेषण
दायि, दफा, केरि और बाजी का प्रयोग सत्थावाची शब्दों के साथ होता है।
यथा- उह दिन माँ चारि-चारि दायि सात ह है, हम लोग दिन माँ छु
दफा सात तिन, जब सारेब दिन माँ चार धेर हाँपि वाला कठने न मोर होई।
हस-हस दिन माँ छु बाजी साके मला का होई ?

१७७- २. ३. ३ परिमाणवाक्य विशेषण

परिमाणवाक्य विशेषणों का प्रयोग संख्यावाक्य विशेषणों के
समान ही होता है। संख्यावाची विशेषण जहाँ वस्तु की संख्या का बोध
कराते हैं, वहाँ परिमाणवाक्य विशेषण मात्रा का बोध कराते हैं। इसमें नाप-
तोल के प्रचलित पैमानों का प्रयोग भी होता है ।

कानपुर जनपद की बोली में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख परिमाणवाक्य
विशेषण निम्नलिखित हैं-

- | | |
|------------------|--|
| थोरी या थोरा- | थी थोरी पानी ह्वी ।
ह थोरी जलबी ह । |
| बहुत या तम (सब)- | तम बलिबे, बहुत काम है । |
| बापों (बाधा) | - बापों गिलास पानी देव । |
| पूर -(पूरा) | - पूर मर के लाव । |
| हत्ता (हतना)- | हत्तै दिन कहां हतैव । |

- जिता (जितना) - जिता फसता होय लेव ।
 चिमुक (बति बल्प) - चिमुकदार हो ।
 तिमुक या तनकु (बति बल्प) - तनकुमान में छे ।
 रंघ मर (बल्पन्त पोड़ा) - रंघ मर पो डार केव ।

१७८- कानपुर बनपद की बोली में माप-तौल के लिए मो कई पैमाने प्रचलित हैं। यथा-

- जंगू (जंगल) - चार जंगू मोट परतु हो ।
 बोता-बिता- सात बोता के लोड़ होत हो ।
 हाँधि (हाथ) - पाँच हाँधि का लट्ठा होतु है।
 लट्ठा - दस-बस लट्ठा तमारे है ।

ब्रिजो शासन काल में माप-तौल के पैमानेय मो सब जाह प्रचलित हैं जिनमें हँच, गुटर (फिट) गज, बरीब, फालग, मोल बादि हैं। तौल के लिए गाँवों में अब मो पुराने बाटों का प्रचलन है। यहाँ तक कि मीट्रिक प्रणाली के पाँच किलो को 'नई फौरी' किलो को 'नया सेर' तथा २०० ग्राम के बाट को 'नया पाँवा' कहते हैं। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में अब मो हटौके, कपफे, फडवा, कसौरा, सेर, ज़या, बड़या, फौरी तथा मन बादि की तौल का प्रचलन है। यहाँ की मती वस्तुओं के लिए- लौहा, मासा, रसी, फसा (पुराना) तथा जाना अब मो प्रचलित है ।

बाब ख़ुश बोला के प्रभाव एवं सम्पदा के प्रभाव के साथ धीरे-धीरे किलो, ग्राम, मोटर, लीटर बादि का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। ज्यों ज्यों शिक्षा का प्रसार बढ़ रहा है, ग्रामीण क्षेत्रों में मो नई माप-तौल की प्रणाली का प्रयोग बढ़ रहा है ।

१७९-३.३.४ सार्वनाभिक विशेषण -

कानपुर जनपद की बोली में कुछ सर्वनामों का प्रयोग किसी को विशेषता बतलाने के लिए होता है। ऐसी दशा में वे विशेषण का कार्य करते हैं। ये सर्वनाम विशेषणों में गिने जाते हैं। सर्वनामों से निष्पन्न होने के कारण इन्हें सार्वनाभिक विशेषण कहा जाता है। प्रमुख सार्वनाभिक विशेषणों का विवेक प्रस्तुत है-

(१) कृष्णवाक्य या प्रकारवाक्य सार्वनाभिक विशेषणों के मां सामान्य (तथु) तथा गुरु रूप व्यवहृत होते हैं। यथा- अस-असे, कुस-कुसे, अस-असे, तस-तसे, अस-असे आदि ।

१८०- घाटमपुर तथा बक्करपुर तहसीलों में सने (प्रत्यय) रूपों से सम्बन्धित सार्वनाभिक विशेषण का प्रचलन है। यथा- असने-असन, कुसने कुसन, असने-असन, कसन आदि । इन विशेषण रूपों में 'ह' (प्रत्यय) लगाकर व स्त्रीलिंग रूप बना लेते हैं। यथा- असो, कसो, असो, कसो, तसो आदि । इन्हां तहसीलों में ये विशेषण साधारण रूप में भी प्रयुक्त होते हैं- अस, कस, कस, तस आदि । इनकी उत्पत्ति का सम्बन्ध संस्कृत 'इह' वाले रूप से है । यथा- अस, बाहस, एतादृश (सं०) अस, बाहस, यादृश (सं०) कस, काहस, कोदृश (सं०) आदि । प्रयोग -- असो बातें न करी, कुस गाय लेवे, कस के हवे, अघोड़ हय, तस बादमी होत हैं ।

१८१- (२) किसी वस्तु की मात्रा (परिमाण) का बोध कराने के लिए मां सर्वनामों का विशेषणवत् प्रयोग होता है। यथा- हता (हतना), उता (उतना)

१- डा० बाबू राम सुश्रीना, जयपी का विकास, पृ० १७१

किता (कितना), जिता (जितना), लिता (लितना) । इनका प्रयोग सम्बन्ध, बँडाहों को एक मात्रा की प्रदर्शित करने के लिए होता है। यथा- किता लम्बा है। किसे लहर का छँ तोरे । जिसे तोरे छँ । हवा भारी होत है ।

इनके विकास के सम्बन्ध में डा० ससौना ने संस्कृत के "यत्" से माना है ।^१ प्रसिद्ध के अनुसार इसका सम्बन्ध वेदि अर्थात् (ज्यज्य), क्यज्य (क्यज्य) से माना है ।

१४२-

कुछ सर्वनामों का प्रयोग सर्व वाचक सर्वनामिक विशेषणों की भाँति होता है। यथा- इ, उहाँ, उवो, उह आदि इन्हों के आगे होर (बोर) तोरे (समीप) आदि जोड़कर दिशाओं का बोध कराते हैं। यथा- इ होर का सेत बाय, कु होर वेला फिरत तो लेत्वा के वुँ कोने के तारे जते जाय ।

उपर्युक्त सर्वनामिक विशेषणों के अतिरिक्त सम्बन्धवाचक, नित्यवाचक तथा प्रत्यवाचक सर्वनाम भी सर्वनामिक विशेषणों के रूप में प्रयुक्त होते हैं ।

१४३-

कानपुर जनपद की सीली में जब किता विशेषण पर अधिक बल देना ही तो विशेषणों के साथ भी विशेषणों का प्रयोग होता है । यथा- उनका सेत बहुत बज्ज है। उवो पाँठा मल सफ़ेद है । क्या घीतो सुरक्षाल ही । यो लू बढ़िया फूल ह्ये । आदि ।

१- डा० बाबूराम ससौना, अवधी का विकास, पृ० १७१

२- डा० रैकर रैण, ऊ० का० व्या०, पृ० १६३

कम-ज्यादा का भाव प्रदर्शन करने के लिए से, ते, ते बादि परसर्गों का प्रयोग किया जाता है जिसके सम्बन्ध (१६१) में पहले ही व्याख्या की जा चुका है।

१८४- जब किसी विशेषता का विधान करना हो तो विशेषण विधेय से पहले जाता है और विधेय पर प्रयोग होता है। वाचार्थ विश्वरीदास वाचक्यों ने इसे विधेय विशेषण कहकर विवेचित किया है। जिस के व्यवहार को परिचित कराने के लिए इस प्रकार के विशेषणों का प्रयोग अधिक होता है। यथा-

कुत्ता बहया सूर्य हो । कुत्ता मँस मारत हो । उन्से बहु बड़ी लड़ाई है।
उल्लेख जाती जानी है । कुत्ता मोड़ी करिया ली । यदि ।

चतुर्थ अध्याय

क्रिया-पद-विचार

४.१. क्रिया

४.१.१ पातु

४.१.१.१ मूल पातु

४.१.१.२ व्युत्पन्न पातु

४.१.१.३ मीदिग्य व्युत्पत्ति वाले

बध्ना देहा पातु पद

४.१.२ कालरका

४.१.२.१ मूलकाल या साधारण काल

४.१.२.२ संयुक्त काल

४.१.३ सहायक क्रिया

४.१.४ संयुक्त क्रिया

४.२ अव्यय

४.२.१ क्रिया विशेषण

४.२.२ सान्ध्याधिक

४.२.३ समुच्चयधिक

४.२.४ विस्मयादिबोधक

- १- बाँक् (सं० बाँक्) बाँक्ना, अनुमान लगाना -
मूसा बाँक् बे बताव ।
- २- बाँज (सं० बाँज) बाँजन (बाजल लगाना -
हुवा ते कहि देव बाँली बाँजे ।
- ३- कडा (सं० कपात्) कड़ा या कूँडा (यज्ञ का वाहुति पात्र) -
कूँडा रहिया देव ।
- ४- कट् (सं० कट्ट या कान्) काटना या कतरना -
कटिया कतर देव ।
- ५- कमा (सं० कम्पियति) कमाना, काम करके लाभ कमाना -
बाजबाल पूब कमाई करि लख ।
- ६- कया कह (सं० कृ करोति) करना , कार्य करना -
का कह रहे लख ।
- ७- कस (सं० कर्ण) काना (डा० मुरली०कृष्ण)^१ -
गाड़ी कसू गी भयया ।
- ८- कह (सं० कथ्) कहना -
हम कहि रहे लिन ।
- ९- कड कहि (सं० कडन् या देशब्) कड़िना , पाँव से कुचकार(डा०मुरली०कडन)
माटी कहि डारी ।
- १०-काप् (सं० कम्) काँपना - ठंडू के मारे काँपे जात लख ।
- ११-काह (सं० काह् या देशब्) काहना - काहे काहे जात लख ।
- १२-काडू (सं० कर्ण) काना , न्यासना- हमने पाँव काडू डारी ।

१- डा० मुरली चर त्रिवास्तव , हिन्दा धातुकोश, पृ० ६२

१३- कात् (सं० कृत्) काटना - जम्मा सूत् कातत् हो ।

१४- कोल् (सं० कोलति) कोलना, ठोंक कर बैठाना -

पाँचा ओ ते कोल देखे ।

१५- कू (सं० कूट) कूटना - सिगरी जत कूट डारि ।

१६- कू (सं० कूड्) कूटना- कूटना- पानी माँ कूँद परी ।

१७- कोप् (सं० कृप्) कोपना, क्रोध करना - हम पर बाहे कोप् करत् ख ।

१८- कोप् (सं० क्रोश) कोसना, धिक्कारना - हमें का पानी तो-यो कोसी ।

१९- सत् (सं० सत्) सनना, सौंदर्य - दुष्ट के कई सनाई होति हो ।

२०- सप् (सं० दाप्) सपना, कोचड़ में फँसना - देस्ता वालो महिजाँ सफा ।

२१- सार् (सं० डार) नर्म होना, चीला होना - बड़ा सार् गेहँ हो ।

२२- सार् (सं० डार) सार के रीम का लफाण - मीठा सार् गिरावत हो ।

२३- खिन् (हान्ती के अनुसार सं० क्रोड) खिना, खैना -

खुशो जे के मारी खिगै ।

२४- खा (सं० खाद्) खाना, मौज करना -

सब जन् खा के साथे खैत् ।

२५- खाँच् (सं० कृष्) खाँचना, खँखना - रसरो खँच लाव देटा ।

२६- सोम् (सं० कूड) क्रोध करना, बिड़ना (। खिद् - डा० भुलो०)^१ -

बैकार सोम रहै ख ।

२७- खुत् (सं० खुद्) खुटना - मँस के जीोर खुत् गै ।

२८- खैत् (सं० क्रोड) खैलना - राम भर खैलत् रहै ।

२९- खौट् (सं० दाट्) खौटना, ऊपरी भाग लुपटना -

चना का धिरवा खौटत् होये ।

- ३०- लोच् (सं० लोच्) लोचना, लोचना -
लोचत् लोचत् च् लोचने ।
- ३१- लोच् या लुच् (सं० लोच्) लोना, लुप्ता होजाना -
गाय जाने कहाँ लुगने ।
- ३२- गट् (सं० गृथ) गठिना, ठोक करना - जूता गठि बिना न चले ।
- ३३- गट् (सं० घट्) गठना, बनाना - घटकी प्यान् ते गड़े ।
- ३४- गरज् (सं० गर्ज) गरजना, ऊँची आवाज करना -
तुम शेर को जार्य तो गरजत् हो ।
- ३५- गल् (सं० गल्) गलना, गड़ जाना - ऊपर के हात् गल् गे हैं ।
- ३६- गल् (सं० ग्रह) गलना, ग्रहण करना, गलना - बौध गला देव ।
- ३७- गस् (सं० ग्रथ) गसिना, एक दूसरे में जोड़ना (। गस)^१
रसरी भाँ गस् मार देत् ।
- ३८- गठि (सं० ग्रथ) गथिना, जोड़ना - गठि मजदूर बांधि ।
- ३९- गा-गाव् (सं० गी) गाना - बड़ा नाक् गावत् हो ।
- ४०- गाव् (सं० गर्ज) लम्बा-बीड़ो बार्ते करना या आपसि जाना -
हटी तुम जादा गावो न ।
- ४१- गिर (सं० गृ) गिरना - छुरे पट के गिर पौ ।
- ४२- गूज् (सं० गृज्) गूजना - मछी भा गूज उठति हो ।
- ४३- गूय् (सं० ग्रथ) गूयिना, एक सूत्र में गिराना -
एक-दुजे माता गूय लेव् ।
- ४४- गृह् (सं० गृफ) गृहना - गूँना (। ग्रथन - हा० मुरला०)^२
बल्दी ते बार गृहि ठारी ।

१- हा० मुरतोषर आवा-त्व, हिन्दी धातुकोश, पृ० ७७

२- बहा -

४५- गौड् (सं० गुण्ड) गौडना, बुदाल दे खौदना -

ऊँसे गौडों का परति हो ।

४६- घट् (सं० घट्ट) घटना, कम होना - जफनाई का घट्टी है ।

४७- फू या फि (सं० पुण्) घिसना, रगड़ना -

बुझापा फिस-फिस् के पार होई ।

४८- घात् (सं० घट्ट) नष्ट करना, सफाई करना -

पूरा भू भू घात् होम्हो है ।

४९- घू या घु (सं० पुण्) घुना, घोरना - समर गानी माँ घू गी ।

५०- घेर (सं० गुण्ड) घेरना, चारों तरफ से रोकना- काय का घेर लेवै ।

५१- घीस् (सं० पुण् या घीण्) घीसना- सोचना-विचारना-

कठे-कठे का घीसत् हो ।

५२- घूम (सं० घूर्ण या घूर्म) घूमना, टहलना -

तुम कहाँ घूमत हो ?

५३- क्वा (सं० कर्) क्वाना - सवेर उठते का क्वात् हो ।

५४- च् (सं० च्) चना - गाय लेत् माँ चति हो ।

५५- क्त् (सं० क्त्) क्वना - तुम ती बहुत लेव क्वत् हो ।

५६- चापि (सं० चप्) चापना, दबाना - मझा पायि चापित् रहय् ।

५७- चाम् (सं० चर्) चामना, क्वाना - फूस गुर्र चाम रहा है ।

५८- बीस् (सं० क्त्) बीसना, स्वाद लेना (डा० भुलो० । चष-

महाणी) दार बीस् लेव् ।

५९- बीन्स् (सं० बिन्) पस्वान- रिरतेदारान् वा बीन्स् लेव् ।

६०- चार् (सं० चोण) चोरना, फाड़ना - बि तब, बीच ते चार

डारय् ।

६१- कु (सं० वि०) कुना, छोटना - नाक् चावे कु के पार देव् ।

- ६३- चुर् (सं० चुर्) चुर्ना, पकना - सब्जों चुर् न हो ।
 ६४- चुर् या चुर् (सं० चुर्) चुर्, टपकना - गगरी चुर्ति हो ।
 ६५- चुर् या चुर् (सं० चुर्) चुर्ना - सपूत का गरं लगा के चुर्मी ।
 ६६- चुर् (सं० चुर्णा) चुर्ना, निभोड़ना - कड़े का हमार जान्
 चुर् माँ लाग हो ।
 ६७- चूँट (सं० चूँट) चूँटना, जल होना -
 सबरो बाजे चूँट के घर देव ।
 ६८- चूँ (सं० चूँ) चूँना, बच्चा लगना -
 का सुन्दर चूँ रही है ।
 ६९- चूँ (सं० चूँ) चूँना, ठाना - हमर साथ चूँ न करी ।
 ७०- चा (सं० चा) चाना - तौवन मा बदरो चारु हो ।
 ७१- चिड़ (सं० चिड़) चिड़ना, बारम्बार होना -
 चुनी पर माँ लड़ाई चिड़ न ।
 ७२- चिप् (सं० चिप्) चिपना - चिन चिरी तब लउट बाके ।
 ७३- चोक् (सं० चोक्) चोचना - हमर समुह चोक् ।
 ७४- चोट (सं० चोप्) चोटना - चोटका -
 चान चिटक् के चर् दी-है ।
 ७५- चीन् (सं० चीन्) चीन्ना - गरीब का धन न चानो पाए ।
 ७६- चील् (सं० चील्) चीलना, चिक्का उतारना -
 जालु चील् के घर देव ।
 ७७- चूया छ (सं० चूया) चूना, समझ करना - चीना सबका चूया है ।
 ७८- चूट (सं० चूट) चूटना (डा० भुलो० चोप्) -
 मटका चूट के गिर न ।

- ७९- डै (सं० डिप्) डैना - बीला वान् डै देव् ।
 ८०- डीर् (सं० डारण) डैना, फौलना-
 वान् डिरका के क देव् ।
 ८१- डैन् (सं० दीप्) डैना, गड़ते हुए काटना -
 वान्नी का डैन् लि पारी ।
 ८२- डोडू (सं० डुट) डोड़ना, डोरना- रसोरी के गठो डोर् देव् ।
 ८३- डोप् (सं० दीप्) डारोप लगाना, दीप देना -
 सब डोप् हमरे ऊपर जावत् है ।
 ८४- जन् (सं० जन्) जनना, जन्म देना - देवकी क्लिप्त का जनी जेन ।
 ८५- जप् (सं० जल्प) जपना, मन्ना- राम् का नाम् जपी पाई ।
 ८६- जम् (सं० यमन) जामना- दही जाम् का हाई ।
 ८७- जर् (सं० ज्वल) जलना- विशन् का हाथि जर् ना है ।
 ८८- जा - (सं० या) जाना- हम् जा रहे ह्ये ।
 ८९- जान - (सं० जागृ) जागना - मँहूर रात् भर जागत् हैं ।
 ९०- जान् (सं० ज्ञा) जानना - बुँसब जान् गे हैं ।
 ९१- जोत् (सं० जि) जोतना- उनी न जोत् फही ।
 ९२- जिय् (सं० जीवन) जोना- जियत् न देव् उठरा पर उछाय चरा ।
 ९३- जुट् (सं० जुट्) जुटना, एक साथ लगना -
 सब् क् जुट् जाव ती उठरा पर जाय् ।
 ९४- जूफ् (सं० युक्) जूफना, लड़ना - कौ का जासु माँ जूफत् हो ।
 ९५- जैव (सं० जैम्) मौजब करना - सब् जन् ले ताथे जैव ।
 ९६- जोख् (सं० जोषण्) नापना-जोखना -
 मूरा बाबा ते धान बुझाव् ।
 ९७- फार् (सं० फार्) फाड़ना - बँर फार् रहे हैं ।

- ९८- कासि (सं० काण्) कासिा देना, पोछा देना -
रामू-याम् का कासिा द गा ।
- ९९- कम् (सं० कप्) कुमना , हिलना-
होरो माँ माँ पो के सब धुमें छाम् ।
- १००- कूल् (सं० कौल्) कुलना- छा माँ पत्नी ज्ञ कूल्त् ही ।
- १०१- जोड़ - (सं० जुर्) जोड़ना - दूनी धर जाड़े देव् ।
- १०२- जोर् - (सं० युज्) जीतना, काम में लगना -
तेसा के केल कसे जीत् रहत् है ।
- १०३- जोह् (सं० जुण्) जोहना, प्रलोपना करना -
रफुसीर के जाट न जोही ।
- १०४- टर् (सं० छर् या छर्) टलना, छटना - छि है टर् जाव ।
- १०५- टॉक् (सं० टण्) टॉकना, मिलना, गूँथना - जोरा टॉक् देव ।
- १०६- टॉग (सं० टण्) टॉगना , लटकाना - फीरा छूँटा मा टॉग् देव ।
- १०७- टिक् (सं० ब स्था या स्थित) टिकना, ठहरना -
राजा के मल्लन् माँ टिक् गै ।
- १०८- टट् (सं० छट्) टटना, कल होना - रानी के माला टट् गै ।
- १०९- ठा (सं० स्थ्) ठाना - साधू सोना ठा लगे ।
- ११०- ठिटक् (सं० स्था या तिष्ठ) ठिटकना, उड़ा होना-
पौरा ठिटके आवत् हन्)
- १११- ठेव् (सं० दश्) ठेसना , बाटना - तौर ठेवी पाना न पागा ।
- ११२- डाक् (सं० लघ्) डाकना, अधिस्त पार करना -
हवाहि-उवाहि डाक्त् किरत् ही ।

११३- डाल् या डार् (सं० दृ दारयति) डालना -

खानि का गोंद डार देव ।

११४- डाल् (सं० दृ) डालना, डालना - कहे का डाल रहे हूँ ।

११५- डोल् (सं० दुल्) डोलना, डोलना - बहर मा गाड़ी डोल रहा है ।

११६- डेक् (सं० स्क्) डेकना, डेकना - नाच का नोके डेक् दे ।

११७- डक्यड डर् या डह् (सं० दृ या डह) डकना, नाच गिरना -

सबरो दिवाल् डही जात् ही ।

११८- डेङ् (सं० दुङ्) डेङना, डेङना - पानी का डेङ् रहे हूँ ।

११९- डी (सं० वृ) डीना, वलन करना - मँचूरी डी रहे हैं ।

१२०- डर् या डिर (सं० प्राप्) डरना, डरना -

तुम मूर् का डिरात् हूँ ।

१२१- तडल् (सं० तल्) तडलना - का तडल् रहे हूँ ।

१२२- तप् या तव् (सं० तप्) तपना, तपाना - लोहा लप् तप् रही है ।

१२३- तर् (सं० त्-तरति) तरना, पार होना -

गंगा खा के सब नापी त् जात हैं ।

१२४- तरप् (सं० तपणे) तरसना, - जन-मँचूरी रौटी कातरम् रहे हैं ।

१२५- ताव् (सं० तक्) ताकना - देखना - तुम्हें ताव्-ताव् के जोखो
मर बाहें ।

१२६- तान् (सं० तन्) तानना, कताना - पाल तान् देव ।

१२७- तान् (सं० आयते या तने) , तानना, ठकना -

मुसु डेन ते तान देव ।

१२८- तीप् (सं० तुप्) तीपना, ठकना - खेवा मा बागी डार के
तीप् देव ।

१२९- थक् (सं० स्था) थकना - हर जीतत्-जीतत् थक् गिने ।

१३०- धम् (सं० लुप्तप्राते) धमना, लम्बना-

तन् धम् के सौँसे लू लेव् ।

१३१- धाह् (सं० स्था०) धाहना, नापना - लाठी धाह के धरा लेव ।

१३२- धिर् (सं० स्था०) स्थिर होना, धिराना-

पानोई बिल्कुल धिरा ना है ।

१३३- धीम् (सं० स्तूम्) धीपना, नीले पड़ना -

लगाव गल्ला के से धीम् दोन्नी ।

१३४- दब् (सं० दम्) दबना - किंर मा हाथि दब् ना ली ।

१३५- दर् (सं० दल्) दरना, दलना, पीसना -

दार् बजिया मा दर् नै है ।

१३६- दग् (सं० दग्ध्) दामना, जलाना - साढ़ मन्डली ले दग्

रान् ना ।

१३७- दौर् (सं० दम्) दवाना या मड़ाई करना - शेर ले दौर् लू में ।

१३८- दुह् (सं० दुह्) दुहना - भँस दुहत् हा ।

१३९- देव् या दे (सं० सं० दा०) देना - बाज करज दे देव् ।

१४०- देष् (सं० दुश्) देलना - र मया ! के पाँहा देलत् हा ।

१४१- धौ (सं० धौम्) धौना, नष्ट होना - बरगात मा धौगा रं ।

१४२- धूर् (सं० धृ) रटना , पकड़ना - बल्ले वजोम बोरा मछिँको धूर् नै ।

१४३- धर् या धर् (सं० धाव या कुलती) - धरे मया धरत् स्त्री बाव ।

१४४- धिक् (सं० दग्ध्) धिपना, गम होना-

नर लो के मारे ध्यावि धिक् रहो हैं ।

- १४५- धिरात् (सं० धरिणः) धिराना, धमकाना - धीरे न धिरात् ।
- १४६- धुन् (सं० धुन्या ध्वन्) धुना, धोटना -
हम दुम्हवा रान् धुन् देव ।
- १४७- धी (सं० धुनीध्वि) धीना, धाफ करना - कड़े सवरे धड़ा धी डारे ।
- १४८- नम् (सं० नम्) नम न करना, नोथे फुक्ना- बैटा तनु नम् जाव ।
- १४९- नहा (सं० स्ना) ननान करना - बँझा पानी या न नहाव् ।
- १५०- नाव् (सं० नृत्) नाकना- को नाव् राणी है ।
- १५१- नाथ् (सं० नाथ्) ध्यन, नाथना, पत्तुओं की नाथना-
दादा बाबा नाथ् देव ।
- १५२- नाथ् (सं० नद) नाथना, ली रहना - रात दिन नाथे या नथे
रहात् ह्व ।
- १५३- नाप् (सं० नाप) नाफना - बाते लिखना या नाप् देव ।
- १५४- नाव् (सं० नाव्) नाव्, नाव्, नाव् (सं० नाव्) नाव्, नाव्, नाव् -
का विसुजा छस नाव् रहे ह्व ।
- १५५- पव् (सं० पव्) पवना, पवना - तुमने ली लाव्यत पाव् गे है ।
- १५६- पड़ या पार (सं० पड़) पड़ना, लीना, गिरना-
तुम ली गीर्षी के पार रानी ।
- १५७- पड़ (सं० पड़) पड़ना - गडरो का पड़ रहे ली ।
- १५८- परा (सं० परायते) परा, पराना, भागना -
अधियारे मा परा परान् किरत् ली ।
- १५९- पव् (सं० पव्) पवना, पवना - हमारे फलना तुम न गये फलनी ।
- १६०- पाथ् (सं० पाथ् या प्रथे) पाथना, बनाना -
दुनिया गीर्ष पाथ् रानी है ।
- १६१- पार (सं० पार) पारना, गड़ना - ली पारिया पार ली है ।

- १६२- पात् (सं० पा-पात्यति) पातना - कुँ दस कुँ पात् रहे हैं ।
- १६३- पो (सं० पा -पिबति) पीना- मधिमान् सरबो पो कुँ हैं ।
- १६४- पोद् (सं० पिष्ट) पीटना - लच्छरो ने कौ का लाठा ले पोद् दोन्ही ।
- १६५- पीस् (सं० पिण्) पीसना- आजकल घर मा बाटा नहों फिस् बापा
- १६६- पू या पूँ (सं० पुच्छ्) पूना (पूँना) तुम कैसे घर का पा पूँतु ही ।
- १६७- पूज् (सं० पूज्) पूजा करना - सबतै पहिले गणेश जी का पूज् देव् ।
- १६८- पू (सं० पृ) पूना, समस्त करना- बापों अपन् सड़क पू रही है ।
- १६९- पोस् (सं० पुण्) पोसना (पोषण) - हँ जनाथ का कउन् पोयो
- १७०- फौ (सं० स्पृश या पाश) फौसना - जमान् ककड़ मा फौस गे हैं ।
- १७१- फाडल् (सं० स्फिट या स्फात्) - फौसना, फाटना -
कस मदहा कस फाडल गेव ।
- १७२- फट् (सं० स्फट्) फटना (फट्जों के अनुसार स्फाल्ट) गुर-गुरलवा क
फट रही है ।
- १७३- फा (सं० फल्) फलना - बुजौ वाम् सुब फारी है ।
- १७४- फाई (सं० स्फै) फाईना, लोपना-
तुम तुरतै बुजा सार्ध फाई जाव ।
- १७५- फिर् (सं० फुः) फिरना, दुबारा, मूडना -
जंतर घर क एक बाहु फिर् जाव् ।
- १७६- फूट् (सं० स्फुट्) फूटना - तुधिया ते फटो फूट गे ।

१- डा० सुलोचर त्रिवास्व , हिन्दी पाठशाला, पृ० १०८

२-

-वहा-

पृ० १०९

१७७- फल् (सं० फुल् या फुल्ल) ^{१-} बाज सब् गरायें फल् जाई हैं ।

१७८- बँच् (सं० बँच् या बज) बँचना, एक ओर छटना -

और माई एक ओर बँचि ।

१७९- बक् (सं० वद्) बकना, दोलना- कुड़कते गारी बक् रहे हैं ।

१८०- बब् (सं० बद् - बाधते) बकना- बिबाई के बाबा बब् रहे हैं ।

१८१- बद्ध (सं० वृष) बद्धना - जबहों लुक् मा श् बद्ध गर्ह ।

१८२- बसाव् (सं० वृत् या वाता) बताना, बहना-

बताव बुद्धा का हाल-बाल हैं ।

१८३- बद् (सं० बद्ध) बद्धना, शर्त लगाना - और यार का बद् रहे हो ।

१८४- बन् (सं० बन् या वणने) ^२ बनना- का फाल् बन् रही हो ।

१८५- बर् (सं० जल या वहण) बरना, बसना -

रामधू बर् के लाल् छुगा ।

१८६- बर् (सं० वृ-वरण या वरण) बरना, बुना -

साता जो नै राम का बर् लीन्ही ।

१८७- बर् (सं० बल या वृत् -वर्त) बरना, मिलाकर छेना-

कितनी भूँ बर् गी है ।

१८८- बरस् (सं० वृष वर्णाति) बरसना, पानी पड़ना -

लेन् चपटे मा बरसै लाग ।

१८९- बप् (सं० वप्) बप करना, मारना - सार्वेन मा तौपे न बपी ।

१९०- बप् (सं० वप्) बु बसना, निवास करना - दिन कैसे घर की लाग् ।

१- डा० मूलोबाजीजीवास्तव, हिन्दी धातुकोश, पृ० १०९

२- -को-

पृ० १११

१९१- बह् (सं० बह -बहति) बहना, फँकना- यो कूटा का डेर कहा

बहावन् ।

१९२- बाँच् (सं० बाच) बाँचना , पढ़ना - सरका गिनती बाँचन् रहे हैं।

१९३- बाँध् (सं० बन्ध) बाँधना, बाँटना - तुम का बाँधू के घर रहे हो ।

१९४- बाँट् (सं० बंट या वट) बाँटना , बँलम-बँलम करना -

बाच उनसा बाँट् छु रही है ।

१९५- बाल् (सं० बल्) बासना, बाटना - का ऊपर-ऊपर बलिया

रहे हो ?

१९६- बास् (सं० वास्) बासना, सुन्य करना - का नीच् बास् आवत् हो?

१९७- बान् (सं० ब्रा या वन) बाँनना- बुना, गोई बान् रहे छन् ।

१९८- बाध् (सं० बिध्) बाधना, बैदना, धिना - ठठेहंठठठंठठंठठंठठंठठं

रता-रतो द्यार्ये थिं न हे ।

१९९- बुना या बुफा (सं० बुध या हन्ती के अनुसार जावृत्) बुफाना,

प्रकाश बुफाना - दिना बुतादेव् ।

२००- बुफा (सं० बुध्यते) बुफना, बुना, स फाना -

केवा धर बुफा रहे हो ।

२०१- बुह् (सं० ब्रुह या बाह्)^२ - पाना में बुवना-बुना-

उनसा लरका तसवा मा बुहना ।

२०२- बैच् (सं० बाच) बैचना - हमने बैच् घर बैच डारो ।

२०३- कैल् (सं० कैल्) रौटो कैलना, चपटा करना -

पूरी को कैल् रही हो ?

१- डा० मुरलीधर, श्रीवास्तव, हिन्दी पाठ्यकोश, पृ० ११२

२- -वही-

पृ० ११३

- २०३- बी-ब् - (सं० बप्) बीना - उनका सैत बगना है ।
 २०४- बील् (सं० ब्रू- ब्रूते) बीलना- बोच मा टैं टैं बील् रही है ।
 २०५- भौं (सं० भ्रम) भौना, बभर लगाना, धूमकर -
 नाव चकहा जस भौत हा ।
 २०६- बैल् (सं० वैल्) रौटी बैलना, कपटा करना -
 पूरी हो बैल रही तो ?
 २०७- मल् (सं० मदा) मलना, खाना - बाँधी मोर्बू के भले जात् हैं ।
 २०८- माल् (सं० माल्) मालना देखना- उन्के देखमात् अच्छी है ।
 २०९- मा (सं० मप्) मागना , माजना - कुं चौर मागे जाते हैं ।
 २१०- मर् (सं० मृ- मरति) मरना- मटकी मा पानी मारी है ।
 २११- मौज् (सं० मज्) मौजना, बनाना, धुमाना - कसत् हाथि-याँच् मौजे
 बरे देत् हा ।
 २१२- मा- माव (सं० मा) माना, बच्छा लगना -
 कानपूर पोसा तनकी नहाँ मावत् ।
 २१३- माह् (सं० माण्) कहना, बीलना- गिड़विड़-गिड़विड़ मासत् हा ।
 २१४- मुह् (सं० मुवित) मौनना, सलना- येला घटा-मुनाका हम हा भु-
 त् ।
 २१५- मुँह या मुँह (सं० मुज न वधा अनि अनुदेश्) मुँना-
 कूरा मुँह रहे हैं ।
 २१६- मुँज् (सं० मुज या मुज्)^१ - मुँजना - बार मा कना मुँज् रहे ते ।
 २१७- मेज् (सं० मृज् या मिद्) मेजना- दुम्हरी हाथि किाव् मेज् देवे ।
 २१८- मँड् (सं० मंडन्) मडना , भीषना - यी दीण् हमरे माये न मड़ी ।
 २१९- मँच् (सं० मंच्) मजाना, हाँकिना - जाव हर मँचिया जाव ।
 २२०- मँ (सं० मंयन्) मँना, भिस्ताना - सब देत् मा पानी मँना है ।

- १- डा० मूलधर जोषास्वयं, हिन्दा बाबूकोश, पृ० ११७

२४०- रम् (सं० रम्) रमना, रमना, विनाम-

वह तुम्हारे मन नहीं रम् रही ।

२४१- रह् (सं० रहा) रहना- तुम कहाँ रहा हो ?

२४२- रोम् (सं० रो) रोमना, मोह जाना - कैराम पैंस पे रोम उठे।

२४३- रधि (सं० रधि) रधिना, पकाना-

पीतल की बटुइया मा का रधि दोन्ही ।

२४४- रोस् (सं० रिण्) रिसाना, चिड़ना, जल करना -

तुम कहे रोस् रहे हो ।

२४५- रिस् (सं० री , सुवर्ण) टपकना, बहना -

बड़ी बाली मटकी रिस् रही है ।

२४६- रक् (सं० रक्) रक्ता- चुप्पे हाँदे रक् जाव् ।

२४७- र्ध् (सं० र्ध् -रपादि) र्धना, रविना - दुआरे मा र्धेरा र्ध् देव।

२४८- र्गि (सं० र्गि) र्गिना, धोरे-धारे रिसना - जौधयारे मा र्गि

के कतर् ह् ।

२४९- रोप् (सं० रप्) रोपना, रक्ता, रोप केठाना-

मरे पानी मा केत रोप् देव् ।

२५०- रोव् (सं० रव्) रोना, रिसना - बोझी के दरद् के पारे रोवत है।

२५१- लस् (सं० लदा) लसना, देसना- हमे छिन् कुछ नहां लस् रही ।

२५२- लग् (सं० लग्न) लगना, चुम्बना - रानी के हाँथे मा बावू लग् गा है।

२५३- लह् (सं० लह् या लट्) - जे रहेका बापुस् मा लह रहे है ।

२५४- लम् या लसट् (सं० लस्) लसना, चिक्का- पाँधि मा गोबर लसट् गा।

२५५- लधि (सं० लधि) लधिना, फाँदिना- दुआ बाड़ लधि जाव् ।

२५६- ताब् (सं० तब्) लहदना, बढ़ाना -

इ गाड़ी या बहुत नाद् ली=ही ।

२५७- तब्-साब् (सं० तब् बा सा) लगना , , लगन

उनते फिली का तब् लगो है ।

२५८- तिब् (सं० तिब् (सं० तिब्) तिखना - तुम्हरो कापी या का
तिब् देन ।

२५९- लिप् या लीप् (सं० लिप्) लीफना, पीटना - गोबर ते घा लीप् देव ।

२६०- लिप् या लैन्द् (सं० लम्) लेना - तुम २ हमा का लियाव ।

२६१- लुक् (सं० लुप्) लुक्ना-झिपना - लुन कहां फुो यो लुक् फिरत है ।

२६२- लुट् (लुं) लुटना - बोरी या कुं बिल्लुस लुट् गै ।

२६३- लौक् (सं० लौप्) लौकना, ऊपर हो रौकना -

हया गठरी ऊपर ऊपर लौक् लेव ।

२६४- लौट् (सं० लुट्) लौटना, विग्राम करना - ये ही माटी या लौट् रहाव ।

२६५- लौढ़ (सं० लु-लुन) लौढ़ना , लौढ़ना - सब कर्वा लौढ़त जात् हो ।

२६६- लौप् (सं० लौप्) लौफना , लिपादेना - सगरे जन् कहां लौप् हुरगेव ।

२६७- ल् (सं० लज्) लो मजना, झुंकार करना- किली नोक् दरात मजो है ।

२६८- लर् (सं० लु या लद्) लड़ना, नष्ट होना -

करात या गूरी तक लर् गठे ।

२६९- सराह् (सं० रााघ्) सराहना, कड़ाह करना -

हो कामे या सब तुमहो का सराह् ते ।

२७०- सह् (सं० सह्) सहना - दरीगा के मार न सहि फहही ।

२७१- साब् (सं० साब्) साधना , पकड़ना - एक हीर धन्नी साब् लेव ।

२७२- सान् (सं० सैक्) नानना, भिलाना - बेलन् के मुत् सान् दे ले ।

२७३- सास् (सं० सूत्) सातना, कष्ट देना -

सुखी के बात् अबे सात् रहा है ।

२७४- सिक् (सं० सिक्) सीकना, सजल होना - धी के मड़िया सिक्ने है।

२७५- सिरिक् (सं० सुज्) बनाना - जस के तस सिरिक् देव ।

२७६- सिहा (सं० स्तृह) सिहारना, तरसना - हम तुम्हां का सिहार देति।

२७७- सोक् (सं० सिक्) सोकना - मुँहा ले सबे सेतो सोक् डारो

२७८- सास् (सं० सिक्) साकना - हम तुम्हें ट्रेटर सिक्के ।

२७९- सोज् या सिज् (० स्विद्) सोकना, सजल होना -

बोहा देह के बोहा सिक् गले ।

२८०- सोक् (सं० सिक्) सोना- प्योना - करिया क्योक् सो डारो ।

२८१- सुत् या सूत् (सं० शुण्) सुलाना या सुकना -

पानी के मारे सेत् सुत् ना ।

२८२- सो या सूत (सं० स्वप्) सोना - अबे राजा साहे के सो रहे हैं ।

२८३- सुन् (सं० शु) सुकना - रात् के हम बंधा सुन् रहे त्ति ।

२८४- सुम् (सं० स्मृ) स्मरण करना - मरतो बेरा मावान् का सुम् लेवा।

२८५- सुद्ध (सं० ज्वत् -न बागत) सुलनना, मंद-मंद जलना-

लगा हसे का सुद्ध रही है ।

२८६- सुक् (सं० शुद्ध) सुकना, दिखना, सफा करना-

अपनी जासिन् ले मुँहें कुठ न्हो सुक्त् ।

२८७- सेवा या सेय् (सं० सेव्) सेवा करना -

बरे का बडा जस सेय् रहे ह्व ।

२८८- सोक् (सं० सुक्) सोकना - उची बेर ले तुम का सोक् रहे ह्व ।

- २८९- सीह् (सं० शुभ) सीहना, सीमित होना- टेरा बाट् बुडापा
तुम्हें ली नहा सीह् ।
- २९०- हँ (सं० हस) हँना - पिठेवाँ देव के का हँ रहें त्यों ?
- २९१- हट् (सं० प्रष्ट या फट् १ हट) हटना-
गाड़ा बावत् हो सामने १ हट् बाव ।
- २९२- हन् (सं० हन्) हनना, पीटना-मारना -
पकर के हन् पिन प्यो- हँना हन् देव ।
- २९३- हर (सं० हृ) हरना, हूना- हाय कया हमार ली सह क्हु
कुह् हर गा ।
- २९४- हरम् या हरम् (सं० हृण) ह्रस्व होना-
तुम्हें देव के हर्में बहुत धारम् मा ।
- २९५- हाँकि (सं० ह्या से या ह्यै ह्यै का अनुकरणार्थक^२) हाँकिना -
तुम कस हाँकि रहे ह्य ।
- २९६- हिर या हित् (सं० ह्या०) हरेना, धेना, हिरना-
लठेँडा हित् जाय् त्व् की जीव् ।
- २९७- हिर या हिरा (सं० हृ-हरि) हिराना, होजाना -
कात् हमार किराव् हिरा गे ली ।
- २९८- हित् या हत् (सं० हृ) हितना, हुना -
नोई कनी देव हित् जात् हो ।
- २९९- हेर (सं० वादीत्) हेरना, देलना (बहेर के १ व १ लुप्त होमै ते)^३-
सामने हेरी नहा गिर करी ।
- ३००- हो, होव (सं० मूहाम्नी १ मुहा १ ते मानते हैं) होना-
का होत् है कहुना ।

१- डा० भुलाधर जोषास्व, हिन्दी वाक्योद्, पृ० १२४

२- -नहो- पृ० १२५

३- -वहो- पृ० १२५

१८८ ४.१.१.२ उपसर्ग युक्त धातुर्

- १- बँक् (सं० बा- वयः) बाक्कन करना, हाथ पीना
ताना सा के टाटी या हाथ न बँक् ।
- २- बाँक् (सं० बाङ्क्प् या बाङ्क् से संभाव्य) बाँक्का, तानना
रस तो बाँक् के डार बाँक् लेव ।
- ३- बाँट् (सं० बाभृत्) बाँटना, गर्म करना (हान्ती के अनुसार सं०
बाङ्क् से) कूटिवा या लीवा बाँट् रही है ।
- ४- बाँम या बाँम् (सं० बा- उष्ण्) बाँसेना, याफो तीव्र गर्म,
बीमो बाँचि का गर्मी -
बाज तो गर्मी के मारे बाँसे गिने ।
- ५- बा (सं० बा-या) फूटनेवा संतुष्ट होना, ऊब जाना
बाज तो माई सात-सात बधा गिने।
- ६- बटक् (सं० बट्ट- क्) बड़ना, लकना (अह ध्वन्यान्तरणारमक
भी हो सकता है) बीदा या लड़िया बटक् गे है ।
- ७- बड़व् (सं० बा झा) जाझा देना, काम बताना, परिशान करना
बाबा तो मौला बड़वते रहात् हैं ।
- ८- बाह् या बाहर् (सं० बा-वर्षण) बाहरना, गट-बीलकर बनाना
बँसुर बालो घन्नो मूँडा या बाह् देव ।
- ९- बाह् या बहा (सं० बा-दि - जादाय) बाहना, बाज से
पानी बलग करना - बाहटी भाँ घान् डार के बहा लेव ।
- १०-वान् (सं० बा-नी, बाक्यन) वानना, ले जाना -
गिलाव बाहु वान् के देहें ।
- ११- उक्व् (सं० उत- कृत्य पूर्वनालिक) उक्कना, किसी सटी चीज
का जल होना - कुआ परिया हल से उक्व् ने है ।

- १२- उबट् (सं० उब - काष्ठ्) उबटना, पेड़ पाँधों का सूत जाना
पत्ता नहीं बरहार् कहे के पार उबट् गे है
- १३- उक् (सं० उक् - कर्ण) किसी वस्तु का उलट जाना
गाय वाला खँटा फुट् उबुबाव् है ।
- १४- उखार या उखूर (सं० उखसन या उखण्ड) उखटना, भिट्टी से
बाहर निकाला - बालू का बीजा उखार तेव् नहीं तो गर रही।
- १५- उम् (सं० उद-नम्) उमना , उदय होना, बीज जमाना ।
ज्यारो मा सब् व्योहिं उम् बाह है ।
- १६- उगिल् (सं० उद् - गिल्) उगलना, गले से बाहर जाना
तुम बाकी बातें न उगिल् दे हैव् ।
- १७- उघट् (सं० उद् - घाटन) उघटना, लुपो बात का सु जाना -
कालू सबरी सही बातें उघट कहें ।
- १८- उघारु (सं० उद्-घरण) किसी को वस्तु का कुलना, वस्त्र उतारना-
मचो के पार उघार कहट् ह् ।
- १९- उचार (सं० उत्- चाल्) उचारना (फाड़ना) कलना-
महया कुलही ले दुह-चार कल उचार देव् ।
- २०- उक् (सं० उक्-कृ) उक्कना, ऊपर उठना, उक्कना -
जोयि मा चपेटा लाग् तो उक् के गिरिन जायि ।
- २१- उक्त् या उक्ट् (सं० उत्-क्त्) उक्कना
सँझा दिसते लम हाथि पर उक्ट् गिने ।
- २२- उक् (सं० उत् - कृ) उक्कना , साफ होना -
पानी गिरते सरभूजन का सैत उक् मा ।
- २३- उमुक् (सं० उ- मुक् या देशज के योनि में) उमुक्कना, किता
बापार द्वारा बाने मार्किना - फिजार्ह मा का उमुक् के करे ही ।

- २४- उठ् (सं० उत् - स्था) उठना, खड़ा होना
तुम जल्दी उठने जा जाव ।
- २५- उड़् (सं० उद् - हा) उड़ना
बाँस फट -फटते बिस्वस उड़ गई ।
- २६- उढ़र् (सं० उत्-हरण) किसी स्त्री का किसी पद के साथ भाग जाना -
जो घोड़िन अपने देवर के उढ़ गई ।
- २७- उतर (सं० उत्-तृ) उतरना, नीचे जाना
खराब रस्ता मा सेविल् है उतर जाव ।
- २८- उदह् (सं० उद् - वह्) उदहना, पानी उलीकना
हो गढ़वा मा पानी जल्दी उदह देव ।
- २९- उषह् (सं० उद्-धारण) उषड़ना, कौड़ी लपेटो बचत सुल जाना -
लत्तना गद्दा रली -रली उषह मा है ।
- ३०- उपज् (सं० उत् -पद) उपजना -
जगर सेत मा कई कुल उपजत है ।
- ३१- उफन् (सं० उत् -फोन्) उफनना, उबलकर फोलना -
बोहनी ते सन दूध उफन गा ।
- ३२- उबर् (सं० उद् -वृ) उबरना, बचना -
हो दाँधि उबर् जान फिर रखेँ न जस्ये ।
- ३३- उपर् (सं० ऊर् - पृ) उपरना, साफ फलकना, उठना -
पाँथ के निशान साफ् उपरैष हैं ।
- ३४- उप्फा (सं० उद्-फा) उप्फोना, खुल होना -
पास छे गेव ली बहुत उप्फे रहे ली ।
- ३५- उप्फेह् (सं० उद् - फेहन) उप्फेहना, बादल बादि झाना , प्रकट होना -
पूव ते कारो घटा उप्फे रहे है ।

३६- उरैच् या उरैर् (सं० उत्-रैच्) खीचना, खाना

हं लेनन का नीके के उरैर् देव ।

३७- उव्त् (सं० उव् - वत्) उव्त्तना, बर्ष होना

जाने कब ते दार उव्त् रल है ।

३८- उत्तट् (सं० उत्- लुष्ट) उत्तटना

कस एक दायि मोहूँ के पकरो उत्तट् जाय ।

३९- उत्तिष् या उत्तीष् (सं० उद्-त्तो) उलीकना, बंजलि वे पानी बाहर

फोकेना - पानी उलीष्-उत्तीष् के उँकास करीहें ।

४०- बीरह या उरह - (सं० उच् - वच्) बीरहना, बाल सँवारना -

कसकरो ते तुम बार बीरह रहे ह्य् ।

४१- बीगर् या उगार् (सं० उ-गरण) उगरना, पानी चिल्लना,

नहरा करना - हमये सिन् के बुँदा गाठि-सत्तर हाँथ मा बीगर
जावत् हैं ।

४२- बीठी या बीठ्कु, ठाठी - (सं० उच् - वच् या उत्-सर्ध) उठ्कना,

किलो के गहार टिकना - किलाल मा लाठी बीठ्का देव् ।

४३- बीढ़ (सं० उप-वीष्ट) बीढ़ना, कपड़े से ढकना -

रात के बीढ़ लागे ली कदरा बीढ़ लेह्य ।

४४- बीन्ष् या बीत्म् (सं० ज्व-वृष्ण) बीत्तना , सार बादि उनकना-

हं सटीला के बद्वाहन बीत्न डारी ।

४५- बीन्हा या बीया (सं० ज्व- नम्) फुंकना, ली रहना -

रात-दिन सित्ये मा बीन्हे रहार् ही ।

४६- पवार् (सं० प्र० वरण) पवारना , धाना, दूर करना -

येहूवा हमरे बीसिन् के गामने ते पवार देव् ।

- ४७- परच् (सं० परि- क्य) परचना, सम्पत्तना -
दुकानदारों का साम ठीक है परच् लेव ।
- ४८- पारिस् या परस् (सं० परि-संज्ञा) परीक्षा करना, परसना -
हर समान् के नोके के पारिस करलेव ।
- ४९- परिह् (सं० परि-अंवे) परिजना, साफ करना ।
सब दारू सूने ले परिह् देव ।
- ५०- परीस् या परस् - (सं० परि -विण) परीसना -
छोटी दाह'सना परस् देव ।
- ५१- फार् (सं० प्र-प्र) फसरना, फैलना
तुम्हें यार फँस रहन् फार है कठल' ह्य ।
- ५२- फसाव् (सं० प्र० प्रवण) फसाना, गिराना , निबीड़ना
मही का लज्जा का बाध के फसा देव ।
- ५३- पहरि (सं० परि-या) पहनना , धारण करना ।
वराटे क्सा ली उन्हा पहरि लेव ।
- ५४- पहुँच् (सं० प्र- पू) पहुँचना -
कास तारोस का कोरट् पहुँच् ऊँच है ।
- ५५- पाव (सं० प्र- बाप्) प्राप्त करना
गिरमाडो का कामे मा कौ पावत् हय ।
- ५६- पिप् या पघिल् (सं० प्र० वलन) पिघलना, नरम पड़ना -
बमो' मा डामर पघिल्-बार है ।
- ५७- पैन् या पैन् (सं० प्र- पिन्) पैलना, पैलना, पलना -
बीन्हे दस ऊँचें कोल्हूमा पैन् दोन्हा ।
- ५८- पौट् (सं० प्र० उच्छ) पौडना, साफ करना -
हाँध नोके घोंदें पौट् डारो ।

- ५९- फब् (सं० प्र-मन) फबना, जच्चा लाना -
इया कमाब् बहुते फब् रशे है ।
- ६०- फाब् (सं० व - मकन) फाफिना, गपड़े घौना -
कल्दो ते अपन् उन्ना फाब् लेव् ।
- ६१- क्कठ (सं० उप-विष्ट) क्कठना-
बाँदर बिल्गुल कुनगी मा क्कठ् है ।
- ६२- विक् (सं० वि-की) विक्ना
पच्चू के गाय पारें विक् मे है ।
- ६३- विसर् (सं० वि-वृ) विसरना -
म्है ते टुक्को गिर मे ती सवरी टक्का विसर् मे ।
- ६४- विगर् (सं० वि-घट्) विगड़ना , क्रीष करना -
काम विगर् गा ती समते रहे विगर्तु ही ।
- ६५- विचर् (सं० वि०- चर्) विचरना , मस्त घूमना-
हिन् र्हों विचर् रहे ख् गाखे ।
- ६६- विक्स् (सं० वि-क्स्तन्) विक्स्तना, इतना , भुकरना -
तुम अपनी बात ते विक्स् मेव् ।
- ६७- विह् (सं० वि-स्तु) विहना -
जाथो के पारें जामें जाम विह् गा है ॥
- ६८- विराव् (सं० वि-वृ) विराणा, बिड़ाना -
देखी दादा ह ह्यें विरावत् है ।
- ६९- गाब् (सं० गमि- जी) गाफिना , वस्तु पर वस्तु लाद देना -
एके गाड़ी या सब लाक रहे गाबि लेव् ही ।
- ७०- चाल् (सं० उत्- चालन) चालना, जम्न की हानना -
सब कनिक् एके दामि मा चाल् ठारव् ।

- ७१- निष्कार (सं० नि- कर्ण) निष्कारना, खड़ा करना
पानी बंद है बैलन् का निष्कार देव् ।
- ७२- निष्कू (सं० नि- कूर) निष्कारना, अच्छी स्थिति में लाना-
शहर का रक्षार्थ के पारे कुल रंग निष्कू जायी है ।
- ७३- निष्कार या निष्कारना (सं० निष्कारण) निष्कारना, साफ करना-
पानी के फुल सदा ले निष्कार देव् ।
- ७४- निष्कृ (सं० निष्- कृ) निष्कृता, पूर्ण होना -
यहना मरे मा हमार काम निष्कृ जाई ।
- ७५- निष्पौर (सं० निष्- पौर या देशज) निष्पौरना, देख्य प्रकट करना-
सब निष्पौर ना अब सीरी का निष्पौर रहे ख् ।
- ७६- निष्वाह (सं० नि- वाह) निष्वाहि करना -
जैसे घनन के शतों जो जोमे निष्वाहू तैत् है ।
- ७७- निरा (सं० सं० निराकरण) निराह करना, फसल तोड़ना -
कुली सेत मँधूर निरा नै है ।
- ७८- निराह (सं० निर- वृत्ता) निराहना, देखना -
झोटे कीरन् का नीके निराहू तैख् ।
- ७९- निहार (सं० नि मात) निहारना, देखना -
हमरे तन का दायें-दायें निहारू रहे ख् ।
- ८०- निवृत् (सं० निर्वृत्ता) निर्वृत्ता देना, बुलाना-
पीछेखी का निवृत्ता जायी ख् ।
- ८१- पर्वट (सं० प्र- वृष्ट या देशज) सेत में पाटा खाना -
हं सेतू रोज जोत् के पर्वट का परत् हैं ।

८२- फठ (सं० प्र- विष्ट) फौस करना -

बोते के दर मा पाना फठना है ।

८३- फड़ या फर् (सं० प्र-गृहीत्) फड़ना -

तुम छिन्ने के का माही आस फर रहे हू ।

८४- फसार (सं० प्रदासयति) फसारना, धाज -

तुम मोहमान के फर्ये फसार देव ।

८५- फठ्ठ (सं० प्र० स्थापन) फठाना, फेकना -

बरे बह का कहे नही फठत् बलि ।

८६- फटक् (सं० प्र- स्था) फटकना -

बादा मतो करिही ली उठा के फटक् देवे ।

८७- फिसत् (सं० वि-सदा) फिसलना, रौना -

तउँहा रात भर पारा के मारे फिसलत बाव ।

८८- फिसर् (सं० वि- स्म) फिसरना, फुलवाना -

हमे छस् फिसरी कहे कतो न होय ।

८९- फिात् (सं० वि- ज्ञ-मो) फिाान, बीतना, गूजरना -

तुम सम् के मुस्ना हमरे ऊष्ट् फिात् हो ।

९०- बीत् (सं० वि- वति -इ-या लीत) बीतना, गूजरना -

बाजस्त कयो बीत् रहीं है प्यार ।

९१- बीन् (सं० प्र-वृणाति) बीजना, बटोरना, चुनना -

हमरे खेत का एक-एक सीता बीन् हारेव ।

९२- बुता - (सं० वि-आवृत्त) बुताना, बुकना -

इनसे मारे हो के कादिया बुता जा ।

९३- बीहार (सं० वि- ज्ञ-इ) बुहारना , साफ करना -

सबरे दर मोके बीहार देव ।

१४- मोञ् (सं० वमि-वञ्) मीलना, मीग जाना-

पानो मा नवरी कोपी-कितारें मोञ् गहं ।

१५- मेट (सं० वमि-वट्) मेटना , गले मिलना, मिलना

पला नहां भइया कउने दिन मेट होय ।

१६- मेज् (सं० वमि-वज्) मेजना, पठाना -

तुम धौ पहुँचते ददूदा का मेज देखै ।

इन धातुओं के अध्ययन में आचार्य नरेंद्रनाथ को पुस्तक
"ग्रा० उ० एवं वि०" तथा "पाणिनीय धा० पा० समीक्षा" से सामार
सायता लो गह है ।

१८८-१.१.३ व्युत्पन्न धातु-

व्युत्पन्न धातुओं के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकार के धातु
जाते हैं-

१.१.३.१ णिबन्त या प्रेरणाधेय धातु-

"कानपुर ज्ञानद को बीतो" के में हिन्दी (साहित्यिक)
को पाति हो प्रियापदों के अन्त में "वाव" प्रत्यय जोड़कर णिज या
प्रेरणाधेय धातु बनाए जाते हैं। यथा- पढ़- पढ़ाव , कल- कलाव , उठ-उठाव,
कर-कराव, ख-खाव आदि । इससे अतिरिक्त दोधे रूप बनाने के लिए
"वाव" प्रत्यय का प्रयोग करके प्रेरणाधेय धातु बनाते हैं । यथा- कल-कलाव,

१- आचार्य नरेंद्रनाथ, प्राकृत भाषाओं का उद्भव एवं विकास

२- डा० मानोरथ मिश्र वागीश - पाणिनीय धातु पाठ समीक्षा

घट-घटवाव , उठ-उठवाव आदि । परन्तु दोष निजन्त रूप केवल सकर्मक क्रियाओं के होते हैं। कर्मके क्रियाओं में निजन्त के 'जाव' प्रत्यय का योग होने के लिए 'वाव' प्रत्यय का योग किया जाता है। यथा-

ह्रीं (कर्मक) ह्रीन्वा (सकर्मक) ह्रीन्वाव् (निजन्त)

घट् (कर्मक) घट्वा (सकर्मक) घट्वाव् (निजन्त)

- १९०- डा० उदय नारायण तिवारी विवेचकों के अनुसार इस 'जाव' की व्युत्पत्ति संस्कृत 'जाय' से हुई है। पहले इस प्रत्यय का प्रयोग केवल वाता-रान्त धातुओं के लिए किया जाता था किन्तु इसमें व्यत्यय भी होने लगा। संस्कृत का दूसरा निजन्त रूप 'जाय' था जो प्राकृत में 'ए' हो गया , किन्तु 'जाव' का अत्यधिक प्रचार के कारण 'जाव' का प्रयोग हो पड़ा ही गया । इसके परिणामस्वरूप जाधुनि जाये पाणाओं में निजन्त का प्रत्यय 'जाव' ही हो गया ।^१

१९१- १.१.१.२ नाम धातु -

संज्ञा पदों एवं क्रियाभूत विशेषण पदों में जो प्रत्ययों का योग करके क्रिया रूप में प्रयुक्त करते हैं, तब नाम धातु कहते हैं। नाम धातु बनाने की परंपरा प्राचीन है, परन्तु सड़ी बोली हिन्दी में नाम धातुओं की संख्या अल्प है । तत्सम शब्दों के प्रयोग के कारण नाम धातु का व्यवहार कम होता जा रहा है ।

'कानपुर जनपद का बोली' में नाम धातुओं का प्रयोग बहुत कम होता है। इस जनपद की बोली में नाम धातु का 'हजाव' तथा 'हजाना'

१- डा० उदयनारायण तिवारी - मौजपुरी भाषा और साहित्य, १०४६२

है। यथा-

सात - सत्तियाना - सत्तियाव
 बात - बत्तियाना - बत्तियाव
 वान - वनियाना - वनियाव
 जूता - जूत्तियाना - जूत्तियाव

१९३- ४.१.१.२.४ कानपुर वनपद की बाती में ध्वनि अनुकरणात्मक घातुर, जो नाम घातु के वर्तमान बाती हैं निम्न प्रकार के हैं-

(क) वायारण या मुख्य अनुकरणात्मक- जिनमें अनुवृत्ति केवल एक बार होती है। यथा- टप् (टपकना), फप् (फपटना), पाट् (काटना), फूक् (फूकना), पक् (पकना) ।

(ख) पुनरावृत्ति या द्वित्व - जिनमें अनुवृत्ति की आवृत्ति होती है किन्तु यह आवृत्ति भी दो प्रकार की होती है-

(१) पूर्ण पुनरावृत्ति - कटका, मठमठा, लटलटा, फटाफटा
 बपाबप, पटापट आदि ।

(२) अपूर्ण पुनरावृत्ति - जहाँ पुनरावृत्ति होने वाला अक्षर पूर्व अक्षर को ध्वनि से कुछ समानता रखनेवाला होता है, परन्तु पूर्णतया समान नहीं होता । यथा- लटपट, फटपट, चपट, कुतकुता, कुकुता, गड़गड़, हरहर, लड़लड़ आदि ।

१९४- ४.१.१.४ प्रत्यययुक्त घातुर -

पुनरावृत्ति अक्षर नाममात्र में कुछ विशिष्ट प्रत्ययों का योग कर

प्रत्यय युक्त पद होते हैं। इस प्रकार के प्रत्यययुक्त धातु उस मूलधातु या नामधातु से निम्न वर्णों का बोध कराते हैं। 'जानपू' जनप. का बोली में प्रत्यय युक्त धातु बनाने के लिए अधिक प्रयुक्त प्रत्यय क्, ट्, ड्, डू, र् और म् हैं। इनके योग से की कुछ प्रत्यययुक्त धातुओं के उदाहरण निम्नलिखित हैं-

- (१) क् - प्रत्यय युक्त - गटक्, सटक्, फाटक्, पाटक्, लटक्, मटक्, नपक्, नभक्, धाक्, धृक्, चटक्, चपक्, हटक्, झिक्, झिटक्, जमक्, फामक्, फानक्, टारक्, लड़क्, तमक्, पाड़क्, फफाक्, बदक्, मक्, मसक्, मरक्, शक् आदि।
- (२) त् - प्रत्यय युक्त - फिसल, उक्ल, फिसल, मक्ल, डुक्ल, चोंक्ल, फाल, जसल, मरल, ललल आदि।
- (३) ट् - प्रत्यय युक्त - कुपट्, लुपट्, चिकिट्, लपट्, फापट्, डपट्, सपट्, निमट् आदि।
- (४) डू - प्रत्यय युक्त - उमडू, धुमडू, लगडू, मागडू, रगडू, पक्डू, बक्डू, चिकुडू आदि।
- (५) र् - प्रत्यय युक्त - कर्, बर्, डर्, पर्, मर्, लर्, मार आदि।
- (६) म् - प्रत्यय युक्त - कृम, भृम, लम्, मम्, परम्, तर् आदि।

१९४-

संदिग्ध व्युत्पत्ति वाले असा देशो धातु पद अर्थात् जिन धातुओं की सीधे निरिक्त व्युत्पत्ति नहीं मिलती वीर न तो वे मूलधातु में जान सकते

हैं उन्हें देशी या लोदिण्य व्युत्पत्ति को धातु कहा जा सकता है लेकिन धातु पदों को संख्या अधिक नहीं है ।

१९५- कर्म के आधार पर अर्थात् जिसो धातु के कर्म सहित होने न होने के भाव के आधार पर उसे दो वर्गों में (१) अकर्मक और (२) सकर्मक में विभाजित करते हैं । जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि अकर्मक धातु में 'बाध' प्रत्यय का योग अ सकर्मक धातु में परिवर्तित किए जा सकते हैं ।

१९६- वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव जिस विशेष के विषय में विधान किया जाता है, उसके आधार पर (१) कर्त्तृवाच्य (२) कर्मोवाच्य तथा (३) भाववाच्य के प्रयोग होते हैं-

कर्त्तृवाच्य अकर्मक तथा सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होता है ; परन्तु कर्मोवाच्य केवल सकर्मक क्रिया के साथ प्रयुक्त होता है और भाववाच्य केवल अकर्मक क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होता है । कामपूर जनपद की बोलो में तीनों वाच्य प्रयुक्त होते हैं ; किन्तु कर्त्तृवाच्य और कर्मोवाच्य की प्रयोज्यता है ।

१९७- 

कामपूर जनपद की बोलो में वतमानकालिक कृदन्त - 'वत्' प्रत्यय के योग से बनते हैं जिसका व्युत्पत्ति संस्कृत- प्राकृत के 'वन्त' प्रत्यय से हुई है । भूतकालिक कृदन्त 'स्व' तथा इसके कई वाच्य के रूप में 'स्व' तथा 'यन्' प्रत्यय के योग से बनते हैं ।

१९८- क्रिया की निरन्तरता या आवृत्ति का बोध कराने के लिए प्रायः क्रियापदों का कृति प्रयोग होता है । क्रिया के कृति प्रयोग में 'ह'

या 'व' तथा 'वत्' प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। यथा- कृदि-कृदि, फणीदि-फणीदि, लौक-लौक, फौक-फौक, क्षति-क्षति, फिरत्-फिरत्, हँस-हँसत् आदि ।

१९९- 'ह' प्रत्यय के प्रयोग जनपद के पूर्ण भाग में अधिक संयुक्त प्रयुक्त होता है ।

कानपू जनपद की बोलो में वाचनिक भा० १० भा० की मूर्ति संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग प्रचुर मात्रा में होता है। संयुक्त क्रियापद मुख्य रूप से दो प्रकार के हैं-

(१) नाम पद युक्त- संयुक्त क्रियापदों में वातु के पूर्व नाम या कृदंतो पद या क्रियाभूलक विशेषण पद रखे जाते हैं। जैसे- वासित चढ़ाना, कहत् भिने, सुनत रहने, कँ लागे न आदि। इस प्रकार के संयुक्त क्रियापदों से अर्थों में विशेषता आ जाती है। यह मुहावरों के रूप में भी काफी प्रयुक्त होता है।

(२) क्रियापद युक्त- संयुक्त क्रियापदों के बहुविध प्रयोग होते हैं। कुछ संयुक्त क्रियापद विपरीत अर्थ रखने वाले क्रियापदों के प्रयोग से बनते हैं जो विरुद्ध अर्थ का बोध कराते हैं जैसे- कहत्-सुनत्, मरत्-जियत्, सात्-फियत्, मीवत्-जागत्, लेत्-देत्, रोवत्-गावत्, चूटत्-पाटत्, उठत-बहठत्, जावत्-जात् आदि।

२००- ४.१.२ काल रचना -

प्रमुख काल तीन प्रकार के होते हैं- (१) मृतकाल (२) वर्तमान (३) भविष्यकाल। परन्तु क्रिया-व्यापार का पूर्णतः अपूर्णता अथवा सामान्य तथा उसके निश्चयार्थ, वाञ्छार्थ और संभावनार्थ इन्हीं के व्यापार पर

बालों की संख्या संतुष्ट हो जाती है। इस रक्त की दृष्टि से बालों के प्रमुख दो वर्ग हैं-

४.१.१ (१) मूलकाल या साधारण काल

४.१.२ (२) संयुक्त काल

२०१- हिन्दो की कल्प लीलाओं की भाँति ज्ञानपुर ज्ञान की लीला में मूलकाल के ४: १५ होते हैं -

१- मूलनिरक्षार्थ

२- मविष्य निरक्षार्थ

३- वर्तमान संभावनार्थ

४- मूल संभावनार्थ

५- वर्तमान आशार्थ

६- मविष्य आशार्थ (शिष्ट वीर सामान्य)

२०२- इस ज्ञान की लीला में संयुक्त काल के १५ वर्तमानकालिक तथा मूलकालिक कृत कालों में सहायक क्रिया जोड़कर काये जाते हैं, इससे १५ १५ हैं-

१- वर्तमान अपूर्ण निरक्षार्थ

२- मूल अपूर्ण निरक्षार्थ

३- मविष्य अपूर्ण निरक्षार्थ

४- वर्तमान अपूर्ण संभावनार्थ

५- मूल अपूर्ण संभावनार्थ

६- वर्तमान पूर्ण निरक्षार्थ

७- मूलपूर्ण निरक्षार्थ

८- मविष्यपूर्ण निरक्षार्थ

९- वर्तमान पूर्ण संभावनार्थ

१०- मूलपूर्ण संभावनार्थ

३.१.२. १-मृत काल

कुल वनिष्कृति क्रियाओं की जोड़कर श्रेण सभी क्रियाओं की काल रचना एक पैदा हो जाती है जिसे क्रिया पाठ्यों का अंत स्वरों में होता है उनका वासरका कुल भिन्न होती है ।

पद (३३) वातु का उदाहरण रूप लेकर कानपुर जपद को जोती की निष्कृति क्रियाओं की काल रचना का स्वयं प्रस्तुत है-

(मृत निश्चयार्थ)

वातु में निम्नलिखित प्रत्यय जोड़कर क्रिया के मृतकाल में मृत निश्चयार्थ के ये रूप बनते हैं -

	<u>एकक</u>	<u>बहुवक</u>
उत्तम पुरुष -	स्व	वी
मध्यम पुरुष -	ए, स्व	स्व
तृतीय पुरुष -	इस, उस	इम, उम
प्रयोग -		
उत्तमपुरुष - में पढ़ें		उम पढ़ी
मध्यमपुरुष - तुम्हें पढ़ें-पढ़ें		तुम पढ़ें
तृतीयपुरुष - कुकी पढ़िये, पढ़ें		वुह पढ़िन-पढ़ें

(मविष्य निश्चयार्थ)

	<u>एकक</u>	<u>बहुवक</u>
उत्तम पुरुष	इहीं	वच, वे
मध्यम पुरुष	हा	इही
तृतीय पुरुष	ह	इहें

प्रयोग-

उत्तम पुराण	में पढ़िहीं	हम पढ़न- पढ़ी
मध्यम पुराण	तुं पढ़िहा	तुम पढ़िही
अन्य पुराण	कुबो पढ़ी	कुह पढ़िहैं

(वर्तमान संभावनार्थ)

- २०६- संभावनार्थ के रूपों में संभावनार्थ बोधक अव्यय "जो" (यदि) का प्रयोग नाम तथा सर्वनाम के पूर्ण होता है। यथा जो में पढ़ी (जो में पढ़ूँ)। वर्तमान संभावनार्थ क्रिया-रूप दोनों लिंगों में समान होते हैं। हिन्दी सड़ो (स्टैन्डर्ड) बोला को माँत इस जनपद को डोला में माँ लिन के अनुसार भेद खिल कूदत क्रिया रूपों में होता है। लिङ्गान्त क्रिया के रूप दोनों लिंगों में समान होते हैं। वर्तमान संभावनार्थ के रूप संयोजन करने के लिए धातु में जोड़े जाने वाले प्रत्यय निम्न प्रकार के हैं-

	एकवचन	बहुवचन
	वॉ	वॉ
उत्तम पुराण -	वॉ	वॉ
मध्यम पुराण-	दे, वस्	वॉ
अन्य पुराण -	है	हैं

प्रयोग-

उत्तम पुराण -	में पढ़ी	हम पढ़न
मध्यम पुराण-	तुं पढ़े-पढ़स्	तुम पढ़ी
अन्य पुराण -	कुबो पढ़े	कुह पढ़ें

(मूल संभावनार्थ)

२०६-

मूल संभावनार्थ के प्रिया-वर्गों के साथ जो भी या सर्वनाम या नामों का योग वर्तमान संभावनार्थ के अनुरूप हो लीते हैं । 'धातु' में लगने वाले इस बात के प्रत्यय निम्न प्रकार के हैं-

(जी) में पढ़ता ।

	एकवचन	बहुवचन
	-----	-----
उत्तमपुरुष	ख	ल
मध्यम पुरुष	ए	ख
तृतीय पुरुष	ब, इ	ए, व
प्रयोग		
उत्तमपुरुष	में पढ़ते	हम पढ़ते
मध्यमपुरुष	तुम्हें पढ़ते	तुम पढ़ते
तृतीयपुरुष	वहाँ पढ़ते-पढ़ति	वहाँ पढ़ते , पढ़त

२०७

(वर्तमान वाक्यार्थ)

वर्तमान वाक्यार्थ के रूप वर्तमान संभावनार्थ जैसे हो लीते हैं ।
जो कि केवल इतना है कि मध्यम पुरुष एकवचन में कोई प्रत्यय नहीं लगता तथा संभावनार्थ बोधक वचन का प्रयोग भी नहीं किया जाता है -

	एकवचन	बहुवचन
	-----	-----
उत्तम पुरुष	वहाँ	वहाँ
मध्यम पुरुष	-	वहाँ
तृतीय पुरुष	इ	इ

	<u>एकवचन</u>	<u>बहुवचन</u>
उत्तम पुरुष -	मैं पढ़त रहैं	हम पढ़त रहैं
मध्यम पुरुष -	तुं पढ़त रहे-रहिय	तुम पढ़त रहै
अन्य पुरुष -	वुं पढ़त रही	वुह पढ़त रहिरं

२११-

(वर्तमान पूर्ण निश्चयार्थ)

वर्तमानकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया

	<u>एकवचन</u>	<u>बहुवचन</u>
उत्तम पुरुष -	मैं पढ़त हूँ	हम पढ़त हूँ
मध्यम पुरुष -	तुं पढ़त हा	तुम पढ़त हो
अन्य पुरुष -	वुं पढ़त है	वुह पढ़त हैं ।

२१२-

(भूत अपूर्ण निश्चयार्थ)

	<u>एकवचन</u>	<u>बहुवचन</u>
उत्तम पुरुष -	मैं पढ़त रहाँ	हम पढ़त रहान् ।
मध्यम पुरुष -	तुं पढ़त रहे	तुम पढ़त रहाव् ।
अन्य पुरुष -	वुं पढ़त रहाय	वुह पढ़त रहायि ।

२१३-

(भविष्य अपूर्ण निश्चयार्थ)

	<u>एकवचन</u>	<u>बहुवचन</u>
उत्तम पुरुष -	मैं पढ़ते हों	तुम पढ़त हों
मध्यम पुरुष -	तुं पढ़त छुवा	तुम पढ़त छुवाँ
अन्य पुरुष -	वुं पढ़त हों	वुह पढ़त छुहें ।

२१४-

(वर्तमान वपूर्ण संभावनार्थ)

	<u>एकवचन</u>	<u>बहुवचन</u>
उत्तमपुरुष	मैं पढ़त होंँ	हम पढ़त होंँ
मध्यमपुरुष	तुं पढ़त होँ-होंँ	तुम पढ़त होँ
अन्यपुरुष	वुं पढ़त होँ	वह पढ़त होँ

२१५-

(मृत वपूर्ण संभावनार्थ)

	<u>एकवचन</u>	<u>बहुवचन</u>
उत्तमपुरुष	मैं पढ़े होंँ	हम पढ़े होंँ
मध्यमपुरुष	तुं पढ़े होँ	तुम पढ़े होँ
अन्यपुरुष	वुं पढ़े होँ	वह पढ़े होँ

२१६-

(मृतपूर्ण निश्कार्थ)

उत्तमपुरुष	मैं पढ़े हाँ	हम पढ़ेहूँ
मध्यमपुरुष	तुं पढ़े हाँ, हस	तुम पढ़े हाँ
अन्यपुरुष	वुं पढ़े है	वह पढ़े हैं

२१७-

(मविष्य पूर्ण निश्कार्थ)

उत्तमपुरुष	मैं पढ़े होइ हाँ	हम पढ़े होइ ?
मध्यमपुरुष	तुं पढ़े होइहा	तुम पढ़े होइहा
अन्यपुरुष	वुं पढ़े होइ	वह पढ़े होइहें

२१८-

(वर्तमान पूर्ण संभावनार्थ)

उत्तमपुरुष	मैं पढ़े हों	हम पढ़े होंव, हव
मध्यमपुरुष	तुं पढ़े हों	तुम पढ़े होंवी, हवी
अन्यपुरुष	वुं पढ़े हों	वह पढ़े होंवें-हों

२१९-

(मृतपूर्ण संभावनायं)

	<u>एकवचन</u>	<u>बहुवचन</u>
उत्तम पुरुष	मैं पढ़े होते	हम पढ़े होते, होते
मध्यम पुरुष	तुम्हें पढ़े होते	तुम पढ़े होते
अन्य पुरुष	वृत्तों पढ़े होते	वृत्त पढ़े होते-होते

२२०- ४.१.३ सहायक क्रिया -

काल-रक्षा में सहायक क्रिया का योग महत्त्वपूर्ण है।

‘कालपुर जपद की बोला’ में सहायक क्रिया के दो रूप बाधक लिखे हैं-

१- पूर्ण सहायक क्रिया --- $\sqrt{\text{हो}}$

२- अनियमित या विकारी रूप- ‘हो’ और ‘रह’

२२१-

अनियमित सहायक क्रियाओं का प्रयोग केवल वर्तमान, मृत काल के तथा पूर्ण मृत काल के रूपों के लिए होता है। अन्य रूप अनियमित या पूर्ण सहायक ‘हो’ के ही व्युत्पन्न होते हैं। $\sqrt{\text{हो}}$ का प्रयोग वर्तमान के रूपों के लिए और ‘रह’ का प्रयोग मृतकाल के रूपों के लिए होता है। बाकी सहायक क्रियाओं का प्रयोग प्रस्तुत है-

१- वर्तमान काल - मैं हूँ बादि

	<u>एकवचन</u>	<u>बहुवचन</u>
उत्तम पुरुष	मैं हूँ	हम हूँ
मध्यम पुरुष	तुम्हें हूँ	तुम हूँ
अन्य पुरुष	वृत्तों हूँ	वृत्त हूँ।

२- मूलास - मैं था जादि ।

	<u>एकवच</u>	<u>बहुवच</u>
उत्तम पुरुष	मैं रहाँ	हम रहान्
मध्यम पुरुष	तुं रहै	तुम रहै, राव
अन्य पुरुष	वुं रहाय	वुह रहायै

२२- पूर्ण मूलास - मैं रा था

	<u>एकवच</u>	<u>बहुवच</u>
उत्तम पुरुष	हम रहै हतै	हम रहै हतै
मध्यम पुरुष	तुं रहै हा	तुम रहै हा-हतै
अन्य पुरुष	वुं रहै हाँ	वुह रहै हतै

बादरसूक्त

	<u>एकवच</u>	<u>बहुवच</u>
उत्तम पुरुष	मैं रहीँ	हम रहै तिम
मध्यम पुरुष	तुं रहै हतै	तुम रहै तिम
अन्य पुरुष	वुं रहै हाँ	वुह रहै तै

२२- पूर्ण सहायक क्रिया

१- मूल निश्चयार्थ

सहायक क्रिया "हो" - तिरिक रूप "मय"

	<u>एकवच</u>	<u>बहुवच</u>
उत्तम पुरुष	मैं मय	हम भिने
मध्यम पुरुष	तुं मय	तुम मय-भिने
अन्य पुरुष	वुं मय	वुह मय

२२४-

२- मधिष्य निश्चयार्थ

	एकवच	बहुवच
उत्तम पुरुष	मैं होँ	हम होन-होतू
मध्यम पुरुष	तुं होव	तुम होवी
तृतीय पुरुष	वुजो होव	वुह हुं ह
	बादर सूक्त	
उत्तम पुरुष	मैं छुहो	हम छुवे
मध्यम पुरुष	तुं छुहा	तुम छुहो
तृतीय पुरुष	वुजो होहह	वुह छुहें ।

२२५-

३- कृत संभावनार्थ (जो) में होता बादि ।

उत्तम पुरुष	मैं होतै	हम होतित्
मध्यम पुरुष	तुं होतै	तुम होतै
तृतीय पुरुष	वुजो होतू	वुह होतै-होतू

२२६-

४- वर्तमान संभावनार्थ (जो) में होऊँ बादि

उत्तम पुरुष	मैं होविजो	हम होन
मध्यम पुरुष	तुं होस	तुम हो जा
तृतीय पुरुष	वुजो होय	वुह होय ।

२२७-

‘कानपुर जनपद की बोली’ की प्रमुख सहायक क्रिया ‘ही’ के साथ ही ‘रह’ तथा ‘हूँ’ है। ‘ही’ के कनेक रूप हम जनपद की बोली में प्रचलित हैं। उनका संस्कृत रूप से ही माना जाता है। इसके विकारी रूप ‘हो’ ‘हो’ ‘हो’ बादि का सामान्य संस्कृत ‘भवति’ से माना जाता है।

“रह” को व्युत्पत्ति दी गयी है। डा० बटजी ने इस सम्बन्ध में विस्तार के साथ विचार किया है ; किन्तु तिस्रो बौद्ध निग्रहों को नहाँ पहुँच गये । वे इसका सम्बन्ध “असति” से जोड़ते हैं^१। टनर^२ इसका सम्बन्ध संस्कृत रहित जादि शब्दों को तरह-रिह से जोड़ते हैं ।^३ डा० चोरेन्द्र वर्मा संस्कृत “मन्” से^४ तथा डा० तिवारो संस्कृत भवन्तः तथा भवन्तकः से मानते हैं । डा० बाबूराम सक्सेना इसका सम्बन्ध संस्कृत की “अस्” से मानते हैं ।^५

२२८- १.१.४ संयुक्त क्रियाएँ

एकाधिक क्रियाओं के योग से निर्मित क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ कहलाती हैं । संयुक्त क्रिया में एक सहायक क्रिया का लिङ्गान्त अव्यय वाला वाचो रूप और एक, दो या तीन मूढ़त रूप प्राप्त होते हैं ।

संयुक्त क्रियाओं के विकास के सम्बन्ध में डा० वर्मा संयुक्त क्रियाओं को वायुनिक मानते हुए विशेष कार्य मानते हैं ।^६ जबकि डा० तिवारो इसे बीज रूप में संस्कृत से ही विरसित मानते हैं— “आवरण के अन्य अवयवों की भाँति इसका भी विकास हुआ, हाँ संस्कृत में इसका प्रयोग सीमित था— किन्तु मानव चिंतन के अनुसार इसका विकास होता गया।” डा० बाबूराम सक्सेना ने बताया है कि “मा०मा०मा० के प्रत्यय

१- बटजी काली मैग्व० , पृ० ७६

२- टनर, नेपाली डिक्शनरी , पृ० १९१

३- डा० चोरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इति०, पृ० २९४

४- डा० मोलानाथ तिवारो , हिन्दी भाषा, पृ० २५५

५- डा० बाबूराम सक्सेना, अव्ययों का विकास, पृ० १९३

६- डा० चोरेन्द्र वर्मा , हि०मा०ह० , पृ० ३०६

७- डा० मोलानाथ तिवारो , हिन्दी भाषा , पृ० २६१

निष्प्रयोजन हो तो वे इसीलिए जा०पा०वा० मा० में दो क्रियाओं को संयुक्त करने को विधि अपनाते, जहाँ एक मुख्यार्थ की व्यक्त करने है और दूसरी विविध तात्पर्यों की।^१ डा० काशीनाथ सिंह के अनुसार "सुविधा के विचार से अफ़सरे के वार्षिक चार सौ वर्गों ४००० - १२०० वर्ग को संयुक्त क्रियाओं का निर्माण-काल माना जा सकता है।"^२ यहाँ अधिक व्यस्त रूपों का विवेक प्रस्तुत है-

इन संयुक्त क्रियाओं की सुविधा के अनुसार निम्न वर्गों में बाँटा जा सकता है—

२२९- वर्ग-(१) संभावनायुक्त क्रियाओं से बने हुए

- अ- विशदता बोधक
- ब- उन्नयता बोधक
- स- पूर्णता बोधक

वर्ग-(२) क्रिया की धातु + की (प्रत्यय)

- अ- बहुधा बोधक
- ब- उच्छा बोधक

वर्ग-(३) क्रियायुक्त संज्ञा + ल

- अ- प्रारंभिकता बोधक
- ब- अनुपति या वाशबोधक
- स- सापेक्ष बोधक

१- डा० बाबूराम सन्तोना, व०का०वि०, पृ० २४६

२- डा० काशीनाथ सिंह, हिन्दी में संयुक्त क्रियाएँ, पृ० ४१

वर्ग-(४) पूर्ण और अपूर्णताबोधक कृदन्तों से बने हुए-

ब- निरन्तरता बोधक

क- प्रगति बोधक

स- स्थिरता बोधक

२३०- वर्ग- १-ब-विशदता बोधक-

ये क्रियाएं पढ़ना, होना डालना, देना आदि १ संयोग से बनती हैं-

री पारी (री पड़ा)

गिर पारी (गिर पड़ा)

तौर डारिस - डारस (जोड़ डाला)

फिटिक दोन्सि (फँक देना)

जात होई (जाता होगा)

फौर डारिस-डारस (फाड़ डाला)

पी लिस्सि (पी लिया)

चढ़ कठ (चढ़ बैठा)

कर दिहाउस (कर दिखाना)

२३१- ब- शक्यता बोधक -

क्रिया की धातु में " सकना " क्रिया जोड़कर शक्यताबोधक संयुक्त क्रिया १ रूप बनते हैं। यथा- ला सकीं, कल सकीं, नी सकूँ, जी सकूँ, ठठ लकीं, कहि सकीं आदि ।

२३२- स- पूर्णता बोधक -

क्रिया की धातु के जाने " हुक " (ना) लगाने से ये संयुक्त क्रिया पद बनते हैं। इस संयुक्त क्रिया से क्रिया का पूर्ण होना प्रकट होता है। यथा-

जा चुकी हूँ (जा चुका है) ।
 पी चुके हूँ (पी चुके हैं) ।
 कहि चुके हूँ (कह चुका है) ।
 मर चुकी ली (मर चुका था) ।

२३४- वर्ग - २ व- बहुधा बोधक -

क्रिया की धातु के साथ सभी काहों में " जी " प्रत्यय लगाकर तथा " कर " क्रिया के संयोग से ये रूप बनते हैं। यथा-

मैं सबेर उठी कर (सुबह उठाकर) ।
 ध्यान से सुनी कर (ध्यान से सुनाकर) ।
 रोज न साबो कर (रोजाना मत साया कर) ।
 लू डरी कर (लौड़ा डरा कर) ।
 हीं कहो कर (वहाँ कैठा कर) ।

२३५- व- इच्छा बोधक -

क्रिया की धातु के साथ " चाह " प्रत्यय लगाकर " चाह " (चाहना) क्रिया के संयोग से संयुक्त क्रिया के ये रूप बनते हैं। यथा-

वूँ पूँ चाहत हूँ (वह पूँना चाहता है) ।
 कहाँ जावो चाहत हो (कहाँ जाना चाहते हो) ।
 मैं सुनी चाहत हूँ (मैं सुनना चाहता हूँ) ।

२३६- वर्ग - ३ व- प्रारम्भिकता बोधक -

क्रिया की धातु के साथ " लगना " क्रिया के संयोग से प्रारम्भिकता बोधक संयुक्त क्रिया के रूप बनते हैं। यथा-

कुछ बाँधें लागू (वे जाने लगे)
 तुम का पूँछ लागेवू (तुम क्या पूँछने लगे) ।
 पानी बरें लागू (पानी बरसने लगा) ।
 बबहाँ ते घरयें लागेवू (बभाँ से घराने लगे) ।

२३७-ब- अनुमति बाँधक -

क्रिया को धातु के कृदन्तिय रूप के साथ 'देना' जोड़कर अनुमति
 बाँधक संयुक्त क्रिया के ये रूप बनते हैं। यथा-

जान देव (जाने दो) ।
 कुछ करन देव (कुछ करने दो) ।
 बस रहान देव (बस रहने दो) ।
 येसा झुन देव (हसको झुने दो) ।

२३८ स- साध्याबाँधक -

धातु के स्कारति तथा बीकारान्त रूप के साथ 'पाना' जोड़कर
 साध्या बाँधक संयुक्त क्रिया के ये रूप बनते हैं। यथा-

दुजोँ से न पाव (वह कल नहाँ पाया) ।
 कुछ जानै न पाये (वे जान नहाँ पाये) ।
 बहठी न पास्स (बैठ मो नहाँ पाया) ।
 बोले न पाउस (बोले नहाँ पाया) ।

२३९-वर्ग -४ ब- निरन्तरता बाँधक-

यह संयुक्त क्रिया पूर्ण क्रिया बाँधक कृदन्तों के रूप के साथ 'रहू'

(ना) , 'जा' (ना) लाकर बनता है यथा-

माल बजावत रहातू है (माल बजाता रहता है)।

पुजौ सौधत रहातू है (वह सौधा रहता है)।

पढ़त जात हैं (पढ़ते जा रहे हैं)।

सात जात हवें (साते जा रहे हैं)।

२४०- ब- प्रगति बोधक -

इस संयुक्त क्रिया के द्वारा कार्य काल का बोध होता रहता है--

हो' कठ रहेव (यहाँ बैठे रहना)

तुम देखत रहेव (तुम देखते रहना)

येहा साथे रहेव (इतने पकड़े रहना)

२४१- स- स्थिरता बोधक -

कम्मा- कम्मा प्रत्यय या क्रिया-विशेषण क्रिया के साथ इस प्रकार मिलकर जाते हैं कि उनसे एक ही भाव का बोध होता है। यथा-

बोल उठेव (बोल उठा)।

उठ कठ (उठ बैठा)।

देस वयेव (देस बना)।

होन सेहव (होन लेना)।

२४२- १.२ अव्यय -

अव्यय शब्दों में परिवर्तने प्रायः नहीं होते । शब्दार्थ का दृष्टि से अव्यय के शब्द हैं जिनमें किसी भी परिस्थिति में कोई परिवर्तन न आए ; किन्तु ऐसे शब्द भाषा में बहुत कम मिलते हैं । कुछ विद्वानों ने थोड़ा

परिवर्तन कर कम दूरों की हो रहा है- गुप्त जो कहते हैं - "जिन शब्दों का रूप वर्ण के कारण बकवास कृत शब्दों के समान्य में नहीं बदलता उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। अविकारी शब्द बुझ्या अव्यय कहलाते हैं।^१ अब: विकार न होने का व्यावहारिक अर्थ यही है कि लिं, गुरुण और विभक्तियाँ उनमें नहीं लगती। संस्कृत में कुछ बहुत कम परिवर्तनेशाल तद्धितान्त शब्दों को भी अव्यय माना गया है। अर्थात् कम परिवर्तनेशाल शब्द अव्यय माने गए हैं।

२४२- कानपुर जनपद की बोली में हिन्दा का अन्य लीयों को मर्ति सभी प्रकार के अव्यय शब्दों का पूर्णतः अवहार होता है। यहाँ के व्यवहृत अव्यय शब्दों में बहुत कम परिवर्तन होता है, फिर भी इनमें कुछ अव्यय शब्दों के गुरुण रूप भी होते हैं जिनका प्रयोग विशेषण और देने या किया जाता है।

अव्यय शब्द नाम, सर्वनाम पदों में तद्धति या नाप्ति प्रत्ययों का योग करने से भी बनते हैं। वे विशेषण पद जो क्रिया को विशेषण बनाकर क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। वे भी अव्यय रहे जाते हैं क्योंकि इनमें बहुत कम परिवर्तन होता है। इनमें उत्तरित शब्द-रूप, गुप्त-गुप्त वादि फोविकारों को प्रकृत करने वाले - "जाह !", "हाय !", "वेहा !" वादि शब्द तथा इसी प्रकार खोबूत-अखोबूत सूत्रों में, "ना" "जादि" भी जिनमें बहुत कम परिवर्तन होता है, अव्यय रहे जाते हैं।^२

२४४- कानपुर जनपद की बोली में प्रचलित अव्ययों का परिचय नीचे दिया जा रहा है -

१- कामता प्रसाद गुप्त, तद्धितान्त हिन्दी व्याकरण, पृ० २८

२- पाणिनी तद्धितान्त सर्व विभक्तिः विश्वारोदाय राजकर्म, हिन्दा शब्दा-
मुद्रासन, पृ० २११

३- महेन्द्रनाथ दुबे, राजकाट्ट जि० बी०, पृ० १५३

- ४.२.१ क्रिया विशेषण
 ४.२.२ सम्बन्ध बोधक
 ४.२.३ समुच्चय बोधक
 ४.२.४ विलम्बादिबोधक या फलोभाव सूचक

२४५- ४.२.१ क्रिया विशेषण -

कानपुर जनपद की बीलों में वर्ण की दृष्टि से क्रिया विशेषण निम्न प्रकार के हैं-

४.२.१ (१) कात्वाक-

कात्वाक क्रिया विशेषण निम्न पैदाईं में बनते हैं- (क) नाभिक
 सन, हिन, घरी, जोर, जुन-जुनि, पहर बेरा, राज बादि । जोर देने के
 लिए इनके मूल रूप भी प्रयुक्त होते हैं- जने, हिनै, धरिए, जोरै, जुनो,
 पारो, वीरै, रोजे या रोजहो बादि । विदेशो - (जबकी फारसी) बसत,
 बल्दो, कुतो, हाते, ह्येहा बादि (बीजी) टेम, टेम, टाहम, फिन्ट
 या फिन्ट, सेजिह बादि ।

(ख) सावनाभिक - बख, येहि, जब, कब, कबहूँ, तब बादि इनके निम्न
 लिखित मूल रूप भी प्रयुक्त होते हैं- बखै, बख्यय, जबहो, जबहिन्, येहिमा,
 येहो, जबै, जब्यय, जबहो, जबहिन्, कबै, कब्यय, कबहिन्, कबहाँ, तबै,
 तब्यय, तबहाँ बादि ।

(ग) बख्यय पैदाईं से बने - बागै, बाग, पीछै, पाछ, बाज, बाल, फालै,
 कलिहँ, परसोँ, परसोँहि, तुराय, तुराहिँ बादि ।

२४६- ४.२.१ (२) स्थान वाक्य -

(क) नाभिक - बागै, पीछै, बन्ते, नेरै, नगावे, तारै, समुहै

बाहें, मोधे, लो, बाहर, बाहर, नार, नीर शों जादि ।

(स) सावनामिक - हाँ, उहाँ, लि, हुन, कहाँ, हाँ तहाँ, लिना,
हुना, हुँवा जादि । इनके गुरु रूप भी भिन्नते हैं - रुँवा, हाँवा,
कहाँ, जहाँ बाँ, जहाँ, तहाँ, तहाँ, छिंद, छिन्ही, हुन्ही, हुँवा,
हुँवा जादि ।

(म) विशेष - लठ, लठ (यहाँ) जौठन-जौठ, (वहाँ) ,
जौठन-जौठ (कहाँ) जौठन-जौठ जादि । इस तरह के रूप जनपद के पूर्ण वंश
में भिन्नते हैं । हैन्हा, हाँही , जाहाँ जादि रूप जनपद के परिक्रमो रूप
दक्षिणी वंश में भिन्नते हैं ।

२४०-१.२.१ (३) प्रमाणवाचक -

(क) नामिक - रकाक, यकायक, लुटक , जादा, अधिक दायें, हर म,
सीध, टेढ़ जादि ।

(स) सावनामिक - जहाँ, उहाँ, जहाँ, कहाँ, तहाँ जादि । इनके गुरु
रूप भी भिन्नते हैं-- जहाँही, जहाँही , कहाँही, तहाँही जादि ।

२४१-१.२.१ (४) परिमाणवाचक -

(क) नामिक- कुर, कुरी, अधिक, जादा, डेर, कैसा, बहुत कम, किनुक,
लुक, सिरा, तमाम, लिनुक , चिटो मूँ जादि ।

(स) सावनामिक - इतना- इतनी, उतना-उतनी, जितना, जित्ता, जितना-
जित्ती, तित्ता, तित्ती जादि ।

२४९-४ २.१ (५) विज्ञावाक्य - हहाय, उहाय, क्यार, बोहं होर , कुह
होर, हहोर, हघर, हघर , क्यार, हमेर , उमेर , नोमेर , मोरें लंग, तीरें
लंग, तीरें पक्षि, तीरो तेर बादि ।

“कानपुर जपद को बोलो ” में कुछ क्रिया विशेषणों के बीच “न”
के वागमय से अनिश्चयात्मकता की वृद्धि हो जाती है । यथा- कहुं न कहुं,
बाध न पाल, कबहुं , कबहुं, जब न तब, कहीं न कहीं बादि । यहाँ कुछ
क्रिया विशेषणों के सामासिक रूप भी मिलते हैं— दिन-निन, जल-जल,
राती-रात , हाँसी-हाँसी, फूठ-फूठ बादि ।

२५०-४ २.२ सम्बन्ध बोधक अव्यय -

“कानपुर जपद को बोलो ” में कुछ सम्बन्धबोधक अव्यय हैं जोकि
संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य बाहर दूसरे शब्दों से प्रकट करते हैं----
सहार, दारा, मार, सातिर, कारन, कस्ते, अपेक्षा, होर-बोर, तरफ,
पर, बीच, जागे पाई, बना, सिवा रहित , बन्दे (बन्दे) फटे , जगा,
पर, संग , साथ, भीतर, ऊपर बादि ।

२५१- यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि सम्बन्धबोधक अव्यय तथा
स्थानबोधक क्रिया-विशेषण दोनों ही अविकारो शब्द हैं किन्तु सम्बन्ध-
बोधक अव्यय संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध बतलाते हैं जबकि स्थानबोधक
क्रियाविशेषण क्रिया की विशेषता बतलाते हैं। यथा-

घर के बाँगे पेड़ हवे (सम्बन्ध बोधक अव्यय)

कहाँ घर के बाँगे हेलवे (स्थान बोधक क्रियाविशेषण)

मठी के भीतर दुलारी होई (सम्बन्ध बोधक अव्यय)

सबसे मठी के भीतर बल्लि (स्थानबोधक क्रियाविशेषण)

२५२- ६.२.३ समुच्चय बोधक अव्यय -

इनके अन्तर्गत वे अविवारो रूप वाते हैं जोकि दो शब्दों, वाक्यों वथवा वाक्य सङ्घों को जोड़ते हैं। इस जनपद को बोली में निम्न प्रकार के समुच्चय बोधक अव्यय हैं-

१- समानाधिकारी समुच्चय बोधक - ये निम्न प्रकार के हैं-

(क) संयोजक - और, वी, तथा, व, एवं आदि।

बादर बार और बरसत सात ।
 महीन वी मोहन बड़े लड़ाका हैं ।
 बाहें तथा बाबा ठाढ़ हैं ।
 फाउरा वें सुधीं सैत बाव ।
 कापी एवं फिन घरी ली ।

(ख) विभाजक- परन्तु, बाहे, नहां ली, लेकिन, और, किन्तु आदि।

गिने ली परन्तु भिले नाहों ।
 हुं जाव बाहे हिन जाव ।
 पानी देव नहां ली भावे ।
 हम पहुँचि लेकिन भिले न ।
 बावतू ते मार रक्की ।
 हर गिरा किन्तु पायि बक्का ।

(ग) विकल्प सूचक- या, यास, नाकि, वथवा, वहे आदि ।

पानी बरसे या बांधी जावे ।
 भाहें तुम जाव या न जाव ।

सरस फिरी ना रि बाय ।
 बा ली फिल ते अक्का हम फिले बाक ।
 उनते कहाव बहे न कहाव ।

२४३- २- कामनाधिकारी या वाञ्छित सुपुण्यबोधक अव्यय-

(क) परिणाम सूक- एहि छात्रि, एहि छात्रे, येही पारं, बना बादि।

छूने फिले काह ली एहि छात्रि हम बाये ।
 धीरी काम रहाय, छिलाने कुत्ताय ।
 येही पारं कबहुँ फिर जही ।
 कुत्तायत ते बना एक निमे ।

(ख) कारणसूक- क्योंकि, कहे रि बादि

हमना लख क्योंकि राटो जेरात ही ।
 धं न कुहों कहे रि मन माहो हैं ।

(ग) उद्देश्यसूक- ताकि, बेहिमा बादि

कही पत्नी ताकि बहिन पहुँच बलिर ।
 बड़े बाब मया बेहिमा नाही मिलि जाय ।

२४४- ३.२.४ विस्मयादि बोधक या मनीभाव सूक-

इन अव्ययों के अन्तर्गत वे शब्द आते हैं जिनके द्वारा मन के आश्चर्य,
 दुःख, हर्ष, रोष, दुःस, लज्जा, मय बादि के भाव प्रकट होते हैं। कान-
 नुर कण्ठ की पीली में व्यक्त होने वाले मनीभाव सूक अव्यय ४ निम्न-
 लिखित हैं—

(१) हणसूचक- बहा! , बाह हा, बी ही , बाह, त्या म्हने ,
का कहाये का, श्याबास, बहुत अच्छे-सुद बादि ।

(२) घृणासूचक - डि: डि: , धिक्-धिक् , राप्-राप् , कू-कू वू है
पिक्कार है, छट-छट , घुरि-घुटि , घुरि ! , पर , छु बादि ।

(३) बाश्पसूचक - हँ, बाय, बाह! , बाप रे बाप , दात रे दात,
बच्चा, बीमर्या बादि

(४) शोक या रुष्ट सूचक - बाह ! , बाप रे ! , हाय बम्मा, मर्या,
हाय राम , हाय भवान, है राम, पडरी रे , परगिने, रे बाबा, बी
बादा बादि ।

(५) सम्बोधन सूचक- बी, बीय , है , ये , जरे, ए बकुवा, ए मर्या,
ये हाँ, उरो, बरी, जो, रे बादि ।

२५६- (६) पशु-पक्षियों के लिए मनीमाव सूचक ध्वनियाँ

मुन-मुन, उररें (बकरी कुलाने हेतु)

रू-रू, रू-रू, व-व (बकने-व कुर्बों के कुलाने हेतु)

पुछ-पुछ, वप्-वप् (जानवरों के सल्लाने में)

बीय-बीय, बी-बी (गाय -स के बच्चों के कुलाने हेतु)

लीय-लीय , लू - लू (कुर्बों की शिकार हेतु दाढ़ाना)

रू-रू, ली-ली (जानवरों की पानी(पिलाने) हेतु खं कूँटे बच्चों
की लीय)

विशेष : कमी-कमी सज्ञा, सर्वनाम बाँ मनीमाव धीरे कन जाते हैं

यथा- राम-राम, शिव-शिव, बाप रे, हाय दादा बादि । प्रायः

मनीमाव सूचक ध्वनियों के साथ नामादि संयुक्त करके भी बोले जाते हैं ।

पंचम अध्याय
=====

वाक्य-विचार
=====

- | | |
|-----|---------------|
| ५.१ | साधारण वाक्य |
| ५.२ | भक्तिवाक्य |
| ५.३ | संयुक्त वाक्य |

पंच अध्याय

वाक्य-विचार

२५७- वाक्य मानना की इकाई होती है। वक्ता अपने व्यवहार में वाक्य का ही प्रयोग करते हैं। वाक्य कथन की पूर्णता का परिचायक शब्द या शब्दों की व्यवस्था का नाम है। यह व्यवस्था अपने अत्यन्त रूप में भी हो सकती है और अभी-अभी व्यावहारिकता की सीमा से लाघ जाने वाली भी हो सकती है। यह सुनियोजित व्यवस्था हो जाती जसा मानना की रीढ़ है।

२५८- वाक्य की प्रायः विज्ञान् साधक शब्दों का समूह मानते हैं जो भाव की व्यक्त करने का दृष्टि से अपने आप में पूर्ण हो। गौरी स्व व्याख्याओं में वाक्य को परिभाषा प्रायः इसी प्रकार की मिलती है कार्यात्मक स्व पतञ्जलि आदि प्राचीन व्याख्याओं ने विभिन्न मतों के संकलन के बाद वाक्य के निम्न लक्षण माने हैं—

१- “वाक्यार्त साध्यकारक विशेषण वाक्यम्” जहाँ वाक्यकारक और विशेषण पद उहाँ एकत्र हों उसे वाक्य कहते हैं।^१

२- “सक्रिया विशेषण च” — जहाँ उक्त चारों पदों के साथ-साथ क्रिया-विशेषण भी सम्मिलित हो उसे वाक्य मानना चाहिए।^२

१- डा० रामसूरत त्रिपाठी, सं० व्या० ६०, पृ० ३३८

२- वही- पृ० ३३८

× ३- वही-

(३) "वाक्यार्थस्य विशेषणम्" - यहाँ विशेषण सहित क्रिया ही वहाँ वाक्य होता है। इस वाक्य में अव्यय कारक और विशेषण की क्रिया के ही विशेषण मान लिया गया है।

(४) "एकतिष्ठ०" - यहाँ एक क्रिया ही उसी की वाक्य कहते हैं। जैसे बोलो, खो जादि। यहाँ खोती, खो, पूरा एक वाक्य है।

२५९- प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि का विचार है "तिष्ठ० तिष्ठ० तिष्ठ०" अर्थात् एक ही तिष्ठ०त पद या एक क्रिया नहीं बल्कि एक से अधिक क्रियाएँ भी हो सकती हैं। जैसे पाक होता है। इस मत का समर्थन यूनानी विद्वान् वास्तू ने भी किया है।

२६०- हिन्दी के सुप्रसिद्ध वैयाकरण श्री कामता प्रसाद गुप्त ने वाक्य को परिभाषा निम्न दी है- "एक पूर्ण विचार व्यक्त करने वाला शब्द समूह वाक्य कहलाता है।" अर्थात् वाक्य की हम यूँ कह सकते हैं "वाक्य वह साधक शब्दों का समूह है जो विचारों को व्यक्त करने की दृष्टि से अपने आप में पूर्ण हो।

२६१- कानपुर जलपद की बीली लिखित रूप में पूर्णतया निबद्ध नहीं हो सकी। यद्यपि इसके लेखन में शुद्ध नागरी लिपि का प्रयोग होता है किन्तु यदा-कदा उर्दू तथा महाजनी लिपियों का प्रयोग हिन्दी (साहित्यिक) को मिला दिया जाता है। यह लिखित रूप में अधिक व्यवहृत न होने के कारण, बीली का प्रसार उच्चरित रूप में ही अधिक है। बीली के लिखित रूप में न होने के कारण इसके प्रसार में बाधा पड़ती है। प्रसार के अभाव में वैज्ञानिक

०- वही पृ० ३३८

१- डा० राममूरेश त्रिपाठी, सं० व्या० ५०, पृ० २३१

२- वही-

पृ० ३०

वर्धमान अधिक सरल है क्योंकि परम्परागत ऋषियों से पूर्णतया मुक्त है।

- २६२- इस जलपद की बीली में सामान्यतः कर्ता, कर्म तथा क्रिया—
वाक्य का यह पद क्रम रहता है परन्तु इस क्रम का बीलते समय लोग प्रायः
उत्सर्जन करते पाए जाते हैं जब जिस भाव पर बल देना होता है, उमा
के अनुसार तुम्हें परिवर्तन कर लिया जाता है। जो सामान्य वाक्य
होगा— “मया बनिया ने है।” अब, यदि इस वाक्य में जाने पर बल
देना है तो इस प्रकार कहें — “मया नेह बनिया।” यदि काम पर
जोर देना है तो कहें — “बनिया नेह मया।” प्रायः विशेषण
विशेष्य से पूर्व ही जाता है। जैसे— “इया कारो नहया जाय।” परन्तु
कभी-कभी यह क्रम भी बदल जाता है। जैसे — “इया नहयाकारो है।”
यहाँ संज्ञा के गुण पर जोर देने के कारण विशेषण विशेष्य से बाद में
जाया है।

- २६३- वर्धमान क्रम में पता चलता है कि यहाँ की बीली में छोटे वाक्यों
के व्यवहार की प्रवृत्ति विशेष प्रचलित है। अधिकांश वाक्य दो, तीन,
चार तथा पाँच शब्दों के विशिष्ट-क्रम गठन से बनते हैं जैसे— तुँ है।
मौला नहीं लायिका। बाद के साथ का कहे पड़ते हैं। इयोराम मौला
नहो भावत जाय। पहिले तो रार करते हैं बाद के तीली-पीची।
जहाँ कहां तीनों की बड़े वाक्य बीलने से पड़ते हैं वहाँ भी वे बड़े वाक्य
को छोटे-छोटे कई वाक्यों में तोड़कर बीलते हैं। यदि बीलत नहो कर
पाते तो हलक-हलक कर उनका उच्चारण करते हैं। प्रायः ऐसा स्था में
पूर्वोक्त वाक्य-खण्ड का अन्तिम शब्द, जानामा वाक्य के पूर्वोक्तों के पूर्व में
जोड़कर पुनः उच्चरित करते हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति लम्बे कथन (वाक्य)

या कहानी जादि कहने के अवसरों पर अधिन देखा जा जाता है। यथा-कदा सामान्य बाललोक में भी इस प्रवृत्ति के स्थान होते हैं जैसे-- "एक बहार का सुसज्जित है बिबाव मा, बिबाव मा ली कुर्सी ससुरारें गा, ससुरारें गा ली कढ़ी लॉय या फिली, कढ़ी फिली ली बड़ो नाकू लाग, नाकू लाग लाग ते नावें पूछे, नावें पूछे पर का बलिमा।"

२६४- इस तरह तपु वाक्यों का प्रयोग इस बीलो को सामान्य प्रवृत्ति है। लिखित वर्णों की छोड़कर शेष सभी लोग तपु वाक्य का ही प्रयोग करते हैं।

२६५- वाक्य के प्रारम्भ में प्रायः सभुक्त्य बोधक अव्यय "लो" या "ली" अव्ययों से आता है इसके अनिश्चित भी, फिर, ली फिर, ऊँजर, ऊँजर फिर, बैसे बाद जादि आता है। इस प्रकार कोई वाक्य या स्थान पूरा का पूरा एक-दूसरे से सम्बद्ध रहता है और इसी भाँति में प्रस्तुत होता है।

२६६- कानपुर जनपद की बीलो के वाक्य जिन विभिन्न शब्दों या पदों के योग से गठित होते हैं, उनके गठन की भी एक व्यवस्था है। साधारणतया बीलो में इस व्यवस्था का पालन भी किया जाता है। प्राचीन भा. भा० की तरह श्लिष्ट प्रयोग इस बीलो में नहीं के बराबर हैं। वस्तुतः यह बीलो अनिश्लिष्टावस्था की ओर अग्रसर है। श्लिष्ट भा. भा.ओं के वाक्यों या शब्दों के गठन-क्रम में कोई निश्चित व्यवस्था आवश्यक नहीं, किन्तु इस व्यवस्था में शब्दों या पदों का वाक्यों में स्थान निश्चित होता है। यह शब्द या पद अपने स्थान से हटकर अपने अभाष्ट वर्णों को सिद्धि नहीं करा पाते। परन्तु कानपुर जनपद की बीलो पूर्णतया अनिश्लिष्ट भी नहीं है, अतः इस बीलो में स्थान का आधारेण महत्व नहीं है, फलतः आवश्यकताानुसार स्थान परिवर्तन करके भी अपने वर्णों को प्राप्ति कर लेते हैं।

२४०- कानपुर जनपद की बोली में एक शब्दीय वाक्यों को भी यौगिक रहते हैं— जार्थी । एक पूर्ण वाक्य है जिसका मतलब है— मैं जाता चुकती तरह प्रश्न और उत्तर भी एक शब्दीय होता है— कहाँ (वह कहाँ था)।

२४१- कानपुर जनपद की बोली में वाक्यों के गठन में शब्द क्रम की विशेष महत्त्व दिया जाता है । शब्द-क्रम गठन में प्रायः शब्दों के पारस्परिक सम्बन्धों की ओर विशेष ध्यान रखा जाता है। वाक्यों में प्रायः विच्छिन्न सम्बन्ध पदों या शब्दों को ही वास्तविक घटक के रूप में संगठित करते हैं अधिकारी वाक्यों में एक कर्ता तथा एक क्रिया होती है । कर्ता का प्रयोग पहले तथा क्रिया का प्रयोग बाद में किया जाता है यथा— “दादा बोलेस ।” इस वाक्य में “दादा” कर्ता है, उद्देश्य है । “बोलेस” क्रिया है विषय है । साधारणतया कर्ता क्रिया अथवा उद्देश्य विषय का यही पूर्ण क्रम रखा जाता है परन्तु जब विशेष स्थिति कर्ता पर अधिक जोर देना होता है तो कर्ता का भी पर प्रयोग होता है । यथा— “ना राम , “गाइ रावे” । अर्थात् “गया राम”, “गया रावे” । इस क्रम-भेद में जब भेद बहुत कम होता है किन्तु वाक्य के परिवर्तित अर्थों पर बल अवश्य आ जाता है ।

२४२- कानपुर जनपद की बोली में वाक्यों का द्विवचन प्रयोग प्रायः मितता है। क्ताधातु तथा सुरु की व्यवस्था में भी ये पूर्ण क्रम विशेष प्रभाव ला देता है। वस्तुतः क्ताधातु या सुरु के प्रभाव से वाक्य के गठन में पारस्परिकता आ जाता है, साथ ही वाक्य परिवर्तन से क्ताधातु या सुरुधातु की व्यवस्था पर असर पड़ता है। यथा—

रामू बीघरा , का कुताव् (रामू बीघरा, की कुताबी)

रामू बीघरा की कुताव (रामू बीघरा की कुताबी)

इस प्रकार के वाक्य गठन में विशेषण शब्दक्रम पर बसाधात तथा सूर का और बसाधात एवं सूर पर शब्द-क्रम का प्रभाव पड़ता है।

२७०- कानपुर की बोलो के भाषा प्रवाह में सम्भाव्यताओं का विशेष प्रभाव पड़ता है। विराम ब्यं विराम के प्रयोग से अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। जैसे-

(१) सॉपे मरी, ना ताठो टूटे (सॉपे मरी, ताठो न टूटे)।

(सॉपे मरी ना, ताठो टूटे)

(सॉपे न मरी, ताठो टूटे)

(२) बुझी कमार ; बनके कसत है (बह कमार, बनकर कसता है)।

बुझी ; कमार बनके कसत है (बह, कमार बनकर कसता है)।

(३) रौंकी, ना रॉय देव (रौंकी, मत जाने दी)।

रौंकी ना, रॉय देव (रौंकी मत, जाने दी)।

२७१- तथु या छोटे आकार वाले छोटे वाक्यों के अतिरिक्त दीर्घ या बड़े वाक्यों के वाक्यों का प्रयोग भी यथा-यथा होता है। बड़े वाक्यों का निमाण प्रायः इन विभिन्न परिस्थितियों से होता है-

१- वाक्य में कर्ता, क्रिया के अतिरिक्त कर्मादि का योग करने - ऐसी स्थिति में साधारणतया कर्म आदि को कर्ता के बाद तथा क्रिया के पूर्व रखते हैं जो बरेदो बेर सायेन् । किन्तु जब कर्म पर जोर देना होता है तो उसे भी क्रिया के बाद रखते हैं। यथा-बरेदो सायेन् बेर । श्रवाह जोसि सेत । कु सफरो छोरत हैं हाथि ले ।

२७२- २- इसी प्रकार अन्य शरक रूप भी सामान्यतया कर्ता के बाद तथा क्रिया के पूर्व प्रयुक्त होते हैं विशेष कर देने पर कर्ता और क्रिया के बाद भी इनका प्रयोग होता है। यथा-

२७३करण- बरेदो हाथि ले जाम टोरेन् । (चरवाहों ने हाथ से जाम तोड़े)।

बरेदो जाम टोरेन् हाथि ले । (चरवाहों ने जाम तोड़े हाथ से) ।

२०४- सम्प्रदान-

दादा का लॉय का कै (दादा के लिए लाना दो)

जब लाना पर और देना होता है तो कर्म, कर्ता के पहले वा जाता है तब सम्प्रदान शब्द और क्रिया जाती है। यथा- लॉय का दादा का कै । (लाना दादा के लिए दो।)

२०५- अपादान -

कृत ते गिरा । (कृत ते गिरा ।)

कर्म युक्त होने पर अपादान के बाद कर्म तब क्रिया जाती है।

यथा-

कृत ते तरका गिरा । (कृत ते लड़का गिरा ।)

किन्तु विशेष क्त होने की स्थिति में अपादान का प्रयोग कर्म-कारक के क्रियादि के बाद होता है। यथा-

तरका गिरा कृत ते । (लड़का गिरा कृत ते ।)

वुजो कूद ना ठेला ते । (वह कूद गया ठेले से ।)

२०६- अधिकरण-

वुजो हप्परा माँ है । (वह हप्परा में है ।)

मंजूर शर माँ हैं । (मंजूर सेत में हैं)

कतने की विशेष स्थिति में कर्म तथा अधिकरण कारक के बाद कर्तादि का प्रयोग होता है। यथा-

हप्परा माँ है वुजो । (हप्परा में है वह ।)

शर माँ है मंजूर । (सेत में हैं, मंजूर ।)

२७७- संज्ञा को भाँति वाक्यों में सर्वनाम का प्रयोग होता है। यह सर्वनाम बनें तथा संज्ञा शब्दों के साथ बातें हैं इनका प्रयोग सामान्यतया क्रिया से पड़ते होते हैं। यथा-

वृद्धा राम् का सेतवा बाय् । (वह राम का सेत है ।)
 रायें जीसा मारतु है (रायें उसकी मारता है ।)

जब सर्वनाम पर विशेषण रख देना होता है तो इनका प्रयोग वाक्य के अंत में भी होता है । यथा-

रायें मारत है जीसा ।
 साना सात रहाय वृद्धा ।

२७८- वाक्यों में नाम पदों के साथ विशेषण और क्रिया-विशेषणों का प्रयोग संज्ञा एवं क्रिया के पूर्व होता है-

बच्चा घर पर है ।
 हुन् तेज पडरतु है ।

परन्तु रख देने की स्थिति में इनका प्रयोग अन्यत्र भी हो सकता है। यथा-

घर पर बच्चा है ।
 तेज पडरतु है हुन् ।
 बच्चा
 हुन् पडरतु है तेज ।

२७९- वाक्यों में एक से अधिक विशेषण तथा क्रिया-विशेषणों का प्रयोग मिलता है, किन्तु जैसा कि पहले कहा जा चुका है, छोटे-छोटे

वाक्यों का प्रयोग अधिक भिन्नता है, अतः विशेष स्थिति पर ही इनका प्रयोग होता है। यथा-

बुढ़ी बहुतें तेज चलत है ।

बड़ी नीकूरानो बेटो है ।

२८०- वाक्यों में आवश्यकतानुसार एक कर्ता या क्रिया से अधिक का प्रयोग भी भिन्नता है । यह आवश्यक नहीं कि एक ही कर्ता या क्रिया रहे । इस तरह एक क्रिया के कई कर्ता और कई कर्म भी हो सकते हैं ऐसा प्रयोग लम्बे वाक्यों के घातने पर होता है। यथा-

कस्तू भारी दुल के लीत्-रोवत् जात्ती ।

झुजा , रामू बी रहीस बनिया माँ वाम बीर के टोरत ते।

२८१- वाक्यों में कमयानुक्त अव्यय शब्दों का भी प्रयोग होता है । इनसे कैल, काल बीर गति आदि की स्थिति स्पष्ट हो जाती है। अतः वाक्यों में इनका प्रयोग बहुधा होता है। इनके योग से वाक्य लम्बा हो जाता है । यथा-

कु जागे-वाहै कई न भिंसे ।

बीर एक बेर माँहला जादा जात् छु।

२८२- वाक्यों में, वाक्यों स्व फलों को जोड़ने वाले वाक्य संयोजक स्व पद संयोजक अव्ययों का व्यवहार होता है । इनके योग से वाक्य बड़े हो जाते हैं । वाक्यों में इन अव्ययों के प्रयोग में इस बात का विशेष ध्यान रहता है कि अनावश्यक सामग्री न जुटने पार तथा आवश्यक तत्त्व निश्चय भी न पार अन्यथा वाक्य की प्रकृति नष्ट होने का भय रहता है। यथा-

वह बार बी बी ने ।

तुम सामने ते हट जाव् नहाँ ती ठाक न होई ।

तुम जाव् बाँकी हम देस लेखे ।

२८३-

कानपुर जनपद की बीली में प्रायः कुछ लोग पादपूरणों (तन्त्रिया-क्ताम) का प्रयोग करते हैं । यहाँ की बीली में सभी लोग नहीं बल्कि जो लोग जादी हो जाते हैं वही इनका प्रयोग अधिक करते हैं । वे लोग इनका प्रयोग अनावश्यक स्थानों पर भी करते हैं । यहाँ की बीली में निम्न-लिखित पादपूरक अधिक प्रचलित हैं— बहने-बहने, जस।जस समय लेव , त्नुक, किनुक, त्नुक इहाँय, देता, का समर्पव , ती फिर, का बाय बि, येसेवाद, मोरवा , हम बतामन, कतामन, जऊर , हाँ ती जादि । बीता जब बजता की बात काटते हुए बीच में बीलता है तो वह नहाँ, नोह्य, रुकी, का मा फिर, ती जादि पादपूरणों का प्रयोग करता है ।

२८४-

प्रायः ग्रामोण लोग अपने दैनिक वतालाप में बार-बार शपथ-गृहण करते पाये जाते हैं । वे लोग आवश्यक-अनावश्यक सभी स्थानों पर इनका प्रयोग करते हैं । सामान्यतया लोग दूसरों की विश्वास दिलाने के लिए देवी-देवताओं, देटा-बेटों एवं अपना या अन्य प्रिय वस्तुओं का नाम लेकर शपथ लेते हैं - बिधा सम, गंगा सम, जमुना ती, सच्ची काम है, रामजसम, बाप जसम, हमार जसम, मया जसम, मवान जसम जादि अधिक प्रचलित हैं । इनके अतिरिक्त गंगा तन हाँथ करतु हन् , जमुनातन् हाँथ करतु हन् जादि का भी प्रयोग किया जाता है । बहीरों एवं मल्लाहों गंगा मया, जमुना मया, गंगादय, जमुनादय जादि शपथों की बात-बात पर गृहण करने की प्रथा भी प्रचलित है ।

२८५- कानपुर जनपद की बोलों की स्थानीय विशेषताओं में मुहावरों और कहावतों हैं। वक्ता प्रायः अपने बातलाप में मुहावरों एवं लोकोपित्यों का प्रयोग करते रहते हैं। इन लोकोपित्यों में कौन-न कौन सारगर्भित क्या भी हुयी होती है।

२८६- यहाँ के अधिकांश मुहावरों अपने शुद्ध रूप में साहित्यिक (स्टैन्डर्ड) हिन्दी में पाए जाते हैं। यहाँ के मुहावरों एवं लोकोपित्यों का संकलन कन्नौजी एवं अवधी बोलियों तथा लोक साहित्य के अध्ययन में हो चुका है, किन्तु यहाँ पर अश्लील मुहावरों एवं कहावतों का कसौटी प्रकाशन है जो सामान्य हिन्दी के पाठक के लिए सर्वथा नवीन होंगे। इन्हें यहाँ मसलें कहते हैं। बागी कुछ बातें प्रचलित एवं स्थानीय मुहावरों तथा कहावतों को प्रस्तुत किया जा रहा है।—

- १- काने माँ तेस डार के परें ल ।
- २- सबरें घान बाइसे सेर लउतत हो ।
- ३- करैये माँ बार हैं ।
- ४- तुम्हरी बाँच मजबूत हो ।
- ५- गुर मरौ हँकिया दिखावत हो ।
- ६- गुर बाँये, फुआ का बान करे ।
- ७- बाँ मुँह और मरु के दार ।
- ८- सीखीन बुढ़िया बाँखटाइ का लोधा ।
- ९- बैरा कटे फड़ोना ज्वाय ।
- १०- धोबी के कुआ न धर के घाट के ।
- ११- कसो माँ नाय दुही करम की दोषन के ।
- १२- तेसो का तेस जरे मसालको को लतो फाटे ।
- १३- सुप बोले तो बाले ये कसो बोलत हो ।
- १४- रसरी जरिगे ये रँठन बाँकी ।

- १५- गवि जा जोगी जोगना, जाम गवि मा सिद्ध ।
 १६- गवि के गिटेवा परगू होत है ।
 १७- घर के लरका सोई चाटें समझियाने के चाटें राम् ।
 १८- एक हाथ नीं भेता एक पाँ लाठो ।
 २०- नउबा के बार, सामने जावत हैं ।

२८८- कानपुर जनपद में प्रचलित कहावतों एवं मुहावरों में अंतर कर पाना काफी मुश्किल है क्योंकि यहाँ ये सब "मसल" के नाम से जाने जाते हैं, यहाँ की ये "मसलें" घर, प्रकृति, कृषि, वपारों आदि के साथ-साथ जातीय विशेषताओं के लेकर ज्यादा प्रचलित हैं-

१- बाढ़ पूत पिता के धर्म ।

सैती हाँवें अपने कर्म ।

२-उत्तम सैती जो हर गारहा जीर नहीं ती जहाँ रहों । अपना-

जो हर जीत सैती लकी, जीर नहीं ती लकी-लकी ।

अबिन केतन सैती कर, बिम मेयन के रार

दिन मेहरारू घर कर, चौदह सास सवार ।

४-उत्तम सैती मध्यम धान, निगिध चाकरी मोस समान ।

५-बारस के सैती कर, मोस भाग के सा य ।

एक सप्तम की कउन क्तावे, सात जनम तक जाय ।

६-मल्लि भोजन फिर स्नान, बाद के पूजा सोताराम ।

७-जैहू का काम जैही ते साजे, अगर कर ती लब्दा बाजे ।

- ८- सी-सी बूझ साथ बिलारी हल की आवे ।
 ९- पहिले मर्दिमान , फिर दहिमान , फिर ती कैमान ।
 १०- कड़ा का छड़ा कबहुँ न कड़ा (छोटा) ।
 ११- वहाँ राजा मौज कहाँ गंगुवा तैसा ।
 १२- बाद परी ती खेतो नहाँ ती कूड़ा रैता ।
 १३- जब हथिया पूँह छिटावे, पर कठे जुँहा आवे ।
 १४- पौन को उतरा, बाज साथि कूतरा ।
 १५- सफा बादर ताल, सुद्ध मंगि ताल ।
 १६- बहोर किती फिल पड़े, तऊ तीन गून हीन ।
 उठनी, कठनी, बोलनी तीन बिधाता हीन ।
 १७- बाहिर की पैट गहिर, बाप्हन का पैट मंडार ।
 १८- अहिर नहरिया एक जात, ती दुपहरी मीरि रात ।
 १९- अहिरा फिल न कीजिर , जी बोलै सलमाव ।
 कन्दन इत कटाय के, कहेसे पीरि पाव ।
 २०- बार कनामत पूले बासि, बाहूमन ऊले नी नी बासि ।
 २१- मरी बहिया बाप्हन की, मरा मुरिया बाप्हनकी ।
 २२- कायथ का बच्चा कबहुँ न सच्चा
 जी सच्चा ती मदहा का बच्चा ।
 २३- कायथ कड़ा एक जात ।
 २४- बार जहाँ काशी, जहाँ न बात जाशी ।
 २५- बनिया जब उठावे ती भिचा का बोहा छतावे ।
 २६- सासी बनिया तलत बाँट ।
 २७- बजरन की तीन पाव, बनियन की सेर ।
 २८- बाप्हन कूता हाथी, ह न जात के साथी ।

- २९- पीड़न माँ कड़वा बी मरन माँ मरवा ।
 ३०- नई मरनिया बाँस की नैलना ।
 ३१- कमार के ढाहँ फरौ जवा होत हो ।
 ३२- कहे ते कुम्हार नदहा पे नहों चूता ।
 ३३- जीत चिन्नी मियाँ पैरू ।
 ३४- तुरक मरत तो बेरना ।
 ३५- सी सुनार की एक सुहार की ।
 ३६- डोसो पाँतो बाबिया, उल्टो मूँह सुनार
 ३७- तैसो ते का बाँवो पाट, उर पे फूँरा उर पे लाठ ।

२८९- वहाँ पर जस्तोत मुहावरों एवं कहावतों का मो काफी प्रचलन है किन्तु उन्हें यहाँ प्रस्तुत नहीं किया गया है ।

“कानपुर जनपद की बोली” में साहित्यिक हिन्दी की भाँति वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

- १- साधारण वाक्य
- २- म्मि वाक्य
- ३- संयुक्त वाक्य

५. १ साधारण या सरल वाक्य-

“कानपुर जनपद की बोली” में साधारण या सरल वाक्यों का प्रयोग अधिक है । ये वे वाक्य हैं जिनमें एक उद्देश्य तथा एक विषय होता है। जैसे-

फरया जात हैं (फरया जाते हैं) ।

इसमें “फरया” उद्देश्य तथा “जात हैं” विषय है, किन्तु कभी-कभी इनमें एक पद का उल्लेख नहीं किया जाता है। ऐसी परिस्थिति में मात्र एक पद

में ही पूरा वाक्य सम्पन्न जाता है। किसी एक पद का उल्लेख न करने को प्रवृत्ति काफ़ी है। यह स्थिति परिचित व्यक्तियों में काफ़ी होती है। अपरिचित व्यक्तियों में पूरा उल्लेख दिया जाता है। प्रायः प्रश्न, शंका, जिज्ञासा, स्वीकृत या अस्वीकृत की सूचना एवं आज्ञा आदि देने के समय परिचित व्यक्ति किसी एक पद का उल्लेख नहीं करते हैं। अतः उद्देश्य और विषय के अनुल्लेख के आधार पर इसे दो भागों में बाँटते हैं-

२१०-

(क) उद्देश्य पद होन वाक्य

(ख) विषय पद होन वाक्य

५.१ क- उद्देश्यपदाहीन वाक्य -

इस प्रकार के वाक्यों में उद्देश्य पद का उल्लेख यद्यपि नहीं होता तथापि विषय पद से ही उद्देश्य का उल्लेख हो जाता है। यथा-
 आहा ? आहा ? आदि । जायें ? जायें ? इस वाक्य में स्पष्ट है, क्या तुम जायें ? क्या तुम जायें ? । इसी तरह "जायत् है" तथा "जाय् है" । आदि वाक्यों में बोध हो रहा है कि कोई व्यक्ति या पदार्थ "जा रहा है" तथा "जा रहा है" । इन वाक्यों में लिंग और वचन का बोध विषय से ही हो जाता है ।

२११- ५.१ ख- विषयपदाहीन वाक्य -

विषयहीन वाक्य प्रायः छोटे होते हैं तथा इनका प्रयोग प्रश्न-उत्तर रूप में होता है । परन्तु इनमें पूर्ण भाव का बोध होता है। यथा-
 कौ? मौरवा, का ? हम, वेर आदि । यह केवल एक शब्द नहीं बल्कि पूर्ण वाक्य हैं। यथा-

कौ (जाय) ? - (वह कौन है)

का (जाय) ? - (वह क्या है)

इसी तरह यदि कोई प्रश्नकर्ता प्रश्न करे "उसने जिसकी मार" या "वह किसे मारा है" तो उत्तर मिलेगा "मोरवा" और "हम" बर्णात् -

मोरवा (उत्ते मुझकी मारा है)।

हम (हम या मैं मारा हूँ)

(हम जा रहे हों)

किस प्रकार उद्देश्यवाचक वाक्य में विधेय पदा का बोध होता है उसी प्रकार विधेय पदा के द्वारा उद्देश्य पदा का बोध हो जाता है।

२९२- ५.२ मि वाक्य

मि वाक्य वे वाक्य हैं जिनमें मुख्य उद्देश्य एवं मुख्य विधेय के अतिरिक्त एक या एक से अधिक अन्य उद्देश्य विधेय हों। ऐसे वाक्यों में प्रायः एक उपवाक्य प्रयुक्त होता है जो प्रयुक्त उपवाक्य कहते हैं। ऐसा वाक्य इसी के बाधक होते हैं तथा इसके प्रयोजन का बोध कराते हैं। ऐसे वाक्य बाधित उपवाक्य कहलाते हैं। बाधित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

२९३- ५.२ क- संज्ञा उपवाक्य-

यह वाक्य संज्ञा या संज्ञा वाक्यांश के बने होते हैं। ये वाक्य प्रायः सम्बन्ध बोधक वाक्य "कि" से प्रारम्भ होते हैं। यथा-

साक्षाराम नेन् कि हम कहें।

२९४- ५.२ ख- विशेषण उपवाक्य-

यह उपवाक्य कुछ उपवाक्य के किसी नाम को विशेषण का बोध कराते हैं यह उपवाक्य प्रायः सम्बन्धवाचक सर्वनाम जो, सी से

प्रारम्भ होते हैं यथा-

जो रामू राम की ली विवाह हुआ ।

२९५- ४.२ ग- क्रिया-विशेषण उपसर्ग-

ये उपसर्ग मुख्य उपसर्ग को क्रिया की विशेषता बताते हैं। यह उपसर्ग प्रायः जब, तब, जहाँ, वहाँ, जितना, जितना आदि संयोजकों से प्रारम्भ होते हैं। वाञ्छित वाक्य वाक्य में समानाधिकरण भी हो सकते हैं। यथा-

जहाँ जात हो कुँ सूखा भित्तू है ।

जितना करिही तितना फरसा भित्तो ।

२९६- ५.३ संयुक्त वाक्य -

ये वे वाक्य हैं जिनमें दो या दो से अधिक उद्देश्य-विधेय युक्त मुख्य उपसर्ग हों, जो वाक्य में समानाधिकरण हों अर्थात् ये एक-दूसरे के वाञ्छित न हों। ऐसे वाक्य संयुक्त वाक्य कहलाते हैं। ये वाक्य पुष्क-पुष्क बने वाञ्छित उपसर्गों से भी युक्त हो सकते हैं। संयुक्त वाक्य के समानाधिकरण वाक्य प्रायः अकार, जो, कब, एही, ते, ते आदि संयोजकों से प्रारम्भ होते हैं। यथा-

किसनू काल जाये बी बाज बीनी ।

बादा मणी बाजी करत हो रही ते मारी जात हो ।

मेवा होठ बोन्हीं, आँई छुरी के उलाने जात हो ।

२९७- वाक्यों की उद्देश्य-विधेय रूप के आधार पर गठित करने की व्याकरणिक विधि को वर्तमान भाषाविद् वैज्ञानिक दृष्टि से अधिक उचित

नहीं मानते क्यों कि उद्देश्य-विषय की आवश्यक ज्ञान-तो का पूर्णतया प्राप्त होना अनिवार्य होता है । इस प्रकार भाषा वैज्ञानिक वाक्यों की वैचारिक सिद्धान्तों के आधार पर गठित करने की बीधा, व्यवहार में वक्ताओं द्वारा उनकी प्रयोग प्रक्रिया के आधार पर तथा भाषा के आधार पर वाक्यों को गठित करना अधिक ठीक मानते हैं ।

२९८- "कानपू जगद को बीता" में वाक्यों को व्यावहारिक वाता-
ताप तथा भाषा या वर्ण को लक्ष्य करके वनेकामैक भागों में बाँट सकते हैं।
यहाँ कुछ बातें प्रचलित भेद प्रस्तुत किये जा रहे हैं -

५.३.१ विधान सूचक-

ये सरल वाक्य होते हैं । इनके द्वारा किसी विशेष लक्ष्य (क्रिया)
का बोध होता है । यथा-

लड़का जातू है ।

बादा खातू है ।

२९९- ५.३.२- निषेध सूचक -

ऐसे वाक्यों में क्रिया या किसी गुण के निषेध का बोध होता
है । ये निषेधात्मक शब्द नहीं, न, मत बादि हैं जो गुण या विशेषण
के बाद तथा क्रिया के पहले प्रयुक्त होते हैं । यथा-

बूझो ना कू नहां बाय् ।

मर्या हुन न जाय् ।

यार उनते मत बीता ।

300- ५.३ ३- आज्ञासूक्त -

इन वाक्यों में कहीं पर तोषे कहीं प्रस्ताव रखा जाता है तथा उसे कार्य करने के लिए बाध (बाध्य) दिया जाता है। यथा-

बुद्धी जानयुं वाय् ।
तुम टष्का तुरते साय् ।
वरं बबुधा जत्वा बुधाय देव् ।

301- ५.३ ४- प्रश्नसूक्त-

इन वाक्यों में प्रश्नवाक्य सर्वनाम का प्रयोग कर बनता होता है प्रश्न करता है तथा वह उक्ति उतर को जिज्ञासा करता है जिज्ञासा उक्ति विवरण प्रतीत प्रस्तुत करता है। यथा-

तुम कहाँ रहारु ही ?
बुद्धी क्या जातु है ?
कृष्ण का कहात है ?

302- ५.३ ५- विस्मयसूक्त -

ये वाक्य किसी की पुकारने, बुझी प्रकट करने, धृष्टता प्रकट करने वाला तथा आश्चर्य प्रकट करने पर बोलते जाते हैं। वाक्य के पूर्व हो विस्मयसूक्त चिह्न का प्रयोग किया जाता है। यथा-

वरं ! इयो वा सुगता ?
हाय ! अब मर गिने ।
ओ ! राम ! त्वो जाव् ।
हे राम ! आज तो नाक कटी ।

३०३-४. ३ ६- समाधानात्मक -

ऐसे वाक्यों में किया निश्चय का बोध नहीं होता बल्कि एक अनुमान ही लग पाता है। यथा-

बूढ़ी बानसूरी ना होई ।

कलकुआ हात होई ।

बुढ़ काल गे छुहैं ।

३०४-४. ३ ७- उच्छा सूचक -

ऐसे वाक्यों को आशीर्वादोत्सुक वाक्य माना कहते हैं। इनमें बड़ों के लिये शीर्षकों को उच्छाहनों को तथा शीर्षकों के लिये बड़ों के लिये आदर्शपूर्ण वाक्यों को प्रयुक्त किया जाता है। इसमें यह आवश्यक नहीं कि उच्छाहनों को ही कामना को ज्ञात, बुराहनों को भी कामना को ज्ञात किया जा सकता है। यथा-

बुढ़-बुढ़ जिया बडवा ।

पायि लागी बाबा ।

हत् तुम्हार नाम् होय ।

हत् तुम्हें हुला बाव ।

कहाव् कस हाल है बेटा ।

३०५-

आज स्टैन्डर्ड हिन्दी के व्यापक प्रभाव से आन्ध्र प्रदेश को भीलो में दिन-प्रतिदिन परिवर्तन जात जा रहा है। प्राथमिक पाठ-शालाओं, कालों, विनास को नई संस्थाओं एवं यौनिकों, डाक्टरों, बस्पातालों, कौटुम्बिकों को दीर्घ-युव एवं अन्य संस्थाओं से हम दिशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं।

बाज अधिकतर शिक्षित-वशिक्षित ग्रामीण ट्रान्जिस्टर का प्रयोग कर तथा बड़े हुए यातायात के साधनों से सम्पर्क कर नित नवीन शब्दों की ग्रहण कर बोली के (ठेठ) शब्दों का परिवर्तन कर रहे हैं। इन सभी कारणों के व्यापक प्रभावों से बोली के वाक्य भी नए प्रभाव ग्रहण करने लगे हैं तथा उनका नए स्वरूपों में ढलना सहज-संभाव्य होता जा रहा है।

परिशिष्ट

- १- **बोली के नमूने**
- (१) लोक कथाएँ
(२) लोकगीत
- २- **सहायक ग्रंथ-सूची**

परिशिष्ट

लोक-कथाएँ

जन्म का जन्म

मेवालाल सचान

कान्हा खेड़ा, पुतरायाँ, ज्ञानपुर

उम्र - ५० वर्ष

माता काँ बियाव पुत के हठी

कहाव बिधाता ने कहाँ रबी

- १- रिता फुल चार बाबा रहिये तो अपनू खाना बनावत रहिये । उवे बस्नान् ध्यान् करे ओँ की ने खाना बनाके तो उधे कराहो माँ कासा नाहिँ कूँ ना । यो मंदीवरी भिक्करिया देखत तो बि जाब चार सन्तान् के साथे माँ खान करी कई । जब बस्नान ध्यान करे कराहो ने पाँचिरे जाए तो उवा मंदीवरी कराहो माँ कूँद नै । ती चारी रिता मुनिन् नै कहाँ कि खाना बेकार छुगना तो उन्ने खाना उल्टी तो उस मा सरप के पाँचिरे देखिन् कुछ बाबन् नै । जी बहुत गबब सा नै । बोले हमरें तुम्हरे चारी के पिरा मंदीवरी ने कहाँ बचाए हँ । ती कुछ बाबन् नै मंदीवरी का सबोवन करके लड़की बनाइन् जी अपने पाँचिरे रख लोन्हुन । ती बुआ लड़की सयाम मे कुच् दिना माँ । बुआ बाबन् के सुआपद करत रही । ए दिन बाबन् का सपन दीण भा । लड़की उन्हा झटें, सपन दीण का काम जब न छूटी तो उवा दाँते मे छुटावे लाग । भवानी लोला जैसे गरम् बास रही ना । कुछ बाबन् ने सलाह करे कि जाफुस माँ ती रिसा काम नूँहाय् । एक दिन कुछ राबन्

का का दोन्हुन । रास्ता माँ मँदीवरो बोली है पत देव ! सुनती हूँ
 तुम्हारे नरक माँ नरम गिर जातू है । रावन् बोली दुनियाँ की बातू न
 ते तुम्हें या मतलब । पै कुआ न जानी बोली हमका वफा करतू तुम्हें
 दिखवें, ती रावन् मान ना । कुआ फाँड़ी की बाड़ माँ ठाढ़ छु न
 ती रावन् नरक की बीडा बन्ना गिर ना । कुआ बाहर बाह की
 बोली अब हमार करतू देती बीर भिकारिया बन्के फाँड़ी माँ फुनै रावन्
 दूँतू बन्ने तू फुनै या का म । उवाँहै रावन् ने बियाब ठानी, बी
 हवाँहै सरका रौबो ती बरौदी उठा लाव बी उम्मे हठी कर के बाली का
 का दोन्हुन । जहन बाद के बंद बनी ती । बी बसे या ऊपर के बात
 पूरी फुनै कि "माता का बियाब बी सरका के हठी ।"

ब्यास का वचन

पुनस्तस कौणारिया

बरीली, फुलारिया, कानपुर

उम्र- २० वर्ष

२-

पारा रिसी तब करत ते ती बिरहमा ने उम्हें एक नाम
 बीन्ही । नाव बियाब एक बन्ना एक बहिया ती परवस्त छुँवाने पै
 कु नरमानी उम्मे बहिया ते कही माँ ती कु कहीन् एक ती हमार मह-
 तारी बाय, एक हमार बहिन, यो काम हम न करवें । पै पिलास का के
 बाँसिल माँ पट्टो बाँध के बाँठा दह के बन्ना बीन्हुन । जब बेला ने
 जानी ती कछु कछु पार हमरें सन माँ करी है वुहसे तुम अपनी बेटी सन
 माँ करिही । समय के बात कुछ दिन माँ उनकी हतारी का काम मतावो ती

उन्होंने सुना है नरें माँ बिट्टी लिख के मेरा दानिहू । कुछ बिट्टी
 देख के काम देव निकार के सुना है नरें माँ बधि दोन्हन । जब बुझी
 बोब लह के बोब समुन्दर माँ पहुँची ली बाबू फाँटे माँगसू ली बुझी
 बाबू समुन्द माँ गिरिमा ली बीसा ला गे म्हरौ । उवा गरम् बास
 मा छु गे । म्हरौ जब नरनबानो ली फताहन् नै जार डार के पक्
 लीन्हो जी पेट बाबू करी ली बम्बर तै एक कम्मा निक्की । बाँकी
 स्यान् परबरस मे जी बाप का साथे का देव बाँधि जागू । बात सान नै
 बाद त्रिहाँ मा पारा रिनी पर का लडटे जी हुन बाँके पुकारनू कि
 " फताह म्हरा तै बाव न्हरा हम का पार जाना है । " बाप लाना
 लात् ली ली डेटो क्कानू क्क लान बक्का हम पार करे देली हन् ली
 लड़की जब उनका क्क ठाँ के म्भार धार माँ जागे ली नै बीले डेटो हम
 तुम्हरे साथ बिस्- माँग करे । ली जीहने, क्को न्हाँ म्हराच हमरो
 अवस्था न्हाँ है ऊपर बन्कासू देतो जी मोचे फत् देतो । ली रिनी नै
 म्भार की पुड़िया मारो लड़की मोला साल को छुगे बन्कास माँ कुधिरा
 परना जी कल माँ सिवार ली उम्ने फिर बिस् माँग करी । बुये धर का
 क्की नै जी बुझा न्करया की काम करे लान । जी हत्तरा बुझी धिराय
 पूरा मा । जागे क्कके उवाह सरका ब्यास रिनी मा अर हया जीर
 सत्कीनी क्की बेसी गे राजा सान्तान् मोसम के पिता ब्याव करन् लेन ।

इमान का फल

कुन्दनसिंह ,

माल, पुरायार, जानपुर

उम्र - ३५ वर्ष

३-

जैसे -जैसे एक बलिरिन् रहाय ली बुझा के काम रहाय दूय
 दही देखे का । ली बुझा एक तीय बुझा दूय देखे नै जीर बाँध्या पानी नक्क

लह गे । जब बुद्धा लउटो तो फसल जमी लरका वा डोंटा के समुन्दरमाँ
 हनायि जसो गे । बुद्धा तो हनाय लाम हतै माँ चितित्त बाहँ जी जाये
 फसल उठा के माग जी समुन्दर माँ डार दोन्हेँ ली उवा लउटेके बाहँ
 जी सुर्-रोके ली पावान् धूमत्-धूमत् जागे जी बाँहते सम्मत्ताउन् वि देह
 तोरे पूय्-दूय् के फसल बाँह गे है जी पानो-पानो के फसल लह गे है ।
 येहते पर जाव् हाँ कबहुँ अब केहमानो न करैव् । बुद्धा बिचार। पर बाहँ
 फिर कबहुँ जीहने पानो ना मिसाबो ।

४-

पिसाटो नहाँ साहँ

बीमोराय सिंह

सुबीर, फुहरग्या, कानपुर

उम्र- ३५ वर्ष

एक दायि हमी नायि के झीरा जी रामसेवक माना
 बेलवा सरोद नखतउग ते जागे बारामकी के पाँचै एक मैला में गे तो जब
 बुद्धा बेल सरोद के दिनामान् की ली सौफजाव नखतउग जरे । लखनऊ माँ
 कान् बायि तो दूनी जी मोर्वे बेल तो सरफो माँ पारिगे है येते माके
 बाब कइ ने नीके होटल माँ खाना खये करे । तो बेलवा एक सरायि माँ
 बाधु के एक अच्छे होटल माँ पहुँचि बाब तो जब पता लगाउन् तो पता जसो
 कि मन्दे के बमाना माँ पाँच रुपया छट परतु हो । दूनी जी हिम्मत
 करे बोले यार बिन्दगी माँ फिर जइस समझया पर कि न परी जसो बाब
 साहँ तोन बाय । नीकर पानो लहे जाव् तो बोले "दी टाठी खाना
 साहए । खाना जावो सब सिवाद् ते साउन् जी सा पो के उन्के साथि छुँ"

मेघ के तरंगों को दोन्हे । जो ऊँठला माँ मुँह पीछे के बोले जिसे फसना मे।
 तो बेरा एक फिलेट् माँ थिल ले जाव् हन्ने देली जि हली पन्दा रनफ्या
 हैं तो कुछ बोले मुनी ही खाना तो कुछ टाठो खाय है । ह पन्दा
 रनफ्या कस है तो बेरा बोली पाँच रनफ्या फिलाटी के है तो कुछ
 बापुस माँ बोले कहे ही हाँटा तुम थिना प्ली फिलाटी कसे हा सोन्हेव् तो
 हाँटा बोले कस ही ही हमने नहां साहं तुम्हने साहं हीरं फिलाटी कुछ
 बोले हमने नहां साहं । कुछ बोले हमने नहां साहं तो फिर हया फिलाटी
 कसे पैल दी=छु कुछ बेरा तो बोले मुनी हम मुनी जने ने फिलाटी साहं
 नाहिं जाय जो फसना कसे बाँह दोन्हेव् तो बेरा सैं के पन्दा माँ बोली-
 हम कुछ नहीं जानते आपकी फिलाटी देनी पड़ेगी। तो हाँटा का बागा
 ताव् तो उत्तर निरवान् फलके बोली- तोरो बस्त्रो का जीदीं तारे जब
 हमने फिलाटी साहं नहां बाय् तो कसे फसना दह देन् । अब का हाँटल
 माँ लौमा मका तो कुछ एक पड़े लिले लौगन् ने बताव फया फिलाटी
 नहां मैलाटो हाँटि ही । हयाँ छंड बाय तुम्हने पैल के तरं पानी दुरा
 दीन्ही है । तो कुछ फसना दोन्हुन बोले सारेव यो हाँटल नीखेव् लटपर
 बाय। बेकूफ बना के फिलाटी के फसना सेत् हैं बीर दुनों जे बंट गेट
 बहुबहात जये जाये ।

माग्य बमिष्ट है -

राजाराज

कलासपुर, पुष्पाया, बानपुर

उम्र- ४० वर्ष

५-

एक राजा छी तो दुनों बहुत लालची छी जब जीसे लरा
 पैदा मा तो पीडित ते साहल पूँजी तो पीडित ने बताव् कि तुम्हार
~~लरा पैदा मा तो पीडित ते साहल पूँजी तो पीडित ने बताव् कि तुम्हार~~

लरका बहुत विद्वान्, बी गुणमान् होइ पे एक मन नाव् रोव् दान करी ती
 राधा बीहती पर बाप् लखट के लड़का का उठाउन् बी जल माँ जाके
 एक फेड़े के तरें परि जाव् कु लरका का जब पूछे लाग् ती बुवा रोवन् लाग्
 कउर उषर से संकर पारबती चिता देखे का निखरा ती पारबती जो बीतो
 कि देखी हं बियावान् कौल माँ को रां रही ह्य । ती संकर जो नै पूरी
 क्या सुनार् ती पारबती जो बीतो- कुबामो कु ली ईत्थाम करी ती संकर
 जो बीते फेड़े माँ हुया मूटकी बाँध देव बी येहरे लण्डे का फीसा बना के
 येहे मुँह माँ कर देव जब तक बफार न जई लख तक पी । एही बाद यी मुँह
 छटा लेव करी । पारबती जो नै जइने कर दीन्ही बीर हुन ते जत्तु मे । होतु
 कर्तु बुवा लरका सयान् जा । एक बाँयि एक राक् के बात ती बरात् ती
 बुवा लरका काना रहाय जब बरात् कौल माँ रणजी ती बरात्ति ने उल्ला
 देखे तीन्ही बी कु लरका का कु पसरा कके राजो कर तीन्ही । बीता
 दूल्हा बना दीन्हु ती फिर बरात हुन ते जाने जती , टीका दुबार मा। लड़को
 लड़का बिज्ज गारो माँ पहुँच गे । लड़का बीतो हर्मे पूछे लाग् हो ती लड़की
 बीतो स्वामो किन् कु नहीं बाब । कौन माँ तू चाउर बी हं । बीहं पकार
 देतो हने बीर जोहने चाउर पकार बी खार ती बीहने गारो बाँधे सही-सही
 बना दीन्ही ती लड़की बीतो जब चाहे बी कु होय तुमहो हमार पत् ही ।
 सबेरे लड़को ने राजा ते बात कही ती राजा बीतो तुम दूनी होरे राब करी
 बी बरात हती ती बिचारी लखटने । कु पीछित के बात सही निखरा बुवा
 फिरी राजा बना ।

राधा बर का

ब्रह्म पद त्रिपाठी
 मूला नगर, पुनरिया, गानपुर
 उम्र- ४० वर्ष

६-

बहुत समय की बात जाय कि एक राजा बकरवना होते उनमें कुछ कान बुकरा के छहुर होते ती वुह छहुरे काने मा नाफा बाँधे रहात् ते। एक दिन राजा ने नाऊ का बुलबाव की हमार बार बना जाय ती गाँव के बाहर जाय के पैड़े के तर मिम्मा नाऊ पहुँची जाय । मिम्मा नाऊ ने राजा के बार बनाये जी राजा ने नाऊ ते कही कि तुम गाँव मा जीह ते न बतै। ~~को सज्ज~~ ^{नाऊ} हूँ ते एक सोसम के पैड़े तर कहात है राजा है ती बकरवना फिर मन माँ सोची कि अगर अहूँ बतादेवे ती पता क्ती कि किन्ने कहा ती लोग कीहरे मिम्मा नाऊ ने । कुछ दिन बाद राजा ने वुह सोसम के पैड़े के तक्ता, चारंगी और किंगीरी बनवाये । जे साज बनायी गा ती तक्ता बीसों राजा बकर क्ता, राजा बकर क्ता । तब किंगीरी बीसत् ही किन्ने कहा, किन्ने कहा । ती चारंगी बीसत् ही मिम्मा नाऊ ने, मिम्मा नाऊ ने । ती राजा ने नाऊ का बुलबाव और साज सहित नुवा का घरता माँ नुवा दीन्ही ।

बकर - बीरकल

हुन्नीताल शर्मा

परास, पाटनपुर, कानपुर

उम्र- ३५ वर्ष

७-

याक् दिन बकर बीरकल ते कहें कि जी है चारि चूतिया पकर के लाव । ती बीरकल बीसों कि हम का चार दिना के मीहलत् देव। बीरकल धरे धरे स्वाँधि कि हम चारि चूतियन् का पकरिके क्हाँ ते लावन् जीह राजा का द्यान् । एक दिन जब न गाँव पास ती घर ते निलरि परे । रस्ता मा एक घुडिया जात् लाय ती कुबी जी है कपड़न देर गठरिया अपने मूँडे मा धरे हती जी फिर गयाना के ऊपर कठ लाय ती उन्ने पौँती कहे धाँकी मर्या हं गठरी का मूँडे मा कहे लादे हो ती धाँकेन बीसों

और हमारे नदरिया है कम्बोर तो क्या यह कि वह भी हम लादे हन,
 उन्ने सौचो एक नदरा (चुत्तिया) भित्ति। बोले की तुम्हें राजा
 साहब बुलावू हन। फिर वह जाने बड़े तो एक बूट स्टाय मा एक
 बादमा बस मा चढ़े होल डालू अपने मुँह मा घरे। बोरकत ने पूछा
 कि यां कहे लादे हन तो बुझा कहु कि येसा तरे घर देवे की बादमा जा
 हिन कहे। तो बोरकत बोले तुम्हें की राजा ने बुलाव है। की बोरकत
 इन दूनन का लहके राजा के दरबार मा फैल मे बोले हम बार चुत्तियन् का
 से बायेन, तो राजा बोले बड़े तो छुं है बोरकत बोले हनने बतावतु
 हन तो बोले पछि चुत्तिया तो हुयी थोकेन बाय जोर फिर सारी
 निहा बताहें। येसे बाद बोले दूसर हं बाये होल डालू बोले फिर सारी
 निहा बताहें। फिर बोले तीसर हम चुत्तिया हैं की चुत्तियन् का पकरत-
 फिरतु हन की चउथे तुम चुत्तिया हं की चुत्तियन् का पकरावतु फिरतु ही।
 बोरकत का बुवाय मुन्ने जकर समाने।

नक्सी बात -

राम प्रसाद

फाटपुरा घाटमपुर, गानपुर

उम्र- ३० वर्ष

८-

याकू रहै रिहवा की याकू रहै सौरवा उनका दून मा
 बड़ो दोस्ती ह तो तो एक दिन उनहें कई साथि-पथि के बुलाह न लागू
 रहाय तो रिहवा कहें हम बुलाह बतावन् तुम हिन ते पहायि की बावे
 तो बुलाह लग कहे। तो रिहवा बाबा को कुटोया घुस ने की पकी-
 पकाह जाउर घरी रहाय तो खानू लागू जब बाबा जाए तो उनका सँका
 मे कि हमरी कुटी मा कीडा है तो उह कहें हमरो कुटी मा की है ?
 तो रिहवा बोले कि एक साथि ते फनराँ, फुँकी, की दुरे ते पतास टीरनी
 जोवा मागु जे। दूसरा रिहवा बुला-जात रिहवा ने सँका दे बताह

फिर का हत्ती गैरुन मान कुटी मा जाउर लाय लाग लाय लाग ती
 उनका याद भुलाने । बाबा बाए ती लंका में ती पूँज् की है गैरुन के
 याद भूल ने ती बल्दो का बोले-बुला-बुला-बुला । ती बाबा से उठका
 पूा ने जीर मारतू-मारतू लाल करि दोम्हैन् । ती जब गैरुन मान के
 रिहउन के पाँजर नेती रिहउन दोते- बहुत ह्मे दिहात् ह्व् । ती गैरुन
 रावत-रावत् अपन् कहा बताहन् कि हमारे द्याय उमुवा ने है येसे मारे पूँ-
 फूसे दिहात् ह्मे ।

दानो राजा

विजयनारायण

भुलेश्वर बाटमपुर, कानपुर

उम्र - २२ वर्ष

१-

याक् बार की बात ह्वे वि एक गाँव मा राजा रानी रहात्
 रहय् । उवै राजा साहिब बहुत दानी रहय्, यहाय् तक कि जन्म सब गुरु
 राज-पाट बाद सब दान मा क ठारहन् बाहिर मा राजा न ह्वे मूखेन तक
 मरे लाग । जीत माँ बुये राजा -रानी क् सैठ क्षिमा नीकरी कें लाग् पी ठठ
 उनहन ने दान देव न कंद करी बाहिर याक् दिना मवान् जो एक भित्तारी
 बनके बाये राजा ने उनका अपरें कपड़ा दान मा दीन्है ती जगु पामट छुने।

बालस का फल

सबीवन लाल

कल्यानपुर, बाटमपुर, कानपुर

उम्र - २५ वर्ष

१०-

याक् दफै हमरे गाँव का बच्चा फाटि ना रहा ती
 पानो राति भरि या कल्यानपुर मा मरिना । सकेरे का मोरे गाँव के

बादमी टटरी का हार जाये तो पानीहू पानीहू देखि बाहु लुट जाये।
 सोगन् ने गाँव वालें का झुलावाँ पे किनी खितमा ऊँचै मा हते बुढ़ ली
 झु सुनते न रहॉये तब बफार के ओंठो मा तारवाबू का खर दोन्ही गे
 ली नहर गम के बड़े-बड़े बफार जाह जीर जने -मँजूर जोड़ -जाड़ के
 हाथो बंधावन लाग पे साम तब हाथो न बंधे मे । ली बफारन् ने गाँव
 वालें ते कहाँ कि जापो लोग सख्खीग करी पे मारी गाँव वाले सुन्दे न जा
 ली बफार गुस्सा मा बीली यह हाथो-बाथो नहाँ बंधी जी कसोगा
 हमरे गाँव वाले वाला मा रहॉये पे किता लोसाणी रहाय । जब मख्यार
 मा जब ली देहाँ कि फाँसू ते कत्यानसुँ तब ज्वाहि-ज्वा मारी है । फिर
 बफार जावाँ बीली खर वाला करी यी तुम्हरी वाला का फल जाय ।
 बिचारे बादमी राँवे-पोटें बी बफार ने कहा जब जाँसू बहाय का होई
 तब ली सामे के हाथो बंधा देलें ली, फिर मँजूर जाय तब साम लके
 हाथो बंधे मे ।

हान्नी को बातचीत -

खवाहपूर -पाटमपूर,वानपूर

११- सासू कहै के यहाय ली हमर कहात् रहान् खूब बंधे बठ रहान्
 जबर जने ली नारि प्रिंसफला देखि लान्छेँ ली पवास-जाठि तरकन्
 का खेड़ लोन्चिस् हमार बूता फटहा रहाय ली मार्गे मा हमरँ फिरि
 गेन् । जळियन् ते फिरि उठिके फाँचू पू तन का मार्गेन् । फिर बब्बू
 स्के ते जाफा दूरो जा गिने ली सब तरका क मिलिके प्रिंसफला का घेर
 लोन्ही । पे सासू केर बपरसिना जागा दोच मा । फिरी बब्बू हमरी तान
 चार लवेदो जमा दोन्ही । जी दूसरी तरकन ने तान-चारि बूता फाँचि
 दोन्ही । फिर का जाठ दिना पे झूटो है जी फिर यन्नियन् बन के तयार
 चुगी ।

लौटे ला प्रेम

साहित्यरूप

बिलासपुर, बस्तरपुर, गानपुर

उम्र ३० वर्ष

१२-

यन् रहाय बुझि जा बी बोलै दुह गोड़ी रहायि ली बुझिवा रीच गुलगुला फुल्लारी लीयै का बनावत ली ली बुझि के वही बिटिया एक पट्टई पावै रहाय लीय का जो बुझ भित्त ली बुझा वीयै पट्टई का क बनावत ली ली कसी बुझी पट्टई बीयै बुझ बहुत प्रेम पावत ली । ली जब बुझ दिना मा बुझ बिटिया का बियाव छुगा ली बुझा अपने ससुरार कने ली बुझ पट्टई ने साव फियव होठ दोन्ही ली बीत्यार बुझिबिया बहिनो कडिबिया । उन्ना पाहिन के बीसा लाना क देत थी । ली एक दिन पट्टई बोली- 'तुम बुलतो बहे नहिं जहि ली फुली बीसा परिचान मा बी साव-फियव होठ दोन्ही ली बुझिवा ने बीसे लिखी लीत् के उड़ा द न्ह ली बुझी पट्टई बहुत-बहुत बुझ बिटिया के ससुरार पहुँच मा बीसने बीसा पकर लोन्ही । ज कबहुँ हात-बात लीय का मेव देत ली ।

मिय बढाय चढ़े दाऊन माह

मुराजियेह, मुरीदपुर

बस्तरपुर, गानपुर

उम्र- ४० वर्ष

१३-

एक दफा की बात छै कि एक फर्रारैल गाड़ी मा यात्रा की सीटिवा फिलेट फारम पे पहुँची जाय । उवै अपा फेरनवा सहित जेठे बैठे ते कि टिक्स की पट्टी खी ली उवै बाबू मन् बीसे हम गानपुर का टिक्स क देव व टिक्स लहके गाड़ी का खोजी देखन ली । रेट टैम ते गाड़ी बाह उरिना

बड़ा मोड़ हतो कुछ बन्दो-बन्दो सामान फोरान् बी सुद चढ़ी । उनके
 चढ़ी सन गाड़ी कल कल, जब गाड़ी कल कल ती जोर जोर ते उरि बिल्लाने
 कि हमारे मेहरिया टैसन पे झूट गई । तब कुछ डिब्बा भा बरठे लोग कहान्
 ली अगर तुम रामेंग पड़े होतै तो तुम्हारे मेहरिया न झूटो । तो
 फनेऊ बोले- तुम्हारे रामेंग-बामेंग का परो है । हमारे ती मेहरिया
 झूट गई तो डिब्बा भा बरठे फनेऊ बोले 'मिय चढ़ाय गड़े कुछ माछे'
 बी हुया सन याद होत ती तुम्हारे मेहरिया का पहिले चढ़ाते फिरि सुदि चढ़-
 तै तब तब तुम्हारे मेहरिया नाहि झूटत ती कुजी रौं काग ती गाड़ी का केम्प
 करीगा डीन तब कई निरा देरि भा उरि की मेहरिया जायपाह ।

हरिवर की कुआ

कालका ज्ञानद

वादापुर-जम्बरपुर, कानपुर

उम्र - ३७ वर्ष

१४०

एक किसान रहे ती बी गरीब रहाय् कुछ तोन जोव रहाय् एक
 मेहरिया बी कु तरिका । उनके तोर दुध बाधा बचीन रहाय् तैह मा पीर
 मा जुन्डी कई तैहम् जीहिमा भाचा गाड़स । जीले पास मा याक् गुरु रहाय्
 ती कुजी हर जीतत् रहाय् । जब पीरी रहिमा ती बीसा हरन बटगमा । जब
 हरन बटगमा ती बिल्लौ लहके उरिका तीविस ती उरिमा बाक् पटकी निस्सी
 उरिमा बरठेक सब होरा मरै ते ती तीत के देखु ती बड़ा कुती भा
 कि येहिमा ती निरै पथरा मरै सब बिहिया उड़ाये ना बाराम् कुछ बाह ।
 कस मरै भाचा भा घरि के पटकी गुफाना मा परि - घरिके बिहिया
 उड़ावन् ली । बीसा तरिका बनेना लहके जावी ती दुध पथरा ली ते उठा
 ली नुस बी तैत-तैत परे जायना । श्वार में जीले नून न रहाय् ती कुजा

बजार में ली बजार भा उहि के लरिखा पथरिया दूनों हाथे भा
 बटर बटर ब्याव । ली जब दुनाने पहुँचे ली बैठ पथरिया भा देखे
 बान भा ली बीली लाव हुया हई का देखे सामान् कइ दे
 धरे भा एक बीहरा के नजर पर गे बुली/हुली पथरा न्हाने छारा हे न्हाने
 हम दुम्हे दु लोँह रुफ्या द्य-हन । बीहरा ने घोरे-भारी सारी छारा
 तरीद लोन्ने जी बुली जादनी मालदार छु गा बीरिजे ब्याह फला
 छुगा ।

बाजि न्होँ बदलता

प्रेमनारायण अवध

कुवा, जम्बरपुर, गजपुर

उम्र- २६ वर्ष

१५-

एक् दिन् जम्बर बास्साह् बीले बोरन् ते जि भुसमान् हिन्द
 छु सकते हैं जि नहि । ली बोरन् बीले छु सकते हैं ली जम्बर बीले
 हमसा हिन्दू बना लेव । जम्बर ते बोरन् बीले बहसे हिन्दू नाइ छु मज्
 ली जम्बर बीले कइ के बन मज् हैं ली बोरन् बीले परिते जग बरी ली
 तिरि भा जम्बर राजा ने जग रवि दोनरी । गवि-गवि नेउ भा मेज्
 मने लोग जग भा जाइ । ली बोरन् ने सीं गे की हुयी ली भुसमान्
 बेपरम बड्डारा । ली बोरन् एक गदहा टिरि ने तलाज भी भा हन्वावन्
 लग । ली जम्बर ने बोरन् भा कुवाव ली बोरन् ने कहा कि बास्साह् ते
 किरिजी जब बीड लहवे भा न छु रहाय् जब कुलाये ली उनो उहि दोजी
 का बोरन् गदहा हन्वाय् रहे । ली जब बीड लहवे भा न रही ली बपरमा
 जाव कि राजा कुलायि रहे हैं ली बोरन् ने कहा कि जाय दाजी जे
 गदहा हन्वाय के तुसने न्होँ तिला जाय तब सुदे जम्बर बोरन् ने पास जाय
 ने बोले- बोरन् गदहा हन्वायें म्या बरीगीरी बोरन् बीले गदहा हन्वा के
 बहरा बनहुहन तक जम्बर बीले नई गदहा ते बहरा बन सबत है ली बोरन्

बोले कि राजा साहेब का जहाँ तुम्हाड़ फूटा है वहाँ भूलवान् ते हिन्दू बन सकतु ही ।

१६- भूत पुत्र

राम प्रकाश

बाँदे ताल, मानपुर

उम्र ३४ वर्ष

यादु बादमी बहुत बालकि रहाय् बोधे सबकहात् ते नोक् काम करी
ती जैसे बारि बारि हो पे बारी बिल्कुल बुरे रहाय् । एक दायें मंकर
जो पारबलो जो ते बहात् रहोय नि हयें नरक बाले भगवान् कहात् है कहै
कै मारे कि हम उनके दुह दूरि कर द्यात हन्, पाबलो बीलो हम कहै जानत्
को कुरे तुमका भगवान् कहात् हैं । तुम्हें दोनों का हरत ही, उनका भला
करत ही, ती संकर जो पारबलो जो ते साथ नरक माँ जात ती संकर जो
के सामने बोधे बारी दुर्ह पाँ ने बुरे बतात् ज्ये जाति रहोय ती संकर जो
भला करे रहाय् ~~की-संकर-का~~ जब कुरे सामने पागे ती मरन् के भूँडे मोल्ला
एकु-एकु सोने के जौंठा मार दोनहेन । बुरे भूख जौंठा का उठाय के द्यालें
सगे कु भूख दूसरे ते बहात् है द्याली मारे भूँडे भा द्या पियर-पियर
गोटला भारी छसि ती दूसरि कहात् है हमारे ती मारुस छस । जी बुरे
बापु पाँ कहयें बाग हम मिनि कहें ती ये हो गुटेलो ते मारु की जकरी
किरी भा लोस सोने ती संकर जो बोले द्याली बारु भूख छस होत्
हो ती पारबलो जो बीलो तब तुम जकरी भूख क्यार भला कह द्यात्
ही ती भला तुम्हें भगवान् बोधे न कहिये ।

सेवा का फल

नरेश चन्द्र शर्मा

फटन लाला, गानपुर

उम्र- २७ वर्ष

१७-

याक् द्रविण देश का राजा रघुवंश उन्के विधाव की अवस्था बाहर ली राजा बाँसे तुम सब अपने-अपने तार कसावा बउन जैसे धरि गिरी ज्यादा बाधा छुँ कर देखे तोनि स्यात् ली बा-पुन किन गिरी । याक् अचार मंगिन के धरि गिरी जैसी तुरखिया ने साही छु ने सबरो बाँधे बरतन फेंकतो लो । बार दिन कउनो बात परो ली बड़बड़ा बहू ने लाना मारी बरि बड़े सुघरि ही तै ली फुल्ली रानी लखे या तुरखिया ने पत्नी पारु । लरिका के बात लुँ के ने बोलो जस बाँसी ही ली में फुल्ली रानीरानी लख के जहाँ बाँस कलमा, कलते-कलते बीच बिहा बिलखण्ड जगत मा गी देखत है कि याक् बाबा ने समाद लागि है बाँस बास-बास के बासि -पूख साफ़ करा । जब बाबा ने जाँसी ली ली बाँसे बल्बा का बहिर ली बाँसे सारा बात बताई ली बाबा बताए कि रसना बाँ बार लुँ सट्टा भिलिई बाँ जापु मा लड़त छुई ली तुम कहे कि हम नि बटारा रत हन् बाँ कहे बाँ गेऊ कू पैड़ का कू के पछिले लड़टे बाँसा हुयी सामान भिली । जस कू जब पैड़बा हुँ का मार्ग तुम लडाऊँ, लडा बाँस जंत मंत्र लख के उड़ बायैव । कू सडाऊँ तुम्हें फुल्ली रानी के क्वाकू मा पदुवा दो हैं, लडाका के माँ तुम्हार बाल बाँस ना छु पाई । वूनी बाबा के पायि कू के कल मा ।

बरसात का मौसम

राबनारायण प्रसाद जाधिव

शर्मा, गानपुर

उम्र- ४७ वर्ष

सू पानी और का करता है । सारि नलयाला मरी खा जातू
 है । खाई का है । हम ना खाव मर्या खाता जाहि लागत है
 है । बारा दहया पानी कस मरी है । बरी बरसा (वायु) बहो जीरि
 है वसत हो । लसे समीचर का बहुत बोरि है पानी मा ली । जाने
 कहाँ समू लल्लि काटि नाई कस मार के पानी गिरतू है । सारी
 अब हो त्यातू है । इला जानो किन्हु सुगना कई क्या नहिं बाय बाकी
 कहाँ पानी न होय । क्या पैसा हुन् न झिनारि बी न बी । बायु
 पवि नयेम् पाई मान-मान के । बरी बारा न व्याव ससुरो का दुह दिना
 ली बपनी सौ छु कई । हुयी पानी न जाने कहाँ है मरि-मरि उडूवाततू
 है । बायु हंसिया लह के नहिं तो हुन बार खास मा और चुटकाया न
 नही रहाय । पानी से करन् जिहा लहना । म पंज् के बबहुं सेकरन
 त्यातू मरी है । बरी बार भियां तुम्हो छूँई मा ली चुटकायी नहिं बाय
 बी बहून लागी ली पसरि त्यान, बामी ज्याठ लहानी का पानी का
 बबहुं जाटे जाय ।

जानकी हरण

शिवप्रसाद रचक

फनकी स्टार, जयपुर

उम्र- २८ वर्ष

१९-

मगवान् राम बन् जील बासि करि रहै ते ली कुह सिकार लेते
 का कोले जी साता महरानो का सङ्गमन् ते छँटा गै । ली जील ते
 बाबाच बाहे कि राम मारीने ली जानकी महराना बीलां देखी जील
 मा किता न जानू मारि दियाहुया कसो बाबाचि बाय रहो है लङ्गमन्
 बी बीले होई जीऊ तुमका का मल्लब हुयी निमाचरन् वे देस बाय,

कहती हूँ पर पंच लोह । ती जानकी महारानी ने लक्ष्मन् के लिये
परि गह लक्ष्मन् फिर ढोसा करण ती जानकी की गुस्साय के बीली
तुम्हार विचार है कि हमार पत् सत्तम् छु जायें ती हमें तुम कठारि
सेव । बिचारे लक्ष्मन् मजदूर छु के त्त मे, से ते पहिले बुन्ने अपने
घनुस दान ते गीत गुगुसा बिचाह दोन्ही । बीले ह गुगुसा से बाहर
न जायें ते लीनो कहते टातु रावण मोस भागि जावो जी बीले बीली
भिच्छा साध-महात्मा नहं छैत् । सोना की बाहरि निकरी कि बीले
उठाके रथ मा डारी जी भागि ठाड़ि मा । जब लक्ष्मन् की राम जो आर
खन से सोना जो कदारव ।

दोस्ती बराबरी की

विरकाब कटियार

बैरी , कानपुर

उम्र- २० वर्ष

२०-

याक् मिर कह्या रहाय् ती बीला हाय् या याक् भिड़ाहना निरो
देर ते भूपत रहाय् ती मिरकह्या ती बीली बहिना हम तुम्हीं जान्
कब दोस्त बनाबी चाह् उन ती मिर कह्या बीली द्याली भिड़ा
भया दोस्ता ती अपने बराबरी वालेन् ते निमत हो ती बुजा कलागा।
भिड़ाहना एक दिन गीतु हायि मा लाग रहाय कि बीलेके गे मा हड़बा
फँसिना । तबहिने मिरकह्या दिहाय् ती बुजी सौचो यासे लम्बो लँच
हो हया प्यार हड़बा बीले सक्तु हो ती भिड़ा बीले पाँजर मा कि
कमी नारे ते हड़बा निकारि देव नहो ती दम निहरी जाति हो ।
मिरकह्या ने गे माँ चाँच डारि ते हड़बा निकार दोनिस् । याक्
हुँ दिन बाद बीले बहिनी हमार खान् मानी कि तुम्ही हमो गे मा
चाँच डारी बीलेके हाथे ना बुजा बीली बच्छा भया , जब बागे ते
हुयो खान न त्याग ।

चिड़िया बाँर में

जयम विहारी कटिया

हथूना (डोरापुर), कानपुर

उम्र- २३ वर्ष

२१-

ऐसे-ऐसे एक चिड़िया हवा में उड़ती है एक मैसिया होती है। एक दायि चिड़िया में मैसिया से कहती कि तुम हमारे ऊपर लगी हो हम तुम्हारे ऊपर लगे हैं। तो मैसिया ने कहा ठीक है पहिले तुम हमारे ऊपर लगी फिर हम तुम्हारे ऊपर लगे हैं। तो पहिले चिड़िया ने मैसिया के ऊपर लगी तो चिड़िया ने चिड़ी लगी। फिर मैसिया ने कहा हम अब तुम्हारे ऊपर लगे हैं। इसी सुनके चिड़िया ने मैसिया को बात मान ली और मैसिया के मोहों के नीचे बैठ गई तो मैसिया ने चिड़िया को एक बहुत बड़ी कैद चिड़िया के ऊपर लगी वह लगी चिड़िया दब गई। ऐसे थोड़े देर बाद एक कौन्वा जाय नगी की बाँहों के नीचे उठकर चिड़िया का सान लगी तो चिड़िया ने कौन्वा से कहा- "सुनी-सुनी काहे सात ही थोय-थोय साव। तो कौन्वा चिड़िया की एक तलवा किनारे से नगी बाँर चिड़िया के मुख थोड़ी फिर सान लगी तो चिड़िया ने कहा "जीदो-जीदो काहे सात ही फुरद-फुरद साव तो कौन्वा ने चिड़िया के बात मान ली और चिड़िया के मुख के लगे छिड़िया को एक छोटा पे बँठाया वह, जब चिड़िया थोड़ी देर में सुख गई तो चिड़िया फर से उठ गई और कौन्वा देखत रह नगी।

सरदार की को समझ

श्यामदास सेनी (मातो)

उरसान (डोरापुर) कानपुर

उम्र- २५ वर्ष

२२-

एक गाँव में एक सरदार की रहता है तो वृद्ध गाँव में मारा बहुत लगता है तो सरदार की मैदान में परत है तो मारा उनके बहुत काटत लगे।

तो उन्हें एक उपाय सूझी कि फिर दुसरे दिना अपनी सटीला बंध
कमरा में डाली । तो कुछ कमरा में पाँच-छः कुनू फुल ने तो सरदार
को कहान् लागी जी बलिन् चीप, नक्क ह्ये ना आज मसा मारे बाटरो
लह के दूने ब रहे हैं । अब ने बच फे वी तुरे अपन सटीला फिरते
बाहर डारि लह ।

लनम का फाल

शंकरलाल

कसीतर (ठेरापुर) मानपुर

उम्र- ४५ वर्ष

२३-

एक कहुवा बसो बउर एक सरहा हली तो दो उन में बलिं
होन लागी तो कहुवा ते सरहा बोलन लागी । उन हय फुन में
बागडे की पहुँक जायो, बसो बड़ी ह्ये है । तो कुछ एक दिना दाँऊ
कल दये । सरहा सौजन लागी में तो तनक देर में पहुँच बेहाँ । तो
धीरो दूर दऊर के एक पिड़वा ने तरें सोय रही जी कहुवा पारे-पारे
बलीह रही जी ठोहा सहित पहुँच गयी तो सरहा पाई रह गयी बीह
ऐसे कहुवा बोल गयी ।

कौ की तैरा

श्यामनारायण

भुरलीपुर (ठेरापुर) मानपुर

उम्र २४ वर्ष

२४-

एक हली ऊँट वी एक हली लिङ्गया (गोदड़) दूनी में दोस्ती
हली तो लिङ्गया ने एक दिना ऊँट ते कही एक दिना सरभूया सान
कलमे तो दाँऊ एक दिना सरभूया सान कल दए । थोड़ी देर बाद ह
लिङ्गया ने कही में ह्या वी तो ऊँटवा ने कही बमे न ह्याजी । अब

लिङ्गया बुझ सरभूषा का भी तो दुआन लगी तो सेत बाली का नवी
 बी उट्टवा का लाठी से मारनू लगी बी लिङ्गया एक सरभूषा में फुल
 नवी बिचार उट्टवा कैरो दूयाय उचित गई । जब सेत बाली की नवी
 तो पीरो देर में लिङ्गया बाय नवी । जमि जब नदिया पार करे का
 हली तो लिङ्गया ऊट्ट कैरो पोठा में चढ़ नी तो जब उट्टवा बीच पार
 में पहुँची बी बोली हमका तो लुटास लाही है तो लिङ्गया बोली
 हमें तो पार कद्देव में उट्टवा न जानी बी लोट नवी बी लिङ्गया पानी
 में सारी बूझि नवी ।

हुआसूत-विद्रोह -

झींटेसात दोहर

बन्तापुर (ठेरापुर), कानपुर

उम्र ४५ वर्ष

२५-

हम सारे पुजारिन पंडित ते बहुत नाराज रहात् ह्ये, काहे से
 पुजारी सारे बहुत बदमास होत हैं वझे तो बहुत बड़े पीठत बनहें बी
 अगर काने बमार को भीड़ी बच्चो ह्ये है तो बोहते खुब बच्चो डी ते बुलिहें।
 एक दाह-बुदाय वे पुजारी हैं हम मींदर में जात् हैं तो हमें मींदर के मोतर
 नहों जान देत हैं अगर कहात् हैं कि बाहर रहाव् बी अगर हमारे कोई-
 किसी को बिटिया बहु पहुँच जाय बीह् कोछा मोतर फुलें। तो का हम
 मींदर में चले केहें तो का मींदर कूत ह्ये केहें । जब हमारे बिटिया, बहु
 मोतर जात् है तो का मींदर नाई कूत होत है । फिर पहया दुसरी बात
 वे सारे काहे बपों घर में नू रोटा में साथे का पावत होय में दुगरे के
 घर जात् हैं तो दोसो धो सेवे का मंगित् है । ये सारे पराने घर के लखवा
 होत हैं ।

पाप न कुपा

रामकृष्ण

कुँवा- डेरानुर, बानपुर

उम्र- २७ वर्ष

२६-

एक गाँव में एक ठाकुर साहेब रहते हैं। उनके लड़का हतो जी उनका मेहरिया घर गई फिर गाँव वालों ने ठाकुर का दार ब्याव करा दीन् ठाकुर साहेब तो बहुत सज्जन हैं। उन्हे खेता का देखभाल करत हैं। हतो जी उनको मेहरिया घर की काम देखत हतो। लड़का के गोठिन माँ बोले देखभाल जी लाड़ न करत ला । एक दिन तो बाँ कि ठाकुर साहेब हारें बोली तो उस लड़का कीछा जीहने नाई जान् दी पड़े येही बाद जीहने कुछ लड़का को मार के कंडन में दबा दीन्नी । ठाकुर साहेब जब बाँ ली लड़का न दितान तो अपर मेहरिया है पछी ली उवा बोली पड़ के नाई लडटी । इतनेही में कंडन है माँपि निहरी ली ठाकुर साहेब ने बल्लम सर के जीहि का हेंदले सातिर बल्लम मारी ली माँपि ली बका पे बल्लम को लौं में लड़का को सोड़ी फेंस जाई । ठाकुर साहेब के लीस स्वास उड़के ली गुस्सा में उन्ने वही बल्लम अपर्ये मार ली ली उवे मेहरिया ने मारें हरम के अपार्ये कुल्हो मात्सर् ।

कैसे की सेवा

बनब बिलारा जीवास्त

तरवियतपुर, बिलौर, बानपुर

उम्र- ४५ वर्ष

२७-

हमिपुर की बात जाय । एक मद्दा हते अउर हरना पुर माँ सीमा हते ली बुजो जी सीमा बजार गर अउर जब हें होर ते गर ली

मदूदा ने सोचा है पूँछ कहीं कि गल्ला का माव है तो सोचा बीले का-
का कतारों बहिन बीद, सब मदूदा फाट पड़ी। जउर जब सोचा क्ली
गली तो मदूदा बीले यो तो बहिन बीद पूँछ में गारा दह गली सेकरन।
तो मदूदा ने फिर का करी कि एक राजाई बनवाई तो जीहमाँ मजा
नहिं लगवाए रहई- उहाँ सटके तो मदूदा फिर सबै उठे जी रकबा
बीड़ी लीवा बीड़ि के सोचा के दुआरे पहुँचे जाय तो सोचा ने पूँछ कहीं
कि येहमा डौरा बीरा नहिं डरवाजी, माको नहिं लगवाई तो उन्ने
कहो कि गार सोचा नहोँ देति जाय। तो मदूदा बीले लीड़िया बुदाये
सोचा। हम सोचा-जीमा का कर का है जउर जइसे बदला लह लीनों।

जवाब का जवाब

शिव कुमार कटियार

कपूरों क्ला, विहार, मानपुर

उम्र- ३५ वर्ष

२८-

एक सोयी हली जी एक हली पीया। तो ये दोनों बादमा
बाजार जात ते तिबाँ करे। पीयो ने पीये पर पूँछा कहाँ रातू ही जी
लीये ने कहा दियाँ रातू हने (हशारा करो) फिर लीये ने पीयो पर पूँछा
तुम यहाँ रातू ही तो पीयो कहान लगी हम हून (हशारा) रातू हवा
पीयो कहान लगी कि कउन तौग ही- सोयी जीली के हम बर्मा हम्।
लीये ने पीयो पर पूँछा तुम कउन तौग ही- कहे हम लुखाने, जी लीये
मे बीली हम तुमते पीरें बड़े हन् तनजह बीतर है। कहा कहे बड़े ही जी
पीयो बीली तुम बर्मा हम लुखाने हम् बर्मा तरे रातू है जी लुखानी बड़ी
रातू है। फिर इतनिहा जात माँ उनकी फर्फट छुगी जी जउर-जउर
लीगन् पूँछा मझा लड़ाई काहे हीतू हा काहे मझा लड़ि रहे हम्।

तोपी बोली- तुम्हें हमसे पूछा, कहाँ रहता हो। हमने कहा हम खून रहता हूँ। तुम्हें कहा हम खून रहता हूँ। फिर हमने पूछा कि ठीक बताव कउन ठाकुर हूँ तोपी बोली हम बर्मा हैं। कहते बापुस माँ बरमा ने। तब बजरहान् ने पूछा कि अब ठाकुरताक बताव कि तुम कउन हो। तो बर्मा ने कहा हम तोपी हूँ तो पीवा बोली- अब अब ठीक है हमहूँ पीवा हूँ।

ठाँ की बर्मा

बिलेदार बापुस

काशी-निवादा, बिल्लीर,

कानपुर। उम्र- ३३ वर्ष

२८-

एक जगह होते तो कुम्हें बर्मा। बापुस बोली ठाँ हो तो उम्हें कहा कि तुम तो पीवा जायि नाहँ बर्मा बर्मा। तो उम्हें फिर कहा हरे का नारायण छुगी जो बर्मा का नाहँ बिवा करुते तो अब लोग ठाँ का परेशान करेहूँ उम्हें तो कहूँ बर्मा-बर्मा बाँते नहाँ करो जायि तो कुछ बिचार करमाय-बर्माय पर पहुँचे। तो का प्यो कि उम्हें एक कपरा माँ सिटा दी। रात के दूसरी कपरा प्यो तो वे लेट गए तो उदास के चारपाई देखी तो उवा कच्चे सूत के मढ़ी हतो तो कुछसे ना के खुदा तो दाहव दुहि में माला, बरही फुल ते तो वृत्ती चारपाई होड़ के कलें माँ होट चारपाई पे लेट गये। तो रात के बारा तबे ठाँ केरो बड़ी बर्मा बाहँ तो बड़ी बर्मा जब बाहँ तो तब के छुरी उनको छात्रो माँ बैठि गी बोली परदेशो वृत्ती माल दे माहँ तो तेरो जान ले लेवे छु बोली देख हों मार के तू बर्मा पस्तुहो कहे राब ने दाब मार के पस्तुहो हते।

रात बड़ी या दिन

राष्ट्रिय यादव

बाराभक्त विल्हारी, कामपुर

30-

एक दायि गौरा -पारवती जी संकर माँ वैसे मरें कि रात बड़ी कि दिन ली गौरा वरें कि राति बड़ी जी संकर वरें कि दिन कुत्ति देर हुम्मत होति रही भुत् भुत् फहसत नाहों छु भी तब दोनी बने भित्त के हुया राय भिलाह कि क्ली माह बरमा जो के तोर बत्तके पहुँ कि केहिनी बात ठाक है यहिके बाद दोनी बत्त बत्त बरमा जो के तोर नर बरमा जो ने क्ली माह हुया बात हम नाहों बताव सकत् की बिसुन मावान् के तोर की तब तोनी बिछुन मावान् तोर नर ती उम्मेव कहि कहें कि माह हुया बात ती हम्मत का नाहों मावुम क्ली भुत्तु लोक माँ बसि के देखे कि हुँन ते सब बने बतिके भुत् लोक माँ जाय ती भुम्त-भुम्त स्म मरहुया के तोर ठाढ़ मर । हुँन गरीब बाहुम का लरका बाजी ती वाने लोँचा । जाँटा ती नेक सी है कसे सबका हु है ये उवाँ जाँटा-दार लरके लरके का बनाबी । हंसुर का रिपा उगेँ माँ सब काम पूरी छुनी । कें दिन बाद बिसुन जो बोले तुम रोज-रोज कहाँ है हुवाँ जाँटा-दारि लाउत हाँ ती उवाँ कहन् लगी कि हम राजा की बेटो के ह्मायि का गंगा जमु मरि लाउत हन् ० बी हम् हुँन ते रोज-जाँटा दारि भित्तिबात है । हतो बात सुनके बिसुन जो बोले कि कस्ति तुम राजा की बेटो ते हुवा बात पुहियाँ कि तुम गंगा जमु ते ह्मातो ही भुत् बिबाव तुम्हार ह्मारें की छु है । हुवा बात जब राजा के कान् माँ कहें ती बोले पल्ले हमरा बेटो के संग बिबाव करिहें लाउक छुनी लेय । ती लरिका ने हुवा बात बिसुन जो ते कहा । ती माह हंसुर को पहिमा दुँ बरात् मजी जी राजा के दुजारी पहुँचो ती तोन्नि दिउतन

को बरात बैरि के रोजा कुंठा के मार फूटि गए । वह हरिजा -सरिगिनो
को प्येरा परि कुंठा ली पारबलो कहान् लामा कि हमारी मैक पन है ह
कि हम्हें हम कन्यायाँ लहके नाँव है ती वे घुमरें लामो ती मारें कुंठा के
सकरी कहान् ली कि घमिन उवारात बैरिमा इनके पसपु मी ।

संवाद - (बातचीत)

रामसनेहो कटियार

कुंठारा बित्तीर, बानगु

उम्र - ३२ वर्ष

३१- सहरें हरन मज्ज्याव रसाय, बहसत् माँ ठात् लाय रहन् । ऊँची सुनत
है बहुत । बरिसाति बासी बादा छु रहा है । हमर खून मक्के सब लताय
गर्ह । झौटो छु रहा है । बिट्या उनके कु-तोनि । बहिनो उनको पित-
यावलो हैं । अब ती येहमा राक्करायन रसात् छी । बौरि के रारि के परि
का हतो बमोन । बैचि का राक्करायन कहात् हैं कि कलनामा कद्देव ।
बहले म्यारा माँ डकतो परिम कठे साव करत् हैं सार । जवा कौऊ
करहया छी । बैचि माव मूव बढे है । न सार के तारे बहनी न कछी ।
सब हमारन घरुहें है, परिवार है । बाने मुद्धमा तेम्ह लरि के फटवारा
करवाय का । बरी म्कानु माँ फफटु बामनी माँ फफटु । फरन बाटु
दी ह्यु रिहाहें । रेस्सान् ती ह्य नहा । बाहु-बः एबार रनकयन है
रिह कि पाव् बह बम गर्ह । रनकभिन् मडमा हँका लाव जयि दादा तीर
है । बावू ह्य बौरि सभत हैं प हम लिखि नाहां सकत् । छिप्कद्वार समन है ।
अब ती नमा जो पहेल है । बा रहे मरनाहां नर ।

गाय बाँर मनुष्य

शांतो वरन

हासिमपुर बिल्हौर, रामपुर

उम्र - ५० वर्ष

पाँच माह होते, उनमाँ बारि को खादी छु नई रहाय् ।
जुने पँखे के खादी नाहों मई ता लीन नौह बराउत ती । ती
बाँला बिचारे का रस्ता-सूता हाथि का भित्त ती । उनै मुरुजन माँ
एकरिया गाय हतो उवा तरिका ते बहुत पियारन करत हतो । उवा
करिया बाँले माँजन कीहवा बफा ता लेत ती बाँ उह तरिका सातिर
बपवा दूब पिया देत ती । जब उवा सम्का कावे लगाई बात् हतो ती
बुजा उवाक बाति हतो । एक दिन उहिले मतोबो छाक सह गह बीसु
माँ बाँ लाना कके उवा एक फाड़ियाके पाई ठाड़ी छु नई तरिका कावे
कारी गहया ने दूब दिया कवाँ । हुया बात् तरिका अपने परी पीहवा
बताई जाय । तबई उहिले दादा कथान् ली सवेरें हाँते कथ गहना
कथना ते कथा उरवे । जब उह तरिका का रात के मासुम माँ ती
उवा उहिले सूँटा माँ जाई के रोवन लगा तब उह गाह ने कूँरी काई
रोवत ही ? तब बाँहने हमरें दादा कल्लि भूगारें हाँतु सन् कथना ते
कवाय छरिहें ती बाँहने कही सवेरें हमें शीड़ देखे । जब सवेरमा ती
बाँहने । गहया कीहवा शीड़ कवाँ । गहना कीहवा सवेरें परी ती
पकरी न जावे । ती फिर तरिका कीहवा मेकु तब बाँहने पूँ पकरि
सोन्ही ती उवा गाय तरिका का लके कुरे देल कीहवा उहि गह ।

नासमती की जिह-

बशीक कुमार

पटकराता, रामपुर

उम्र - ३२ वर्ष

३३-

एक गाँव में हवा एक बुढ़िया रहति रहे ती बहिन
 एक तरिका रहे । बुढ़ी तरिका पढ़ि लिखि में हवा बुढ़िया हती ।
 बहिन बप्पा बप्पा पढ़ि लिखि तस्क फल नाई दैत ते । तब उवो दिनमान
 दुसरे की तिलना माँ काटि-काटि के फल कमाउत ती बौर दिन के
 बादि में हवा बहिन विधाव दुहना ती उहिको दुलहिन अपने फल ते
 कहन् लो कि हमका हमारे फल के फल देव ती तरिका कहन् लो कि
 तुमका के कोठा कुतन लो नाहीं जावो ती तुमका कहें पठे देन् । पौर
 दिन बाद तरिका की एक तरिका मा । एकदिन उहिको पेरिया कहन्
 लो बह हमका फल के पठे देव ती, उहिको तब ते लड़ाई हुगे । तरिका
 के बप्पा कहन् लो हम अपने दुतारे तरिका के दिना कहने रहियन
 ती बह तरिका ते जल रहिकी सीतन् लो । एक दिन बुढ़ी तरिका
 बह तरिका देहे अपने ससुरे बाई ती तरिका ने अपने पेरिया कावे
 रियारा बंद कदुये ती कृष्ण सवे रावे जी बाई बहावे बीलो हमार तरिका
 हमका दे देव तब उहिका बादमा बीलो नाई देवे तीहिका रायि का लो
 ती लिखि रह् । ती पेरिया फले ससुरारि माँ अपने फल के लिखि लाव
 लो ।

लोक-गीत

१- साधु वक्त -

कुल परीसी ते दुख उपै, ठेकर चाकर महा सताय् ।
 रोगो मोगो कर समसद, इनके दिने न कठें जाय् ।
 कुल क्लेश कर बुझिया, उनका देय सदा कराय् ।
 दुष्ट मंतरो ते निरप नासे, धिरे सग कुमलपाय् ।
 बतहित नारि पुत्र किं वंछु, दुख किन पड़े न बादर पाय् ।
 सन्तोसी नृप बासन्तुष्टा दुख, चाकर पुस्त बँवला नार ।
 कायब कष्ट लाबू ते बँस्या, इनका नसत् न लागे बार ।
 कुं मा क्लेश पाद् व्यमचारिन्, क्को पित्त सुधर बति नार ।
 कुल कर्तक इन्हुनि ते लागत, और न जीछे लगावन हार ।
 रण में बंध मित विषदा में, दुख में घोर रँके मर नार ।
 मोका बारी के जाए किन्, होतो नहीं परिच्छा सार ।
 प्रीत में या के बड़ाए, दुनी तरफ कर ते हार ।
 माँगे ते कुछ मान् रहे न, कैरो मी तो देवो मार ।
 होइत बसत बत् क्या करते, बनरय बत् कोन्हें मंकीब ।
 यथा शक्ति दुनी मा करते, सो नर नहीं शूर मा पोष ।
 कूर, कुनय तड़न हारो जत, निकरत् कर कस केन कठोर ।
 ऐसी नारो जे धर होवे, सो धर मनी नरक पनघोर ।
 पूरु लिया पिया हो नगर, माफि सुधर दीय कत कूर ।
 निम दिन बास रक्सी राहत । तहँ रहत प्रीत बत् दूर ।

पर निंदक बातों को नर , इनका नहीं विपत्तु दुख दूर ।
 बिनि फौजियाय् बन्ना का वायक, गाहत अपात जात का पूर ।
 एकत नयन मुदु बचन जे सुन, पत्तु के बचन करतु नहीं दूर ।
 मायिन मवन जासु उर राके, पाकी मो नर सुख मरपूर ।
 राजा , गुरान मारि, नटबनिया, अघिकाकुटनी को बताव ।
 फाद फारेय क्यु ए सातो, इनसे अधि और म्त्त जान् ।
 निश में दोपक होतु कंभा, दिन मा रहे प्रकाशितु मान् ।
 कुत दोपक सुतु होतु सुमा, कुत-कुत धेठे सुख की तान् ।

२- समय का महत्व

रामेश्वरदयाल

हेम्बवापुर, फुतराया, कानपुर

उम्र - ४५ वर्ष

(क)

एक दिन श्री किशन मधुरा तै माने बाघोरातु
 एक दिन कस की पहार दिया कण धै ।
 एक दिन राकन ने बसोदिसा बीत लये
 एक दिन बसो सोच कटे परे रन धै ।
 एक दिन पारथ ने भारत में बिबे पावै ।
 एक दिन बीलन ने लुट लिया कन धै ।
 राकन महिपालन की बिबे कोन कहे यारी ।
 घुरव को तीन कता होतु एक दिन धै ।

(स)

बावन स्याम कही परसों जाने तित् दूर महीं परसों ।
 परसों न छटे परसों नबड़ें हमका जूना बात नह करसों ।
 सावन मादों को बारो घटा मेधा तहपे बरसों-बारसों
 बिया चाहे पिया ते उड़के फिरी पर उड़ न सकी में बिन परसों ।

(ग)

नारो बतबत होतु है दौऊ कुल की बिनास ।
 कौरव-पाहुव की की बिया दुरता नास ।
 बिया दुरपदो नास, केही डारथ मारयो ।
 राम-सङ्गण पुत्र तेऊ कबास सिधारयो ।
 बनते होटैलात उदा नर रहत दुखारो ।
 बी धर सत्यानास बहा हो नार कुंवारो ॥

१- बावसा

रघुवरदयाल पाडे

तिलसड़ा, घाटमपुर, मानपुर

उम्र ४२ वर्ष

गजपति बंठ्या पे रीवे, स्तु अय को लहास रहाय ।
 निरस्त नार काल जकुलानो, बानी दितला के कहान ।
 तीर्थ धरो हतो खिलो पे, तिमि जागे छ कर् लमाय ।
 कहे एक ज्वान को राखन के, बहुत से कुंवर भये छिनाल ।
 तबै सतीरो लाकन पू का, फाँडा कीनाही स्वेत् दिताय ।
 सक्पा देवो गजपतिन ने, तीर्थ कंद कर् करवाय ।
 सुन कंधोर गोर सिरवा का, हासिन् लगी पैदुलाड काय ।
 कन्या जान नह मलही का, बाबे दस्त राजकुत जाय ।
 हाथ लगाय दिया फाटक में, सुत नवी रहे दुबारे का ॥

सज्जित बनाकर जी संग लासन्, बाँटिया पे नर उदन बलवान् ।
 गजनीतिन निरख्त् उदयन का, इन्द्रम ही नरुं हाथ बैहाल ।
 करुणा करत् क्हात् उदयन पै, हम बारो मा राहै डारौ करवाय ।
 छट्टे भिटे किरा मे ठन्डे, भिल्लि के की दियौ भवाय् ।
 बदी बिचारत् राख्यौ जिरा में, हम जल्दी बसौं गिरसवा जाय ।
 तुमने अपने मन को कर लई, सब बिय हातो नई सिराय ।
 जब जब बाजत त्यों गिरसामे, तब-तब कंठ तेत लिफ्टाय ।
 जब जनकहक तुम जायो गिरसा में, जब क्यों राख बढौरो जाय ।
 बचन सुनत् सुन गजनीतिन के, उदयन बाँते बासु कहाय ।
 हाथ हमारा है कहु नारा, होना जमेय हो बलवान् ।
 जा दिन कौन करी गिरयो नै, गढ़ में तोप लबाई बान् ।
 सबर भैजता तुम कनक्यु का, कि गिरसा बड़े बीर बखान ।
 पाहै बडते हम गिरसा का, पहिले भित्ती देखित् फुंसाय ।
 कौय बत गजनीतिन बाणी, देवर विरथा करत् कबवाय ।

0 0 0

भारत के संग मरे न कोह, उदयन सुनौ बचन धर ध्यान ।
 मोसम युद्ध करी भारत में, दोन्ही हाहाकार मचाय ।
 जब मरुत बडे सूर एक दिन, हर का चक्र देत ते फराहाय ।
 बडर समैया जादिन जावडे तब पार । नै दबौ गिराय ।
 बधिक प्यारे दुयोधिन का, पाहै न दोन्ही प्रान गवाय ।
 राजा सागर जी रानी भिल्लि, अपने लिए धोर उर पार ।
 प्राण न छूटे महतारो के, ना पिता मर नर विजय लाय ।
 पुत्र एक शत्रु नधारी के, महामारत में नर सनाय ।

४- कबोर पयो

रामप्रसाद

सिधील, धाटम्पुर, कानपुर

(क)

न में लादीं तोहा ताँबा, नाहीं लीं सुपारी ।
 में ती लादीं रामबना का, पल्ले स्थाप हमारो ॥
 न पहरिं काने कुँल, न सिर बटाधार ।
 तोन लोक के मालिन्, लहरिं खर हमारो ॥
 न में माँगी न में बूगी, नाहा मिच्छाधारो ॥
 नहाँ लहे कम लीं सुमिरनो नहाँ लीनवारो ॥
 ठठ के डेरा लाय के बकिया कूब की बेचारो ।
 कहतू कबोर मुनी माछे साधो बटो मे न मुनाफा मारो ॥

(ख)

कहूवा के सवे कोन्ह कछु सगल मेंदुव के लीं लगल निहार ।
 ठण्डू मात मरिं का जह, ज्या तुम मठिक में गाढ़ीने
 निहने फा का फे न पावीने ।
 ऊँट बैठ के नाना गावे, खर बढ़ैया तार लावे
 ठण्डा काम हक हब्द सुनावे, येहा बर्य ज्या बतावीने
 निहने फा का फे न पावीने ।
 नया सम्मो गया बमार, समि न लीमहि बाह
 डरद मुह के नर बी नारो, ज्या तुम मीता गावीने
 निहने फा का फे न पावीने ।
 कहत कबोर कहत के साँधो, कहू बाल नहाँ हँहासो

कट जाती जाया के काँसा फीरे के कल्प न पावोगे
जिम्मे फद का फेद न पावोगे ।

५- नटगौरा

कमती - उदयगौर यादव

मुरादापुर कानपुर

उम्र - २५ वर्ष

मोरें झारें का बसि यरिया जीमिया ने डारों कोरा सखी रा ।
बायो रात जुमिया कसो बजावे नंदो का बियरा लखानी सखी रा ।
जायो रात मय्या मउयो का जावे, नंदो का डर पूरा लागे सखी रा ।
तीरें उतर दूँ दलिन दूँ बच्छमती, मिली बर ती सखी रा ।
इक दसो मेन हुआ उस तैव तेरस का, बियाव रची रे सखी रा ।
जा दिन बरात डहै पर जाहँ, नन्दो का मूँह पिरानी सखी रा ।
जा दिन बरात जावने पर जाहँ, नन्दो का पैट पिरानी सखी रा ।
जा दिन बरात मड़ये तर जाहँ, नन्दो के मये नंदलाल सखी रा ।
बम्हना का लड़का मड़ये तर बिरफाँ विजाव रची रे बियाव सखी रा ।
तब मलिया का लड़का मड़ये तर बिरफाँ मालेर जायो की मउरह
सखी रा ।

डोमरा का लड़का मड़ये तर बिरफाँ, बियावबजावे नि बजाव सखी रा ।

६- नारो

जीमती सुनीता शर्मा

पन्की - कानपुर

उम्र - २० वर्ष

(क)

लाखन का बियाव लखी बीरा हनुमान ।

सोता छन मरन कुरूप की लखन लागे वान ।

हतनी सावका परो रघवर पे लोके निरपा नियान ॥साक्षन०
 लक्ष्मन मरिहैं हन नरि क्यवे सोता तर्ष पराना
 हतना कस करी पवन सुतु नहो होतु है तीन लोक के हाना ॥साक्षन०
 हतना सुनके को पवनसुत गरद मर असमाना
 दोना साथ सबीमन् ताए उवन न पार माना । साक्षन०
 मूर सजामन मुह माँ वाके पवन पुत्र कसवाना ।
 तुलसी दास मणी कसवाना घट माँ जाए प्राना ॥साक्षन०

कबीर पंथा-

(३)

का माँ सोऊ नै बोले साँची
 साँची बोले हेरो का ककरा वीहू के लग के हाँसी । का०
 साँची बोले कुम्हार के गगरी बोले लग गे फाँसी । का०
 साँची बोले बाह्या का गोहूँ वीहू ने फटने हाती । का०
 साँची बोले गड का बहरा हर में रीपे हाती । का०

गारी-

(ग)

गोपी रहो हनयि, गोपी रहो हनयि लीहू लगने चोर चुराय ।
 एक दिन गोपी बियो बिचार पहुँची जमना बो ३ पार
 सबने घर दे चोर उतार कल नै गह रीफताय । मोहन०
 कसुदा जोके कियुं कनूखया, पहुँचे जहाँ चराते गहिया
 गोपी सेते कलू-कुलया सबै रहीं ठठलाय । मोहन०

चुपके ते बिगन् पदूँ जे, चढ़के बैठे जाँये जदम
 बीर हाथ में ले लहँ सब, गीपो सबे रसो पड़ताय । मोहन
 कल से निस्तरी सही सयानो, बार बिना सबे धक्कानो
 नारो कस्तूदास बलानो गीपो सबे रसो पड़ताय । मोहन०

७- बारम्भासा - बिहा

हाकिमसिंह यादव,

सोबागडा, कन्नूरपुर, कानपुर

उम्र ५३ वर्ष

क्याहू बाए छटा नम हाथे बी गुरवारं फाकीरा लाय ।
 केस रमाहँ सुद न पाहँ, बालन रहे कियेस ना डाय ॥
 सावन नारो करँ ल्यारी, ज्यारी क्याहो करँ भिगार ।
 सब सही फूले सी में फूले, नहि सलि बाए केँ हमार ॥
 मादोँ रैन म्यावन् तामे गरक्त् पवन नमन नमोर ।
 बिहारो कके सख मन् की दिन पत् नैन धरे न धोर ॥
 कुँवरि कामिनी करँ बीछा बारो केस पिया परदेसा ।
 भितरँ केस केस जागिन कन, रूँदन कबे मसम लाय ॥
 कातिन् नारो करँ दिवारी, कर ठणियारो सजावे बार ।
 किस्मत फूटी पत् सी छटी, सूटी बिहा मरी जीष्यार ॥
 बगहन जावे माँ फन मावे, बाफिन कर मोवे पड़ताय ।
 सागत सदाँ कसम केदो, कदो की देहे दनवाय ॥
 बावरा तू पिया को याद, यो तन् सबे कबो दरबाद ।
 लल कुन लैन पर मोँहा कँवर, ऊपर नमर मरत बाबाद ॥

माँ में बारी अमिलिया जाम, कर के प्रीत भय्यु बरनाम ।
 बाब कसत की दिन मालि, लावत नहा सारी बाम ॥
 फागुन सब जग सेरी फाग, वाकत होल सुहावन राम् ।
 उड़त बबोर धोर न तन बौ, लीबत सेज उठो फन जाग ॥
 बैत मास कितकत बहूँ बौर, तड़कत दिन जिय बँद बौर ।
 उम्मात मदन सदन नहिं जावत, नहिं वाकत फत् कठि कठोर ॥
 बबते लगी मास बहसाह, फीत संग मिलते की अमिलास ।
 तड़कत बोते गैरा मास, कर माँषे धन लेत उमास ॥
 बैठ मास बरस बत ज्वाल, रा धै कब मिलिहें नैताल ॥
 बारहमासी बिरहा गाय, रुम्है तुम्हा कँ सुनाय ।

८-

मुरासिंह चौहान,

सैपा, कबरपुर, कानपुर
उम्र- ४६ वर्ष

(क)

ग्यानी का ग्यानी मिले, करं ग्यान को बाते ।
 मूरख का मदहा मिले, दैय दानदन लाते ॥
 कबरा योमन मेल है, पौर न हूँ रंग ।
 की हूँ हर मजन ते, की सतन कर लंग ॥
 कबरा मन छुत जातहै, फस गंगा का नीर ।
 पाँहि-पाँहि हर फिरीं कहायि कबोर-कबोर ॥
 बारस नौद किसान नौस, बौर नौस खसिो ।
 खँसो मस खँ बनिसे नौस, खँसि बाहून दासो ॥

(स)

बारास न रास के तास धरें, बारास न मीन पिठास न धरें ।
 बारास न नार के प्यार बिन्द, बारास न छेड़ बचासन धरें ।
 बारास न सपसल बौर धरें, बारास न केठ बपासन धरें ।
 कुतसी न मिले बारास कबहुँ बारास है रास के पासन धरें ॥

(न)

कुतिया के बाँगू कपूर धरें, सौरिया कस्तूरी सुँघास है ।
 नदहा के पाये बन्दन धरें, मँस के बाँगू बोन बचास है ।
 मूरुस के बाँगू ग्वाँन करे, छिब री क्यो नार सुहास है ।
 कानो बाँसी नौँ करहा लावे ली बँवरा का सोसा दिसास है ॥

१- धौबानीत -

बाँधरी मुम्नु लाल यादव
 कुदीरा- बिल्हीर, कानपुर
 उम्र - २० वर्ष

(क)

धुबिया जल धिब धरें पियासा
 जलमा ठाढ़ पिये न मूरुस बैसा जल है तासा ।
 अपनी तन धरम न बाने करे बुझन के बासा ।
 दिनमा धुबिया रौवे-धौवे, दिन मा रहे उदासा ।
 करम के दुँबी तनमा ठारें, बाफ नरी मा फाँसा
 छब्बा साबुन लेयन मूरुस , है सतन के बासा

कलम , जुन का दाम न हटे, धीरे धीरे बारामासा ।
 बाठ मास का कउन क्लावे, ओड़ देत बारामासा ।
 कस्तू क्वार सुनी भारी साधी, जन्हा जन्म मोग निरासा ।

(४)

काहे जो बना लैव साम माया जैलो बिया ।
 कहुवा हमारे ससुरा लगत हैं लड़को की साम राना । काहे०
 मेटा हमारे बैठे लगत हैं, भिरवा ली जिज्जी राना । काहे०
 टमाटर हमारे देवर लगत हैं फलका ली लोटी रानी । काहे०
 बाबू हमारे मन्दहुया लगत हैं, धुँया ली नंद रानी ॥ काहे०

१०-जारी

श्रीमता श्रीमती कटियार
 बाबोपुर, किल्लीर, कानपुर
 उम्र २४ वर्ष

रामा सख्खन तनकी दूनी मझ्या साधु बने की जाय मेरेलास ।
 कस्तू -कस्तू साधु बान बिब पल्लु बागा को मालिन घबराह मेरे लास ।
 तनक देर ठहरी साधु मझ्या गक्का गुंथार बले जायो मेरे लास ।
 बरा देर जोरुक्के मझ्या साधु घरम घट जाह मेरे लास ।
 कस्तू कस्तू साधु ताला बिब पल्लु, ताला की घीबिन घबराह मेरे लास ।
 तनक देर लम्बी साधु मझ्या म्पड़ा फुलाए बले जायो मेरे लास ।
 बरा देर जी लम्बे मझ्या साधु घरम घट जाह मेरे लास ।
 कस्तू कस्तू साधु कोना बिब पल्लु कोना को क्हारिन सरमाह मेरे लास ।
 बरा देर ठहरी बी साधु मझ्या फलका लिबाह बले जायो मेरे लास ।

बरा दूर जो एकबे र मया बापु घरम घट जाहें मेरे सास ॥

(स)

बब मारग में रखी रीन लियो रावण से लड़ा बटाह

सीता जो का सुनो बिलाव् बाली गीय बतावी बात

किनो बहु ऊनन है बापु कउन पुरुष को तुम घर वाली,

हमका बब बताहें । वक्ता

सीता ने तब बबन उचारी, राजा दशरथ समुह हमारै

पत् रघुबोर बजुध्या भारै जनकराज की बेटी हरै निशाचर जाहो वक्ता

कहें बटाह ने तलकारह तुमै हरी पराहें नार

रावन तुमकी डारौ मार, नारौ नौब चौब तन डारौ गिरौ असुर

मुकाहें । वक्ता

रावण तुरत गवाँ मल्लाय, अगिन बाण ह्त् दिया ज्वाय

बोन्हें डगके पद बराय, राम-राम कहि गिरौ घरन् प सुभिरौ रघुबोर वक्ता

सीता जो ने आँ करवान, जादे बब लौं कृपा निदान

हसौ तब ली घट में प्राण, सीता नात् कहें कर जीरै दावो भेद बताहें ।

वक्ता

१९- विवाह गीत

बसीदा रानी

बिलीनिया, डेरापुर कानपुर

उम्र १९ बर्ष

(क)

बाक्न् बाक्न् छुहै बाक्मन् के घाट ।

पेरी ने पहिरहया बीरा नहिं जार ॥

की घर मन्वा रिसानो कायर मये नदलास

न घर मन्वा रिसानो न घर मर नदलास ॥ बाक्ता

को ली गाढी हिली रेत मा वि बहवा कधि नहिं लेय ।

हरी देव बक्ता हरी देव बहिनो देव देव देव देव ॥ बाक्ता

(स) माया के हाथ नकुनवा ती ब बपुलो के हाथ कु के रोठार ।
 अब कसू कम्पन बपुलो मोरे लेत कुवारिन दाब
 इत् बहायू नगा इत् बहायू कमना बाब बहायू दरियाव । माया०
 कसे नगा मा जलबाटे तसे बाटे दान तुम्हार
 सुज्ज नारन दुपहरी पर कन्द पर बापोरात
 महुये नारन बाब बाहि पर देत उरिन छु जाय ।। माया०
 हडो मेडो बन देखे देखे हराहो नाय
 देखे ती नहया कालोरिया ती गोने के सीम महुय ।। माया०
 देखे ती लेव दोहन्या लुया को पाट लगाय
 मिटिया ती देखे लुहिली हरदी का तिलक लगाय ।। माया०

१२- कहारन गोत

होरालास कीरी

उरसान, डैरापुर, कानपुर

उप्र रू वर्ग

(+) अउती कसकु का कमाना दुनियाँ नारद कुने राम
 पिता-पु जी पास बहु मा निम दिन होय लड़ाह
 क्याहा उके मने न पावे यार ते प्रीत लगाह
 सोसा पान तमाबु खाना दुनियाँ नारद कुने राम । अउती०
 बाबकात के मित्रन के मने बा बाट समाह
 ऊपर से वी पर मित्र के नार से पात लगाह
 माँका पाती सोस कटाना दुनियाँ नारद कुने राम । अउती०
 चारि दिन ना गोम के बोते छेपर उप्पर बाह ।

मन का माना काम है करता जहाँ कृत बनाई
 फाँसत अनुपम रीति बनाई दुनियाँ गारद हुनी राम । वउते०

(स) दुखड़ा बिरहा का गवारा तनकी राम का नहीं ।
 इस लीला नगरी में हनुमत कीहें नहीं हमारा
 मोला सहारा उनका केवल कहैं हास का सारा
 काहे कीन्ह है किनारा तनकी राम का नहीं । दुखड़ा०
 एक भास है मोहर जी ना कहैं प्राण बधारा
 तो फिर किदा नाहों पहरें हमने मरमबिचारा
 जाने का ना बारा तनकी राम का नहीं । दुखड़ा०
 संगे छूटा है जब ते प्रभु का हमका कस्ट बधारा
 रघुबर के जाने की रलिया लिस निन करे निहारा
 करकी री-री दिन गुजारा तनकी राम का नहीं । दुखड़ा०
 तो छूटामन केर कहना कहैं याद दुबारा ।
 मूल नर का वी सर पातन जो ज्यति पै मारा
 व्याकुल हो जा-जासिर डारा तनकी राम का नहीं । दुखड़ा०

सहायक-ग्रन्थ-सूची

- १- श्रीमद्विष्णुप्रीतकृष्णदास, श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम्, लक्ष्मी वेंकटेश्वर मुद्रणालय, कल्याण, बम्बई, संवत् १९९२ वि०
- २- डा० गिरीशचन्द्र शर्मा, ययाति काव्यान्, विवेक पब्लिकेशन्, कलकत्ता, सन् १९८० ई०
- ३- डा० भानारय प्रसाद त्रिपाठी, पाणिनीय धातुपाठ समीक्षा, वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-२, सन् १९६५ ई०
- ४- श्री यन्महर्षि वैदव्यास, महाभारत (अनुवाद) मोताप्रेत गौरसपुर, संवत् २०८१ वि०
- ५- डा० रामसूर्य त्रिपाठी, संस्कृत व्याकरण दर्शन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६, सन् १९७२ ई०
- ६- वासुदेवशरण कर्जवाल, मेघदूत (एक अध्ययन), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६, सन् १९६० ई०
- ७- श्री हरमोहिन्द शर्मा, मनुस्मृतिः, बौद्धिक संस्कृत शीरीज, बम्बई वाराणसी, सन् १९७० ई०
- ८- श्रीचर्य नरेन्द्रनाथ, प्राकृत भाषाओं का उद्भव एवं विकास, रामा प्रकाशन, नवीराबाद, लखनऊ, सन् १९७७ ई०
- ९- डा० अश्वमेध श्रियसर्न, हिन्दी भाषा का सर्वेक्षण (हिन्दी अनुवाद) भाग-६ तथा भाग-७, हिन्दी समिति सूचना विभाग, लखनऊ, सन् १९६७ ई०

- १०- डा० उदयनारायण तिवारी, मौजपुरा भाषा बीर साहित्य,
बिहार राजभाषा परिषद, पटना, सन् १९५४ ई०
- ११- पं० कामता प्रसाद गुरु, संपादित हिन्दी व्याकरण, नागरी प्रचारिणी
समा, काशी, सं० २०१२ वि०
- १२- पं० कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, नागरी प्रचारिणी समा,
काशी, सं० २०१९ वि०
- १३- पं० शिरीदास बाजपेई, हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी समा,
काशी, सं० २०१४ वि०
- १४- डा० केदार चन्द्र कृषात, शैलावाटी बीला का वणनीतमक अध्ययन,
संस्कृत विश्वविद्यालय प्रकाशन, लखनऊ सन् १९६४ ई०
- १५- डा० कप्रमान रावत, हिन्दी भाषा का विकास एवं विलक्षणता,
सरस्वती प्रकाशन मंदिर, जगता, सन् १९६८ ई०
- १६- डा० कदाश प्रसाद शीशक, भारतीय बाय भाषाओं का इतिहास,
बंगाली प्रकाशन, जयपुर सन् १९६९ ई०
- १७- डा० देवेन्द्रनाथ वर्मा, भाषा विज्ञान की मूषिका, राधाकृष्ण प्रकाशन
दरियानाथ, दिल्ली-६, सन् १९६८ ई०
- १८- डा० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तानी स्कैडपी,
प्रयाग (इलाहाबाद), सन् १९७३ ई०
- १९- निरुपमा पाण्डेय, सरत भूतल क़िता कानपुर, भारत पब्लिशिंग होम,
कूम्हटी नं ५, कानपुर, सन् १९७८ ई०

- २०- नरेन्द्रमोहन (संपादक) , दैनिक जागरण राजा करता
जागरण कार्यालय, सर्वोदयनगर, कानपुर, २० नवम्बर, १९७०
- २१- डा० बाबू राम ससैना, अवध का विकास, हिन्दुस्तानी स्केडबो,
इलाहाबाद, सन् १९७२ ई०
- २२- डा० मोतानाथ तिवारी , हिन्दी भाषा , विज्ञान मल्ल प्राइवेट ,
इलाहाबाद, सन् १९६६ ई०
- २३- डा० मोतानाथ तिवारी, हिन्दी ध्वनियों की उनका उच्चारण,
शब्दकार, तुर्कान गेट, दिल्ली-६, सन् १९७३ ई०
- २४- डा० महावीर प्रसाद शर्मा, मैसूरों का उद्गम एवं विकास, लक्ष्मणा
प्रकाशन, कोटफुल्लो, रावस्थान, सन् १९७७ ई०
- २५- डा० महेन्द्र कुमार , मतिराम कवि की बाबाय एवं जीवन-मृत्त,
भारतीय साहित्य मंदिर दिल्ली, १९७०
- २६- डा० महेन्द्रनाथ दुबे , बाबूमठ जिले की बीली, शक्ति प्रकाशन,
वाराणसी , सन् १९७९ ई०
- २७- डा० मुरलीधर श्रीवास्तव , हिन्दी वास्तुशास्त्र , शब्द लोक प्रकाशन,
वाराणसी-२, सन् १९६९ ई०
- २८- डा० रामादुष्णा व्यास महेन्द्र , बाबुनेरी बीली का भाषाशास्त्रीय
विकास, नवीन शक्ति प्रकाशन, बाबुनेरी, जंमत् २०३१ वि०
- २९- डा० राजकिशोर ए० लाला यादव, प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति
विनीत पुस्तक मंदिर, जगता, सन् १९७५ ई०

- ३०- राजकुल साहित्यालय , धुमकट्ट स्वामी, किताबमहल, एसाहाबाद,
सन् १९५८ ई०
- ३१- डा० राजकमल बोरता, (राजकमल बोरता) , मूकण्डा बीर उनका साहित्य,
विनीवत पुस्तक मंदिर, जगता, सन् १९६८ ई०
- ३२- डा० सुनील कुमार चटर्जी , कंगला भाषा का उत्पत्ति एवं विकास,
कलकत्ता विश्वविद्यालय प्रकाशन, कलकत्ता
- ३३- डा० सुनील कुमार चटर्जी, भारतीय भाषा बीर साहित्य, राजकमल
प्रकाशन, दिल्ली-६, सन् १९५७ ई०
- ३४- डा० लल्लुभाईजी, बागडो बीर का स्वरूप बीर उनका अध्ययन,
पंजाब प्रकाशन जयपुर , सन् १९७७ ई०
- ३५- एच०आर०नेविल, आर्दो०सी०ल०, गजेटियर आफ बांग्ला , सुपरिन्टेन्डेंट
गवर्नमेंट प्रेस , उदरप्रदेश, सन् १९०९ ई०
- ३६- दैनिक जगर उजास (जगता) = जुलाई, १९८१ ई०
- ३७- डा० रंजित कुमार बन्नि, कम्पोजी का लीक साहित्य, अमिनव प्रकाशन,
दिल्ली-६, सन् १९७५ ई०
- ३८- डा० शंकर शेष , इलीस गडो का भाषाशास्त्रीय अध्ययन, मध्यप्रदेश
हिन्दो ग्रंथ अकादमी, मीनास, सन् १९७३ ई०
- ३९- ब्रह्मचंकर मित्र साहित्यशास्त्री, कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य,
बीसम्भा संस्कृत सोरोज आफिस वाराणसी, १ , सन् १९५६ ई०